अनिल मोहन

बबूसा खतरे में

देवराज चौहान सीरीज

नया उपन्यास

देवराज चौहान,
मोना चौधरी, नगीना,
जगमोहन, प्राईवेट जासूस
अर्जुन भारद्वाज, विजय बेदी,
रानी ताशा और सोमाथ
इसी उपन्यास में!

बबूसा खतरे में

ISBN : 978-93-802-7897-1

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल
anilmohan012@yahoo.co.in
Now, Join me on Facebook :
facebook.com/anilmohan012
Join my page on Facebook :
facebook.com/anilmohanofficial

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

●

प्रकाशक

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611410, 27612036, 27612039

●

वितरक

राजा पॉकेट बुक्स

112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006

फोन : 23251092, 23251109

●

मुद्रक

राजा ऑफसेट

1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BABOOSA KHATRE MEIN : DEVRAJ CHOUHAN SERIES

ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

बबूसा चाहता था कि राजा देव (देवराज चौहान) को सदूर के जन्म का, रानी ताशा के धोखे का, सब कुछ याद आ जाये, तभी राजा देव का रानी ताशा से सामना हो तो बढ़िया रहेगा। इसके लिए बबूसा ने भरपूर चेष्टा भी की और देवराज चौहान को सदूर ग्रह के जन्म की बातें याद आनी भी शुरू हो गईं। बबूसा खुश था, परंतु हालातों ने ऐसा जबर्दस्त पलटा खाया कि देवराज चौहान (राजा देव) का सामना, बबूसा के सोचे वक्त से पहले ही रानी ताशा से हो गया और उठ खड़ा हुआ एक ऐसा तूफान जिसकी किसी को भी आशा नहीं थी देवराज चौहान का नया रूप देखकर नगीना स्तब्ध रह गई, जगमोहन के होश गुम होने लगे और बबूसा का सोमाथ से टकराव हो गया, पड़ गया वो खतरे में।

बबूसा खतरे में

शृंखला-3

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास...

बबूसा का चक्रव्यूह

अनिल मोहन के
राजा पॉकेट बुक्स में उपलब्ध उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज

- ● बबूसा और राजा देव
- ● बबूसा
- ● मिस्ड कॉल
- ● मुखबिर
- ● जुआघर
- ● सावधान हिन्दुस्तान
- ❖ मैं पाकिस्तानी
- ☼ **डॉन जी**
- ☼ **शिकारी**
- ☼ **100 माइल्स**
- ❖ **भूखा शेर**
- ❖ **आदमखोर**
- ☼ **गोला-बारूद**
- ☼ **निशानेबाज**
- ☼ **जिंदा या मुर्दा**
- ❖ **डैथ वारंट**
- ☼ **रॉबरी किंग**
- ❖ **खाकी से गद्दारी**
- ☼ ज्वालामुखी
- ☼ जांबाज
- ☼ खूंखार
- ☼ **डॉलर मामा**
- ☼ हाई जैकर
- ❖ माई का लाल
- ☼ गिरोह
- ☼ भगोड़ा
- ❖ हैवान
- ☼ गुर्गा
- ☼ मुखिया
- ❖ जिन्न
- ☼ आतंक का पहाड़
- ☼ अण्डरवर्ल्ड
- ☼ गैंगवार
- ☼ डंके की चोट
- ☼ मिस्टर हीरो
- ☼ दिल्ली का दादा
- ☼ जैक पॉट
- ☼ बारूद का ढेर
- ❖ पौ बारह
- ❖ दरिंदा
- ☼ दौलत का ताज
- ☼ गनमैन
- ☼ एक रुपए की डकैती
- ☼ डकैती के बाद
- ☼ डकैती
- ☼ टक्कर
- ☼ घर का शेर
- ☼ पहरेदार

देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज

- ● **वांटिड अली**
- ● **सबसे बड़ा हमला**
- ● **बंधक**
- ☼ **पोतेबाबा**
- ☼ **जथूरा**
- ☼ मंत्र
- ❖ सरगना
- ● गुड्डी
- ☼ मास्टर
- ☼ हमला
- ☼ जालिम

मोना चौधरी सीरीज

- ☼ खबरी
- ☼ गिरगिट
- ☼ सुरंग
- ❖ नागिन मेरे पीछे
- ☼ दौलत बुरी बला
- ☼ एक तीर दो शिकार
- ☼ तू चल मैं आई
- ☼ मोना चौधरी खतरे में
- ☼ आ बैल मुझे मार
- ☼ बुरे फंसे
- ☼ एक म्यान दो तलवारें
- ☼ जान बची लाखों पाए

अर्जुन भारद्वाज (प्राइवेट जासूस)

- ☼ हिंसा का तांडव
- ☼ खतरनाक आदमी
- ☼ गैंगस्टर
- ☼ खतरे का हथौड़ा

जुगलकिशोर सीरीज

- ☼ दस नम्बरी
- ☼ दहशत का दौर

थ्रिलर सीरीज

- ☼ जुर्म का जहाज
- ☼ सीक्रेट एजेंट

आर.डी.एक्स. सीरीज

- ☼ आर.डी.एक्स.
- ☼ डॉन का मंत्री
- ☼ गुरु का गुरु

☼ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 50/-
❖ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 80/-
● इस निशान के उपन्यास का मूल्य 60/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी दस उपन्यासों के मूल्य का मनीऑर्डर **राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084** के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। कृपया M.O. पर अपना फोन नम्बर अवश्य लिखें।

दो शब्द——लेखक की कलम से

पाठकों को,

अनिल मोहन का नमस्कार!

'बबूसा और राजादेव' के बाद **'बबूसा खतरे में'** आपके हाथों में है, जिसका कि आपको बेसब्री से इंतजार था। परंतु इस वक्त जबकि मैं ये पत्र लिख रहा हूं **'बबूसा और राजादेव'** अभी मार्किट में नहीं आया है, अगले कुछ दिनों में आने वाला है। इसलिए **'बबूसा और राजा देव'** के बारे में दिए गए पाठकों के विचार मैं इस उपन्यास में नहीं दे सकता, ऐसे पाठकों के नाम और उनके कहे शब्द मैं इसी शृंखला के आगामी उपन्यास **'बबूसा के चक्रव्यूह'** में दूंगा। **'बबूसा और राजा देव'** को बाजार में आने में कुछ देर हो गई और लगभग हर पाठक मुझसे ये ही सवाल कर रहा है कि **'बबूसा और राजा देव'** कब आएगा। प्रकाशक का कहना है कि अब उपन्यासों को बाजार में भेजने में, देर नहीं लगेगी और हर सवा महीने में अगला उपन्यास आ जाया करेगा। तो अब बात करें **'बबूसा'** की, आपको भी इंतजार होगा इस बात का कि पत्र में आपका नाम, आपके विचार शामिल किए जा रहे हैं या नहीं। मैंने भरपूर कोशिश की है कि सब पाठकों के नाम लूं, परंतु कोई रह जाएगा तो आगामी उपन्यास में उसका जिक्र होगा।

सबसे पहले मैं आपको सुरेन्द्र सिंह जी के बारे में बताना चाहूंगा कि जो रिटायर्ड बैंक आफिसर हैं, जालंधर, पंजाब से हैं, ये बचपन से ही उपन्यास पढ़ने के शौकीन हैं और कहते हैं मेरठ में जब ये 1992 में नौकरी कर रहे थे तो इन्होंने मेरे उपन्यास पढ़ने शुरू किए और सब उपन्यास पढ़ डाले, अब भी पढ़ते आ रहे हैं इन्हें मेरे उपन्यास बहुत अच्छे लगते हैं। करीब दो-ढाई महीने पहले सुरेन्द्र जी का ई-मेल आया था, जिसे कि अब लिखने का मौका मिल रहा है। इनका कहना है कि मेरा उपन्यास **'मुखबिर'** इन्होंने तब पढ़ा जब ये थाई एयरवेज के प्लेन से आस्ट्रेलिया जा रहे थे। सुरेन्द्र जी कहते हैं कि 9000 फीट की ऊंचाई पर आपका उपन्यास पढ़ने का बहुत मजा आया, जबकि प्लेन 900 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ान भर रहा था। इन्होंने ये भी कहा कि अगर उपन्यास के पत्र में इनके नाम का जिक्र करूं तो सिर्फ **राजा पॉकेट बुक्स** के उपन्यास में ही करूं, क्योंकि **राजा पॉकेट बुक्स** का कागज और छपाई बहुत अच्छी होती है। इनके ई-मेल में सबसे खास बात थी, सब कुछ बताने का खास अंदाज, जिसे पढ़ते हुए मुझे लग रहा था कि जैसे सुरेन्द्र जी नहीं, मैं आस्ट्रेलिया गया हूं। इन्होंने आस्ट्रेलिया के शहर केनबरा के पार्लियामेंट के सामने उपन्यास **'मुखबिर'** थामें, खड़े होकर तस्वीर खिंचवाई और मुझे भेजी। अब आगे——दीपक श्रीवास्तव, गोरखपुर, यू.पी से कहते हैं कि देवराज

चौहान इन्हें पसंद है। लक्की कुमार मलहोत्रा, कहते हैं कि देवराज चौहान के ये फैन हैं। रवि सिंह, वाराणसी, ने कहा—**'बबूसा'** में मजा आ गया। इंदौर के नागेश खिरवाडकर कहते हैं कि **'बबूसा'** पढ़ी, शानदार स्टोरी है। उमेश यादव, मुम्बई से पूछते हैं कि **'बबूसा'** का पार्ट मुम्बई में कब तक मिलेगा। विकास कुंडू दिल्ली में टीचर हैं, ये **'महल'** के बारे में पूछते हैं और जानना चाहते हैं कि **'बबूसा और राजा देव'** कब तक आएगी। राजकुमार शर्मा, हिमाचल, कांगड़ा से कहते हैं कि कांगड़ा में आपके पुराने नॉवल मिलते हैं, नए कहीं भी दिखते नहीं। लखनऊ से रिशू भाई ने लिखा 'बबूसा' बढ़िया रही। कैलाश सिंघल, आगरा से कहते हैं, 'बबूसा' अच्छा लगा। सौम्या कंठ त्रिपाठी साहब कहते हैं कि फेस बुक पर 'बबूसा' के विचार पढ़कर मन खराब हो रहा है, क्योंकि 'बबूसा' अभी तक उड़ीसा में नहीं आया। राजन शर्मा, हापुड़ से, 'बबूसा' मिल गया और पढ़कर बहुत अच्छा लगा। रविकांत दूबे, मथुरा से कहते हैं कि 'बबूसा और राजा देव' अभी तक नहीं आई, मुझे इंतजार है। योगेश शर्मा, इंदौर से कहते हैं कि मैं देवराज चौहान का फैन हूं और वो मुझे बड़ा अच्छा लगता है। अमित श्रीवास्तव पूछते हैं—'महल' कब आएगी। आपके लिखने का जवाब नहीं, 'बबूसा' आज तक का सबसे बढ़िया उपन्यास है। शैल शर्मा, हैकमपुर, पूना से कहते हैं 'बबूसा' में नया मिला। 'राजादेव' का इंतजार है। पारस जायासवाल, रांची, झारखंड से कहते है 'मिस्डकॉल' पढ़ा, दिमाग घूम गया। आप बहुत अच्छे लेखक हैं। शाहिद गामित, सूरत, गुजरात से कहते हैं कि आपकी किताबें मिलती नहीं। कहां से लूं? सोनाली, बरेली से कहती हैं कि आपके उपन्यास चार-पांच साल से पढ़ रही हूं जुआघर, मिस्डकॉल अच्छी लगी। देवराज चौहान अच्छा लगता है। नवलराजा, होशियारपुर, पंजाब से लिखते हैं कि **'मिस्डकॉल'** मेरे हाथ में है और मेरा आज का दिन बहुत अच्छा निकलने वाला है। तेजपाल दलाल, गुड़गांव से कहते हैं कि **'बबूसा और राजा देव'** नहीं आई। होतोई थेप्थो, असम से कहते हैं कि ये मेरे फैन हैं। आपके सब उपन्यास पढ़ रखे हैं देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाला उपन्यास भी लिखें। अहान, नागपुर से कहते हैं कि 'बबूसा' मजेदार रही परंतु कुछ जगह लगा कि आप कहानी को खींच रहे हैं। सरबजीत सिंह, डाल्टन गंज, झारखंड कहते हैं 'बबूसा' पढ़ा मजा आ गया। शानदार स्टोरी है। संजय मिश्रा, मिर्जापुर, यू.पी.—लिखते हैं कि बबूसा पढ़ा, पसंद आया अच्छा पात्र है। अनिल गोयल, जेवार, यू.पी. से लिखते हैं कि उपन्यासों पर तारीख या साल क्यों नहीं होता कि पता लग सके, कौन-सा उपन्यास कब छपा है। हीरा वर्मा, जगह का नाम नहीं, लिखते हैं कि 'बबूसा और राजा देव (देवराज चौहान)' की जब मुलाकात होगी तो बहुत रोमांच आएगा। कब आ रहा है उपन्यास। विनीत अग्रवाल, पीलीभीत से कहते हैं कि 'बबूसा और राजा देव' कब आएगी।

'मिस्डकॉल' बहुत बढ़िया है। सतनाम सिंह सिखो, मुकतसर, पंजाब से कहते हैं कि 'बबूसा' का अगला भाग कब आ रहा है। पवन शर्मा, जगह का नाम नहीं कहते हैं कि मुखबिर, मिस्डकॉल और बबूसा बेहद मुश्किल से ढूंढ़े। **बबूसा और राजा देव** कब आ रहा है। जगदीश जेठानी, मुम्बई से, बबूसा का पार्ट नहीं आया। नरेन्द्र मिश्रा, मिर्जापुर, यू.पी. से कहते हैं—बबूसा अच्छी लगी, अर्जुन भारद्वाज सीरीज भी लिखें। साकेत कुमार, **'बबूसा'** का मजा आया। ये जानना चाहते हैं कि 'बबूसा' में शुरू की गई **ईनामी प्रतियोगिता** के जवाब क्या ई-मेल पर दिए जा सकते हैं, जवाब है कि **'बबूसा'** में **राजा पॉकेट बुक्स** द्वारा जो नियम-शर्तें दी गई हैं, उसी के अनुसार प्रतियोगी को चलना होगा। ये ईनाम **राजा पॉकेट बुक्स** द्वारा घोषित किए गए हैं, मेरे द्वारा नहीं। पवन कुमार नखाना, जींद, हरियाणा से लिखते हैं कि मेरे पिता जी आपके उपन्यास पढ़ते हैं वो आपके उपन्यासों को पसंद करते हैं परंतु 'जुआघर' नहीं मिल रहा। तनुज सूर्यवंशी दुबई से ई-मेल द्वारा पूछते हैं कि आपके उपन्यास मैं दुबई में मंगाना चाहूं तो इसका क्या रास्ता है।

अब बाकी बातें मैं यहीं रोक रहा हूं, अभी कई पाठकों के नाम मेरे सामने हैं, परंतु सबके नाम सामने रखें तो मैं आपसे कोई बात नहीं कर सकूंगा, जो कि गलत बात होगी। इस बार मैंने नामों का तो जिक्र किया, परंतु किसी के सवाल का जवाब इस पत्र में इसलिए नहीं दिया कि लगभग सबको ही जवाब मैं फेसबुक और ई-मेल पर दे चुका हूं। दो-तीन लोग ही इनमें ऐसे होंगे कि जिन्हें अभी जवाब देना है। कुछ पाठक मेरे से ये सवाल पूछ रहे हैं कि **'बबूसा'** के कितने भाग हैं। जबकि अभी तो पहला उपन्यास ही आपके हाथों में पहुंचा है। मेरे खयाल में पाठक दोस्त **ईनामी प्रतियोगिता** की वजह से ये सवाल पूछ रहे होंगे। लेकिन अभी मैं नहीं बता पाऊंगा कि 'बबूसा' के कितने भाग हैं, अभी तीन-चार उपन्यास आप पढ़ लें, तब बता पाऊंगा। **'बबूसा शृंखला'** के उपन्यासों को लिखने में मैं बहुत मेहनत कर रहा हूं। बहुत कुछ है मेरे दिमाग में, वो सब कुछ उपन्यास के पन्नों पर उतारना है, वो भी बेहतरीन शेप में, इसलिए मेरी व्यस्तता कुछ ज्यादा बढ़ गई है। मैं चाहता हूं कि **'बबूसा'** का हर अगला उपन्यास पिछले उपन्यास से ज्यादा मजा दे। अभी तो मात्र शुरुआत ही है **'बबूसा'** से। कहानी में रंग तो अब भरे जाएंगे। मैं आपको काफी हद तक यकीन दिलाता हूं कि **'बबूसा'** आपको अच्छा लगा है तो **'बबूसा और राजा देव'** उससे भी अच्छा लगेगा और प्रस्तुत ये उपन्यास **'बबूसा खतरे में'** आपको और भी अच्छा लगेगा। और अगला **'बबूसा का चक्रव्यूह'** और भी बेहतरीन होगा। ये एक कहानी है, लम्बी कहानी है और अजब-गजब के ऐसे रंग सामने आते रहेंगे कि आप उपन्यास को छोड़ नहीं सकेंगे। अभी तो **'बबूसा'** नाम के नन्हे से पौधे को मिट्टी में लगाया गया है, इसका बड़ा होना और फलना

बाकी है अभी। इस उपन्यास में देवराज चौहान, यानी कि राजा देव और रानी ताशा का सामना होने जा रहा है तब कैसे रंग बिखरते हैं। बबूसा किस तरह खतरे में पड़ जाता है और फिर कैसे अपना **चक्रव्यूह** (अगला उपन्यास) तैयार करता है। रानी ताशा और देवराज चौहान में क्या होता है ऐसे में हमें जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी, धरा को नहीं भूलना चाहिए कि वो क्या करते हैं। अब धरा को ही लीजिए वो भोली भाली मासूम है यही लग रहा है न आपको परंतु ऐसा नहीं है। आगामी नए उपन्यास **'बबूसा का चक्रव्यूह'** में धरा के बारे में ऐसा खुलासा होगा कि आप स्तब्ध रह जाएंगे। तब आपको पता चलना शुरू होगा कि धरा क्या खेल खेल रही है। क्यों वो शुरू से ही बबूसा के संग है और क्यों वो—बबूसा उपन्यास में—डोबू जाति तक गई थी! बहुत ही सिलसिलेवार, अपने साथ आप लोगों को रानी ताशा के सदूर ग्रह पर ले चलना है, वहां क्या होने वाला है, ये आप आने वाले उपन्यासों में पढ़ेंगे। बबूसा के हर उपन्यास में आपको एक नया रंग मिलेगा, आप कहीं भी 'बोर' नहीं होंगे। मेरे कई पाठक पूछ रहे हैं कि **'महल'** कब आएगी। बबूसा के बीच में या बाद में? 'महल' जो कि देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाला उपन्यास है, और ये **'बबूसा शृंखला'** समाप्त होने के बाद, प्रकाशित होगा। मेरे कई पाठकों की एक खास शिकायत अकसर रहती है कि मेरे उपन्यास उन्हें मिलते ही नहीं हैं, मिलते हैं तो बहुत देर से मिलते हैं। पाठक मुझसे पूछते हैं कि मेरे उपन्यास उन्हें कहां से मिलेंगे। ऐसे में मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि अपने शहर में एक ऐसा ठिकाना तलाश लें, जहां मेरे नए उपन्यास पहुंचते हैं। ये तो पक्का है कि ऐसा ठिकाना हर एक शहर में जरूर होगा। सब कुछ आप पर निर्भर है कि आप कैसे उपन्यास हासिल करने का इंतजाम करते हैं। ये तो पक्का है कि मेरे उपन्यास हर शहर में पहुंचते हैं। कभी-कभी देर हो जाती है तो वो बात अलग है। जबकि मैं हमेशा ही चाहता हूं कि उपन्यास जल्दी आपके हाथों में पहुंचे। **'बबूसा और राजा देव'** आने में अवश्य देर हो गई, परंतु अब आप देख ही रहे हैं कि **'बबूसा खतरे में'** वक्त पर आया है, इसी प्रकार आगे के उपन्यास भी **राजा पॉकेट बुक्स** द्वारा इसी तरह जल्दी-जल्दी प्रकाशित होते रहेंगे। अब आने वाले नए साल 2013 की शुभकामनाएं भी स्वीकार करें। मुझे पूरा भरोसा है कि इस साल आपका मेरा साथ और भी ज्यादा मजबूत होगा और उसका आधार मेरे नए उपन्यासों का बेहतरीन होना होगा। नया साल आप सबका सुख भरा और बढ़िया बीते। अब मैं 2013 की बधाई दे रहा हूं तो 12 महीने बाद 2014 की बधाई दूंगा। वक्त की रफ्तार बहुत तेज है, पता ही नहीं चलता कि वक्त कब दौड़ गया। तो अब **'बबूसा खतरे में'** पढ़ना शुरू करते हैं, बाकी बातें **राजा पॉकेट बुक्स** में प्रकाशित, देवराज चौहान सीरीज के आगामी नए उपन्यास **'बबूसा का चक्रव्यूह'** में करेंगे।

—अनिल मोहन

बबूसा खतरे में

"कमीने त्यागी, तुम।" जगमोहन गुर्रा उठा।

वीरेंद्र त्यागी बेहद शांत भाव में मुस्कराया और कह उठा।

"मुझे यहां देखकर अगर ये सोचते हो कि मुझे पकड़ लोगे या मार दोगे तो ये तुम्हारी भूल है। त्यागी को पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। त्यागी का मुकाबला नहीं कर सकते तुम...।"

एकाएक जगमोहन दौड़ा और सोफे पर बैठे त्यागी पर छलांग लगा दी।

वीरेंद्र त्यागी ने फुर्ती से अपनी जगह छोड़ी और एक तरफ खड़ा हो गया।

जगमोहन सोफे से टकराया और सोफे के साथ नीचे लुढ़कता चला गया। फिर फौरन ही उठा और नजरें त्यागी पर टिकीं। भिंचे दांत, धधकता चेहरा। गुस्से में कांपता शरीर।

"मैं जानता था कि मेरा इसी तरह स्वागत होगा।" त्यागी मीठे स्वर में मुस्कराकर कह उठा—"मैं तो देवराज चौहान के बस का भी नहीं हूं, सिर्फ तुम मेरा मुकाबला कैसे कर सकते हो?"

अगले ही पल जगमोहन ने रिवॉल्वर निकाल ली।

"तुम बच नहीं सकते।" जगमोहन दांत पीसते कह उठा—"मरोगे तुम। तुमने हमारे बड़े-बड़े नुकसान किए हैं। हमें मौत के मुंह में कई बार धकेला, पर अब तुम हत्थे चढ़ गए मेरे, तुम...।"

"जगमोहन।" त्यागी गम्भीर दिखा—"तुम्हें ये जरूर सोचना चाहिए कि मैं शेर की मांद में क्यों आया? मैं जानता था कि मेरे साथ ये ही व्यवहार होगा, पर फिर भी मैं आया। तुम्हें मेरे आने का कारण पूछना चाहिए।"

जगमोहन रिवॉल्वर वाला हाथ उठाए, त्यागी को मौत-सी निगाहों से देखता रहा।

"तुम्हें देवराज चौहान की जरा भी फिक्र नहीं कि वो कहां है।" त्यागी पुनः बोला।

"देवराज चौहान?" जगमोहन के मस्तिष्क को झटका लगा—"कहां है वो?"

"रिवॉल्वर वापस रखो और आराम से बात करो।"

"देवराज चौहान तुम्हारे पास है?" जगमोहन गुर्रा उठा।

"नहीं, परंतु जानता जरूर हूं कि वो इस वक्त कहां है।"

"कहां है देवराज चौहान?"

"रिवॉल्वर वापस रखो। मैं झगड़ा करने नहीं आया। तुम्हारी सहायता करने आया हूं। देवराज चौहान से मैं दुश्मनी रखता हूं। मैं जानता हूं कि तुम लोग भी मुझे छोड़ने वाले नहीं, फिर भी मैं तुम्हारे सामने आया। मेरा इरादा देवराज चौहान चौहान को कानून के हाथों में बुरी तरह फंसा देने का है, ये काम मैं करके भी दिखाऊंगा। पर मैं ये नहीं चाहता कि मेरे खास दुश्मन पर कोई और हाथ मार ले, जैसे कि रानी ताशा...।"

"रानी ताशा?" जगमोहन चौंका—"तुम रानी ताशा के बारे में क्या जानते हो?"

"सब कुछ।" त्यागी ने गम्भीर स्वर में कहा—"वो खुद को दूसरे ग्रह से आया बताती है और देवराज चौहान को राजा देव कहती है, जो कि उसके तीन जन्म पूर्व का पति है। सब कुछ पता है मुझे। मेरे खयाल में देवराज चौहान इस वक्त बड़ी मुसीबत में फंसा है। ऐसे में मैं तुम्हारी सहायता करूं तो तुम्हें एतराज नहीं होना चाहिए। देवराज चौहान नाइट सूट पहने, जिस तरह नंगे पांव पागलों की तरह ताशा-ताशा चिल्लाता सड़कों पर भाग रहा था, वो अच्छी निशानी नहीं है। पुलिस की निगाहों में आ गया तो और मुसीबत में पड़ जाएगा।"

"तुम्हें क्यों फिक्र है कि उसे पुलिस पकड़ लेगी।" जगमोहन दांत भींचे कह उठा।

"देवराज चौहान को मैं पुलिस के हाथों में फंसाना चाहता हूं।" त्यागी मुस्करा पड़ा।

जगमोहन रिवॉल्वर थामे त्यागी को घूरता रहा।

त्यागी सतर्क था।

"तो तुम यहां हमारी सहायता करने आए हो?"

"सच्चे मन से।"

"रानी ताशा के बारे में तुम्हें कैसे पता चला?"

"देवराज चौहान की पत्नी नगीना, जब प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज को सारा मामला, ताज होटल में बता रही थी तो मैं भी पास ही में मौजूद था। मैंने सब कुछ सुना और मुझे चिंता हुई कि रानी ताशा मेरे खास दुश्मन को नुकसान न पहुंचा दे। मैं तभी से इस मामले पर लग गया। अगर तुम्हें मेरा बीच में आना पसंद नहीं आया तो मैं चला जाता हूं।"

"तुम जानते हो कि इस वक्त देवराज चौहान कहां है?"

"हां।" त्यागी ने सिर हिलाया।

जगमोहन ने रिवॉल्वर जेब में रखी और बोला।

"देवराज चौहान कहां है?"

"तीन लोगों ने उसे पकड़ा, बेहोश किया और उसे कार में डालकर ले गए। मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था। जब देवराज चौहान बंगले से बाहर भागा तो मैं बाहर रहकर बंगले पर नजर रख रहा था, तब मैं देवराज चौहान के पीछे गया और सब कुछ देखा। मैंने उन तीनों की कार का पीछा किया और उनका ठिकाना देखा।" त्यागी बोला।

"तीन लोग?" जगमोहन के चेहरे पर सख्ती के भाव उभरे—"देखने में कैसे लगते थे वो?"

त्यागी ने उनका हुलिया बताया।

जगमोहन हुलिया सुनकर बुरी तरह चौंका।

"R.D.X.।" उसके होंठों से निकला।

"कौन R.D.X.?" वीरेंद्र त्यागी के माथे पर बल पड़े।

"राघव, धर्मा, एक्स्ट्रा।"

"ये कौन हैं?"

"हैं कोई...।"

"देवराज चौहान के दोस्त हैं या दुश्मन?"

"न दुश्मन, न दोस्त।"

"फिर तो तुम्हें इनका ठिकाना पता ही होगा...।"

"नहीं पता। मैं नहीं जानता कि ये कहां रहते हैं...।"

"चलो।" त्यागी मुस्कराया—"मैं तुम्हें वहां ले चलता हूं।"

जगमोहन ने कठोर निगाहों से त्यागी को देखा फिर कह उठा।

"चलो।"

दोनों बाहर निकले, कार में बैठे, जगमोहन ने कार ड्राइव की।

कार सड़कों पर दौड़ने लगी। त्यागी रास्ता बताने लगा।

"मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि तुम्हारे पास बैठूंगा।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"बुरा मत मानो। मैं तो सिर्फ तुम्हारी सहायता कर रहा हूं।"

दोनों में कई पलों तक चुप्पी रही। त्यागी बोला—"रानी ताशा की बात को तुम लोग कैसे ले रहे हो? वो सच में दूसरे ग्रह से आई है?"

जगमोहन ने होंठ भींच लिए।

"जवाब तो दो।"

"तुम्हारा इस मामले से कोई वास्ता नहीं।" जगमोहन ने सख्त स्वर में कहा।

"मैं तुम लोगों की सहायता करने की सोच रहा हूं ये मामला दिलचस्प है।" त्यागी ने कहा।

"हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत नहीं।"

"तो मैं यहीं उतर जाता हूं।"

"चुपचाप वहां का रास्ता बताते रहो, जहां देवराज चौहान है।"

त्यागी मुस्कराकर कर रह गया।

"बबूसा के बारे में तुम क्या विचार रखते हो?"

"चुप रहो। मैं इस बारे में तुमसे कोई बात नहीं करना चाहता।"

त्यागी ने फिर कुछ नहीं कहा।

दौड़ती कार एक घंटे बाद त्यागी के कहने पर एक मकान के बाहर रोक दी। अंधेरा फैल चुका था। घर के भीतर रोशनी हो रही थी। दोनों बाहर निकले। त्यागी बोला।

"ये घर है।"

"तुम यहीं रुको।" जगमोहन बोला—"मैं अभी आता हूं।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।"

जगमोहन आगे बढ़ा और बाहरी गेट पर लगी कॉलबेल दबा दी।

चंद पल बीते कि भीतर का दरवाजा खुला और राघव बाहर निकला।

राघव पर निगाह पड़ते ही जगमोहन ने राहत की सांस ली।

राघव गेट के पास पहुंचा तो जगमोहन को पहचानते ही हैरान हो गया।

"जगमोहन, तुम—तुम्हें यहां का पता कैसे चला?" राघव के होंठों से निकला। उसने भीतर से गेट खोला।

"देवराज चौहान तुम लोगों के पास है?"

"हां। घंटा भर पहले ही उसे होश...।"

"एक मिनट रुको।" कहकर जगमोहन पलटा और चंद कदमों के फासले पर खड़े त्यागी के पास पहुंचा—"देवराज चौहान का पता बताकर, तुमने बहुत मेहरबानी की। इस तरह की, ये हमारी पहली और आखिरी मुलाकात है।" जगमोहन के होंठ भिंच हुए थे—"हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत नहीं है। तुम हमारे दुश्मन हो और दुश्मन ही रहोगे। हम तुमसे पूरा हिसाब लेंगे वक्त आने पर, जो तुमने हमारे साथ किया है अब तक। अब हमारे मामले में दखल मत देना।"

"सोच लो।" त्यागी मुस्कराया—"मैं तो साफ मन से, इस मामले में तुम लोगों के साथ...।"

"हमें तुम्हारे साथ की जरूरत नहीं।"

"जल्दबाजी मत करो। मैं...।"

"चलो जाओ।" जगमोहन गुर्राया—"इस वक्त तो मैं तुम्हें इसलिए जाने दे रहा हूं कि तुमने मुझे देवराज चौहान का पता बताया है। दोबारा कभी हमारे रास्ते में नहीं आना। जो कर चुके हो, अभी तो उसका हिसाब हमने, तुमसे लेना है।"

"तो मैं जाऊं?"

"हां।"

"मैं चला गया तो फिर तुम लोगों की सहायता करने नहीं आऊंगा। मैं रानी ताशा और बबूसा के मामले में तुम्हारे बहुत काम आ सकता हूं। मुझे ये मामला आसान नहीं लगता।" त्यागी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"निकल जाओ त्यागी। हमें तुम्हारी जरूरत नहीं।" जगमोहन ने शब्दों को चबाकर कहा।

"मैंने तुम्हारी बात का बुरा नहीं माना।" वीरेंद्र त्यागी बोला—"अगर तुम्हें मेरी सहायता की जरूरत नहीं तो मुझे क्या पड़ी है, तुम्हारी सहायता करने की।" कहने के साथ ही त्यागी अंधेरे में पैदल ही आगे बढ़ गया।

जगमोहन उसे तब तक देखता रहा, जब तक कि वो निगाहों से ओझल नहीं हो गया।

राघव पास पहुंच कर बोला।

"कौन था वो?"

"इसने तुम लोगों को देवराज चौहान को ले जाते देखा और पीछा करके ये जगह देखी।"

"ओह। पर ये था कौन?"

"एक कमीना इंसान, जो मेरे मामले में दखल देने की चेष्टा में था, परंतु ये इतना कमीना है कि इसकी बात का किसी भी स्थिति में भरोसा नहीं किया जा सकता। तुम्हें इसके बारे में जानने की जरूरत नहीं।"

"ठीक है। नहीं पूछता।" राघव ने कहा।

"देवराज चौहान ठीक है?"

"हां। परंतु उसे हुआ क्या है। जब से उसे होश आया, वो चुप्प-सा है। पूछने पर भी इस बात का जवाब नहीं दे रहा कि ताशा-ताशा करता, नाइट सूट में नंगे पांव क्यों सड़कों पर दौड़ा फिर रहा...।"

"बहुत ज्यादा पी ली थी। अपने पर उसका काबू नहीं रहा। अब नशा उतर चुका होगा। भीतर चलो। मैं उसे लेने आया हूं।"

"पी ली थी। परंतु वो मुझे पिए तो नहीं लगा।"

"छोड़ो इन बातों को। भीतर चलो।" जगमोहन ने कहा और खुले गेट से भीतर प्रवेश करता चला गया।

□ □

देवराज चौहान ड्राइंग रूप में कुर्सी पर बैठा था। शरीर पर वो ही नाइट सूट था।

जगमोहन जब वहां पहुंचा तो, देवराज चौहान पर निगाह पड़ते ही गहरी सांस ली।

देवराज चौहान ने भी उसे देखा। धर्मा और एक्स्ट्रा भी वहां मौजूद थे।

"ठीक हो?" जगमोहन ने पास पहुंचकर देवराज चौहान से पूछा।

देवराज चौहान ने हौले से सिर हिला दिया।

जगमोहन चंद पल देवराज चौहान को देखता रहा फिर गम्भीर स्वर में R.D.X. से बोला।

"तुम लोगों का धन्यवाद कि, देवराज चौहान का खयाल रखा।"

"धन्यवाद छोड़।" एकस्ट्रा बोला—"पर बात क्या है। क्यों देवराज चौहान सड़कों पर...।"

"बात वो ही है, जो हमेशा होती है।" जगमोहन ने मुस्कराकर कहा—"काफी ज्यादा पी ली थी। ये तो पता ही है कि जब नशा नचाता है तो कुछ भी पता नहीं चलता। ऐसे में देवराज चौहान सड़कों पर दौड़ने...।"

"तुम बात को टाल रहे हो।" राघव गम्भीर स्वर में बोला—"ये नशे में नहीं था।"

कुर्सी पर बैठा देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"वो नशा ही था। अब देख लो। नशा उतर गया तो कैसे आराम से बैठा...।"

"तो तुम हमें सही बात बताना नहीं चाहते?" धर्मा ने शांत स्वर में कहा।

"कुछ भी कह लो।" जगमोहन का स्वर सामान्य था।

"ताशा कौन है?"

"कोई भी नहीं है।" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान कुर्सी से खड़ा होता गम्भीर स्वर में कह उठा।

"मैं जानता हूं कि तुम लोग बाखूबी समझ रहे हो कि कोई गहरा मामला है। परंतु ये हमारा मामला है। इसे हम ही देखेंगे। इस बारे में हम तुमसे कुछ कहना नहीं चाहते।"

"हमारी जरूरत हो तो कह दो।" एकस्ट्रा ने कहा।

"नहीं, जरा-भी जरूरत नहीं।"

तभी कॉलबेल बजी।

एक पल के लिए सब ठिठककर रह गए।

फिर धर्मा आगे बढ़ा और दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

"हमें चलना चाहिए।" देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा।

"मैं भी ये ही चाहता हूं।"

एकस्ट्रा और राघव से विदा लेकर दोनों बाहर निकले तो गेट पर धर्मा को बबूसा और धरा के साथ उलझे पाया। बबूसा कह रहा था कि राजा देव भीतर है, उसने गंध से ये बात जानी है, परंतु धर्मा इंकार कर रहा था कि यहां कोई राजा देव नहीं है। तभी देवराज चौहान और जगमोहन उनके पास पहुंच गए।

"ओह राजा देव।" बबूसा देवराज चौहान को देखते ही कह उठा—"मैंने गंध के सहारे आपको ढूंढ़ ही लिया। मुझे आपकी बहुत चिंता हो रही थी। मुझे डर था कि कहीं रानी ताशा से आपकी मुलाकात न हो जाए।"

धर्मा ने हैरानी से देवराज चौहान और जगमोहन को देखा।

"राजा देव—रानी ताशा, ये सब क्या हो रहा है।" धर्मा बोला—"कैसी गंध के सहारे...।"

"कार में बैठो बबूसा, धरा तुम भी।" देवराज चौहान ने सामने खड़ी कार को देखते हुए कहा।

बबूसा और धरा कार की तरफ बढ़ गए।

धर्मा की सवालिया निगाह अभी भी इन दोनों पर थी।

"सब ठीक है धर्मा।" देवराज चौहान मुस्कराकर बोला—"सड़क पर दौड़ते मुझे संभाल लेने का शुक्रिया।"

"लेकिन।" धर्मा ने कहना चाहा।

परंतु देवराज चौहान और जगमोहन सामने खड़ी कार की तरफ बढ़ गए।

उलझन में घिरा धर्मा गेट पर ही खड़ा रहा।

बबूसा और धरा, कार की पीछे की सीट पर बैठ चुके थे। जगमोहन ने ड्राइविंग सीट संभाली और कार आगे बढ़ा दी। देवराज चौहान बगल की सीट पर बैठा था।

"राजा देव।" बबूसा बोला—"ये देखकर मुझे खुशी हुई कि रानी ताशा से आपकी मुलाकात नहीं हुई। मुलाकात हो जाती तो जाने कैसा बुरा हो जाता। मैं तो कब से आपको गंध के सहारे तलाश करता फिर रहा था। तब मैं नहा रहा था जब रानी ताशा का फोन आया और आपने रानी ताशा से बात की। उसके बाद धरा ने मुझे बताया कि आप जगमोहन को बेहोश करके भाग निकले। मैं तो तभी से पागलों की तरह आपको ढूंढ़ता फिर रहा था।"

"मुझ तक पहुंचने में तुमने काफी मेहनत की बबूसा।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला।

"मैं तो आपका खास सेवक हूं राजा देव। आपकी सेवा करना ही तो मेरा काम है। मैंने आपसे कितना कहा था कि आपके रानी ताशा से फोन पर बात

नहीं करनी है, परंतु आप नहीं माने। महापंडित ने रानी ताशा की आवाज में जादू भर रखा है जैसे। आप रानी ताशा की आवाज सुनते ही होश गंवा बैठते हैं। मैं समझ नहीं पा रहा कि महापंडित जाने क्या करना चाहता है। परंतु वो रानी ताशा का साथ पूरी तरह दे रहा है। आप महापंडित को सजा जरूर देना राजा देव। मैं तो बस इतना ही चाहता हूं कि आपको सदूर ग्रह का जन्म याद आ जाए। रानी ताशा की बेईमानी आपको पता चल जाए। आपको पता चल जाए कि रानी ताशा ने कैसे आपको धोखे से सदूर ग्रह से बाहर फेंका था। उसके बाद तो आप सब सम्भाल लेंगे राजा देव। आपका हुक्म किसी में भी टालने का साहस नहीं होगा। तब मुझे चैन मिल जाएगा।"

"पर मुझे तो कुछ भी याद नहीं आ रहा बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये ही तो चिंता से भरी समस्या है राजा देव। महापंडित का कहना है कि जब आप, रानी ताशा का चेहरा देख लेंगे तो तब आपको याद आना शुरू हो जाएगा। परंतु रानी ताशा आपके पास आ गई तो तूफान उठ खड़ा होगा। वो आपको अपने साथ जरूर ले जाना चाहेगी और वो पल खतरनाक होंगे। क्योंकि रानी ताशा के साथ सोमाथ को भेजा है महापंडित ने जो कि साधारण इंसान न होकर, महापंडित के द्वारा बनाया गया मशीनी मानव है। वो बहुत ताकतवर है और उसका मुकाबला करने में मुझे परेशानी होगी, क्योंकि महापंडित ने ऐसा ही कहा है।"

"पर बबूसा।" धरा बोली—"देवराज चौहान को जब तक रानी ताशा का चेहरा नहीं दिखेगा, तब तक इसे अपना वो जन्म याद कैसे आएगा। आमना-सामना तो होगा ही दोनों का।"

"ऐसा हुआ तो खतरनाक हालात सामने आ जाएंगे।" बबूसा ने चिंतित स्वर में कहा—"राजादेव उस जन्म में रानी ताशा के दिवाने रहे हैं। मुझे डर है कि कहीं इस बार भी राजा देव, रानी ताशा को देखते ही, रानी ताशा के दीवाने हो गए तो तब मुश्किल हालात सामने आ जाएंगे। राजा देव को उस जन्म की याद आनी रह जाएगी और रानी ताशा, राजा देव को अपने रूप जाल में उलझाकर, सदूर ग्रह पर वापस न ले जाए। वहां जाकर राजा देव को पहले का जन्म याद आया तो उसका कोई फायदा नहीं होगा। वो राजा देव को तो, सदूर पर ले ही गई। महापंडित वहां पर फौरन राजा देव के मस्तिष्क के उस हिस्से को साफ कर देगा, जहां पर पहले के जन्म की यादें मौजूद हैं। इस प्रकार रानी ताशा, राजा देव को वापस पा लेगी और राजा देव के साथ पहले की, की गई बेईमानी की सजा से भी मुक्त हो जाएगी। क्योंकि तब न तो राजा देव को कुछ याद आएगा और न ही सजा मिलेगी राजा देव से।"

"फिर तो तुम्हें कुछ करना चाहिए बबूसा।" धरा कह उठी।

"मेरे से जो बन पा रहा है, वो मैं कर रहा हूं, जो कर पाऊंगा, वो भी करूंगा। मैं राजा देव का सेवक हूं। राजा देव से प्यार करता हूं। परंतु महापंडित की करतूतों की वजह से मुझे परेशानी आ रही है। वो राजा देव का साथ दे रहा है। उसने मुझसे ताकतवर सोमाथ का निर्माण करके, रानी ताशा के साथ भेज दिया। अब किसी मौके पर रानी ताशा सामने आएगी तो सोमाथ भी साथ में होगा और मेरे लिए खतरा बढ़ जाएगा। मेरे पास ऐसा कोई उपाय नहीं है कि मैं राजा देव को भी बचा लूं और रानी ताशा को दूर रखते हुए, सोमाथ का भी मुकाबला कर सकूं।"

"क्या पता सोमाथ तुमसे कमजोर हो बबूसा।" धरा ने कहा।

बबूसा ने होंठ भींच लिए।

"हो सकता है वो तुमसे डर जाए।" धरा पुनः बोली।

"ये नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"ये बात मुझे महापंडित ने बताई है और महापंडित कभी झूठ नहीं बोलता।" बबूसा कह उठा।

"क्या पता वो रानी ताशा का साथ देने के फेर में, झूठ बोल रहा हो।"

"महापंडित को जो बात करनी होती है, वो स्पष्ट तौर पर करता है। वह इस तरह झूठ का सहारा नहीं लेगा। अब वो रानी ताशा का साथ दे रहा है तो सबके सामने दे रहा है। चोरी से साथ नहीं दे रहा।"

"मुझे तो लगता है कि तुम्हें मानसिक रूप से कमजोर करने के लिए महापंडित ने सोमाथ के बारे में तुमसे ऐसा कहा।"

"मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा—"तुम रानी ताशा को नहीं जानती, वो बहुत ही चालाक-मक्कार औरत है। वो अपना काम पूरा करना जानती है, जबकि राजा देव इन चालों से दूर रहकर अपने काम में व्यस्त रहने की आदत वाले हैं। इसी बात का मुझे डर है कि रानी ताशा कोई चाल न चल दे।"

धरा ने कुछ नहीं कहा।

"राजा देव।" चंद पलों बाद बबूसा बोला।

"हां।"

"जब रानी ताशा के साथ आपने फोन पर बात की तो क्या आप अपने पूरे होश गंवा बैठे थे?"

"मुझे कुछ भी याद नहीं रहा।" देवराज चौहान ने कहा।

"जगमोहन पर हमला किया तो तब भी पता नहीं था कि आप क्या कर रहे हैं।" बबूसा ने पूछा।

"नहीं पता था। पता होता तो मैं ऐसा करता ही क्यों?" देवराज चौहान ने गहरी सांस ली—"अपने होशाहवास में मैं जगमोहन पर हाथ नहीं उठा सकता। मुझे थोड़ा-सा याद है कि मैंने रानी ताशा से फोन पर बात की, उसके बाद मुझे कुछ भी याद नहीं। जब होश आया तो अपने को R.D.X. के पास मौजूद पाया।"

"R.D.X., वो लोग, जिस घर में आप थे?" बबूसा ने पूछा।

"हां।" फिर देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा—"तुम R.D.X. के यहां कैसे...।"

"वीरेंद्र त्यागी आया था।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"त्यागी?" देवराज चौहान बुरी तरह चौंका।

"बंगले पर था, जब मैं तुम्हें ढूंढ़कर थका-हारा वापस पहुंचा।" उसके बाद जगमोहन ने त्यागी से वास्ता रखती सारी बात बताई—"इस प्रकार मैं तुम तक पहुंच सका और त्यागी को बोला कि अब वो इस मामले में दखल न दे और चला जाए। वो चला गया।"

"ये तो बहुत गलत हुआ। त्यागी ने हमारा ठिकाना देख लिया।" देवराज चौहान बोला—"उस जैसा मक्कार इंसान अब हमारे साथ कोई नई चाल चल सकता है।"

जगमोहन होंठ भींचे कार ड्राइव करता रहा।

"हमें ठिकाना बदलना होगा। नया बंगला खरीदना होगा।"

"इन हालातों में?" जगमोहन ने कहा।

"क्या मतलब?"

"अभी रानी ताशा का मामला सिर चढ़कर बोल रहा है। हम बुरी तरह उलझे पड़े हैं। ऐसे में नए बंगले को तलाश करना, उसे खरीदना, इन सब बातों में काफी वक्त लगेगा और रानी ताशा कभी भी सामने आ सकती है। बेहतर ये ही होगा कि पहले रानी ताशा का मामला खत्म हो जाए।"

"ये मामला मुझे आसानी से खत्म होता नहीं लगता जगमोहन।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ये कोई डकैती या किसी दुश्मन का मामला नहीं है। ये एक ऐसी औरत का मामला है, जो खुद को दूसरे ग्रह से आया बताती है और मुझे वहां का राजा बताती है। मुझे वापस ले जाना चाहती है उस ग्रह पर। जबकि बबूसा की बात सुनें तो सिर और भी घूम जाता है। ये महापंडित और मेरी बातें बताने लगता है, ऐसी बातें कि कुछ समझ में नहीं आता कि मैं अचानक किस तूफान में आ फंसा हूं।"

"राजा देव। आप क्या सोचते हैं कि मैं गलत कह रहा हूं।" बबूसा बोला।

"तुम गलत नहीं हो। मुझे तुम पर विश्वास हो चुका है। परंतु मैं खुद को

नहीं समझा पा रहा हूं कि मैं कैसे शिकंजे में फंस चुका हूं। समझ में नहीं आता कि ये मामला कैसे खत्म होगा।"

"अभी तो शुरू भी नहीं हुआ।" धरा कह उठी—"और तुम खत्म करने की बात कर रहे हो। शुरू तो तब होगा जब रानी ताशा सामने आएगी। जब तुम रानी ताशा का चेहरा देखोगे।"

"मैं।" जगमोहन एकाएक बोला—"मैंने रानी ताशा को देख लिया है।"

"कब?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"तुम्हारी तलाश में मैं होटल सी-व्यू पर्ल में जा पहुंचा था, होटल का स्टाफ बनकर। बाथरूम चैक करने के बहाने मैंने कमरे में प्रवेश किया। मैंने सोमाथ को भी देखा। एक और युवती थी। और वो रानी ताशा थी, सबसे हसीन, बेहद खूबसूरत, लाजवाब, मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि वो मुझे कितनी अच्छी लगी।"

देवराज चौहान ने गहरी सांस लेकर आखें बंद कर लीं।

"वो कयामत है कयामत।" बबूसा कह उठा—"वो कभी राजा देव को भी अच्छी लगी थी, परंतु उसने राजा देव के साथ जो धोखा किया, वो मैं जानता हूं तुम नहीं जानते।"

कार बंगले पर पहुंची। अभी वो चारों कार से बाहर निकले थे कि भीतर से निकलकर दरवाजे पर नगीना आ खड़ी हुई। उसके चेहरे पर चिंता और परेशानी स्पष्ट नजर आ रही थी। वो आगे बढ़ती कह उठी।

"कहां चले गए थे आप सब लोग। मैं बंगले पर पहुंची तो यहां कोई भी नहीं था। जगमोहन का फोन भी बंगले में रखा था।" नगीना पास आ पहुंची—"कहां चले गए थे आप सब।"

"रानी ताशा का फोन आया था।" धरा बोली।

"क्या?" नगीना चौंकी—"फिर?"

"देवराज चौहान ने बात की।" धरा गम्भीर थी—"बात करते ही ये अपने होश खो बैठा। रानी ताशा उसे सी-व्यू पर्ल होटल में बुला रही थी। जगमोहन ने रोकना चाहा तो जगमोहन को बेहोश कर दिया। तब देवराज चौहान अपने होश में नहीं था। बबूसा नहा रहा था। देवराज चौहान नंगे पांव इसी हाल में भाग निकला बाहर।"

नगीना सन्न रह गई।

बाकी बात जगमोहन ने बताई कि कैसे, त्यागी के माध्यम से देवराज चौहान तक पहुंचा। इन्हीं बातों के दौरान वे सब भीतर पहुंचे कि देवराज चौहान और जगमोहन के कदम थम से गए।

बबूसा और धरा की निगाह हाल ड्राइंग रूम में मौजूद मोना चौधरी पर जा टिकी।

"मोना चौधरी?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मैं बुलाकर लाई हूं।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस वक्त हम मुसीबत में हैं। रानी ताशा जाने क्या करना चाहती है। तो मिन्नो को मैंने अपनी सहायता के लिए बुला लिया।"

"इतनी जल्दी कैसे आ गई।" जगमोहन बोला—"ये तो दिल्ली में रहती है।"

"आज ये मुम्बई में अपने फ्लैट पर आई हुई थी।" नगीना बोली—"इत्तफाक से मैं पहुंच गई।"

वे सब मोना चौधरी के पास पहुंचे।

"ये आपकी क्या लगती है?" धरा ने पूछा।

"बहन।" नगीना ने कहा।

"ओह। पर ये हमारी क्या सहायता करेगी।" धरा ने अजीब-से स्वर में कहा।

"ये मोना चौधरी है।" जगमोहन बोला।

"तो?"

"शायद तुम मोना चौधरी को नहीं जानती। नाम भी सुना नहीं होगा।"

"नहीं।"

"तो खामोश रहो।"

मोना चौधरी देवराज चौहान को देखकर मुस्कराई और बोली।

"बेला ने मुझे बताया कि आजकल तुम किस मुश्किल दौर से गुजर रहे हो।"

"सब ठीक है। मैं ये मामला खुद ही संभालना चाहता हूं।" देवराज चौहान ने भी मुस्कराकर कहा।

"ये आप क्या कह रहे हैं।" नगीना बोल पड़ी।

"मैं सही कह रहा हूं कि अब ये मामला मैं ही संभालूंगा।" देवराज चौहान गम्भीर हो गया—"पहले मैं इस सारे मामले को हलके में ले रहा था। परंतु आज होश खो देने के बाद, जब मुझे होश आया तो समझ गया कि मुझे रानी ताशा को गम्भीरता से लेना होगा। अभी तक मैंने कुछ नहीं किया, परंतु अब मैं ही ये मामला देखूंगा।"

"ऐसे में मिन्नो हमारे साथ रहे तो आपको एतराज क्यों?" नगीना बोली।

"अगर मैं इस मामले को ठीक से नहीं संभाल सका तो फिर तुम मोना चौधरी को बुला सकती हो।"

नगीना ने उलझन भरी निगाहों से मोना चौधरी को देखा।

"तुम परेशान मत होवो बेला। मैं किसी बात का बुरा नहीं मान रही।" मोना चौधरी ने मुस्कराकर कहा—"देवराज चौहान अगर ये मामला संभाल लेता है तो ठीक है, नहीं तो मुझे फोन कर देना, मैं आकर कोशिश कर लूंगी सब ठीक करने का।"

"तो मिन्नो को जाने दूं?" नगीना ने देवराज चौहान को देखा।

"खाना हमारे साथ खाकर जाना।" जगमोहन बोला।

"रात को महाजन दिल्ली से आ रहा है। हमें किसी काम पर पूना जाना है।" मोना चौधरी ने कहा—"इसलिए मैं खाने के लिए रुक नहीं सकती। बाय नगीना।" उसने नगीना के कंधे पर हाथ रखा—"जरूरत हो तो मुझे जरूर बुला लेना।"

नगीना ने सिर हिला दिया।

मोना चौधरी सबको बाय-बाय करती बाहर निकलती चली गई।

"तुम्हारी बहन तो बहुत अच्छी है।" धरा कह उठी।

सबने एक-दूसरे को देखा।

देवराज चौहान आगे बढ़कर सोफे पर जा बैठा।

"हमें अब इस मामले पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।" देवराज चौहान बोला—"मुझे इस बात का एहसास हो चुका है कि रानी ताशा को हम हल्के में नहीं ले सकते। आज जैसे मैं होश खो बैठा। जगमोहन को बेहोश करके रानी ताशा की तरफ जिस हाल में भागा, वो नहीं होना चाहिए था। मुझे हैरानी है कि रानी ताशा फोन पर ही, अपनी आवाज से मेरे दिमाग पर काबू पा रही है। इस तरह तो वो मुझे बहुत ज्यादा परेशान कर देगी। मुझे उससे फोन पर बात नहीं करनी है अब।"

"मैंने तो तब भी तुम्हें फोन देने को मना किया था।" धरा ने कहा।

"हमें आगे के हालातों पर सोचना है।" देवराज चौहान का स्वर गम्भीर था—"रानी ताशा हम पर हावी होने का प्रयत्न कर रही है। हम अपने बचाव की खातिर छिपे पड़े हैं, या फिर ये कह ले कि हमने कुछ करने की कोशिश ही नहीं की। अगर किसी पर पहले ही हमला कर दिया जाए तो सामने वाले की, आगे बढ़ने की रफ्तार में कमी आ जाती है। हमें ऐसा ही कुछ करना होगा कि रानी ताशा अपनी हरकतें रोक ले और पीछे हट...।"

"पर रानी ताशा ने अभी तक किया ही क्या है?" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"उसने कुछ नहीं किया। उसका सिर्फ फोन आता है। तुम बात करते हो और होश गंवा बैठते हो। बाकी सब बातें तो बबूसा ने ही हमारे दिमाग में भरी है। अगर बबूसा हमारे पास न होता तो सब कुछ सामान्य ही था।"

"तुम्हारा मतलब कि मैंने गलत बातें कही हैं तुम्हें।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा।

"मेरा ये मतलब नहीं था।" जगमोहन बोला—"मैं कुछ और कह रहा था देवराज चौहान से। तुम मतलब नहीं समझे।"

"माना कि रानी ताशा की तरफ से फोन आने के अलावा, दूसरी कोई बात नहीं हुई।" नगीना बोली—"परंतु रानी ताशा ने हमें परेशान कर रखा है। रानी ताशा का मामला हम पर हावी होता जा रहा है।"

"सबसे अहम बात तो ये है कि रानी ताशा हमें फोन क्यों करती है?" देवराज चौहान बोला।

"वो सी-व्यू पर्ल होटल में ठहरी है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"भाभी कुछ घंटों पहले मैंने वहां जाकर उसे देखा है। वो सच में इंतहाई खूबसूरत है। उस जैसी मैंने पहले कभी नहीं देखी।"

"तुमने कैसे देख लिया रानी ताशा को?" नगीना ने पूछा।

"होटल का कर्मचारी बनकर उसके कमरे में गया था।"

"अगर वो सब कुछ सच कहती है तो मुझे खुशी है कि वो इंतहाई खूबसूरत है।" नगीना ने मुस्कराकर देवराज चौहान को देखा—"इनकी पसंद कभी भी हलकी नहीं हो सकती।"

"बेकार की बातें न करो नगीना।" देवराज चौहान बोला—"इस वक्त मैं गम्भीर हूं और...।"

"जितना तुम समझ रही हो, वो उससे भी ज्यादा खूबसूरत है।" बबूसा बोला—"वो सदूर ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत है। ग्रह पर भी उस जैसी कोई नहीं और वो जो भी कह रही है, सच कह रही है। मैं इस बात का गवाह हूं और इस बात का भी गवाह हूं कि उसने बहुत बुरी तरह राजा देव को धोखा दिया था। मैंने देखा था, अपनी आंखों से देखा था, परंतु मैं उस वक्त कुछ नहीं कर सकता था। उन्हें रोक नहीं सकता था और उन्होंने राजा देव को ग्रह से बाहर फेंक दिया था। रानी ताशा तब सामने खड़ी ठहाके लगा रही थी। सेनापति धोमरा ने अपने तीन सहायकों के साथ राजा देव को उठाए पाइप में फेंक दिया। मैं सब देख रहा था।" बबूसा की आवाज स्वप्न से भरी थी—"उस वक्त मैंने रानी ताशा का वो हिला देने वाला रूप देखा था। वो ठहाके...राजा देव बहुत-बहुत कह रहे थे रानी ताशा को कि वो बहुत बड़ी भूल कर रही है ऐसा करके। ताशा-ताशा कहकर पुकारे जा रहे थे और रानी ताशा ठहाके लगाती जा रही थी। उन्माद उसके सिर पर सवार था। ऐसा पागलपन जो मैंने तब ही रानी ताशा में देखा था। वो नजारा मैं कभी भी नहीं भूल सकता। जब भी उस दृश्य के बारे में सोचता हूं तो मेरे शरीर में ठंडी सिहरनें दौड़ने लगती है। आंखें बंद कर लेता हूं कि जैसे मेरा दिमाग वो सब देखना भूल जाएगा। परंतु दिमाग देखता है। बार-बार देखता है। जब भी भूलने लगता हूं तो दिमाग याद दिला देता है वो कंपाने वाले लम्हे। राजा देव को ग्रह के बाहर फेंका जाना। रानी ताशा के ठहाके। ये सब कुछ देखकर मैंने कैसे सहन कर

लिया। मेरे में तब जान ही नहीं बची थी कि मैं आगे बढ़ पाता, रानी ताशा को रुक जाने को कहता। मैं स्तब्ध था, शायद इसलिए कि रानी ताशा का नया रूप मेरे सामने था। राजा देव की जान रानी ताशा में बसती थी। ताशा के होंठों से आह भी निकले तो राजा देव तड़प उठते थे और उसी रानी ताशा ने राजा देव के साथ कैसा बुरा व्यवहार किया। राजा देव अगर अभी आपको वो वक्त याद आ जाए तो मैं जानता हूं कि आप अपने पर काबू नहीं रख पाएंगे और फौरन रानी ताशा की जान ले लेंगे। परंतु इस वक्त आप उस बच्चे की तरह हैं जिसे कुछ पता नहीं होता। जो हर बात से अंजान होता है। अगर मुझे आपका साथ मिले तो मैं रानी ताशा और सोमाथ का मुकाबला कर सकता हूं।" बबूसा के स्वर में दर्द था।

"कैसा साथ बबूसा?"

"आप जब रानी ताशा को देखें तो उसके दीवाने न हो जाएं। उस पर मोहित न हो जाएं। अपने होश कायम रखें। सिर्फ इतना ही साथ चाहिए कि आपका झुकाव रानी ताशा की तरफ न हो बल्कि उसे दुश्मन की तरह समझें।"

देवराज चौहान बबूसा को देखने लगा।

"जवाब दीजिए राजा देव। थोड़ा-सा साथ मांगा है आपका।" बबूसा आशा भरे स्वर में बोला।

"मैं हां कह दूं।" देवराज चौहान गम्भीरता स्वर में बोला—"और वक्त आने पर, रानी ताशा के सामने मैं अपने पर काबू न रख सका तो ये बहुत ही गलत बात हो जाएगी। परंतु मैं तुम्हारी बात याद रखूंगा और तुम्हारा साथ देने की पूरी कोशिश करूंगा। मैं खुद चाहता हूं कि रानी ताशा के सामने अपने होश कायम रखूं।"

"पता नहीं क्या होने वाला है।"

"हमें कुछ सोचना चाहिए कि हम रानी ताशा का मुकाबला कैसे करें?" जगमोहन बोला।

"रानी ताशा अभी तक सामने नहीं आई। उसने कुछ किया ही नहीं तो क्या सोचेंगे हम।" नगीना ने कहा।

"ये बात तो है।" धरा ने सिर हिलाया—"रानी ताशा ने अभी तक कुछ किया भी तो नहीं है।" धरा ने बबूसा के चेहरे पर नजर मारी—"ये सब तो हम बबूसा के कहने पर ही सोचे जा रहे हैं। उलझन में पड़े हैं। परंतु मैं बबूसा की बातों की हकीकत समझ सकती हूं क्योंकि मैं डोबू जाति तक जा पहुंची थी। वो बुरा वक्त मैं कभी नहीं भूल सकती। जोगाराम की बुरी मौत को मैंने अपनी आंखों से देखा था।" धरा ने झुरझुरी ली—"मेरा दिमाग खराब हो गया था जो मैं उस तरफ चली गई। मैं मौत को बहुत करीब से देखकर लौटी

तो डोबू जाति वाले मेरी मां तक पहुंच कर मां को अपने विशिष्ट अंदाज में मार चुके थे। चक्रवर्ती साहब और प्रकाश को मेरे सामने मारा। अगर बबूसा ने मुझे बचाया न होता तो आज मैं भी जिंदा नहीं होती। उस वक्त की याद आते ही मेरा रोम-रोम कांप उठता है।"

"तुम्हें कुछ नहीं होगा।" बबूसा बोला—"मैं तुम्हारे साथ हूं। परंतु अब डोबू जाति के हालात बदल चुके हैं। वहां पर रानी ताशा ने अपना साम्राज्य फैला दिया है। सब कुछ रानी ताशा के काबू में है। परंतु ये ज्यादा देर तक नहीं रहेगा। मेरे कहने पर सोलाम, मुम्बई में मौजूद डोबू जाति के उन योद्धाओं को इकट्ठा कर चुका है, जो तुम्हें मारने के लिए भेजे गए थे। सोलाम उन्हें बता रहा है कि रानी ताशा ने डोबू जाति को जीत लिया है। वहां के हर मुख्य आदमी को मार दिया गया है। सोलाम की बात पर वो जरूर यकीन करेंगे उसके बाद सोलाम मेरे कहे मुताबिक डोबू जाति की तरफ उन सब योद्धाओं के साथ चल देगा और किसी खास जगह पर रुककर मेरा इंतजार करेगा। यहां से फुर्सत पाकर जब मैं उनके पास पहुंच जाऊंगा तो हम सब मिलकर डोबू जाति में मौजूद, रानी ताशा के आदमियों को खत्म करेंगे और डोबू जाति को पहले की तरह आजाद कर देंगे। मैं बचपन से वहीं रहा, वहीं बड़ा हुआ। मुझे ये पसंद नहीं कि डोबू जाति पर रानी ताशा राज्य करे।"

"पर तुम तो यहां हो। वहां कैसे जाओगे?" धरा बोली।

"यहां का मामला खत्म होने के बाद उधर का रुख करूंगा। डोबू जाति में अगोमा तारों वाले कमरे में, सदूर ग्रह के दिए उन यंत्रों की देखभाल करता है, जिससे दूर मौजूद लोगों से बात की जाती है। अगोमा और सोलाम उन्हीं यंत्रों के द्वारा आपस में सम्पर्क में रहते हैं। जब मुझे जाना होगा तो मैं अगोमा से यंत्र पर बात करके जान लूंगा कि सोलाम योद्धाओं के साथ कहां पर मौजूद है। रानी ताशा डोबू जाति पर काबू पाए नहीं रख सकती।"

"ये बाद की बातें हैं।" जगमोहन बोला—"अभी तो इधर के हालातों को देखना है।"

"मेरे खयाल में।" नगीना गम्भीर स्वर में बोली—"पहले देख लेते हैं कि रानी ताशा क्या करती है सामने आकर।"

"वो सारा मामला एक ही बार में खत्म कर देगी।" बबूसा बोला—"राजा देव को अपने साथ ले जाएगी। जो भी रोकने की कोशिश करेगा, सोमाथ उसे टिकने नहीं देगा। सम्भव है रानी ताशा के साथ सदूर ग्रह के और लोग भी हों। उनके पास जोबिना (हथियार) होगा तो वो चंद पलों में सबको राख का ढेर बना देंगे। रानी ताशा को सिर्फ राजा देव चाहिए। वो अपनी चाहत पूरी करने के लिए कुछ भी कर सकती है। किसी की भी जान ले सकती है।"

"तो फिर क्या करें बबूसा?" नगीना ने पूछा।

"मैं बताऊं।" धरा बोली—"हम चुपचाप मुम्बई से दूर निकल जाते हैं। किसी को पता नहीं चलेगा।"

"पता चल जाएगा।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"सदूर ग्रह पर बैठा महापंडित, अपनी मशीनों से बात करके पता लगा लेगा कि राजा देव पृथ्वी ग्रह पर कहां पर हैं और वो रानी ताशा को बता देगा। रानी ताशा फिर वहीं पहुंच जाएगी, जिस शहर में हम होंगे और ये ही हालात फिर पैदा हो जाएंगे। महापंडित की मौजूदगी में हम रानी ताशा की निगाहों से बचे नहीं रह सकते। रानी ताशा राजा देव को ढूंढ़ रही है। वो कभी भी ढूंढ़ लेगी। महापंडित की मशीनों ने राजा देव के बारे में बता दिया तो वो रानी ताशा से कह देगा कि वहां पर राजा देव मौजूद हैं।"

"तुम्हारा मतलब कि रानी ताशा से सामना हर हाल में होगा।" जगमोहन ने कहा।

"इस बात से बचा नहीं जा सकता।" बबूसा ने सिर हिलाया—"रानी ताशा खाली हाथ वापस नहीं जाने वाली। वो जो चाहती है, पा ही लेती है। पीछे हटना उसने कभी नहीं सीखा। रानी ताशा को राजा देव चाहिए तो राजा देव को वो लेकर ही रहेगी।"

"जबर्दस्ती?" नगीना का चेहरा कठोर हो गया।

"हां और रानी ताशा को कोई नहीं रोक सकता। अब तो सोमाथ जैसा ताकतवर इंसान साथ में है उसके। मैं रानी ताशा की आदत को अच्छी तरह जानता हूं फिर ये तो राजा देव का मामला है। वो अपना सोचा पूरा करके रहेगी।"

"मतलब कि देवराज चौहान को सदूर ग्रह पर ले जाएगी?" जगमोहन का स्वर कठोर हो गया।

"अवश्य।"

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"तुम कुछ नहीं कर सकते। तुमने शायद मेरी बातों को ध्यान से सुना नहीं कि उसके साथ सोमाथ है। उसके साथ अपने आदमी भी जरूर होंगे, और उनके पास जोबिना होगा, जो पलों में सामने वाले का राख कर देता है। अब तो डोबू जाति भी रानी ताशा के कब्जे में है। डोबू जाति के योद्धाओं को भी वो इस्तेमाल कर सकती है, परंतु मुझे नहीं लगता कि वो डोबू जाति के योद्धाओं को इस्तेमाल करेगी। वो खुद ही सोमाथ और अपने लोगों के सहारे सब संभाल लेगी।"

देवराज चौहान ने गम्भीरता में डूबे सिग्रेट सुलगाई।

"हमें पहले ही कुछ इंतजाम करके रखना होगा कि ऐसा वक्त आए तो उनका मुकाबला कर सकें।" जगमोहन कठोर स्वर में कहा।

तभी देवराज चौहान बबूसा से बोला।

"ये बात पक्की है कि जब मैं रानी ताशा को देखूंगा तो धीरे-धीरे मुझे सदूर ग्रह की याद आनी शुरू हो जाएगी?"

"महापंडित ने ऐसा ही कहा था।"

"वो गलत भी कह सकता है?"

"नहीं।" बबूसा दृढ़ स्वर में बोला—"महापंडित झूठ नहीं बोलता।"

"तो इसका एक रास्ता है मेरे पास।"

"क्या?" नगीना के होंठों से निकला।

"रानी ताशा सी-व्यू पर्ल होटल में ठहरी है। हम वहां नजर रख सकते हैं। वो कभी तो बाहर निकलती होगी। ऐसे में मैं उसे आसानी से देख सकता हूं।" देवराज चौहान ने कहा—"सम्भव है, रानी ताशा को मुझ तक पहुंचने में वक्त लग जाए और तब तक मुझे सदूर ग्रह की कुछ बातें याद आ जाएं।"

वो सब एक-दूसरे को देखने लगे।

"ये अच्छा आईडिया है।" धरा कह उठी।

"ये ठीक रहेगा।" जगमोहन के होंठों से निकला—"ये हमारे दिमाग में पहले क्यों न आया?"

"तो हमें रानी ताशा की सही स्थिति मालूम करनी होगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"उसकी सही स्थिति शायद अभी हमें पता चल जाएगा।" नगीना मोबाइल निकालते बोली—"प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज ने कहा था कि वो रानी ताशा पर नजर रखेगा। उससे पूछा जा सकता है।" नगीना ने नम्बर मिलाए। फोन कान से लगा लिया।

सबकी निगाह नगीना पर थी।

"हैलो।" उधर से अर्जुन भारद्वाज की आवाज नगीना के कानों में पड़ी।

"अर्जुन साहब।" नगीना बोली—"आप इस वक्त कहां पर हैं?"

"होटल सी-व्यू पर्ल में। रानी ताशा के सामने वाला कमरा लेकर, रानी ताशा के कमरे पर नजर रखे हूं।"

"रानी ताशा के सामने वाला कमरा?"

"हां। क्यों क्या बात है?"

"आपके कमरे में रहकर रानी ताशा को देखा जा सकता है?"

"जरूर देखा जा सकता है अगर वो कमरे के दरवाजे पर आती है तो, परंतु बात क्या है?"

"मैंने आपको बताया था कि अगर देवराज चौहान, रानी ताशा के चेहरे को देख लेता है तो उसे सदूर ग्रह की बातें याद आनी शुरू हो जाएंगी।" नगीना ने कहा—"इसलिए देवराज चौहान चुपके से रानी ताशा को देखना चाहता है।"

"समझा।" उधर से अर्जुन भारद्वाज की आवाज आई—"ऐसा है तो देवराज चौहान रानी ताशा के कमरे में जाकर, रानी ताशा को देखकर, वहां से भागकर निकल सकता है।"

"ऐसा करना खतरनाक होगा। बबूसा कहता है कि रानी ताशा को ठीक सामने पाकर, देवराज चौहान होश खो सकता है। आज ही बहुत गड़बड़ हो गई। रानी ताशा का फोन आया। देवराज चौहान ने सुना और...।" नगीना ने सब कुछ बताया।

अर्जुन की जवाब में आवाज नहीं आई।

"अर्जुन जी...।" नगीना ने खामोशी पाकर कहा।

"सुन रहा हूं। सोच रहा हूं। तो आप चाहती हैं कि देवराज चौहान यहां मेरे पास आ जाए।"

"हां। वहां से मौका मिलने पर आसानी से वो रानी ताशा को देख सकेगा।"

"खयाल बुरा नहीं है, पर खतरा भी है। रानी ताशा की नजर भी इधर पड़ सकती है।" अर्जुन का सोच भरा स्वर कानों में पड़ा।

"फिर भी ये रास्ता बढ़िया है।"

"जैसा आप चाहें नगीना जी। मुझे कोई एतराज नहीं।"

"तो रात गहरी होते ही हम आते हैं।"

"हम-हम-कौन?"

"हम सब...।"

"ये गलत होगा। ज्यादा लोगों की वजह से बात बिगड़ सकती है। मेरे साथ पहले से ही नीना है। आप सब कमरे में आ गए तो किसी तरह की भी गड़बड़ हो सकती है, जबकि ये काम खामोशी से होना चाहिए। वो लोग मुझे और नीना को जानते हैं, देख चुके हैं। हमें बहुत सतर्कता से रहना पड़ रहा है। मेरी सलाह है कि सिर्फ देवराज चौहान ही मेरे पास आए।"

नगीना एकाएक कुछ न कह सकी। फिर बोली।

"आपकी बात सही है, परंतु अगर देवराज चौहान रानी ताशा को देखकर अपने होश गंवा देता है तो उसे संभालना भी पड़ेगा। ऐसे में हम सब वहां होते तो ज्यादा बेहतर होता।"

"संभालने के लिए मैं हूं, नीना है। आप देवराज चौहान को अकेला ही भेजिए।"

"ये फैसला मैं अकेले नहीं ले सकती। बात करके आपको दोबारा फोन करती हूं।"

"ठीक है।"

नगीना ने फोन बंद किया और अर्जुन भारद्वाज की सारी बात बताई।

"राजा देव को मैं अकेले नहीं जाने दूंगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"रानी ताशा का चेहरा देख लेने पर, राजा देव को कुछ भी हो सकता है। ऐसे में रानी ताशा उसे देख लेगी तो, मेरी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।"

"अर्जुन तब देवराज चौहान को...।"

"ये मामला तुम लोगों के बस का होता तो मैं चिंता ही क्यों करता।" बबूसा ने चिंतित स्वर में कहा।

"मैं देवराज चौहान के साथ चला जाता हूं।" जगमोहन ने कहा।

"आप कुछ कहिए।" नगीना ने देवराज चौहान से कहा।

"मेरे पास कहने की कुछ नहीं है। देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"क्योंकि मैं नहीं जानता कि रानी ताशा को देखकर मुझ पर क्या असर होगा या कुछ भी नहीं होगा। क्या पता आने वाला वक्त कैसा हो।"

"मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।" जगमोहन बोला।

"जैसी तुम्हारी इच्छा—मैं...।"

"तुम नहीं, मैं राजा देव के पास रहूंगा।" बबूसा ने कहा—"वो जगह बहुत खतरनाक होगी। क्योंकि सामने के कमरे में रानी ताशा मौजूद होगी। राजा देव और रानी ताशा इतने करीब होंगे कि, मुझे समझ में नहीं आता कि तब क्या हो जाए। क्या पता महापंडित की मशीनें बता दें कि राजा देव कहां हैं। महापंडित रानी ताशा को बता दे। वहां पर मैं राजा देव को अकेला नहीं छोड़ सकता। हालात खतरनाक रुख की तरफ मुड़ सकते हैं।"

सबकी नजरें मिलीं।

"बबूसा ठीक कहता है।" धरा बोली—"इसे ही देवराज चौहान के पास होना चाहिए। कुछ हुआ तो ये ही सब ठीक करने की कोशिश कर सकता है। ये हालातों को सबसे बेहतर जानता है।"

चंद पलों की खामोशी के बाद जगमोहन ने कहा।

"ठीक है। बबूसा, देवराज चौहान के साथ जाएगा।"

"अभी रात के दस बज रहे हैं।" नगीना बोली—"देवराज चौहान को रात-रात में ही अर्जुन के पास पहुंच जाना चाहिए।"

"रात एक बजे मैं कार पर देवराज चौहान और बबूसा को होटल के बाहर छोड़ दूंगा।"

"तो मैं अर्जुन को प्रोग्राम बता दूं?" नगीना ने पूछा।

"कह दो।" देवराज चौहान सोचों में डूबा था।

नगीना अर्जुन भारद्वाज को फोन लगाने लगी। बात हुई प्रोग्राम बता दिया।

तभी धरा कह उठी। "भगवान न करे, जैसा मैं सोच रही हूं अगर वैसा हो गया तो तब क्या होगा?"

"क्या सोच रही हो तुम?" नगीना ने उसे देखा।

"अर्जुन भारद्वाज, रानी ताशा के सामने वाले कमरे में है। देवराज चौहान और बबूसा वहां जाते हैं। कमरे के सामने पहुंचते ही हैं तो तभी रानी ताशा अपने कमरे से बाहर निकले और देवराज चौहान को देख ले तो?"

पल भर के लिए सब थम से गए। एक-दूसरे को देखने लगे।

"ऐसा हो, सम्भव नहीं लगता।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ऐसा इत्तफाक लाख में से एक परसेंट हो सकता है जो कि नहीं होगा। तब रात के दो बज रहे होंगे। ऐसे में कोई दरवाजा खोलकर बाहर क्यों निकलेगा?"

"ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।" जगमोहन बोला—"ऐसा हो जाने का चांस बहुत कम है। इतना रिस्क तो हमें लेना ही होगा। अगर हम इस तरह अपनी कोशिश में सफल हो जाते हैं, देवराज चौहान रानी ताशा का चेहरा देख लेता है तो हमारी काफी समस्या हल हो जाएगी, अगर देवराज चौहान को सदूर ग्रह का जन्म याद आ जाता है तो...।"

"जरूर याद आएगा। महापंडित ने ऐसा ही कहा है।" बबूसा कह उठा।

जगमोहन सबके चेहरों पर नजर मार कर बोला।

"रात एक बजे मैं, देवराज चौहान और बबूसा होटल सी-व्यू पर्ल रवाना होंगे।"

▭ ▭

'राजा देव।' रानी ताशा बेड पर लेटी बड़बड़ा उठी—'तुम कहां हो राजा देव। मेरे देव। तुमने तो मेरे पास आने को कहा था, तुमने कहा था कि तुम आ रहे हो, तुम तो हमेशा ही अपना वादा निभाते हो। अपना कहा कभी नहीं भूलते, फिर आते क्यों नहीं? मैं तुम्हारे बिना तड़प रही हूं। सदूर ग्रह पर तुम मुझे कितना प्यार किया करते थे। वो प्यार मैं कभी नहीं भूल सकती। इस प्यार का एहसास मुझे तब हुआ जब मैंने तुम्हें ग्रह से बाहर फेंक दिया देव।' रानी ताशा बड़बड़ा रही थी। उसकी आंखों से आंसू निकल पड़े—'मैं बहुत बड़ी भूल कर बैठी। तीसरे ही दिन मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया।

मैं सेनापति धोमरा की बातों में फंस गई थी। उसकी बातों में आ गई। तब वो किले की रखवाली कर रहा था और तुम लम्बे वक्त से पोपा का निर्माण करने के लिए गए हुए थे। मैंने तुम्हें खो दिया था राजा देव। मेरे प्यारे देव, जब मुझे इस बात का एहसास हुआ तो, मैं पागल हो गई। तुम्हें वापस भी नहीं ला सकती थी। तब मुझे पता चला कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूं। तुम ही मेरे प्यार हो। तुम्हारे बिना मैं वक्त नहीं बिता सकती। मुझे हर समय तुम चाहिए। अपने आस-पास, मुझे तंग करते, मुझसे शरारत करते। तुम्हारे बिना मैं कुछ भी नहीं। तब सबसे पहले मैं तलवार उठाकर धोमरा के पास गई और उसका गला कटा डाला। उसी की बातों में फंसकर मैं इतनी भूल कर बैठी थी परंतु क्या फायदा, तुम तो हमेशा के लिए चले गए थे। मेरे दिन-रात इतने भारी थे कि काटे, कट नहीं रहे थे। मैं शायद मर ही जाती, परंतु जब मैंने धोमरा को मारा तो तब महापंडित ने मुझे हौसला दिया कि तुम जिंदा हो शायद दोबारा मैं तुम्हें पा सकूं। महापंडित के ये शब्द मेरे लिए बहुत कीमती थे। मैं इसी सहारे जीने लगी मैंने बार-बार तीन जन्म बदले, महापंडित ने हर बार मुझे ताशा के रूप में, रानी के रूप में किले में बनाए रखा। बहुत कष्ट सहा, तुम्हारी याद में देव। महापंडित हर जन्म में मुझे बताया करता था कि तुम बार-बार पृथ्वी पर जन्म ले रहे हो। सदूर ग्रह की बातें तुम भूल चुके हो। आह—मैं तुम्हें सब कुछ बताना चाहती हूं देव। तुमसे माफी मांगना चाहती हूं। तुम्हें अपने साथ वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती हूं। तुम्हारे साथ मैं फिर वही प्यार की दास्तान दोहराना चाहती हूं। अब मैं तुम्हें बहुत प्यार करूंगी। कोई भूल नहीं करूंगी। मेरी सब गलतियों को माफ कर दो देव। मैं पहले ही तुम्हारे बिछोह में बहुत दर्द सह चुकी हूं। देखो मैं तुम्हें लेने के लिए, तुम्हारे ही बनाए पोपा पर सवार होकर सदूर ग्रह से पृथ्वी पर आई हूं। शायद पोपा तुमने अंजाने में ही बना दिया होगा कि उस पर बैठकर कभी तुम्हें ही ढूंढ़ने निकलूंगी। आ जाओ देव, अब आ भी जाओ। और इंतजार नहीं होता।' बैड पर लेटी रानी ताशा अपने ही खयालों में गुम बड़बड़ाए जा रही थी। आंखों से रह-रहकर आंसू बह रहे थे। इस हाल में उसका खूबसूरत-मासूम चेहरा और भी आकर्षक हो गया था। सुर्ख लिपिस्टिक में लिपटे होंठ कंपकंपा से रहे थे।

तभी सोमारा की आवाज कानों में पड़ी।

"रानी ताशा।"

रानी ताशा खयालों से बाहर निकली। बेड के पास खड़ी सोमारा को देखा।

"आप रो रही हैं।" सोमारा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"देव नहीं आया अभी तक। उसने आने को कहा था कि वो आ रहा है।" रानी ताशा ने कांपते स्वर में कहा।

"बहुत जल्दी उससे आपकी मुलाकात हो जाएगी।" सोमारा ने प्यार से कहा।

"ऐसे ही कहती है तू।"

"मैं सच कहती हूं। विजय बेदी, राजा देव को ढूंढ़ने के लिए सुबह शाम भटक रहा है। कुछ देर पहले ही वो सुबह का गया वापस लौटा है। वो कहता है शायद कल तक राजा देव का पता चल जाए।"

"सच।" रानी ताशा फौरन खुशी से उठ बैठी—"सच कह रही है सोमारा।"

"हां रानी ताशा, बेदी ने...।"

"मुझे रानी ताशा मत कहा कर। कितनी बार तुझे कहा है कि ताशा कह। हम सहेली हैं।"

"ठीक है, ताशा अब खाना खा लो। विजय बेदी ने होटल वालों को खाना लाने को कह दिया है। आता ही होगा।"

रानी ताशा ने गालों पर लुढ़के आंसुओं को साफ किया। उठी और बेदी को देखा।

बेदी सोफे पर बैठा उसे ही देख रहा था। सोमाथ भी एक तरफ बैठा था।

"सच में तुम कल तक राजा देव का पता लगा लोगे?" रानी ताशा ने बेदी से पूछा।

"आशा तो है।" विजय बेदी ने कहा—"एक आदमी ऐसा मिला है जो देवराज चौहान के साथी जगमोहन का पता जानता है। वो कहता है कि देवराज चौहान और जगमोहन एक साथ ही रहते हैं। परंतु इसमें कुछ खर्चा होगा।"

"कैसा खर्चा?"

"वो आदमी जगमोहन का पता बताने का, दो लाख रुपया मांगता है।" बेदी ने कहा।

"तो दे दो उसे।" रानी ताशा ने व्याकुल स्वर में कहा।

"मैं जानता था कि आप दो लाख रुपया देने को तैयार हो जाएंगी। इसी कारण मैंने उससे कल मिलने को कहा है।"

"अभी पैसा ले जाओ। अभी उससे पूछो कि...।"

"आज कुछ नहीं हो सकेगा। मैं अपनी राम कहानी बताने से रहा कि कैसे मैंने उसे ढूंढ़ा। बीच में दो लोग और भी हैं। वो आज नहीं कल ही मिल पाएगा।" बेदी का स्वर शांत था—"ऐसे काम जल्दी में नहीं होते।"

रानी ताशा सोफे पर आ बैठी। सोमारा पास में बैठ गई।

"तो कल तुम मुझे राजा देव तक पहुंचा दोगे न?"

"आशा तो है। आपसे ज्यादा मुझे जल्दी है। मैं अपना बाकी का पंद्रह लाख लेकर, सिर में फंसी गोली को ऑप्रेशन से निकलवा लेना चाहता हूं। वो मेरे

जीवन पर लटकती तलवार की तरह है। गोली ने अपनी जगह छोड़ी तो सिर में जहर फैल जाएगा और मैं मर जाऊंगा। पर मैं मरना नहीं चाहता। डॉक्टर वधावन इस ऑप्रेशन को...।"

"अपनी बातें हमें मत सुनाओ।" सोमारा कह उठी—"रानी ताशा वैसे ही बहुत परेशान हैं।"

विजय बेदी ने तुरंत मुंह छुपाया और बड़बड़ा उठा।

"साले खुद को दूसरे ग्रह से आया बताते हैं। जब मैं तुम लोगों की बकवास सुन रहा हूं तो तुम लोग मेरी बात क्यों नहीं सुन सकते। भाड़ में जाओ। मैंने नोट लेकर ऑप्रेशन कराने निकल जाना है। तुम्हारी परवाह ही कौन करता है।"

"सोमारा।" रानी ताशा ने तड़प भरे स्वर में कहा—"राजा देव को अब तक आ जाना चाहिए था।"

"राजा देव को बबूसा रोक रहा होगा। वो आपसे विद्रोह कर चुका है।"

"तुम्हारा तो पति है बबूसा, तुम उसे...।"

"इस जन्म में वो अभी तक आजाद है। शादी नहीं हुई। हम दोनों आमने-सामने भी नहीं पड़े। एक दूसरे को देखा भी नहीं।"

"ओह, फिर तो बबूसा तुम्हें भूल चुका होगा।"

"वो मुझे भूल नहीं सकता।" सोमारा ने गम्भीर स्वर में कहा—"भैया (महापंडित) ने उसका जन्म कराते समय मेरी याद उसके दिमाग में डाल दी थी। भैया ने बताया था ये। वो मुझे जरूर याद करता होगा।"

"तो बबूसा सामने पड़े तो उसे समझाना कि विद्रोह त्याग दे। वरना अंजाम बुरा होगा।"

"जरूर समझाऊंगी ताशा।" सोमारा एकाएक मुस्करा पड़ी—"एक बार उसे सामने तो पड़ने दीजिए।"

"बबूसा ने अगर विद्रोह न किया होता तो मेरी राह कितनी आसान हो जाती सोमारा।"

"राह अब भी कठिन नहीं है। आपके साथ सोमाथ है, होटल के दूसरे कमरे में ठहरे आपके दूसरे लोग भी हैं। उनके पास जोबिना है। आपकी राह में तो कोई रुकावटें डाल ही नहीं सकता।"

"परंतु राजा देव का पता नहीं मालूम हो पा रहा।"

"विजय बेदी पर भरोसा रखिए। वो पूरी कोशिश कर रहा है।" सोमारा बोली।

रानी ताशा ने हाथ उठाकर मोबाइल उठाया और बेचैनी से नम्बर मिलाने लगी।

"किसे ताशा?"

"राजा देव से पूछूंगी कि वो आए क्यों नहीं?" रानी ताशा ने व्याकुलता से कहा।

रानी ताशा ने फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल जाने लगी थी। तभी नगीना का स्वर कानों में पड़ा।

"कहो रानी ताशा?"

पल भर के लिए रानी ताशा ठिठक-सी गई। फिर बोली।

"कौन हो तुम?"

"नगीना, देवराज चौहान की पत्नी।"

"ओह, पृथ्वी ग्रह पर तुम राजा देव की पत्नी हो।" रानी ताशा गम्भीर स्वर में बोली।

"वो राजा देव नहीं, देवराज चौहान है।" नगीना की तीखी आवाज कानों में पड़ी।

"वो राजा देव हैं। मेरे देव, मेरा सब कुछ, मैं उन्हें...।"

"वो मेरे पति हैं।"

"पहले मेरा था। मेरा उस पर ज्यादा हक है। मैं राजा देव को वापस लेने आई हूं।" रानी ताशा ने बेचैन स्वर में कहा—"राजा देव को मेरे हवाले कर दो। मैं उनके बिना नहीं रह...।"

"देवराज चौहान अगर कभी तेरा था तो, वो वक्त बीत चुका है। आज देवराज चौहान मेरा है। तुम देवराज चौहान को मेरे से नहीं छीन सकती। वापस चली जाओ यहां से। तुम्हें देवराज चौहान नहीं...।"

"वापस जाऊंगी जरूर, परंतु राजा देव के साथ।"

"ये तुम्हारी भूल है कि तुम देवराज चौहान को ले जा सकोगी। वो मेरा पति है।"

रानी ताशा के कोमल चेहरे पर कठोरता जगह बनाने लगी।

"वो राजा देव हैं बेवकूफ। सदूर ग्रह का राजा। वो यहां के नहीं हैं। इस दुनिया के नहीं हैं। उन्हें वापस जाना ही होगा। पृथ्वी ग्रह पर राजा देव का मन भी नहीं लग रहा होगा। वो यहां रहने को मजबूर हैं क्योंकि उनके पास पोपा नहीं है, जिस पर सवार होकर वे सदूर ग्रह पर पहुंच सकें। मैं पोपा पर सवार होकर पृथ्वी ग्रह पर आई हूं। राजा देव पोपा में बैठकर मेरे साथ सदूर ग्रह जाएंगे।"

"बकवास कर रही हो तुम। देवराज चौहान को तुम्हारी कोई भी बात याद नहीं, वो...।"

"सब याद आ जाएंगी। एक बार राजा देव मेरे को देख लेंगे तो सदूर ग्रह की यादें उनके दिमाग में आने लगेंगी। एक बार उन्हें सदूर ग्रह की और मेरी

यादें याद आने की देर है कि वो दौड़े चले आएंगे अपनी ताशा के पास। तुम नहीं जानती कि राजा देव मुझे बांहों में भरकर...।"

"अगर वो वक्त था तो वो बीत चुका है। अब वो वक्त वापस नहीं आएगा। तुम...।"

"मैं वो वक्त वापस लाने के लिए तो पृथ्वी पर आई हूं। वो वक्त पलक झपकते ही वापस लौट आएगा। मैं राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाऊंगी। हम फिर से उसी वक्त में खो जाएंगे। बल्कि इस बार तो वक्त और भी हसीन होगा। मैं प्यार में राजा देव का पूरा साथ दूंगी और इस बात को कभी नहीं भूलूंगी कि राजा देव को वापस लाने के लिए मुझे पृथ्वी ग्रह का सफर करना पड़ा था। अब मैं कोई भूल नहीं करूंगी।"

"तुम जानती हो कि इंसान के जन्म होते हैं। कभी एक तो कभी दूसरा...।" नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"जानती हूं। इंसान की जिंदगी कई जन्मों में बंटी रहती है। सब कुछ शरीर पर निर्भर होता है। शरीर जब तक चलता है तब तक एक जीवन होता है। बूढ़ा होकर शरीर खत्म हो जाता है तो जीवन को एक नए शरीर में प्रवेश करा दिया जाता है, वो दूसरा जीवन कहलाता है, परंतु वो पहले जन्म का ही हिस्सा होता है।"

"पृथ्वी ग्रह पर ऐसा नहीं होता। एक जीवन के साथ, शरीर के साथ सब कुछ खत्म हो जाता है। दूसरा जीवन यहां नहीं होता। हर जीवन को एक ही माना जाता है। इस जन्म में देवराज चौहान मेरा पति है।"

"क्या पृथ्वी पर पूर्वजन्म और पुनः जन्म वाली बातें नहीं होतीं?" रानी ताशा ने पूछा।

"होती हैं, परंतु कई लाखों में एक। पुनः जन्म के पीछे कई वजहें होती हैं। परंतु ऐसा नहीं होता, जैसे कि तुम करना चाह रही हो कि कई जन्मों पहले देवराज चौहान तुम्हारी पति था तो आज भी उस पर तुम्हारा हक हो।"

"राजा देव पृथ्वी ग्रह के नहीं हैं। सदूर ग्रह के हैं।"

"देवराज चौहान पृथ्वी का वासी ही है।" नगीना का दृढ़ स्वर रानी ताशा के कानों में पड़ा—"तुम जिस ग्रह की बात कर रही हो, वहां के बारे में उसे कुछ भी याद नहीं है।"

"मेरी याद है राजा देव को...।" रानी ताशा के माथे पर बल दिखने लगे।

"नहीं है।"

"राजा देव आज भी मेरी आवाज सुनते हैं तो परेशान हो जाते हैं। वो कहते हैं कि मेरी आवाज उन्होंने कहीं सुन रखी है। ताशा-ताशा कहने लगते हैं फोन पर ही। वो मेरे पास आने को कहते हैं, परंतु कौन रोक लेता है उन्हें?"

"बबूसा।" उधर से नगीना ने मुस्कराकर कहा—"वो कहता है कि सदूर ग्रह पर वो देवराज चौहान का खास सेवक था।"

"वो सही कहता है। बबूसा एक बेहतरीन इंसान है, परंतु मेरे से विद्रोह करके उसने बुरा किया। वो ही राजा देव को मेरे पास आने से रोके हुए है, वरना राजा देव तो कब के मेरी बांहों में होते।"

"मैं ऐसा न होने देती।"

"तुम राजा देव को रोक लेतीं?"

"अवश्य।" नगीना के आने वाले स्वर में दृढ़ता थी—"मैं देवराज चौहान को अंधे कुएं में छलांग न लगाने देती। क्योंकि उसे कुछ भी याद नहीं। वो आज का जीवन जी रहा है। रानी ताशा उसके लिए अजनबी है। अगर उसे सब कुछ याद आ जाए और वो तुम्हारे साथ जाना चाहे तो मैं नहीं रोकूंगी देवराज चौहान को।"

"उन्हें कुछ याद आए न आए, राजा देव मेरे हैं सिर्फ मेरे।" रानी ताशा दांत भींचकर कह उठी।

"ऐसा नहीं होगा। मैं एक तरफा फैसला नहीं होने दूंगी।"

"तुम राजा देव से मेरी बात कराओ।" रानी ताशा गुस्से में आ चुकी थी।

"नहीं।"

"वो मेरे देव हैं। मेरी बात...।"

"तुम्हारी आवाज में जादू है। जादू जैसा प्रभाव है।" नगीना का सख्त स्वर रानी ताशा के कानों में पड़ा—"तुम्हारी आवाज सुनकर देवराज चौहान अपने होश खो बैठता है। इसलिए तुम्हारी बात नहीं हो पाएगी।"

"तुम मुझे राजा देव से दूर करने का प्रयत्न कर रही हो।" रानी ताशा गुस्से से बोली।

"तुम देवराज चौहान की कुछ नहीं हो। जहां से आई हो, वहीं चली जाओ।"

"मैं तुम्हें मार डालूंगी।" रानी ताशा गुर्रा उठी।

"तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। तुम जरूर कोई धोखेबाज हो जो जाने क्यों देवराज चौहान के पीछे...।"

"बबूसा भी धोखेबाज है?" रानी ताशा ने गुस्से से कहा।

"नहीं, वो सच्चा इंसान है...।"

"बबूसा सच्चा इंसान है तो मैं कैसे झूठी हो सकती हूं। बबूसा ने सब कुछ बताया होगा। बबूसा के तार मेरे से जुड़े हुए हैं। हम सब एक ही ग्रह से हैं। एक ही हैं। परंतु वो राजा देव का बेहद खास सेवक रहा है। राजा देव भी बबूसा को पसंद करते थे। और आज बबूसा को तो उस जन्म की सब बातें

याद हैं परंतु राजा देव भूल चुके हैं पृथ्वी ग्रह से जुड़कर। लेकिन महापंडित सब ठीक कर देगा। एक बार मैं राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाऊं, उसके बाद महापंडित...।"

"तुम देवराज चौहान को उसकी मर्जी के बिना कहीं नहीं ले जा सकोगी।" नगीना का क्रोध से भरा स्वर आया।

"तुम देखना, राजा देव अपनी मर्जी से ताशा-ताशा कहते मेरे साथ पोपा में बैठकर सदूर ग्रह पर जाएंगे।" रानी ताशा एकाएक हंसकर कह उठी—"एक बार राजा देव से मिलने की देर है उसके बाद वो मेरी बांहों में होंगे।"

उधर से नगीना ने फोन बंद कर दिया था।

रानी ताशा ने फोन वाला हाथ नीचे किया और आंखों से आंसू बह निकले।

"ये क्या ताशा?" सोमारा कह उठी—"रो क्यों रही हो?"

"राजा देव से मेरी बात नहीं हो पाई। वो मेरे बिना कैसे रह रहे होंगे।" रानी ताशा सुबक उठी।

"सब ठीक हो जाएगा, राजा देव हमें जल्दी मिल जाएंगे। मुझे देखो, मैं भी तो बबूसा से मिलना चाहती हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि जल्दी ही बबूसा से मिलूंगी। क्यों बेदी।" सोमारा ने विजय बेदी को देखा—"कल काम होगा न? तुम हमें राजा देव के पास ले चलोगे न? वो आदमी तुम्हें राजा देव का पता बता देगा न?"

"राजा देव का नहीं, जगमोहन का।" बेदी ने गहरी सांस ली।

"एक ही बात है। तुमने ही तो कहा है कि दोनों एक साथ ही रहते हैं।"

'कहां फंस गया मैं।' बेदी बड़बड़ा उठा—'पंद्रह लाख लेने हैं तूने। चुप रह। थोड़ा और सह ले इन्हें। बात-बात पर अपने ग्रह की बात करते हैं। पर मुझे पता है ये सब ड्रामा कर रहे हैं। यहीं के लोग हैं ये।'

रानी ताशा आंसू साफ करते बोली।

"सोमारा। राजा देव की इस जन्म की पत्नी नगीना, राजा देव पर मेरा हक नहीं मानती।"

"उसके मानने या न मानने से क्या होता है, राजा देव तो आपके ही हैं।" सोमारा शांत स्वर में बोली।

"ये ही मैंने उसे कहा, पर वो मानती नहीं।"

"आप धीरज रखिए।"

"वो कहती है इस जन्म में वो उसके पति हैं। कहती है पिछला जन्म मौत के साथ खत्म हो जाता है।"

"पर हमारे सदूर ग्रह पर ऐसा नहीं है। हमारे ग्रह का जीवन-मरण भैया (महापंडित) के हाथ में है। वो जिसका जन्म लम्बा चलाने की जरूरत समझता है,

उसे पुरानी यादों के साथ बार-बार पैदा करता रहता है। जैसे कि मैं-आप, ग्रह के बेहतरीन खास लोग। पृथ्वी ग्रह पर कोई और नियम लागू होता है। हमें यहां के नियम से कोई मतलब नहीं। हम तो अपने ग्रह के नियम से ही चलेंगे ताशा। हम यहां रहने नहीं आए जो यहां के नियम अपना लें। हम राजा देव को लेने आए हैं और उन्हें लेकर चले जाएंगे।" सोमारा सोच भरे शांत स्वर में कह उठी।

"सच सोमारा, हम सच में राजा देव को वापस ले जाएंगे?" रानी ताशा मुस्करा उठी।

"क्यों नहीं, सोमाथ हमारे साथ है।"

रानी ताशा ने सोमाथ को देखा।

"मैं।" सोमाथ मुस्कराया—"आपकी सेवा में हूं।"

"और ताशा।" सोमारा ने कहा—"हमारे तीन लोग होटल के दूसरे कमरे में हैं। सबके पास जोबिना है। जीत हमारी ही होगी। राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाएंगे हम।"

"सोमाथ।" रानी ताशा ने कहा—"तुम साथ वाले कमरे में अपने लोगों का हाल-चाल पूछ आओ।"

"मैं दिन में तीन बार उनके पास जाता हूं रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा—"अब फिर हो आता हूं।"

"पहले मेरी बात सुनो।" एकाएक विजय बेदी कह उठा।

सबने उसे देखा।

"तुम लोगों ने अभी मेरा पंद्रह लाख रुपया देना है।" कहते हुए बेदी ने उस वार्डरोब की तरफ निगाह मारी जहां नोटों से भरा सूटकेस पड़ा था—"अगर कल देवराज चौहान मिल जाता है तो मुझे पंद्रह लाख मिल जाएगा?"

"जरूर मिलेगा।" सोमाथ बोला—"हम जो कहते हैं वो करते हैं।"

बेदी ने शराफत से सिर हिला दिया।

"कल राजा देव मिल जाएंगे न?" रानी ताशा ने पूछा।

"जरूर मिलेंगे। पूरी आशा है कि कल हम देवराज चौहान के ठिकाने पर पहुंच सकते हैं।" विजय बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु मैं तुम लोगों के साथ भीतर नहीं जाऊंगा।"

"क्यों?" सोमारा कह उठी।

"देवराज चौहान बहुत बड़ा डकैती मास्टर है। जब उसे पता चलेगा कि तुम लोगों को मैं वहां तक लाया तो वो मेरी जान ले लेगा। बहुत खतरनाक है वो। मैं बाहर ही खड़ा रहूंगा। तुम लोग भीतर जाना।"

"ताशा।" सोमारा मुस्कराई—"राजा देव से तो पृथ्वी के लोग भी डरते हैं।"

"मेरे देव जैसा बलशाली कोई नहीं है। देव जहां भी जाएंगे, अपनी ताकत का दबदबा कायम कर लेंगे। इसी तरह वो प्यार भी बहुत करते हैं। मुझे वो वक्त याद आ रहा है सोमारा। जब राजा देव मुझे बांहों में लेकर...।"

"वो वक्त फिर लौटने वाला है ताशा। शायद कल ही राजा देव हमें मिल जाएं।"

आंखें बंद करके रानी ताशा गहरी सांस लेने लगी।

तभी दरवाजा थपथपाया गया। वेटर खाने की ट्रॉली धकेलता भीतर ले आया था। सोमाथ ने दरवाजा खोला था। फिर सोमाथ बगल वाले कमरे में मौजूद, अपने साथियों से मिलने चला गया।

'कब पंद्रह लाख मुझे मिले और कब मैं भागूं।' बेदी बड़बड़ा उठा।

▭ ▭

अर्जुन भारद्वाज ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया और नीना पर निगाह मारी। नीना ड्रेसिंग टेबल वाला छोटा स्टूल लिए, कमरे के दरवाजे का आधा इंच खोले बाहर, सामने नजर आते रानी ताशा के कमरे के दरवाजे पर निगाह रखे हुए थी। अर्जुन और नीना आज सुबह से ही होटल के कमरे में बंद थे। रानी ताशा के कमरे की निगरानी कर रहे थे। सुबह नौ बजे विजय बेदी को बाहर जाते देखा तो अर्जुन उसके पीछे लग गया था। दिन भर बेदी पर निगाह रखे, उसके पीछे रहा। बेदी दिन में कई लोगों से मिला। अर्जुन भारद्वाज उन लोगों को देखते ही समझ गया कि वो सब छंटे हुए लोग थे। अर्जुन जानता था कि विजय बेदी देवराज चौहान के ठिकाने का सूराग पाने के लिए भाग-दौड़ कर रहा है कि उसे रानी ताशा से नोट मिलने हैं।

साढ़े आठ बजे बिजय बेदी के पीछे-पीछे अर्जुन भारद्वाज भी कमरे में लौट आया था। अपने कमरे का दरवाजा जरा-सा खुला देखा और नीना की झांकती आंखें देखी। नीना ने उसे भीतर आने दिया और फिर उसी स्थिति में बैठ गई कि बाहर नजर रख सके। अर्जुन भारद्वाज ने नीना को बताया कि वो दिन-भर बेदी के पीछे रहा। खास बात नहीं हुई। बेदी, देवराज चौहान के ठिकाने को पता करने के लिए, लोगों से मिलता रहा। तो नीना ने भी बताया कि वो पूरा दिन इसी तरह बैठी, रानी ताशा के कमरे पर नजर रखे रही। कोई नहीं आया सिवाय दोपहर को वेटर के, जो कि लंच लेकर आया था, सोमाथ अवश्य दिन में दो बार बाहर निकला और बगल के कमरे में गया था।

अर्जुन ने नहा-धोकर नाइट सूट पहना।

"डिनर के लिए कह दूं?" अर्जुन ने पूछा।

"कह दीजिए सर। दोपहर को भी नहीं खाया। भूख लगी है।" नीना ने गर्दन घुमाकर धीमे स्वर में कहा।

"लंच क्यों नहीं किया?"

"आपकी जेब से ज्यादा खर्च ना हो, इसका मैं ध्यान रखती हूं। लंच लेती तो पंद्रह सौ ठुक जाता।" नीना ने दरवाजे पर पुनः आंख टिका दी थी—"मेरे मन ने हां नहीं की कि लंच करूं।"

अर्जुन मुस्कराया और रूम सर्विस में इंटरकॉम करके, डिनर का ऑर्डर दिया।

"डिनर आ गया सर।" कुछ देर बाद नीना स्टूल पर बैठी, गर्दन घुमाकर बोली।

"तो दरवाजे से हट जाओ। वेटर को आने दो।"

"हमारा नहीं सर, रानी ताशा के कमरे का डिनर।" नीना ने बताया।

फिर नीना ने सोमाथ को उस कमरे से निकलकर बगल के कमरे में जाते देखा। दस मिनट बाद उनका भी डिनर आ गया। नीना ने स्टूल उठाकर ड्रेसिंग टेबल के सामने रखा।

दरवाजा खोला। वेटर डिनर भीतर टेबल पर लगा गया। नीना ने दरवाजा बंद किया और स्टूल की तरफ बढ़ते बोली।

"आप डिनर लीजिए सर। मैं वहां नजर रखती हूं।"

"तुम भी ले लो। दस मिनट में क्या फर्क पड़ेगा। वो भी डिनर कर रहे होंगे।" अर्जुन उठते हुए बोला।

दोनों डिनर टेबल पर बैठ गए।

खाना खाने लगे।

"सर।" नीना बोली—"रानी ताशा के बाईं तरफ वाले, साथ वाले कमरे में भी रानी ताशा के आदमी मौजूद हैं। आज दिन भर सोमाथ तीन बार उस कमरे में गया है।"

"उस कमरे से कोई बाहर निकला?" अर्जुन भारद्वाज ने पूछा।

"नहीं सर।"

"किसी को देखा हो कि भीतर कौन है?"

"नहीं। वो दरवाजा बंद ही रखते हैं। सिर्फ वेटर के आने पर खोलते हैं, पर खोलने वाला पीछे रहता है, दिखता नहीं।"

"सोमाथ ही उस कमरे में जाता है, उस कमरे से निकलकर, कोई रानी ताशा के पास नहीं जाता?"

"ये ही बात सर।"

"तो हम सोच सकते हैं कि उस कमरे में रानी ताशा के आदमी होंगे।" अर्जुन ने सोच भरे स्वर में कहा—"सारे मामले पर निगाह दौड़ाए तो स्पष्ट है रानी ताशा अकेली नहीं आएगी। वो देवराज चौहान को लेने आई है, तो

इस बात को भी जानती होगी कि रुकावटें भी आएंगी। वो पूरी तैयारी के साथ आई होगी।"

"सर, ये अजीब मामला है। दूसरे ग्रह के लोग और...।"

"परंतु मुझे हालात सच लग रहे हैं। ये मामला गम्भीर है नीना और खतरनाक भी। अगर धरती के लोगों को पता चल जाए कि दूसरे ग्रह के लोग आए हैं तो हंगामा खड़ा जो जाए पृथ्वी पर।"

सर एक आइडिया आया है।" नीना फौरन कह उठी—"हम ये मामला मिनटों में संभाल सकते हैं।"

"वो कैसे?"

"पुलिस को रानी ताशा के बारे में खबर दे देते हैं कि वो दूसरे ग्रह के लोग हैं। उसके बाद तो इनकी जान पर बन आएगी पुलिस इनकी आई-डी मांगेगी। जो कि इनके पास होगी नहीं। ये गिरफ्तार हो जाएंगे। ये जो पोपा (अंतरिक्ष यान) की बात करते हैं, उसके बारे में भी देर-सबेर में पुलिस मुंह खुलवा लेगी या हम बता देंगे कि अंतरिक्ष यान कहां पर खड़ा है। इस तरह देवराज चौहान का भी इनसे पीछा छूट जाएगा।"

अर्जुन, नीना को देखने लगा।

"मैंने ठीक कहा न सर?"

"कुछ हद तक तुम्हारी बात सही है, परंतु इस बारे में हम खुद कोई फैसला नहीं ले सकते।"

"क्यों सर?"

"हमारी क्लाइंट नगीना है। जब तक नगीना ऐसा करने को हां नहीं कहती, तब तक हम कुछ नहीं करेंगे। ये बात नगीना से डिसकस करेंगे। इस बारे में वो क्या कहती है, वो ही हम करेंगे।"

"नगीना को क्यों एतराज होगा। वो तो खुश होगी कि, रानी ताशा से पीछा छूट गया।" नीना कह उठी।

"वो किस तरह सोचते हैं, ये तो उनसे ही पता चलेगा। परंतु इस बारे में बात करूंगा।"

खाना समाप्त करके नगीना वापस अपनी ड्यूटी पर जा पहुंची। स्टूल रखा और जरा-सा दरवाजा खोले बैठ गई। फिर सिर घुमाकर धीमे स्वर में अर्जुन से बोली।

"कॉफी का मन हो रहा है सर।"

"अभी कह दता हूं।" अर्जुन ने रूम सर्विस में दो कॉफी के लिए इंटरकॉम किए।

जब दोनों कॉफी पी रहे थे। नीना दरवाजे पर स्टूल रखे बैठी थी। अर्जुन

बेड पर टेक लगाए हुए था कि तब अर्जुन को नगीना का फोन आया था। बातें हुई फिर फोन बंद करके अर्जुन ने कहा।

"देवराज चौहान और बबूसा आज आधी रात को यहां आ जाएंगे।"

"यहां?" नीना हैरानी से बोली—"क्यों सर?"

अर्जुन भारद्वाज, नगीना से हुई बातचीत नीना को बताने लगा।

▭ ▭

रात के दो बजने वाले थे। सड़कों पर सुनसानी जैसा माहौल था दिन की अपेक्षा। वाहन आ-जा रहे थे, परंतु कम थे। कई साइकिलों वाले भी जा रहे थे, जो कि अपने काम से लौट रहे थे। कभी-कभार ही किसी हॉर्न की आवाज कानों में पड़ जाती थी। मध्यम-सी बहती हवा, राहत पहुंचा रही थी।

जगमोहन मध्यम गति से कार चला रहा था। देवराज चौहान बगल में बैठा था। बबूसा पीछे की सीट पर मौजूद था। काफी देर से कार में छाई खामोशी को तोड़ते जगमोहन ने कहा।

"तुम खतरे में जा रहे हो। रानी ताशा को तुम्हारे पास होने की भनक भी पड़ गई तो तब कुछ भी हो सकता है।"

"उसे कुछ भी मालूम नहीं होगा।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"वो अपने कमरे में नींद में होगी।"

"हम पहुंचने जा रहे हैं।" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

"मैं राजा देव के साथ हूं।" बबूसा बोला—"मैं राजा देव को कुछ नहीं होने दूंगा।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

कुछ ही देर में कार होटल सी-व्यू पर्ल के सामने जा रुकी।

देवराज चौहान और बबूसा बाहर आ गए। दरवाजे बंद किए गए।

"सावधानी से काम करना।" जगमोहन गम्भीर-सा कह उठा—"रानी ताशा की नजरों में मत आना।"

जवाब में देवराज चौहान ने मुस्कराकर सिर हिला दिया।

जगमोहन कार को आगे बढ़ाता ले गया।

"आओ बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा और होटल के प्रवेश गेट की तरफ बढ़ गया।

बबूसा उसके साथ चलता कह उठा।

"तो रानी ताशा इस होटल में है। सोचकर मुझे कितना अजीब लग रहा है कि मैं रानी ताशा के कितने करीब हूं और वो आपको ढूंढ़ रही है। आप भी उसके कितने करीब आ चुके हैं। रानी ताशा सोच भी नहीं सकती।"

दोनों होटल के भीतर पहुंचकर लिफ्ट की तरफ बढ़ गए।

"अगर रानी ताशा मेरे सामने पड़ गई तो तब तुम क्या करोगे?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कुछ समझ में नहीं आता। आपकी बात सुनकर मैं परेशान हो गया हूं राजा देव। रानी ताशा के साथ सोमाथ है। मुझे सोमाथ की चिंता है। वो मेरे से ताकतवर है। अगर जोबिना के साथ रानी ताशा के आदमी भी साथ में या पास में कहीं हैं तो मैं उनसे जीत नहीं पाऊंगा। परंतु मुझे हराना उनके लिए इतना आसान नहीं होगा। अगर जोबिना मेरे हाथ लग जाए तो फिर मेरा मुकाबला कोई नहीं कर पाएगा। महापंडित ने बताया था कि वो मुझे मार भी सकते हैं।"

"तुम्हें तो अपनी चिंता सताने लगी बबूसा।"

"मैं आपको रानी ताशा की चालों से बचाना चाहता हूं। ये तभी हो सकेगा, जब मैं सलामत रहूं। मेरी हर चिंता आपके लिए ही है राजा देव। अगर आपको सदूर ग्रह के जन्म की याद आ जाती तो सब ठीक हो गया होता।"

दोनों लिफ्ट में सवार हुए और दूसरी मंजिल पर पहुंचे। लिफ्ट से निकलकर सुनसान गैलरी में आगे बढ़ गए। एक वेटर जाता अवश्य दिखाई दिया। देवराज चौहान को अर्जुन भारद्वाज के कमरे का नम्बर पता था। वो अर्जुन भारद्वाज के कमरे के सामने पहुंचा और सामने के बंद दरवाजों पर निगाह मारी। वो नहीं जानता था कि सामने के किस कमरे में रानी ताशा मौजूद है। देवराज चौहान ने हौले से अर्जुन के कमरे का दरवाजा थपथपाया। चंद पल बीते कि दरवाजा नीना ने खोला वो दोनों भीतर प्रवेश कर गए। दरवाजा पुनः बंद हो गया।

▭ ▭

रानी ताशा हड़बड़ाकर गहरी नींद से उठ बैठी। इंतहाई खूबसूरत चेहरे पर व्याकुलता स्पष्ट नजर आ रही थी। उसने तुरंत सारे कमरे में नजरें दौड़ाईं, परंतु सब ठीक था। सोमारा उसकी बगल में सोई हुई थी। विजय बेदी लम्बे सोफे पर नींद में था। सोमाथ कुछ दूर कुर्सी पर आंखें बंद किए बैठा अपने भीतर लगी मशीन को आराम दे रहा था।

परंतु रानी ताशा के चेहरे की परेशानी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। वो बेड से उतरी। शरीर पर गाऊन था। जिसमें उसके आकर्षक उरोज मध्यम गति से हिलते महसूस हो रहे थे। वो सीधे सोमाथ के पास पहुंची।

आहट पाकर सोमाथ ने फौरन आंखें खोल दीं।

"क्या बात है रानी ताशा?" सोमाथ कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"मुझे अभी-अभी महसूस हुआ कि राजा देव मेरे करीब आ पहुंचे हैं। मेरी आंख खुल गई।" रानी ताशा ने बेचैनी से कहा।

"ये कैसे सम्भव है रानी ताशा?"

"मुझे एहसास हुआ है अभी कि...।"

"आप हर वक्त राजा देव के बारे में सोचती रहती हैं।" सोमाथ बोला—"ऐसे में आपको वहम हुआ...।"

"सोमाथ।" रानी ताशा के स्वर में दृढ़ता आ गई—"महापंडित ने राजा देव का एहसास कराने की शक्ति मेरे भीतर डाल रखी है। महापंडित ने कह रखा है कि जब भी राजा देव मेरे करीब कहीं पर होंगे तो मुझे एहसास हो जाएगा।"

"लेकिन।" सोमाथ ने कमरे में निगाहें दौड़ाई—"कमरे में तो हम लोग ही हैं।"

"बाहर देखो।" रानी ताशा बेहद परेशान दिख रही थी—"मेरा एहसास गलत नहीं हो सकता।"

सोमाथ तेजी से दरवाजे के पास पहुंचा और दरवाजा खोलकर बाहर देखा।

राहदारी सुनसान पड़ी थी। हर कमरे का दरवाजा बंद दिखा। सोमाथ दरवाजा बंद करके पलटा।

"बाहर कोई भी नहीं है।"

"ओफ्फ। ये क्या हो रहा है।" रानी ताशा चिल्ला उठी—"राजा देव के बारे में मुझे गलत एहसास नहीं हो सकता। जरूर कोई बात है मुझे राजा देव के पास आ जाने का एहसास क्यों हुआ?"

सोमाथ खामोशी से खड़ा रहा।

रानी ताशा तेज-तेज कदमों से चलती बेड के पास पहुंची और वो यंत्र उठा लिया, जिस पर, डोबू जाति के पास खड़े पोपा (अंतरिक्ष यान) में मौजूद किलोरा से बात कर लिया करती थी। बेड पर बैठकर वो यंत्र द्वारा किलोरा से सम्पर्क बनाने लगी। दो मिनट की चेष्टा के बाद सम्पर्क बन गया। यंत्र से किलोरा की आवाज उभरी।

"कौन है?"

"मैं हूं किलोरा।"

"ओह रानी ताशा—हुक्म दीजिए।" किलोरा की आवाज उभरी।

"महापंडित की तरफ से कोई संदेशा आया?"

"नहीं, रानी ताशा।"

"मैं इस यंत्र द्वारा महापंडित से बात नहीं कर सकती। परंतु पोपा में मौजूद यंत्रों द्वारा तुम महापंडित से बात कर सकते हो। अभी महापंडित से पूछो कि मुझे राजा देव के पास होने का एहसास हुआ है, क्या राजा देव मेरे पास ही कहीं हैं?"

"मैं पूछता हूं रानी ताशा। महापंडित का जवाब मैं अभी आपको देता हूं।"

रानी ताशा ने यंत्र बंद किया। तब तक सोमारा उठ बैठी थी।
"क्या बात है ताशा?"
"मुझे गहरी नींद में राजा देव के पास ही मौजूद होने का एहसास हुआ है।" रानी ताशा ने कहा।
"ये कैसे हो सकता है।"
"राजा देव की मौजूदगी का एहसास कराने वाली शक्ति महापंडित ने मेरे भीतर डाल रखी है।"
'लेकिन यहां तो राजा देव हैं नहीं।" सोमारा ने कमरे में निगाह दौड़ाई।
"तो मुझे एहसास क्यों हुआ?" रानी ताशा ने व्याकुल स्वर में कहा—"महापंडित गलत नहीं हो सकता। एहसास कराने की शक्ति गलत नहीं हो सकती। मेरी गहरी नींद का अचानक टूट जाना...जरूर कोई बात है।"
"आपका मतलब कि राजा देव कहीं पास ही में हैं?"
"हां। ये बात सच है।"
सोमारा गम्भीर हो उठी।
"कहीं राजा देव कमरे के बाहर तो नहीं खड़े?"
"सोमाथ देख चुका है। बाहर कोई नहीं है।" रानी ताशा ने कहा।
सोमारा उठ कर दरवाजे की तरफ बढ़ गई। उसने दरवाजा खोला। बाहर झांका। राहदारी को सुनसान पाया। कहीं से कोई आहट भी नहीं उठ रही थी, रात के इस वक्त। दरवाजा बंद करके सोमारा, सोमाथ के पास पहुंची।
"क्या बात है सोमाथ? रानी ताशा को गलत एहसास नहीं हो सकता।" सोमारा बोली।
"राजा देव यहां पर नहीं हैं सोमारा।" सोमाथ शांत स्वर में बोला।
"तो कहां है। रानी ताशा को गलती होने की गुंजाईश नहीं है। भैया (महापंडित) के काम हर तरह के पक्के होते हैं। राजा देव को एहसास कराने वाली शक्ति भैया ने, रानी ताशा के भीतर डाल रखी है।"
"मेरे पास इन बातों का जवाब नहीं है।" सोमाथ बोला।
सोचों में डूबी सोमारा रानी ताशा के पास पहुंची तो रानी ताशा को सुबकते पाया।
"इसमें रोने की क्या बात है ताशा?" सोमारा उसके करीब बेड पर बैठती कह उठी।
"मेरा देव मुझे नहीं मिल रहा। कितनी तड़प रही हूं मैं। देव भी मेरे बिना तड़प रहे होंगे। जरूर वो मुझे तलाश करने के लिए होटल में आए होंगे। परंतु मैं किस कमरे में हूं ये भूल गए होंगे। वो जरूर इस कमरे के बंद दरवाजे के बाहर से निकले होंगे। वो मुझे ही ढूंढ़ रहे हैं। बबूसा की निगाहों से बचकर

अपनी जगह से निकल आए होंगे, मेरे पास आने के लिए। जरूर राजा देव कहीं करीब ही हैं।" भर्राए स्वर में रानी ताशा कह उठी।

"सोमाथ।" सोमारा ने कहा—"बाहर जाकर देखो, शायद राजा देव नजर आ जाएं।"

सोमाथ अपनी जगह पर खड़ा रहा।

"जाओ सोमाथ।" सोमारा ने पुनः कहा।

"मैं सिर्फ रानी ताशा का हुक्म मानता हूं या मेरे मन में जो आए वो करता हूं।" सोमाथ शांत स्वर में बोला।

"सोमाथ को राजा देव को ढूंढ़ने को कहो ताशा।" सोमाथ ने रानी ताशा से कहा।

"जाओ सोमाथ। सोमारा ने जो कहा, वो ही करो।"

सोमाथ आगे बढ़ा और दरवाजा खोलते बाहर निकलता चला गया। बातचीत के स्वर सुनकर विजय बेदी की आंख खुल गई। वो बिगड़े स्वर में बोला।

"रात को भी चैन नहीं। क्या हो रहा है अब?"

"रानी ताशा को, राजा देव के पास में ही होने का एहसास हुआ है।" सोमारा ने कहा।

"तो अब सपने भी आने लगे।"

"सपने क्या होते हैं?" सोमारा ने पूछा।

"लगता है सपने तुम लोगों के ग्रह पर नहीं होते।" बेदी ने तीखे स्वर में कहा—"सो जाओ। देवराज चौहान पास में कहीं भी नहीं आ सकता। मुझे सोने दो। कल फिर सारा दिन भाग-दौड़ करनी है।" कहकर वो सोने का प्रयत्न करने लगा।

रानी ताशा के गाल आंसुओं से गीले थे।

"आप आराम कीजिए ताशा।" सोमारा ने कहा—"सोमाथ बाहर देखने गया है।"

"मेरा देव मुझे बांहों में लेने के लिए, कितना तड़प रहा होगा।" रानी ताशा व्याकुल स्वर में कह उठी।

"सोमाथ राजा देव को कैसे पहचानेगा?"

"महापंडित ने राजा देव की तस्वीर, सोमाथ के दिमाग में डाल रखी है। वो राजा देव को फौरन पहचान जाएगा।"

तभी यंत्र से मध्यम-सी, अजीब-सी आवाजें आने लगीं।

रानी ताशा ने तुरंत बटन दबाकर कहा।

"कहो किलोरा?"

"रानी ताशा। महापंडित से कठिनता से मेरी बात हो पाई है। सदूर ग्रह

पर तूफान आया था कुछ पहले और इससे महापंडित की मशीनों को कुछ नुकसान पहुंचा है। वो कहता है मशीनें ठीक होने पर ही कुछ बता सकेगा। इस स्थिति में वो मशीनों से बात नहीं कर सकता। इतनी बात के साथ ही सम्बंध कट गया।"

"ठीक है।" रानी ताशा बोली—"डोबू जाति पर हमारा पूरा काबू है न?"

"जी रानी ताशा। डोबू जाति पर हमारी ही हुकूमत चल रही है। कोई समस्या नहीं।"

रानी ताशा ने यंत्र बंद किया और गीले गालों को साफ करने लगी।

"मेरा देव। मेरा प्यारा देव, जाने कब मिलेगा मुझे। इतनी देर क्यों लग रही है देव को पाने के लिए।"

"सब ठीक हो जाएगा ताशा। मुझे भी तो बबूसा की तलाश है। इस वक्त हमें सब्र से काम लेना चाहिए।"

तभी दरवाजा खोलकर सोमाथ ने भीतर प्रवेश किया और बोला।

"आसपास कहीं भी राजा देव मुझे नहीं दिखे। मैंने हर तरफ अच्छी तरह देखा है।"

▭ ▭

"तुम लोग कैसे रानी ताशा पर नजर रखे हुए हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"आधा इंच दरवाजा खोलकर स्टूल पर बैठकर नीना उन पर निगाह रख रही है।" अर्जुन भारद्वाज ने बताया।

देवराज चौहान कुर्सी पर बैठा था। बबूसा कमरे में गम्भीरता से टहल रहा था। नीना बेड पर बैठी थी। अर्जुन बेड के किनारे पर बैठा था।

"तो क्या देखा?"

"रानी ताशा तो बाहर ही नहीं निकली।" नीना कह उठी—"विजय बेदी सुबह चला गया था और रात को नौ बजे वापस आया। पर सोमाथ दिन में तीन बार बाहर निकला और तीनों बार बगल के कमरे में गया।"

"बगल के कमरे में?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"मेरे खयाल में उस कमरे में रानी ताशा के और साथी हो सकते हैं। वो लोग कमरे से बाहर नहीं निकलते। मैंने उन्हें एक बार भी नहीं देखा। वेटर को उस कमरे में खाना ले जाते जरूर देखा है।"

बबूसा उसी पल ठिठककर कह उठा।

"वो जरूर रानी ताशा के साथी और सदूर ग्रह के लोग हैं। उनके पास जोबिना भी होगी।"

"हालातों को देखते हुए मैं ये ही सोच सकता हूं कि रानी ताशा को तुम्हारी खबर मिलने की देर है कि वो तेजी से हरकत में आ जाएगी। वो पूरी तैयारी

के साथ, तुम्हारी खबर मिलने का इंतजार कर रही है।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा—"यूं भी कह सकते हो कि कभी भी खतरनाक वक्त सामने आ सकता है। रानी ताशा की खामोशी जानलेवा बन सकती है।"

"तुम यहां आ गए हो देवराज चौहान।" नीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब खतरा बढ़ गया है। अगर उनकी निगाह तुम पर पड़ गई तो कभी भी कुछ भी हो सकता है। हम तो पहले ही बहुत सतर्कता से यहां टिके हुए हैं, क्योंकि वो लोग हमें पहचानते हैं। हम उनके पास जा चुके हैं पहले ही।"

"मुझे सिर्फ रानी ताशा का चेहरा देखना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो तुम इस बात पर यकीन करते हो कि रानी ताशा का चेहरा देखने पर, तुम्हें वो जन्म याद आने लगेगा?"

"बात यकीन की नहीं है अर्जुन।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"बात ये है कि मैं हाथ पर हाथ रखकर रानी ताशा के सामने आने का इंतजार नहीं कर सकता। मुझे भी कुछ करना चाहिए। बबूसा कहता है कि इस तरह मुझे सदूर ग्रह का वो जन्म याद आएगा तो चांस लेने में क्या बुराई है।"

अर्जुन भारद्वाज ने बबूसा को देखकर गम्भीर स्वर में कहा।

"मेरा ये कहना गलत नहीं होगा कि बबूसा ने तुम लोगों का दिमाग खराब कर रखा है।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" बबूसा ठिठककर बोला—"मैं राजा देव को आने वाली मुसीबत से बचाने का प्रयत्न कर रहा हूं अगर मैं न होता तो रानी ताशा कब की राजा देव के पास पहुंचकर, अपनी मनमानी कर चुकी होती। मैं राजा देव का सेवक हूं और मेरा काम राजा देव को बुराइयों से बचाए रखना है।"

"तुम कब तक राजा देव को रानी ताशा से दूर रख सकोगे?" अर्जुन बोला।

"ज्यादा देर नहीं।"

"तो फिर क्या फायदा तुम्हारी कोशिश का?"

"बहुत फायदा है। मैं राजा देव को सदूर ग्रह का जन्म याद कराने की चेष्टा में हूं। रानी ताशा के सामने आने से पहले राजा देव को सदूर ग्रह की सब बातें याद आ जाती हैं तो, फिर सब ठीक हो जाएगा। राजा देव सब संभाल लेंगे। रानी ताशा में इतनी हिम्मत नहीं कि राजा देव के हुक्म को इंकार कर सके।" बबूसा दृढ़ स्वर में बोला।

"क्या किया था रानी ताशा ने उस ग्रह पर?"

"तुम नगीना से सब कुछ जान चुके हो।"

"मैं तुमसे सुनना चाहता हूं।"

"रानी ताशा ने राजा देव को धोखा दिया। राजा देव, रानी ताशा के दीवाने

थे। मोहित थे रानी ताशा पर। वो है ही इतनी खूबसूरत। तुम देख चुके हो रानी ताशा को। रानी ताशा सदूर ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत थी। राजा देव पोपा (अंतरिक्ष यान) का निर्माण करने के लिए ग्रह के दूसरे हिस्से पर चले गए। मैं भी राजा देव के साथ था। सेनापति धोमरा के हवाले किले की देखभाल का काम दे दिया था राजा देव ने। रानी ताशा और धोमरा में प्यार हो गया। मैं बीच-बीच में किसी काम की खातिर किले में आता रहता था। जब रानी ताशा और धोमरा की बातें मैंने सुनीं तो रानी ताशा को समझाने की चेष्टा की कि ये सब मैं क्या सुन रहा हूं। राजा देव जब ये बातें सुनेंगे तो उन पर क्या बुरा असर होगा। परंतु रानी ताशा ने मुझे ही धमकी दे दी कि मैं अपना मुंह बंद रखूं और नौकरों की तरह रहूं। जबकि मैं राजा देव के अलावा किसी की धमकी में आने वाला नहीं हूं। रानी ताशा भटक चुकी थी। वापस जाकर मैंने राजा देव को ये बातें नहीं बताई कि राजा देव की मेहनत मिट्टी में न मिल जाए। पोपा का निर्माण कहीं अधूरा न रह जाए। ये भी सोचा कि हो सकता है रानी ताशा को अच्छा और बुरा समझ में आ जाए और वो धोमरा से दूर हो जाए। मैंने राजा देव को ये ही कहा कि किले पर सब ठीक है। और जब पोपा का निर्माण कर लेने का बाद राजा देव ने किले से वापसी की तो, रानी ताशा ने धोमरा के दम पर बीच रास्ते में ही राजा देव पर काबू पा लिया। राजा देव तो रानी ताशा को देखकर खुश थे कि धोखे से धोमरा ने अपने तीन लोगों के साथ उन्हें पकड़ लिया और ग्रह से बाहर फेंक दिया।" कहते-कहते बबूसा का चेहरा कठोर हो गया था। थोड़ा सुर्ख भी दिखने लगा था।

"फिर क्या हुआ?"

"फिर?" बबूसा कुछ चुप्पी के बाद कह उठा—"राजा देव तो वापस लौट नहीं सकते थे। मैं राजा देव की मौत को देखकर पागल-सा हो उठा। मेरी पत्नी सोमारा ने मुझे किसी तरह संभाला। परंतु रानी ताशा भी चैन से नहीं रह सकी। राजा देव को ग्रह से बाहर फेंक देने के बाद धोमरा रानी ताशा से शादी करके ग्रह का राजा बन जाना चाहता था। उसी पल से धोमरा रानी ताशा से ब्याह करने को कहने लगा। परंतु फौरन ही रानी ताशा को अपनी गलती का एहसास हो गया कि धोमरा ग्रह के राजा बनने का गुण नहीं रखता। जो बात राजा देव में थी, वो किसी में नहीं है। अचानक ही रानी ताशा का, राजा देव के प्रति प्यार जाग उठा। वो तड़पी, रोई कि राजा देव के साथ उसने बहुत बुरा व्यवहार किया और अपनी राह में भी कांटे बिछा लिए हैं। परंतु अब कुछ भी नहीं हो सकता था। राजा देव को ग्रह के बाहर फेंका जा चुका था। उधर धोमरा, रानी ताशा पर शादी करने का दबाव बना रहा था। रानी ताशा पागल हो चुकी थी और तीसरे दिन किले के दूसरे हिस्से में मौजूद धोमरा के पास

पहुंची और तलवार से एक ही वार में उसकी गर्दन अलग कर दी। ये उसके पश्चाताप का पहला कदम था।"

"रानी ताशा को तलवार चलानी आती है?" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"सब कुछ आता है रानी ताशा को।" बबूसा ने गम्भीर निगाहों से देवराज चौहान को देखा—"राजा देव ने रानी ताशा को खुद शिक्षा दी थी योद्धा बनने की। राजा देव ने सब कुछ सिखाया था रानी ताशा को। ऐसे में अब रानी ताशा का मुकाबला करना आसान बात नहीं है। वो बड़े-बड़े योद्धाओं को हरा सकती है।"

अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"तुमने कहा कि रानी ताशा को अपने किए का पश्चाताप है?"

"हां है। अगर महापंडित ने रानी ताशा से ये न कहा होता कि वो राजा देव से पुनः मिलेगी। राजा देव जिंदा हैं, तो रानी ताशा कब का अपना जीवन त्याग चुकी होती। अपने किए पर रानी ताशा बहुत दुखी है।"

"तो परेशानी किस बात की? रानी ताशा को देवराज चौहान से मिल लेने दो।"

"क्यों?"

"वो पश्चाताप में है, वो...।"

"रानी ताशा राजा देव को सदूर ग्रह पर वापस ले जाने आई है। वो जिद्दी है। जो उसके मन में आता है, वो करके रहती है। रानी ताशा, राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाएगी। अगर तब तक राजा देव को कुछ भी याद न आया कि तब रानी ताशा ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया था तो रानी ताशा को सजा कैसे देंगे राजा देव। सदूर ग्रह पर रानी ताशा के कहने पर महापंडित राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा साफ कर देगा, जहां पर उस जन्म की यादें दबी हैं। ऐसा होते ही सब कुछ ठीक हो जाएगा रानी ताशा के लिए। परंतु उसे सजा कभी नहीं मिल सकेगी। मैं चाहता हूं राजा देव को सबसे पहले सदूर ग्रह का जन्म याद आ जाए। रानी ताशा का किया याद आ जाए। उसके बाद राजा देव जो भी फैसला करेंगे मैं सिर झुकाकर स्वीकार करूंगा। परंतु अभी रानी ताशा की नहीं चलने दूंगा।"

"क्या पता रानी ताशा, देवराज चौहान को जबर्दस्ती अपने साथ न ले जाए?"

"वो जरूर ले जाएगी। उसे राजा देव ही तो वापस चाहिए। इसके लिए रानी ताशा किसी भी हद तक जा सकती है। सबसे बड़ा डर तो मुझे ये है कि राजा देव, रानी ताशा को देखते ही उसके दीवाने न हो जाएं। सदूर ग्रह

पर राजा देव, रानी ताशा को दीवानों की तरह प्यार करते थे। अगर अब भी रानी ताशा के दीवाने हो गए तो इन्हें उस जन्म की याद कैसे आएगी। ये तो अपनी ही दीवानगी में होंगे। मेरे सामने बहुत परेशानियां हैं। जाने इनका हल कैसे होगा।"

"ये तो सच में उलझन भरी बातें हैं।" नीना गम्भीर स्वर में कह उठी।

"तुम इस मामले को बेहतर जानते हो। बेहतर ढंग से संभाल सकते हो।" अर्जुन भारद्वाज ने मध्यम स्वर में कहा—"जहां तक मेरी बात है, समझकर भी ये मामला अभी तक मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा हूं।"

खामोश बैठा देवराज चौहान बोला।

"तुम रानी ताशा से मिले थे। तब तुमने क्या महसूस किया?"

"इसमें कोई शक नहीं कि वो बला की खूबसूरत है।" अर्जुन सोच भरे स्वर में बोला—"परंतु मैंने उसमें क्रूरता भी महसूस की। वो सख्त औरत लगी मुझे। उसने दूसरे ग्रह से आने की बात कही, मुझे वो सच्ची लगी, झूठ बोलती नहीं लगी। मैं यकीन से नहीं कह सकता कि ये सब क्या हो रहा है। अगर तुम्हारी और रानी ताशा की बातों को सच मान लूं तो तब सारी बात स्पष्ट हो जाती है। तुम भी मुझे झूठ बोलते नहीं लगे तो इस तरह ये मामला सच लगता है। रानी ताशा के साथ जो सोमाथ नाम का आदमी है, वो बहुत ताकतवर है। लोहे जैसा। उसका मुकाबला करना आसान नहीं होगा।"

"सोमाथ की ही तो मुझे चिंता है।" बबूसा होंठ भींचे कह उठा—"महापंडित कहता है, वो मेरे से ताकतवर है।"

देवराज चौहान की सोच भरी निगाह अर्जुन भारद्वाज पर थी।

"ये बात तो मैंने भी महसूस की है कि उन्हें सिर्फ तुम चाहिए।" अर्जुन बोला—"बीस लाख वो, तुम्हारी तलाश के लिए विजय बेदी नाम के उस इंसान को देने को तैयार है। वो पांच लाख एडवांस भी ले चुका है, बाकी का पंद्रह लाख उसे तब मिलेगा, जब वो तुम्हें ढूंढ़ देगा। बेदी इस बात की पूरी कोशिश कर रहा है कि तुम्हें ढूंढ़ सके। उसके सिर में गोली फंसी हुई है। इससे पहले कि गोली अपनी जगह से फिसले और जहर फैले, वो ऑप्रेशन कराकर गोली निकलवा लेना चाहता है।"

"मुझे विजय बेदी से कोई मतलब नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम चोरी-छिपे रानी ताशा को देख लेना चाहते हो।"

"उसके चेहरे को। मैं देखना चाहता हूं कि चेहरा देखने के बाद मुझे कुछ याद आता है कि नहीं।"

"तुम सीधे रानी ताशा के सामने जाने की हिम्मत नहीं रखते क्या?" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा फिर बोला।
"मैं तो कब का रानी ताशा के सामने चला गया होता, परंतु बबूसा शुरू से ही मुझे ऐसा करने से रोके हुए है। इसी वजह से वो मेरे पास आया कि मैं रानी ताशा के सामने न जाऊं और वो बचाव का कुछ सोच सके।"
"तुम्हें बबूसा की बात पर भरोसा है?"
"भरोसा है, तभी तो मैं उसकी बातें मान रहा हूं।"
"बबूसा ने आकर तुम्हें बताया और तुमने उसकी बात का भरोसा कर लिया?"
"बहुत वक्त लगा मुझे बबूसा पर भरोसा करने में।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"बबूसा की बातें ऐसी नहीं कि कोई मान ले। इस मामले में बहुत कुछ हुआ, तब जाकर भरोसा हुआ।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए **राजा पॉकेट बुक्स** में अनिल मोहन के पूर्व प्रकाशित दो उपन्यास—**'बबूसा'** एवं **'बबूसा और राजा देव'** अवश्य पढ़ें)।
अर्जुन कुछ पल चुप रहकर बोला।
"नीना ने मुझे एक रास्ता सुझाया है। रानी ताशा से हम पीछा छुड़ा सकते हैं।"
"कैसे?"
"रानी ताशा के बारे में पुलिस को खबर देकर कि वो दूसरे ग्रह से आई है। अगर वो वास्तव में दूसरे ग्रह से आई है तो बचने वाली नहीं। वो लोगों की निगाहों का केंद्र बन जाएगी। सरकार उसे पकड़ लेगी कि उससे बातचीत की जा सके। टी.वी. न्यूज चैनल और अखबार वाले शोर डाल देंगे। रानी ताशा ऐसे हालातों में घिर जाएगी कि तुम्हारे बारे में सोचने का उसे वक्त नहीं मिलेगा। अगर उसका अंतरिक्ष यान डोबू जाति में कहीं खड़ा है तो उसे भी ढूंढ़ लिया जाएगा। मतलब कि रानी ताशा का तुमसे पीछा छूट जाएगा।" अर्जुन भारद्वाज गम्भीर था।
देवराज चौहान एकाएक सोचों में डूबा दिखा।
बबूसा बात को कुछ समझा और कुछ नहीं समझा। परंतु चुप रहा।
नीना की निगाह देवराज चौहान पर थी।
"तुमने अच्छी बात सोची।" देवराज चौहान ने कहा।
"मैंने नहीं, नीना ने।"
"परंतु अभी मैं ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहता।"
"क्यों?"
"मैं देखना चाहती हूं कि रानी ताशा का चेहरा देखकर, क्या मुझे वास्तव में कुछ याद आता है।" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा—"अगर

रानी ताशा के खिलाफ हम ऐसा कुछ करना चाहते हैं तो, इसके कई मौके आगे भी हमें मिलेंगे।"

"जैसा तुम ठीक समझो।" अर्जुन भारद्वाज बोला।

"सर, मुझे नींद आ रही है। सुबह उठना भी है और नजर रखने की अपनी ड्यूटी भी देनी है।" नीना बोली।

"तुम सो जाओ नीना। हम भी सोने जा रहे हैं। कल तुमने कोशिश करनी है कि देवराज चौहान रानी ताशा का चेहरा देख सके।"

"रानी ताशा कमरे से बाहर नहीं निकलेगी तो ये कैसे सम्भव हो सकेगा।" नीना ने जवाब दिया।

अर्जुन भारद्वाज नीना के पास बेड पर लेट गया। इतनी जगह उसने देवराज चौहान को दे दी कि वो भी आराम से लेट सके। बबूसा सोचों में डूबा कमरे में घंटा भर टहलता रहा। वो इस बात को नहीं भूला था कि रानी ताशा कुछ ही कदमों दूर, सामने वाले कमरे में मौजूद है फिर वो लम्बे सोफे पर आ लेटा।

▭ ▭

नीना सुबह छः बजे उठ गई। मोबाइल में छः का अलार्म लगाकर सोई थी। सात बजे तक वो नहा-धोकर, कपड़े चेंज करके तैयार हुई। अर्जुन भारद्वाज, देवराज चौहान और बबूसा नींद में थे। नीना ने देवराज चौहान को हिलाकर उठाया। देवराज चौहान ने आंखें खोलकर उसे देखा।

"हां।"

"तुम यहां सोने आए हो।" नीना कह उठी—"खड़े हो जाओ। सात बज गए हैं। रानी ताशा का क्या भरोसा, कब वो अपने कमरे से बाहर निकल आए। मैं बाहर नजर रखने जा रही हूं। जब भी रानी ताशा के कमरे का दरवाजा खुलेगा, तुम्हें बुला लूंगी।" कहने के साथ नीना ने ड्रेसिंग टेबल वाला स्टूल उठाया और दरवाजे के पास जा पहुंची। दरवाजा आधा इंच भर खोला और स्टूल रखकर झिरी में आंख लगा दी। राहदारी के पार, रानी ताशा के कमरे का दरवाजा बंद दिखा।

देवराज चौहान के साथ-साथ अर्जुन भारद्वाज की आंख भी खुल गई थी।

"नीना ठीक कहती है।" अर्जुन बोला—"रानी ताशा कभी भी बाहर आ सकती है या सारा दिन बाहर न निकले। कुछ पता नहीं।"

आठ बजते-बजते देवराज चौहान और अर्जुन भारद्वाज भी लगभग तैयार हो गए थे।

"नीना।" अर्जुन पास आकर धीमे स्वर में बोला—"विजय बेदी बाहर निकले तो बताना। मैंने उस पर नजर रखनी है।"

"आप उसके पीछे जाएंगे?"

"हां। वो देवराज चौहान का ठिकाना तलाश कर...।"
"आज बेदी के पीछे मैं जाऊंगी सर।" नीना दरवाजे पर आंख लगाए धीमे स्वर में कह उठी।
"तुम...?"
"हां सर। विजय बेदी को मैं संभालूंगी।"
"लेकिन तुम सारा दिन उसके पीछे...।"
"उसके पीछे नहीं सर, उसके साथ रहूंगी।" नीना बोली—"सब कुछ उसके मुंह से निकलवा लूंगी कि वो क्या कर रहा है और रानी ताशा क्या कर रही है। आप सोच रहे होंगे कि मैं कैसे ये काम कर लूंगी तो आपको बता दूं कि आदमी जन्मजात बेवकूफ होते हैं, तब तो और भी ज्यादा बेवकूफ हो जाते हैं, जब कोई औरत सामने पड़ जाए। रोब मारने और हेकड़ी दिखाने के चक्कर में वो औरत के सामने अपना सब कुछ खोलकर रख देते हैं।"
अर्जुन ने गहरी सांस ली।
"आज बेदी के पीछे मैं जाऊंगी सर।"
"तुम्हारा मतलब कि मैं बेवकूफ हूं। मैं भी तो आदमी हूं।" अर्जुन भारद्वाज मुस्कराया।
"आपकी बात नहीं कर रही सर। आप तो बहुत समझदार हैं, पकड़ में ही नहीं आते। मां कई बार शादी के लिए पूछ चुकी है, परंतु मैं मां को क्या कहूं, ग्रीन लाइट ही नहीं देते आप।" दरवाजे पर आंख लगाए नीना बोली।
जवाब में अर्जुन का जवाब नहीं आया तो उसने दरवाजे से आंख हटाकर, सिर घुमाकर देखा, अर्जुन वहां से दूर जा चुका था। वो पुनः दरवाजे पर आंख लगाती बड़बड़ा उठी।
'सब आदमी बेवकूफ होते हैं। ये तीस मारखां जासूस तो सबसे बड़ा बेवकूफ है, जो मेरा हाथ नहीं थाम रहा।'
बबूसा भी जाग गया था।
तब नौ बजे थे जब अर्जुन भारद्वाज ने नाश्ता मंगवाने की बात की।
परंतु नीना उसी पल खड़ी हो गई थी। हाथ के इशारे से अर्जुन भारद्वाज को पास बुलाया।
"सर, बेदी बाहर निकलकर गया है। मैं उसके पीछे जा रही हूं। आप मेरी जगह संभाल लें।" कहने के साथ ही नीना ने दरवाजा खोला और दरवाजा बंद करते हुए बाहर निकलते चली गई।
रानी ताशा के कमरे का दरवाजा बंद था। नीना तेजी से आगे निकल गई। लिफ्ट के पास पहुंची तो बेदी को वहां नहीं पाया। एक लिफ्ट नीचे जा रही थी। नीना समझ गई कि बेदी नीचे जा चुका है, वो तुरंत दूसरी लिफ्ट में

सवार होकर नीचे पहुंची तो उसने विजय बेदी को काफी दूर होटल के मुख्य दरवाजे से बाहर निकलते देखा। नीना तेजी से उसकी तरफ बढ़ती चली गई।

होटल के बाहर ही था बेदी कि नीना उसके पास पहुंच गई।

"बेदी भैया आप।" नीना खुशी से कह उठी—"मैं तो हर रोज आपको याद करती हूं कि आपने उस दिन मेरी जान बचाई। साथ में मेरे सर की भी जान बचाई। वरना वो पागल लोग तो हमें मार ही देते।"

विजय बेदी ने हैरानी से नगीना को देखा।

"तुम यहां कैसे? वो भी सुबह-सुबह...। क्या फिर रानी ताशा के पास...।"

"कानों को हाथ लगाओ।" नीना ने कान को हाथ लगाया—"उन पागलों के पास मैं तो कभी न जाऊं।"

"तो फिर यहां...?"

"इसी होटल में तो ठहरी हूं मैं।" नीना ने उसी पल कहा—"कुछ काम से मुम्बई में फंसे हुए थे। अर्जुन साहब तो रात की फ्लाइट से दिल्ली वापस चले गए। उन्हें काम था। परंतु मैं मुम्बई घूमना चाहती थी। तुम चलोगे मेरे साथ?"

"मुम्बई घूमने?" बेदी ने अजीब-से स्वर में कहा।

"हां।"

"मैंने बहुत घूम रखी है मुम्बई। तुम घूमो।" बेदी ने लापरवाही से कहा।

"मैं अकेली हूं। मेरा साथ नहीं दोगे। बोर हो जाऊंगी दिन भर में।" नीना ने मुंह लटकाकर कहा।

"तुम्हारी बात जरूर मान लेता, पर मुझे आज बहुत जरूरी काम है। इसलिए...।"

"ठीक है बेदी भैया। ऐसे नहीं तो ऐसे सही। तुम मेरे साथ नहीं तो, मैं तुम्हारे साथ रहूंगी।"

"तुम मेरे साथ?" विजय बेदी ने उलझन भरी निगाहों से नीना को देखा।

"क्या फर्क पड़ता है। घूमना ही तो है। टाइम ही तो पास करना है। तुम्हारे साथ घूम लूंगी, जहां तुम जाओगे।"

बेदी हिचकिचाकर कह उठा।

"जैसा तुम चाहो।"

उसके बाद उन्होंने टैक्सी ली। बेदी ने टैक्सी वाले को वरसोवा चलने को कहा। टैक्सी दौड़ पड़ी। दोनों टैक्सी की पीछे की सीट पर बैठे थे।

"तुम्हारे सिर में फंसी गोली का क्या हाल है?" नीना ने मुस्कराकर पूछा।

"वो अपनी जगह पर है।" बेदी ने गहरी सांस ली—"और तुम जो देवराज चौहान की पत्नी के केस पर काम कर...।"

"केस छोड़ दिया।"

"क्यों?"

"पागलों वाला मामला था। रानी ताशा खुद को दूसरे ग्रह से आया बताती है। ऐसा भी कभी होता है।" नीना ने कहा।

"सही कहती हो। मैं खुद उनकी बातें सुनकर पागल हुआ पड़ा हूं।" बेदी ने मुंह बनाकर कहा।

"तो चले क्यों नहीं जाते उनके पास से?"

"मैंने तुम्हें बताया तो था कि मुझे पैसों की जरूरत है। ऑप्रेशन कराकर सिर में फंसी गोली निकलवानी है। देवराज चौहान का पता मालूम होते ही मुझे पंद्रह लाख मिल जाएंगे। पांच लाख पहले ही ले चुका हूं। वो पागल डॉक्टर वधावन ऑप्रेशन करने का बारह लाख मांगता है। सीधा उसके पास जाऊंगा।" बेदी ने गहरी सांस ली।

"लेकिन देवराज चौहान का पता तुम्हें कैसे मालूम होगा?"

"तुम बता दो।"

"मैं? क्या बात करते हो बेदी भैया, डकैती मास्टर देवराज चौहान मुझे अपना ठिकाना क्यों बताने...।"

"तुमने और अर्जुन भारद्वाज ने कहा तो था कि देवराज चौहान का ठिकाना जानते हो।" बेदी ने उसे देखा।

"सही कहा था। परंतु तब देवराज चौहान और नगीना हम से खार के डीलक्स होटल में मिले थे। तब तो हम जानते थे कि देवराज चौहान कहां है, परंतु दो दिन पहले उसने हमारे सामने होटल खाली किया। हमने तो अपनी फीस ले ली थी। उसके बाद देवराज चौहान कहां गया, कुछ पता नहीं।"

"कोई बात नहीं। आज मुझे देवराज चौहान का ठिकाना पता चल सकता है।" बेदी बोला।

"अच्छा। ये तो खुशी की बात है। पर कैसे पता चलेगा?"

"एक आदमी जगमोहन का ठिकाना जानता है। जगमोहन और देवराज चौहान एक साथ ही रहते हैं।"

"ये तो तुमने सही कहा।" नीना ने फौरन सिर हिलाया।

"मैं आज उस आदमी से मिलने वाला हूं। कोई मुझे उस आदमी से मिलवाएगा। जगमोहन का ठिकाना बताने के बदले वो दो लाख रुपया मांगता है।" बेदी ने अपनी जेब थपथपाई—"दो लाख रानी ताशा से ले आया हूं।"

"अब तुम किसके पास जा रहे हो?" नीना ने पूछा।

"उस आदमी के पास, जो मुझे उस आदमी से मिलवाएगा। जो जगमोहन का पता जानता है।"

"समझ गई। मैं तो चाहूंगी कि जल्द से तुम्हारा ऑप्रेशन हो जाए। तुम्हारे सिर में फंसी गोली निकल जाए। मुझे पूरा भरोसा है कि तुम देवराज चौहान का पता लगा लोगे।" नीना ने सामान्य स्वर में कहा।

"इन पागल लोगों से मैं दूर हो जाना चाहता हूं। वो मुझे अच्छे नहीं लगते। हर वक्त राजा देव या बबूसा की बातें करते हैं तो कभी किसी ग्रह की बातें करने लगते हैं। बेसिर-पैर की बातें सुनकर मेरा दिमाग खराब होना शुरू हो जाता है। दिल करता है भाग जाऊं पर पंद्रह लाख की वजह से मैंने कदम रोक रखे हैं।"

"और वो सोमाथ।" नीना आंखें फैलाकर बोली—"कितना ताकतवर है। अर्जुन सर की तो बुरी हालत कर दी। बेहोश कर दिया उन्हें। वैसे सर बड़े-बड़ों की हवा निकाल देते हैं पर उस दिन तो 'सर' की ही हवा निकल गई थी।"

"अजीब इंसान है सोमाथ।" विजय बेदी गम्भीर स्वर में कह उठा—"मैंने उसे कभी भी आराम करते नहीं देखा। उसे कभी खाना खाते, चाय-कॉफी पीते नहीं देखा। पूछने पर कहता है कि उसे इन चीजों की जरूरत नहीं पड़ती। मुझे तो वो सब सिरे से पागल लगते हैं। उनकी कोई बात मेरी समझ में नहीं आती।"

"छोड़ो भी बेदी भैया। तुमने समझकर क्या करना है। आज तुम्हें देवराज चौहान के ठिकाने का पता मिल ही जाना है। रानी ताशा को वो ठिकाना दिखाओ। अपने पंद्रह लाख के नोट गिनो और नमस्ते करके चलते बनो।"

"ये ही मैंने सोच रखा है।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा।

दोनों में इसी प्रकार बातें होती रहीं।

टैक्सी वरसोवा पहुंची तो एक जगह बेदी ने टैक्सी रुकवाई। किराया देकर नीना के साथ आगे बढ़ गया। एक गली में गया, जहां साधारण-से फ्लैट बने हुए थे।

"तुम यहीं रुको, मैं अभी आता हूं।" एकाएक विजय बेदी ने कहा।

"क्यों, मेरे साथ चलने में क्या है?"

"वैसे तो कोई हर्ज नहीं, फिर भी तुम।"

"मैं तुम्हारे साथ ही जाऊंगी बेदी भैया। अकेली लड़की को इस तरह खड़े देखकर, लोग क्या सोचेंगे?"

"ठीक है, साथ ही आ जाओ।"

नीना, विजय बेदी के साथ रही। बेदी सामने नजर आ रही सीढ़ियां चढ़कर पहली मंजिल पर पहुंचा और एक बंद दरवाजे के बाहर लगी बेल का स्विच दबा दिया। भीतर घंटी बजने की आवाज सुनी।

कुछ पलों बाद कदमों की आहट के साथ दरवाजा खोला गया। दरवाजा

खोलने वाला पके बालों वाला व्यक्ति था। चेहरा सख्त-सा था। उसने गहरी निगाहों से नीना को देखा।

"नमस्ते जी।" नीना ने फौरन मुस्कराकर दोनों हाथ जोड़े।

"लड़की कौन है?" उस आदमी ने बेदी से पूछा।

"ये—ये मेरी बहन है।" बेदी ने जल्दी-से कहा—"इसकी फिक्र मत करो। काम निबटाओ।"

"पैसा लाए हो?"

"हां।"

"आओ।" वो दरवाजे से हटता बोला।

बेदी और नीना भीतर प्रवेश कर गए। कमरे में डबल बेड के अलावा दो कुर्सियां और एक टेबल रखा था। पंखा चल रहा था।

"नोट दिखाओ।" उसने बेदी से कहा।

बेदी ने फौरन दो जेबों से, हजार-हजार के नोटों की गड्डियां निकाली।

"दो लाख है।" बेदी बोला।

उसने फोन उठाया और नम्बर मिलाकर, कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल गई। फिर आवाज कानों में पड़ी।

"बोल हेगड़े।"

"वो दो लाख ले आया है मुन्ना।"

"खास ही काम होगा जगमोहन से जो सुबह-सुबह ही आ पहुंचा नोट लेकर।" उधर से मुन्ना ने कहा।

"जगमोहन का पता बताएगा या इसे नोटों के साथ तेरे पास भेजूं।"

"मेरे पास भेजने की क्या जरूरत है। तू नोट रख ले। शाम को तेरे होटल में आकर ले लूंगा।" कहने के साथ ही उधर से मुन्ना ने एक पता बताया फिर कहा—"पहले नोट लेना, फिर पता बताना।"

"चिंता न कर।" उसने फोन बंद करके रखा और बेदी से बोला—"नोट मुझे दे।"

"पहले जगमोहन का पता...।"

"नोट लेने के बाद ही तो पता बताऊंगा। नोट दे, पता सुन ले।"

बेदी ने दोनों गड्डियां उसके हाथ में थमाई।

उसने जगमोहन के बंगले का पता बता दिया।

पता सुनते ही नीना ठगी-सी रह गई। बिल्कुल सही पता था।

"पक्का है न कि जगमोहन यहीं रहता है।" बेदी गम्भीर स्वर में कह उठा।

"खोटे धंधे में हम बेईमानी नहीं करते।" उसने शांत स्वर में कहा—"शाम तक ये नोट मेरे ही पास हैं। अगर इस पते पर जगमोहन न रहता हो तो आकर

पैसे वापस ले जाना। ये ही नोट वापस मिलेंगे। शाम तक का वक्त है तेरे पास।"

"मैं डकैती मास्टर देवराज चौहान के साथी जगमोहन की बात कर रहा हूं। किसी और जगमोहन की बात नहीं कर रहा।"

"मैं भी उसी जगमोहन की बात कर रहा हूं। पर तेरे को काम क्या है जगमोहन से?"

"कोई काम लेना है उससे। तभी उसे ढूंढ़ रहा हूं।"

"किसी को साफ करवाना हो तो ये काम मैं भी करवा सकता हूं।" वो बोला।

"दूसरा काम है। ये काम जगमोहन ही कर सकता है।"

विजय बेदी नीना के साथ वहां से बाहर से आ गया। चेहरे पर गम्भीरता थी और सोच रहा था कि क्या उसे सही पता बताया गया है। दो लाख पानी में तो नहीं फेंक दिए। उधर नीना चिंता में थी कि बेदी को देवराज चौहान के बंगले का पता लग गया है। लेकिन उसे इस बात की राहत थी कि देवराज चौहान वहां नहीं है।

"अब तुम ये पता करोगे कि वहां देवराज चौहान रहता है या नहीं?" नीना बोली।

"पता करने के चक्कर में देवराज चौहान ने मुझे पकड़ लिया तो?"

"तब क्या करने का इरादा है?"

"मेरे खयाल में तो मुझे रानी ताशा को लेकर बंगले पर पहुंचना चाहिए। क्या पता मुझे सही पता बताया गया हो।"

नीना का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था।

"ऐसा करना बुरा नहीं। अगर पता गलत हुआ तो तब रानी ताशा को क्या जवाब दोगे?" नीना बोली।

"वही जो अब तक देता आया हूं कि जल्दी ही देवराज चौहान का पता ढूंढ़ लूंगा।"

बेदी ने एक टैक्सी को हाथ देकर टोका।

"वापस होटल जा रहे हो?"

"हां। रानी ताशा को लेकर, उस पते पर जाऊंगा। तुम भी साथ चलो।"

"वापस होटल जाकर क्या करूंगी। घूमने निकली हूं।" नीना ने मुस्कराकर कहा—"तुम जाओ।"

विजय बेदी टैक्सी में बैठकर चला गया। नीना ने उसी पल फोन निकाला और अर्जुन भारद्वाज के नम्बर मिलाए। बात हो गई।

"विजय बेदी को देवराज चौहान के बंगले का पता मिल गया है। अब वो

वापस होटल आ रहा है। उसका प्रोग्राम है कि रानी ताशा को उस बंगले पर लेकर जाएगा।" नीना ने जल्दी से कहा।

"तुम्हें, ये बात कैसे पता लगी?" उधर से अर्जुन ने पूछा।

नीना ने सब कुछ बता दिया।

"ये तो बहुत गलत हुआ।"

"ज्यादा गलत भी नहीं हुआ सर। पहली बात है कि देवराज चौहान बंगले पर नहीं है। ऐसे में रानी ताशा वहां पहुंचकर भी कुछ नहीं कर सकेगी। दूसरी बात है कि बेदी जब रानी ताशा के साथ कमरे से निकले तो देवराज चौहान रानी ताशा का चेहरा देख सकता है। बेदी ने वरसोवा से अभी टैक्सी पकड़ी है होटल के लिए। एक घंटा तो लग ही जाएगा, उसे होटल पहुंचने में।"

"तुम तो पूरी जासूस बनती जा रही हो।"

"आप मेरे से खुश हैं सर?"

"बहुत। तुमने बढ़िया काम किया।

"तो मुझे भी खुश कर दीजिए।" नीना के होंठों पर मुस्कान उभरी।

"कैसे?"

"मां मेरे से शादी के बारे में पूछ रही थी कि कब...।"

"हैलो-हैलो...।" उधर से अर्जुन की आवाजें आने लगीं।

"फोन बंद मत कीजिए सर। अभी और भी मुझे कहना है।" नीना कह उठी।

"क्या?"

"बंगले पर तीन लोग हैं। जगमोहन, नगीना और धरा। इन्हें वहां से हटाया भी जा सकता है।"

"सब कुछ तुम बताओगी तो मैं बेकार हो जाऊंगा।" अर्जुन की आवाज आई।

"अब तो आप खुश हैं कि मैं भी जासूस बनती जा रही...।"

उधर से अर्जुन भारद्वाज ने फोन बंद कर दिया था।

"कोई बात नहीं अर्जुन साहब। कभी तो खुश होकर, मेरे से लिपटोगे।" नीना मुंह बनाकर कह उठी।

▭ ▭

अर्जुन भारद्वाज ने फोन बंद करते ही, देवराज चौहान को सारी बात बताई।

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

बबूसा ने भी सुना और सिर हिलाकर उसी पल कह उठा।

"ये तो बहुत अच्छी बात हुई। राजा देव उन्हें वहां नहीं मिलेंगे। अच्छा हुआ हम यहां आ गए।"

"इतना कह देने से बात नहीं बनेगी बबूसा।" देवराज चौहान ने गम्भीर

स्वर में कहा—"क्या पता मेरे न मिलने से जगमोहन, नगीना या धरा को वो कोई नुकसान पहुंचा दें। ये चिंता वाली बात है। हमें वहां जाना होगा।"

"क्या?" अर्जुन चौंका—"तुम वहां जाओगे?"

"कभी नहीं।" बबूसा दृढ़ स्वर में कह उठा—"आप वहां नहीं जाओगे राजा देव। आपको रानी ताशा के सामने नहीं जाना...।"

"बंगले पर मेरी पत्नी है, जगमोहन है और धरा...।"

"रानी ताशा का चेहरा देखने का आपको बहुत बढ़िया मौका मिलने जा रहा है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"आप इस मौके को कैसे छोड़ सकते हैं। महापंडित के मुताबिक रानी ताशा का चेहरा देख लेने के बाद आपको सदूर ग्रह का जन्म याद आना शुरू हो जाएगा। हम यहां पर इसी कारण आए हैं कि आप रानी ताशा का चेहरा देख सकें।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और सोच भरे स्वर में बोला।

"इन हालातों में मेरा, उनके पास रहना जरूरी...।"

"आप भूल कर रहे हैं राजा देव। मैं जिस बात से आपको बचाने की चेष्टा कर रहा हूं आप उसी तरफ मुड़ने को कह रहे हैं। आप वहां पर हुए और रानी ताशा सामने पड़ गई और उसका चेहरा देखते ही आप उसके दीवाने हो सकते हैं। ऐसे में आपको संभालूंगा या सोमाथ का मुकाबला करूंगा। रानी ताशा आपको अपने साथ ले जाएगी। आप उसके प्यार में इस कदर डूब जाएंगे कि आपको सदूर ग्रह के जन्म का कुछ भी याद नहीं आएगा। वो आपको पोपा में बैठाकर सदूर ग्रह पर ले जाएगी और तब महापंडित आपके दिमाग के उस हिस्से को साफ कर देगा, जहां पर उस जन्म की यादें मौजूद हैं। परंतु ये बात भी पक्की है कि मैं रानी ताशा को सफल होने से रोकूंगा। हो सकता है इस कोशिश में सोमाथ मेरी जान भी ले ले।"

देवराज चौहान ने बबूसा को देखा।

अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"आपके साथ के लोग, जगमोहन नगीना भी तो रानी ताशा को रोकना चाहेंगे राजा देव?"

"हां।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"तो उनकी जान भी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए अभी आप रानी ताशा के सामने मत जाएं। रानी ताशा का चेहरा देखें और सदूर ग्रह की बातें याद आने का इंतजार करें।" बबूसा गम्भीर था—"मेरी मेहनत खराब न करें। मैं आपको रानी ताशा से बचाना चाहता हूं। एक बार तो वो अपनी मनमानी कर चुकी है। आपको जबर्दस्त धोखा दे चुकी है। परंतु दूसरी बार मैं ऐसा नहीं होने देना चाहता। मैं चाहता हूं आप रानी ताशा को सजा दें उसके किए की।

ये तभी हो सकता है जब आप मेरे कहने पर चलें। अगर रानी ताशा आपको सदूर ग्रह पर ले जाने पर कामयाब हो गई तो महापंडित की सहायता से आपके दिमाग के उस हिस्से को साफ करा देगी। फिर आपको कभी भी कुछ भी याद नहीं आ सकेगा। और रानी ताशा आपकी सजा से बच जाएगी। वो आपको हासिल कर लेगी। ऐसा हुआ तो बहुत गलत हो जाएगा।"

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"महापंडित जाने क्या चाल खेल रहा है राजा देव। वो चाहता तो अपनी मशीनों का सहारा लेकर, आपके सदूर ग्रह के जन्म की हर बात याद दिला सकता था। परंतु उसने ऐसा नहीं किया। वो रानी ताशा के साथ है। उसकी बातें मान रहा है। महापंडित भी सजा का हकदार हो चुका है। उसे रानी ताशा का साथ नहीं देना चाहिए। दोनों आपके खिलाफ षड्यंत्र रच रहे हैं।"

"तुम ऐसी बातों का जिक्र कर रहे हो जो मुझे जरा भी याद नहीं।" देवराज चौहान बोला।

"मैं आपको याद दिलाने की ही तो चेष्टा में हूं राजा देव। आपको यहीं रहना है और रानी ताशा का चेहरा देखना है। रानी ताशा को बंगले पर जाने दीजिए। आप वहां नहीं होंगे तो रानी ताशा के पास करने को कुछ नहीं होगा।"

"बेहतर होगा कि।" देवराज चौहान ने अर्जुन को देखा—"हम उन्हें बंगला छोड़ देने को कह दें।"

"मैं ये ही सुझाव देने वाला था देवराज चौहान। बंगले में रानी ताशा को कोई न मिले, तो ठीक होगा।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

देवराज चौहान ने फोन निकाला और जगमोहन के नम्बर मिलाने लगा।

फौरन ही बात हो गई। जगमोहन ने छूटते ही पूछा।

"रानी ताशा को देखा क्या?"

"नहीं। लेकिन अपने काम की बात सुनो। रानी ताशा को बंगले के बारे में पता चल गया है।" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह।"

"मेरे खयाल में वो दो घंटे तक वहां पहुंच सकती है। तुम लोगों के लिए खतरा पैदा हो सकता है। मुझे वहां मौजूद न पाकर, वो तुम लोगों का साथ बुरा बर्ताव कर सकती है। तुम तीनों अभी बंगले से निकल जाओ।"

"ऐसा करना जरूरी है क्या?"

"हां। मैं वहां नहीं मिलूंगा तो तुम लोगों का बुरा कर सकती...।"

"अगर हम बंगले में ही रहें तो...।"

"मेरा खयाल में तुम लोगों का वहां से चले जाना ही ठीक होगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"इस तरह हम कब तक रानी ताशा से भागते रहेंगे। एक बार उसका सामना करके देखते हैं कि...।"

"बबूसा के मुताबिक हमने तब तक रानी ताशा के सामने पड़ने से बचना है, जब तक मैं रानी ताशा का चेहरा न देख लूं और मुझे कुछ याद न जाए। इसलिए तुम लोग भी...।"

"रानी ताशा को तुम चाहिए। हमसे रानी ताशा को कोई मतलब नहीं।" जगमोहन की आवाज आई।

देवराज चौहान कुछ चुप रहकर बोला।

"नगीना वहां है?"

"भाभी यहीं है। उसे फोन दूं?"

"नहीं। तुम लोग आपस में सलाह कर लो। जो ठीक लगे। वो ही करो।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

अर्जुन भारद्वाज दरवाजे की तरफ बढ़ता कह उठा।

"विजय बेदी आने वाला होगा। मैं बाहर नजर रखता हूं। जब बेदी आ जाएगा उस कमरे में तो तब तुम्हें बाहर नजर रखनी होगी। रानी ताशा जल्दी ही, तुम्हारे बंगले पर जाने के लिए, बेदी के साथ बाहर निकलेगी।"

▭ ▭

जगमोहन ने नगीना को सारी बात बताई।

धरा ने भी सब कुछ सुना और व्याकुल हो उठी। बोली।

"देवराज चौहान ठीक कहता है। हमें ये जगह छोड़ देनी चाहिए।"

जबकि नगीना के चेहरे पर दृढ़ता आ गई थी।

"जगमोहन भैया।" नगीना शब्दों को चबाकर कह उठी—"हम यहीं रहेंगे।"

"सोच लो भाभी।" जगमोहन गम्भीर था।

"उन्हें आने दो। मैं रानी ताशा को देखना चाहती हूं कि वो क्या करती है।" नगीना के चेहरे पर कठोरता आ गई।

"ये क्या कह रही हो तुम।" धरा ने तेज स्वर में कहा—"वो देवराज चौहान के लिए यहां आ रहे हैं। देवराज चौहान उन्हें नहीं मिलेगा तो गुस्से में वो हमारा बुरा कर सकते हैं। क्या पता वो कैसी सोच रखते हैं। दूसरे ग्रह के लोग हैं। उनकी आदतें भी कुछ जुदा होंगी। बबूसा का कहना है कि रानी ताशा का भरोसा नहीं किया जा सकता कि कब वो क्या कर दे।"

"यही तो देखना है कि रानी ताशा क्या करती है।" नगीना गुर्रा उठी।

"हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते। रानी ताशा के साथ सोमाथ है जो बबूसा से भी ताकतवर है।"

"उसके बारे में मुझे अर्जुन भारद्वाज बता चुका है कि वो कितना ताकतवर है।"

"फिर भी तुम यहीं जमे रहना चाहती हो।"

"हम बबूसा की बातों को ही सच मानकर अभी तक चल रहे हैं। हमें भी तो देखना है कि वो कैसे लोग हैं।"

"देखने-देखने के चक्कर में हमारी जान चल गई तो?"

"तुम डर रही हो तो यहां से जा सकती हो।"

"मैं डर जरूर रही हूं परंतु आने वाले वक्त के प्रति सतर्कता भी बरतना चाह रही हूं। मेरी बात को समझने की...।"

"हम यहीं रहेंगे।" नगीना ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं रानी ताशा से जरूर मिलना चाहूंगी जो मेरे पति को अपना कह रही है।"

"ये वक्त पति के बारे में नहीं, खतरे के बारे में सोचने का है। रानी ताशा का क्या भरोसा कि...।"

"चुप रहो। मैंने जो करना है, उसका फैसला ले लिया है।" नगीना ने दो टूक स्वर में कहा।

धरा ने आहत भाव से जगमोहन को देखा।

जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता और व्याकुलता थी।

"क्या तुम भी नगीना की बातों से सहमत हो?"

"काफी हद तक। हमें एक बार रानी ताशा का सामना करना चाहिए। वो हमारी तरफ बढ़ रही है और हम बचते फिर रहे हैं। ये बात ठीक नहीं है। देवराज चौहान की अपनी मजबूरी होगी, बबूसा उसे अपने हिसाब से चला रहा है। परंतु हमारे सामने कोई मजबूरी नहीं है। वो देवराज चौहान को तलाश कर रही है, हमें नहीं।"

"तुम पागल हो। लोग कुएं से बचने की कोशिश करते हैं और तुम कुएं में छलांग लगा रहे हो।"

"क्या तुम रानी ताशा को देखना नहीं चाहती। जानना नहीं चाहतीं कि यहां आकर वो क्या करती है।"

"बेवकूफ।" धरा झल्ला उठी—"जरा ये तो सोचो कि अगर यहां पर उसे देवराज चौहान नहीं मिला और गुस्से में उसने हमें ही मार दिया तो? क्या पता वो कैसे दिमाग की है। बबूसा की बातों से तो लगता है वो खतरनाक है।"

"इसका इंतजाम मैं पहले ही करके रखूंगा।" जगमोहन का स्वर कठोर हो गया।

"कैसा इंतजाम?"

"रिवॉल्वर पर साइलेंसर लगा होगा कि जरूरत पड़े तो अपना बचाव किया जा सके।"

धरा होंठ भींचे जगमोहन को देखने लगी।

जगमोहन के चेहरे पर खतरनाक भाव थे।

"भाभी हम यहीं रहेंगे।" जगमोहन कह उठा—"रानी ताशा से मिलेंगे।"

"जरूर मिलेंगे। मैं उसे देखना चाहती हूं जो मेरा पति, ले जाने आई है।" नगीना के दांत भिंच गए।

जगमोहन उठा और भीतर कमरे की तरफ बढ़ गया।

"सुनो तो।" धरा परेशान-सी कह उठी—"जल्दी में फैसला न लो। सोच लो, वो सोमाथ सबको मार देगा।"

जगमोहन वहां से चला गया।

"तुम सबको खतरे में डालोगी।" धरा, नगीना को देखकर गुस्से से बोली।

"मैंने पहले ही कहा है कि तुम जा सकती हो यहां से। बबूसा के पास चली जाओ।" नगीना ने कहा।

"मैं यहीं रहूंगी।" धरा गम्भीर-व्याकुल स्वर में बोली—"तुम लोगों के साथ ही रहूंगी।"

▭ ▭

अर्जुन भारद्वाज ने बता दिया था कि विजय बेदी रानी ताशा के कमरे में आ पहुंचा है। इसके बाद देवराज चौहान दरवाजे के पास रखे स्टूल पर आ बैठा था। दरवाजा आधा इंच खुला था। देवराज चौहान ने झिरी पर आंख लगा दी। कुछ दूर बाद सोमाथ को निकलकर साथ वाले कमरे में जाते देखा। साथ वाले कमरे के दरवाजे का आधा हिस्सा देवराज चौहान को नजर आ रहा था। देवराज चौहान ने इशारे से अर्जुन को पास बुलाकर कहा।

"मैंने एक आदमी की उस कमरे से निकलकर दूसरे कमरे में जाते देखा है।"

अर्जुन ने सोमाथ का हुलिया बताया कि क्या वो ये आदमी था।

देवराज चौहान के सहमति से सिर हिलाने पर, अर्जुन ने कहा।

"वो सोमाथ है। रानी ताशा का आदमी। लोहे जैसे ताकत रखता है। मैं फौरन ही उससे हार गया था।"

देवराज चौहान ने दरवाजे की झिरी पर आंख लगा रखी थी।

"सोमाथ बगल वाले कमरे में गया है। वहां उनके और लोग हैं।" पास खड़ा अर्जुन भारद्वाज कह उठा—"मेरे खयाल में वो चलने की तैयारी कर रहे हैं। वो कभी भी बाहर निकल सकते हैं।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा। अर्जुन फिर बोला।

"याद रखना कमरे में दो औरतें हैं, मतलब कि दो युवतियां...।"

"दो?"

"हां। दोनों ही खूबसूरत हैं, परंतु एक बहुत ज्यादा खूबसूरत है। वो रानी ताशा है। तुम देखते ही समझ जाओगे।"

देवराज चौहान उसी स्थिति में बाहर देखता रहा।

बबूसा सोफे पर गम्भीर-सा बैठा इधर ही देख रहा था। अर्जुन उसके पास पहुंचा।

"रानी ताशा शायद बाहर निकलने वाली है।" अर्जुन बोला।

बबूसा ने सिर हिला दिया।

"तुम उसे देखना चाहो तो...।"

"मैं क्यों देखूं? बहुत देखा है उसे।" बबूसा नाराजगी से बोला—"वो धोखेबाज औरत है।"

"तुम रानी ताशा से खासे नाराज लगते हो।"

"राजा देव को जो कष्ट देगा, वो मुझे बहुत बुरा लगेगा। रानी ताशा ने राजा देव को धोखा दिया फिर ग्रह से बाहर फेंक दिया ये बात मैं कभी भी भूल नहीं सकता। मैं राजा देव का सेवक हूं तो रानी ताशा मुझे क्यों अच्छी लगेगी?" बबूसा उठते हुए बोला—"राजा देव रानी ताशा को कभी भी देख सकते हैं। ऐसा न हो कि राजा देव को उसे देखते ही, सब कुछ याद आ जाए और वो दरवाजा खोलकर रानी ताशा की तरफ दौड़ पड़ें। अब मुझे हर वक्त राजा देव के पास ही रहना होगा।"

"तुम्हारा मतलब कि देवराज चौहान रानी ताशा को देखेगा तो खतरनाक वक्त भी आ सकता है।" अर्जुन गम्भीर हो गया।

"कुछ भी हो सकता है।" बबूसा ने कहा और देवराज चौहान के पास पहुंचकर खड़ा हो गया।

"क्या दिख रहा है राजा देव?"

"सोमाथ को देखा था, वो दूसरे कमरे में गया है, जहां उसके और साथी हैं।" देवराज चौहान धीमे स्वर में कहा।

"देखने में कैसा है सोमाथ?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"बहुत ही सेहतमंद। चौड़े कंधे, भरा सीना, लम्बा, देखने में ही ताकतवर लगता है।"

"वो मुझसे भी लम्बा-चौड़ा है?"

"हां। कुछ ज्यादा ही है।"

बबूसा ने गम्भीरता से सिर हिलाया।

अर्जुन भारद्वाज सोफे पर बैठा और नीना को फोन किया।

"तुम कहां हो?" अर्जुन ने पूछा।

"होटल के बाहर।"

"यहां आ जाओ।"

"बेदी, रानी ताशा के साथ जरूर बाहर आने वाला होगा। मैं नहीं चाहती कि मेरा उनसे सामना हो जाए।" उधर से नीना ने कहा।

"मेरे खयाल में वो कुछ ही देर में निकलने वाले हैं। सोमाथ अपने साथियों के कमरे में गया है।"

"देवराज चौहान के बंगले की क्या स्थिति है?" नीना ने पूछा।

"देवराज चौहान ने उन्हें कह दिया है कि रानी ताशा वहां पहुंच रही है। वो बंगले से जाना चाहें तो जा सकते हैं।"

"उन्हें बंगले से चले जाना चाहिए।"

"ये फैसला वो ही करेंगे।"

"और आपके कमरे में क्या हो रहा है सर?" उधर से नीना ने पूछा।

"देवराज चौहान दरवाजे पर है। बाहर देख रहा है। बबूसा उसके पास खड़ा है कि कहीं रानी ताशा को देखते ही देवराज चौहान, रानी ताशा का पहले की तरह दीवाना न हो जाए। अगर ऐसा कुछ हुआ तो शोर-शराबा जरूर होगा। रानी ताशा का ध्यान इस तरफ भी आकर्षित हो सकता है। ये बहुत परेशान करने वाला मामला है। क्योंकि मैं बबूसा या देवराज चौहान की बातें तो सुन सकता हूं परंतु बातों की सत्यता की जांच नहीं कर सकता। ये मेरे लेवल का मामला नहीं है। मैं प्राइवेट जासूस हूं। मर्डर, खोए लोगों को ढूंढ़ना, किसी मामले की तफ्तीश करना, परंतु ये मामला तो बिल्कुल ही जुदा है।"

"मैंने तो पहले ही कहा था सर कि इस मामले से अलग हो जाते हैं। परंतु आप नहीं माने।"

"मैं देखना चाहता हूं कि आगे क्या होता है।"

"देखते-देखते हमें ही तारे दिख गए तो बहुत बुरा होगा सर।"

"जब तक तुम डरना नहीं छोड़ोगी, पूरी तरह जासूस नहीं बन सकतीं।" अर्जुन मुस्कराकर बोला।

"बन जाऊंगी सर। जब आप मुझे ट्रेनिंग दे रहे हैं तो क्यों नहीं बनूंगी। आज मैंने आपको खुश कर दिया न, ये बताकर कि बेदी को देवराज चौहान के बंगले का पता चल गया है, आप भी मुझे खुश कर देते तो...।"

अर्जुन भारद्वाज ने फोन बंद कर दिया।

▭ ▭

करीब एक घंटे बाद देवराज चौहान ने पुनः सोमाथ को रानी ताशा के कमरे से निकलकर बगल वाले कमरे की तरफ जाते और उसमें प्रवेश करते देखा फिर फौरन ही सोमाथ बाहर आया, उसके साथ तीन आदमी और भी थे जो पैंट-कमीज पहने हुए, साधारण लोगों की तरह दिखाई दे रहे थे। उसी पल रानी ताशा के कमरे का दरवाजा खुला और सोमारा बाहर निकली। देवराज चौहान ने स्पष्ट तौर पर सोमारा को देखा, जो बाहर आकर रुक गई थी। फिर विजय बेदी को बाहर निकलते देखा देवराज चौहान ने और उसके पीछे रानी ताशा बाहर आई।

बेदी ने कमरे का दरवाजा बंद कर दिया।

रानी ताशा की खूबसूरती देखकर, देवराज चौहान ठगा-सा रह गया। स्पष्ट नजर आ रही थी रानी ताशा। उसका चेहरा भी, करीब बीस सैकंड तक देवराज चौहान की निगाह रानी ताशा के चेहरे पर रही फिर वो राहदारी में आगे बढ़ते चले गए। देवराज चौहान की निगाहों से ओझल होते चले गए।

देवराज चौहान बुत-सा बना अभी भी स्टूल पर बैठा बाहर देखे जा रहा था। आधा मिनट बीत गया कि एकाएक देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ। आंखों में अजीब-सी चमक थी। होंठ सिकुड़े हुए थे।

"क्या हुआ राजा देव?" बबूसा फौरन बोला।

अर्जुन भारद्वाज की निगाह भी देवराज चौहान की तरफ उठी।

"म-मैंने उसे देखा—वो—वो...।"

"किसे?" बबूसा चौंका।

"रानी ताशा को—वो—वो बहुत ही खूबसूरत है, वो—वो...।" उसी पल देवराज चौहान को चक्कर आया और नीचे गिरने को हुआ कि बबूसा ने फुर्ती से उसे संभाल लिया बांहों में।

अर्जुन जल्दी से पास आया।

देवराज चौहान बेसुध था।

"बेहोश हो गया है।" अर्जुन भारद्वाज ने देवराज चौहान की टांगें थामते हुए कहा—"इसे बेड पर लिटाओ।"

देवराज चौहान को बेड पर लिटाया गया।

"राजा देव बेहोश क्यों हो गए?" बबूसा उलझन भरे स्वर में बोला—"कह रहे थे कि रानी ताशा को देख लिया है।"

"रानी ताशा को देखने पर देवराज चौहान बेहोश हो गया। ये क्या रहस्य है?" अर्जुन के माथे पर बल पड़े। पास पहुंचकर देवराज चौहान की बेहोशी को चैक करने लगा।

बबूसा की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"ये सब महापंडित की चाल है जो राजा देव, रानी ताशा को देखते ही बेहोश हो गए।" बबूसा बोला—"लेकिन ये अच्छा हुआ जो राजा देव ने रानी ताशा का चेहरा देख लिया। महापंडित ने रानी ताशा के चेहरे पर ऐसी कोई ताकत डाल रखी होगी कि राजा देव, रानी ताशा का चेहरा देखें तो उस पर गहरा असर हो।"

"ये बातें मुझे मत कहो।" अर्जुन, देवराज चौहान को चैक करता गम्भीर स्वर में बोला।

"क्यों?"

"मैं नहीं जानता महापंडित कौन है क्या करता...।"

"तुम्हें सब बता तो रखा है राजा देव की पत्नी ने—सब जानते हो तुम।" बबूसा बोला।

"और ये महापंडित दूसरे ग्रह पर रहता है। सदूर ग्रह पर?" अर्जुन ने बबूसा को देखा।

"हां।"

"मुझसे इस ग्रह के लोगों की बातें करो। मैं प्राइवेट जासूस हूं मेरी बांह इतनी लम्बी नहीं है कि दूसरे ग्रह तक पहुंच सके। मेरे से उन लोगों की बात करो, जिन तक मैं पहुंच सकूं।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हें लगता है कि मैं तुमसे झूठ कह रहा हूं...।"

"मुझे कुछ नहीं लगता।" अर्जुन भारद्वाज मुस्करा पड़ा—"पर तुम्हारी बातें सुनकर दिमाग खराब हो जाता है। तुम वो बातें करते हो जो मैं नहीं जानता। हालात मालूम करने सदूर ग्रह पर भी नहीं जा सकता। इसलिए तुम्हारी बातें मेरे लिए बेकार हैं। मैं ये नहीं कहता कि तुम झूठ कह रहे हो, पर मैं तुम्हारी बातें समझने की जरूरत नहीं समझता। मैडम नगीना ने मुझे जो काम सौंपा है मैं उसे पूरा करने की कोशिश में हूं कि उनकी ज्यादा-से-ज्यादा सहायता कर सकूं इस मामले में।"

"तुम्हें मेरी बातों का पूरी तरह यकीन करना चाहिए।"

"मेरे यकीन करने से कुछ नहीं होगा। क्या तुम मुझे सदूर ग्रह पर ले जा सकते हो?"

"नहीं।"

"तो फिर वहां की कोई बात मुझसे मत करो।"

"अजीब आदमी हो—तुम तो...।"

"मैं देवराज चौहान के बारे में सोच रहा हूं कि इसकी बेहोशी बहुत गहरी है।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

"मतलब कि राजा देव देर तक बेहोश रहेंगे।"

"हां। मेरे खयाल से ऐसा नहीं होना चाहिए। लगता है इसके मस्तिष्क को किसी तरह का झटका लगा है।"

"बताया तो, ये सब महापंडित की ही करतूत होगी। उसी ने रानी ताशा के चेहरे पर ऐसी ताकत डाली है कि राजा देव जब उसका चेहरा देखें तो इनकी ये हालत हो जाए।" बबूसा गुस्से से कह उठा—"बुरा कर रहा है महापंडित।"

सोचों में डूबे अर्जुन भारद्वाज ने मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाया। फोन कान से लगाया।

"फोन रहने दो। राजा देव की तरफ ध्यान दो। मुझे राजा देव की बेहोशी की चिंता हो रही है। होश में आने पर राजा देव जाने किस हाल में होंगे। ऐसे भी हो सकता है कि होश आने पर राजा देव को सदूर ग्रह का सब याद आ जाए।"

"मैं मैडम नगीना को बताने जा रहा हूं कि रानी ताशा उनके पास आने को चल चुकी है।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा।

बबूसा के चेहरे पर सोचें नाच रही थीं। उसका दिमाग उलझा हुआ था। वो चिंता में भी दिख रहा था। उसने बेहोश पड़े देवराज चौहान पर निगाह मारी फिर दरवाजे के पास पहुंचा। सावधानी से दरवाजा खोलकर राहदारी में झांका। दो-तीन लोग जाते दिखे। दो वेटर भी दिखे। बबूसा ने रानी ताशा के कमरे के बंद दरवाजे पर निगाह मारी फिर बगल वाले उस कमरे के दरवाजे को भी देखा, जो कि बंद था। कुछ पल बबूसा सोचता रहा फिर दरवाजे से हटकर कमरे में आ गया।

अर्जुन भारद्वाज बात करके फोन बंद कर चुका था।

"मैं जोबिना तलाश करने रानी ताशा के कमरे में जा रहा हूं।" बबूसा ने कहा।

"जोबिना? ये क्या है?" अर्जुन ने पूछा।

"सदूर ग्रह वालों का जबर्दस्त हथियार है। सामने वाले पर इस्तेमाल करने पर, वो राख हो जाता है। (जोबिना के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'बबूसा और राजा देव'।) अगर मुझे जोबिना मिल गया तो मैं सोमाथ का मुकाबला आसानी से कर सकूंगा।"

"कहीं रानी ताशा के कमरे में उसका कोई आदमी न हो?" अर्जुन बोला।

"सोमाथ के अलावा कोई भी मेरा मुकाबला नहीं कर सकता। मैं किसी से नहीं डरता। तुम राजा देव का खयाल रखो।" कहने के साथ ही बबूसा बाहर निकल गया। दो मिनट बाद ही वापस लौटा—"दरवाजा बंद है।" बबूसा बोला—"अगर मैं उसे तोड़ता हूं तो ये गलत हो जाएगा। मेरे पास बहुत अच्छा मौका था। जोबिना तलाश करने का।"

"कहो तो मैं दरवाजा खोल देता हूं।" अर्जुन ने कहा।

"तुम?"

"अर्जुन अपने सूटकेस के पास पहुंचा। उसमें से चार इंच लम्बी, खास ढंग से मुड़ी तार निकाल ली।

"ये क्या है?" बबूसा उसके हाथ में थमी तार को देखता बोला।

"इससे दरवाजे का लॉक खुल जाएगा।" कहकर वो दरवाजों की तरफ बढ़ गया।

"सुनो, जो दूसरा कमरा है, जिसमें रानी ताशा के आदमी मौजूद हैं, उस दरवाजे का ताला भी खोल देना।"

अर्जुन भारद्वाज बाहर निकल गया।

पांच मिनट बाद वापस लौटा और बबूसा से कहा।

"दोनों दरवाजों के लॉक खुले हैं, जाओ।"

बबूसा बाहर निकलता चला गया।

तभी नीना कमरे में आ पहुंचीं

"बबूसा कहां है?" बबूसा को वहां न पाकर उसके होंठों से निकला।

"वो रानी ताशा के कमरे की छानबीन कर रहा है। मैंने तो सोचा था कि तुम रानी ताशा के पीछे जाओगी।" अर्जुन बोला।

"सोचा तो मैंने भी था। परंतु इरादा छोड़ दिया।" नीना बेड पर लेटे देवराज चौहान को देखा—"ये नींद में क्यों है?"

"बेहोश है।"

"क्यों?"

"देवराज चौहान ने रानी ताशा का चेहरा देखा और बेहोश हो गया। बहुत गहरी बेहोशी है।"

"हैरानी है कि रानी ताशा का चेहरा देखकर, देवराज चौहान बेहोश हो गया। आप सच कह रहे हैं सर?" नीना हैरानी से कह उठी।

अर्जुन ने सिर हिलाया।

"अजीब मामला है।" नीना बैठती हुई बोली—"इस समय आपको नगीना के पास होना चाहिए। रानी ताशा देवराज चौहान के बंगले पर गई है। सोमाथ भी साथ में है। वहां कोई झगड़ा हो गया तो?"

"देवराज चौहान को इस हाल में छोड़कर जाना ठीक नहीं।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा—"बल्कि मेरा तो खयाल है कि देवराज चौहान को, रानी ताशा के इतने पास रहना ही नहीं चाहिए। चेहरा देखना था, वो इसने देख लिया है।"

"तो आप देवराज चौहान को कहीं और ले जाना चाहते हैं?"

"समझदारी तो इसी में है। परंतु मेरे पास कोई जगह नहीं है, जहां देवराज चौहान को रख सकूं। वैसे भी इस हाल में देवराज चौहान को बाहर नहीं ले जाया जा सकता। ये बेहोश है। होटल वाले कई सवाल पूछेंगे।"

नीना कुछ पल चुप रही। फिर कह उठी।

"आपको क्या लगता है कि रानी ताशा, देवराज चौहान के बंगले पर पहुंचकर क्या करेगी। देवराज चौहान तो उसे मिलेगा नहीं।"

"वहां कुछ भी हो सकता है। देवराज चौहान के न मिलने पर रानी ताशा क्रोध में आ सकती है। उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। मुझे नहीं मालूम कि रानी ताशा किस तरह से सोचती है। परंतु वो खतरनाक है। कुछ भी कर सकती है।

"लेकिन सर, हम इस मामले से जुड़े क्या कर रहे हैं। हमारे लायक यहां कोई काम तो है नहीं।"

"मैडम नगीना चाहती है कि मैं उसके लिए काम करता रहूं। मुझे फीस मिल रही है तो मैं मामले से जुड़ा रहूंगा। मैं भी देखना चाहता हूं कि आखिर ये सब हो क्या रहा है।"

"रानी ताशा कहती है कि उसका अंतरिक्ष यान डोबू जाति के पास खड़ा है। उसने हमें बताया भी था कि डोबू जाति कहां पड़ती है। तो क्यों न हम वहां जाकर उस अंतरिक्ष यान को देखें। ऐसा करना ठीक रहेगा सर?" नीना ने अर्जुन को देखा।

"मैं ठीक से नहीं समझ पाया कि डोबू जाति कहां पर है। इतना ही समझ पाया कि लाहौल स्पीति के टाकलिंग-ला कस्बे से डोबू जाति को रास्ता जाता है। धरा का कहना है कि डोबू जाति खतरनाक है। क्या तुम वहां जाना चाहोगी?"

"मैं तो आपके साथ हूं सर।" नीना मुस्कराई—"जैसा आप हुक्म दें।"

"डोबू जाति से हमारा कोई मतलब नहीं। हमारा मतलब नगीना, देवराज चौहान और रानी ताशा से...।"

तभी बबूसा ने भीतर प्रवेश किया और दरवाजा बंद कर दिया।

"मिला?" उसे देखते ही अर्जुन ने पूछा।

"नहीं। दोनों कमरों में कहीं भी जोबिना नहीं मिला। जोबिना को वो जरूर अपने साथ ले गए हैं।" बबूसा ने कहा।

"जोबिना?" नीना बोली—"ये क्या चीज है?"

"सदूर ग्रह का हथियार है, जो सामने वाले को राख बना देता है।" अर्जुन ने बताया।

नीना ने सिर हिलाया फिर बबूसा से बोली।

"तुम्हें चिंता नहीं है कि रानी ताशा, सोमाथ के साथ, देवराज चौहान के बंगले पर गई है।"

"मुझे चिंता क्यों होगी? राजा देव तो यहां पर हैं।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा।

"वहां पर और लोग भी तो हैं।"

"मुझे सिर्फ राजा देव की परवाह है। मैं राजा देव का सेवक हूं।"

"वो सब देवराज चौहान के खास लोग हैं।"

"मेरा फर्ज सिर्फ राजा देव को देखना है।"

"वहां धरा भी है। वो तो तुम्हारी पहचान की है।"

"मेरे लिए राजा देव सबसे पहले हैं।" बबूसा ने नीना को देखा।

"तुम अजीब-से इंसान हो।"

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मेरी बात तुम्हें आने वाले वक्त में समझ आएगी। राजा देव खतरे में हैं। वो खतरा तुम नहीं, मैं देख रहा हूं। रानी ताशा आज राजा देव के बंगले पर पहुंच गई है तो वो जल्दी ही राजा देव तक भी आ जाएगी। तब मुझे राजा देव को बचाना होगा रानी ताशा से कि वो राजा देव को न ले जा सके। मन-ही-मन मैं उस वक्त की तैयारी कर रहा हूं। अगर मुझे जोबिना मिल जाती तो मैं सोमाथ का मुकाबला आसानी से कर लेता। उसे राख बना देता, परंतु जोबिना नहीं मिली। मुझे सिर्फ सोमाथ की चिंता है। कोई और मेरे मुकाबले पर नहीं टिक सकता।"

"देवराज चौहान तो रानी ताशा को देखते ही बेहोश हो गया।" नीना कह उठी।

"इस बात से मैं बहुत ज्यादा व्याकुल हूं कि रानी ताशा को देखकर राजा देव के मस्तिष्क पर गहरा असर हुआ है। ये सब महापंडित की चाल है। उसने रानी ताशा के चेहरे पर ऐसा प्रभाव छोड़ रखा है कि राजा देव उसे देखते ही अपने होश गुम कर बैठें। होश आने पर राजा देव जाने किस हाल में होंगे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये तो अच्छा हुआ कि देवराज चौहान रानी ताशा को देखकर दीवाना नहीं हो गया।" नीना मुस्कराई।

"तुम मुस्करा रही हो, जबकि ये बात काफी गम्भीर है। तुम अभी भी हालातों को नहीं समझ रही।"

तभी अर्जुन बोला।

"अगर रानी ताशा ने उन लोगों से जान लिया कि देवराज चौहान यहां है तो हम मुसीबत में पड़ सकते हैं।"

"वो सब देवराज चौहान के खास हैं।" नीना बोली—"वो नहीं बताने वाले।"

"वहां धरा भी है। वो तो बता सकती है।" अर्जुन ने कहा।

"धरा बहुत समझदार लड़की है।" बबूसा ने अर्जुन को देखा—"वो आसानी से नहीं बताने वाली।"

"फिर भी।" अर्जुन ने सिर हिलाकर कहा—"देवराज चौहान को रानी ताशा के पास वाले कमरे में रखने से खतरा है।"

"तो क्या करें?" बबूसा ने पूछा।

"देवराज चौहान ने रानी ताशा का चेहरा देख लिया है। अब इसे यहां से कहीं और ले जाना चाहिए।"

"ऐसा करना ठीक रहेगा।"

"तुम्हारे पास कोई जगह है, जहां देवराज चौहान को ले जाया जाए। बंगले पर देवराज चौहान को ले जाना ठीक नहीं होगा। वहां पर इस वक्त रानी ताशा है और वो दोबारा भी वहां जरूर जाएगी।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं ऐसी किसी जगह को नहीं जानता जहां राजा देव को रख सकूं।" बबूसा ने कहा—"मैं तो सिर्फ डोबू जाति को जानता हूं या सदूर ग्रह को जानता हूं। पृथ्वी ग्रह मेरे लिए अजनबी जगह है।"

"सर।" नीना बोली—"हमें इंतजार करके पहले ये देखना होगा कि रानी ताशा देवराज चौहान के बंगले पर क्या करती है।"

▭ ▭

विजय बेदी, सोमाथ, रानी ताशा, सोमारा और अन्य आदमी दो टैक्सियों पर देवराज चौहान के बंगले के बाहर पहुंचे। बेदी ने टैक्सियों का किराया देकर उन्हें चलता किया और बोला।

"देवराज चौहान कहो, राजा देव कहो, कुछ भी कहो।" बेदी ने रानी ताशा से कहा—"वो यहीं रहता है। जाओ और उससे मिल लो। मेरा बाकी का पंद्रह लाख मुझे दो और मेरी नमस्ते लो। बहुत देर से इंतजार कर रहा हूं नोटों का।"

"तुम्हें यकीन है कि राजा देव यहीं पर मिलेंगे।" रानी ताशा ने चमकती आंखों से बेदी को देखा।

"हां-हां पूरा यकीन है तभी तो बाकी का पंद्रह लाख मांग रहा हूं। पहले कभी मांगा है क्या?" बेदी ने जल्दी से कहा।

"तुम हमारे साथ भीतर चलो।" रानी ताशा ने फैसले वाले स्वर में कहा।

"क्यों? मैंने तो पहले ही कहा था कि मैं भीतर नहीं...।"

"तुम्हें भीतर चलना होगा। अगर ये जगह राजा देव की न हुई तो...।"

"देवराज चौहान यहीं रहता...।" बेदी ने कहना चाहा।

सोमाथ ने विजय बेदी की कलाई थाम ली।

बेदी को लगा जैसे कोई लोहे का शिकंजा उससे लिपट गया हो।

"ये क्या कर रहे...।"

"तुम हमारे साथ भीतर चलोगे।" सोमाथ ने शांत स्वर में कहा।

"वो बहुत बड़ा डकैती मास्टर है, मेरी जान ले लेगा कि मैं तुम लोगों को यहां तक लाया...।"

"कुछ नहीं होगा—आओ।" सोमाथ, बेदी की कलाई थामे बंगले के गेट की तरफ बढ़ गया।

गेट से सबने भीतर प्रवेश किया और सदर दरवाजे की तरफ बढ़ गए।

"सोमारा।" रानी ताशा का स्वर खुशी से कांप रहा था—"मैं-मैं राजा देव को फिर से सामने देखने वाली हूं।"

"हां ताशा।" सोमारा मुस्कराई—"और मैं बबूसा को फिर से पा लूंगी। इस जन्म में अभी तक उसे देख नहीं सकी।"

"ओह।" एकाएक रानी ताशा बोली—"अगर राजा देव भीतर है तो मुझे एहसास क्यों नहीं हुआ कि वो मेरे करीब है।"

"क्या एहसास होना जरूरी है ताशा?"

"हां सोमारा। महापंडित ने कहा था कि राजा देव के करीब होने का एहसास मुझे हमेशा होता रहेगा, जब वो करीब ही कहीं होंगे। होटल में मुझे राजा देव के करीब होने का एहसास हुआ था, परंतु वो वहां नहीं दिखे और यहां पर मुझे एहसास जैसी कोई बात नहीं हो पा रही। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि ये सब क्या हो रहा है।"

"क्या पता हम गलत जगह आ पहुंचे हों। राजा देव न रहते हों।" सोमारा ने कहा।

वे सब बंगले के मुख्य द्वार पर पहुंचे। दरवाजा खुला था। सब भीतर प्रवेश कर गए। तभी रानी ताशा ठिठक गई। सोमारा, सोमाथ, बाकी सब भी रुक गए। विजय बेदी का गला खुश्क हो रहा था। सोमाथ उसकी कलाई छोड़ चुका था। सामने ही नगीना, जगमोहन और धरा मौजूद थे।

सब एक-दूसरे को देखते रह गए।

रानी ताशा, सोमारा, सोमाथ और विजय बेदी की निगाह जगमोहन पर टिकी थी, क्योंकि जगमोहन कल होटल का कर्मचारी बनकर, उनके कमरे में बाथरूम देखने के बहाने आया था।

"तुम?" विजय बेदी ने कहा—"तुम तो होटल वाले हो। कल हमारे कमरे में आए थे।"

जगमोहन खामोश रहा।

"ये होटल का कर्मचारी नहीं राजा देव का साथी है।" रानी ताशा कह उठी—"बहाने से ये कल हमारे कमरे में आया था।"

"ठीक कहा तुमने।" जगमोहन बोला—"मैं देवराज चौहान का साथी जगमोहन हूं।"

रानी ताशा आगे बढ़ी। धरा के पास पहुंची। बोली।

"तो तुम हो देवराज चौहान की पत्नी?"

धरा ने, नगीना की तरफ इशारा कर दिया।

रानी ताशा, नगीना के पास जा पहुंची।

नगीना की एकटक निगाह रानी ताशा के बेपनाह खूबसूरत चेहरे पर थी।

"तो तुम नगीना हो। राजा देव की इस जन्म की पत्नी।" रानी ताशा ने कड़वी मुस्कान से कहा।

"हां। देवराज चौहान सिर्फ मेरा है।" नगीना ने तीखे स्वर में कहा—"तुम मेरे पति पर गलत नजरें डाल रही हो।"

रानी ताशा हौले-से हंस पड़ी। बोली।

"गलत नजरें? बेवकूफ राजा देव तो कब से मेरे पति हैं। पूरा सदूर ग्रह इस बात को जानता है कि मैं राजा देव की रानी हूं और ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत हूं। मेरे गलती की वजह से राजा देव सदूर ग्रह से निकलकर पृथ्वी ग्रह पर आ पहुंचे और तुम्हें अपनी पत्नी बना लिया। क्योंकि वो अकेले पड़ गए थे। मैं उनके पास नहीं थी। उन्हें कोई साथ तो चाहिए ही था, तुम्हारा साथ ही सही। तुम राजा देव के लिए एक खिलौने से ज्यादा अहमियत नहीं रखती। अब मैं आ गई हूं तो सब ठीक हो जाएगा। तुमने मेरी गैरमौजूदगी में राजा देव का दिल बहलाया, उसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हूं। चाहो तो मेरे साथ सदूर ग्रह पर चलो। वहां तुम्हें इनाम के रूप में शानदार जिंदगी दूंगी। जितने मर्द चाहिए होंगे, उतने मिलेंगे, हर रात नया मर्द मिल सकेगा। ये सब तुम्हारा इनाम होगा कि मेरे पास में न होने पर तुमने राजा देव का पूरा ध्यान रखा। सदूर ग्रह पर मैं तुम्हारा दिल खोलकर स्वागत करूंगी।"

"तुम कमीनी औरत...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

परंतु नगीना फौरन जगमोहन से कह उठी।

"तुम खामोश रहो। ये मेरे से बात कर रही है।"

जगमोहन दांत भींचकर रह गया।

धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। वो सोमाथ और बाकी तीन लोगों को बार-बार देख रही थी।

"मैं तुम्हें इससे बढ़िया इनाम दे सकती हूं।" नगीना ने कठोर स्वर में कहा।

"अच्छा।" रानी ताशा के चेहरे पर व्यंग आ गया।

"मैं तुम्हें सारे पृथ्वी ग्रह के मर्द देती हूं। देवराज चौहान के अलावा सारे मर्द तुम्हारे। तुम तो मुझे हर रात में नया मर्द देने को कह रही हो, जबकि तुम्हारे पास हर वक्त नया मर्द हाजिर रहेगा।"

रानी ताशा के चेहरे पर कड़वी मुस्कान उभरी।

"मुझे सिर्फ राजा देव से मतलब है। मैं राजा देव को वापस ले जाने के लिए सदूर ग्रह से पोपा पर सवार होकर इस पृथ्वी ग्रह पर पहुंची हूं। मैं तो समझती थी कि सिर्फ हमारे ग्रह पर ही जीवन है। परंतु महापंडित ने बताया कि उसे मशीनों से पता चला है कि एक और ग्रह पर जीवन है। उस ग्रह के लोग उसे पृथ्वी ग्रह कहते हैं और राजा देव किसी तरह पृथ्वी ग्रह पर जा पहुंचे हैं और वहां के जन्म चक्र में उलझ चुके हैं। मुझे राजा देव वापस चाहिए। वो सिर्फ मेरे हैं। तुमसे पहले के वो मेरे थे। तुम्हारा उन पर कोई अधिकार नहीं है।"

"मुझे नहीं मालूम तुम्हारी बातें कहां तक सच हैं। परंतु इस जन्म में वो मेरे पति हैं और मेरे ही रहेंगे। तुम उन्हें उनकी मर्जी के बिना नहीं ले जा सकतीं। वो स्वयं तुम्हारे साथ जाना चाहें तो मुझे एतराज नहीं होगा।" नगीना कठोर स्वर में बोली।

"स्वयं?" रानी ताशा के चेहरे की मुस्कान गहरी हो गई।

"हां।"

"राजा देव, मेरे दीवाने रहे हैं। वो मुझे दिल से चाहते हैं।" एकाएक रानी ताशा की आंखें भर्रा उठीं। आंसू गालों पर आ पहुंचे—"राजा देव मेरे बिना नहीं रह सकते। इतना लम्बा वक्त उन्होंने मेरे बिना कैसे बिताया होगा। कितना तड़पे होंगे वो मेरी याद में। मैं भी बहुत तड़पी हूं उनके बिना, मैं जाने कैसे...।"

"देवराज चौहान को कभी तुम्हारी याद नहीं आई।" नगीना बोली।

रानी ताशा की नजरें नगीना पर जा टिकीं।

"वो सिर्फ मुझे प्यार करते हैं। वो किसी रानी ताशा को नहीं जानते।"

"तुम सही कहती हो। पृथ्वी के जन्मचक्र में फंसकर वो सदूर ग्रह को भूल बैठे हैं। पर उन्हें सब कुछ याद आ जाएगा। वो मेरा चेहरा देखेंगे तो उन्हें सब याद आना शुरू हो जाएगा। महापंडित ने ऐसा ही कहा था। तुम देखना वो मुझे कितना चाहते हैं। मेरे बिना तो उन्हें चैन ही नहीं मिलता। सदूर ग्रह के दिन कितने सुहावने थे, हम दोनों...।"

"मुझे अपनी कथा मत सुनाओ।" नगीना का स्वर सख्त था।

रानी ताशा ने नगीना को घूरा फिर बोली।

"राजा देव कहां हैं?"

"वो यहां नहीं हैं।"

"बबूसा कहां है?" सोमारा ने पूछा।

"वो दोनों बाहर गए हैं।"

"फिर तो हम उनके लौटने का इंतजार कर सकते हैं ताशा।" सोमारा ने कहा।

"अवश्य। आए हैं तो राजा देव को लेकर ही जाएंगे सोमारा।" रानी ताशा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"वो वापस नहीं लौटेंगे।" नगीना मुस्कराई—"क्योंकि वो जानते हैं कि इस वक्त तुम यहां हो।"

रानी ताशा की आंखें सिकुड़ीं।

"सोमाथ।" रानी ताशा ने कहा—"इस जगह को देखो कहीं राजा देव और बबूसा यहीं न हों।"

सोमाथ ने अपने साथ, अपने तीनों साथियों से कहा कि वो पूरा बंगला देखें और खुद भी बंगले के भीतर की तरफ बढ़ गया। जगमोहन कठोर निगाहों से उन चारों को देख रहा था। वो खुद पर काबू पाए हुए था कि ये लोग यहां से चले जाएं। परंतु रानी ताशा की बात सुनकर पता चल गया कि ये जाने वाले नहीं। तभी धरा जगमोहन के पास आ पहुंची। जगमोहन ने धरा पर निगाह मारी फिर रानी ताशा को देखने लगा। धरा धीमे स्वर में बोली।

"ये लोग यहीं रहे तो मुसीबत खड़ी हो जाएगी।"

जवाब में जगमोहन खामोश रहा।

उधर रानी ताशा नगीना से कह रही थी।

"राजा देव और बबूसा को कैसे पता चल गया कि हम यहां आने वाले हैं।"

"तुम क्या समझती हो कि तुम्हें तुम्हारे हर सवाल का जवाब मिल जाएगा?" नगीना तीखे लहजे में बोली।

"तुम्हें भी पहले पता था कि हम आ रहे हैं।"

"पता था।"

"कैसे पता चला?"

जवाब में नगीना मुस्कराई।

"मेरे देव को मेरे हवाले कर दो।" रानी ताशा का स्वर कठोर हो गया—"वरना इसका अंजाम बहुत बुरा होगा। राजा देव सिर्फ मेरे हैं और मेरे ही रहेंगे। मैं उन्हें सदूर ग्रह पर वापस ले जाने के लिए यहां आई हूं।"

"वो मेरा पति देवराज चौहान है।" नगीना के दांत भिंच गए—"तुम्हारा कुछ नहीं लगता।"

"पागल औरत।" रानी ताशा फुंफकार उठी—"तू मेरे हाथों से मरेगी।"

"तेरे में इतना दम नहीं कि मेरी जान ले सके।" नगीना के दांत भिंच गए।

रानी ताशा कठोर चेहरा लिए तेजी से नगीना की तरफ बढ़ी।

नगीना फौरन सतर्क हो गई।

"ताशा, ये क्या कर रही हो?" सोमारा कह उठी।

"रुक जाओ...।" जगमोहन तेजी से आगे को लपका।

तभी रानी ताशा उछली, उसकी एक ठोकर नगीना की कमर में पड़ी, दूसरी टांग से रानी ताशा ने हवा में रहकर ही नगीना को उछाला और अपनी टांगों पर आ खड़ी हुई। सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि नगीना को सोचने-समझने का भी मौका नहीं मिला। जब होश आया तो खुद को आठ कदम दूर गिरे पाया। आंखों के सामने लाल-पीले तारे नाच रहे थे। नगीना जल्दी से उठी और चेहरे पर दरिंदगी नजर आने लगी थी। कमर में अभी भी दर्द हो रहा था। वो तेजी से रानी ताशा की तरफ लपकी।

रानी ताशा होंठ भींचे नगीना को देख रही थी।

जगमोहन चार कदम पहले ही ठिठक चुका था। रानी ताशा के पास पहुंचते ही नगीना चीते की भांति रानी ताशा पर झपटी कि रानी ताशा ने अपने दोनों हाथ उठाकर नगीना के हवा में आते शरीर को थामा और पीछे फेंक दिया। इस बार नगीना चार कदम दूर जा गिरी। शरीर में कई जगह दर्द की लहरें उठीं। लेकिन फुर्ती से उछलकर खड़ी हो गई। कमर में अभी भी तीव्र दर्द हो रहा था।

"रुक जाओ।" जगमोहन आगे बढ़ता बोला और जेब से साइलेंसर लगी रिवॉल्वर निकालकर रानी ताशा के पेट से लगा दी।

परंतु रानी ताशा की निगाह नगीना पर ही टिकी थी।

"लड़ाई के सारे दांव-पेंच मुझे राजा देव ने ही सिखाए थे। वो चाहते थे कि उनकी ताशा हर काम में आगे रहे। वो मुझे बहुत प्यार करते थे।" रानी ताशा का स्वर भर्रा उठा—"मैं उनकी जान हुआ करती थी। मैं चाहती तो एक ही वार में तेरा जीवन समाप्त कर सकती थी परंतु तूने राजा देव की सेवा की है। इसलिए मैंने तेरा ज्यादा नुकसान नहीं किया।"

"मैं चाहती हूं तू फिर मैदान में आ।" नगीना ने कठोर स्वर में कहा—"जगमोहन पीछे हट जाओ।"

"नहीं भाभी।" जगमोहन का स्वर सख्त हो गया—"वहीं रहो, आगे मत बढ़ना।"

नगीना वहीं खड़ी रही।

रानी ताशा के पेट से रिवॉल्वर लगाए हुए था जगमोहन।

धरा अपनी जगह पर सूखी-सी हालत में खड़ी थी।

"देवराज चौहान पर तेरा कोई हक नहीं। ये जान ले तू।" नगीना गुर्रा उठी।

"अब की बार तू मेरे हाथ लगी तो मैं तेरी जान ले लूंगी।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा।

"बहुत जल्दी तुझे इस बात का जवाब मिल जाएगा।" नगीना ने दांत पीसकर कहा।

रानी ताशा ने जगमोहन को देखा फिर पेट में लगी रिवॉल्वर को।

"ये क्या है?" रानी ताशा ने जगमोहन से पूछा।

"रिवॉल्वर।" जगमोहन सख्त स्वर में बोला—"अबकी बार तुमने कोई हरकत की तो मारी जाओगी।"

"मैं मारी जाऊंगी।" रानी ताशा हंसी—"मैं नहीं मर सकती। राजा देव से मेरा मिलन होकर ही रहेगा। महापंडित ने कहा है कि मैं राजा देव से जरूर मिलूंगी। उसका कहा कभी भी गलत नहीं होता।"

"मैं उसका कहा गलत कर दूंगा।" जगमोहन गुर्राया—"जुबान बंद रखो।"

"तुम रानी ताशा से गलत भाषा में बात कर रहे हो।" रानी ताशा के माथे पर बल उभर आए।

"जुबान बंद रखो।" वरना...।"

तभी सोमाथ का स्वर वहां गूंजा।

"ये क्या कर रहे हो तुम?"

जगमोहन की निगाह पंद्रह कदम दूर खड़े सोमाथ पर गई।

सोमाथ आंखें सिकोड़े जगमोहन को देख रहा था।

"ये मेरी जान लेने की बात कह रहा है सोमाथ।" रानी ताशा मुस्कराकर बोली।

सुनते ही सोमाथ तेजी से आगे बढ़ा। जगमोहन ने रिवॉल्वर, रानी ताशा के पेट से हटाई और सोमाथ की तरफ करके फायर कर दिया। नाल पर साइलैंसर चढ़ा होने के कारण, गोली चलने की मध्यम-सी आवाज उभरी।

अगले ही पल सोमाथ ठिठक गया।

उसकी छाती पर गोली धंसने का छेद नजर आने लगा। सोमाथ ने सिर नीचे करके छाती पर नजर आ रहे छेद को देखा। फिर एकाएक उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे, जैसे किसी कारणवश बहुत जोर लगा रहा हो वो।

रानी ताशा ठठाकर हंस पड़ी।

"तुमने ऐसा करके सोमाथ की जान लेने की कोशिश की।" रानी ताशा हंसते हुए बोली—"बेवकूफ हो तुम। सोमाथ कभी नहीं मर सकता। महापंडित ने इसे मेरी रक्षा के लिए बनाया है। ये हमेशा जीवित रहेगा।"

जगमोहन की निगाह सोमाथ पर टिकी थी जो कि जोर लगाने की वजह से, वो कुछ फूल-सा गया लग रहा था। जगमोहन ने जो खास बात नोट की, वो ये थी कि जहां गोली धंसी थी, वहां से अभी तक खून नहीं निकला था। तभी गोली के बने छेद से कुछ बाहर गिरते देखा उसने। 'टक' की आवाज आई।

जगमोहन ने देखा, वो रिवॉल्वर की गोली थी जो छेद से निकलकर बाहर आ गिरी थी। जगमोहन का चेहरा हैरानी से भर गया। फौरन ही उसे दूसरी हैरानी का सामना करना पड़ा। उसके देखते-ही-देखते छाती का छेद भर गया। वहां की जगह बिल्कुल सामान्य हो गई थी। सोमाथ की गोली से जली कमीज के छेद से जगमोहन स्पष्ट देख पा रहा था। एकाएक जगमोहन को भारी खतरे का एहसास होने लगा। सोमाथ उसे ताकत का अजूबा लगा। जगमोहन ने उसी पल रिवॉल्वर वाला हाथ उठाया और एक के बाद एक, सोमाथ के चेहरे पर फायर करता चला गया।

साइलेंसर से गोलियों चलने की मध्यम-सी आवाज उभरती रही।

छः गोलियां चलीं। पांच सोमाथ के चेहरे पर लगीं। नाक पर, माथे पर। दो गोलियां एक तरफ के गाल पर, पांचवीं गोली गले पर लगी। जगमोहन को पूरी आशा थी कि सोमाथ अब नहीं बच सकेगा।"

रानी ताशा पुनः हंस पड़ी।

"महापंडित का कारनामा है सोमाथ।" रानी ताशा पुनः हंस पड़ी—"जब तक सोमाथ मेरे साथ है, मेरा कोई कुछ नहीं बुरा कर सकता। सोमाथ की ताकत का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। सोमाथ अमर है।"

तब तक बाकी के तीनों भी बंगला छानकर आ गए थे।

"रानी ताशा। इस बंगले में और कोई नहीं है।" एक ने कहा।

दूसरा जोबिना निकालकर रानी ताशा से बोला।

"इसे मार दें रानी ताशा?"

"नहीं। जोबिना वापस रख लो।" रानी ताशा ने कहा।

उसने जोबिना वापस रख लिया।

तभी सोमाथ के चेहरे से एक-एक करके गोलियां बाहर गिरने लगीं। जगमोहन ने गिना कि पांचों गोलियां बाहर आ गिरी थीं फिर बीतते पलों के साथ सोमाथ का बिगड़ चुका चेहरा सुधरने लगा। मात्र एक मिनट लगा कि सोमाथ पूरी तरह से पहले जैसा सामान्य हो गया। कहीं कोई निशान, जख्म नहीं था।

जगमोहन ठगा-सा खड़ा, सोमाथ को देखता रहा।

"देखी, मेरी ताकत।" रानी ताशा सख्त स्वर में कह उठी—"तुम लोग हमारा मुकाबला नहीं कर सकते। तुम सबके लिए सोमाथ ही काफी है। हमसे न ही उलझो तो बेहतर होगा। हमारे रास्ते में आने का मतलब है मौत।"

नगीना भी ये सब देखकर स्तब्ध खड़ी थी।

धरा की तो जैसे जान ही सूख चुकी थी।

उसी पल सोमाथ, जगमोहन की तरफ बढ़ने लगा। ये देखकर सोमारा ने जल्दी से रानी ताशा के पास पहुंचकर कान में कुछ कहा।

"रुक जाओ सोमाथ।" रानी ताशा कह उठी—"तुम इसे कुछ नहीं कहोगे।"

सोमाथ वहीं रुक गया।

"सोमारा का कहना सही है कि हमें छोटी-छोटी बातों में नहीं उलझना है। हमारा मकसद राजा देव को हासिल करना है और इन्हें नुकसान पहुंचाकर, मैं राजा देव को दुखी नहीं करना चाहती। परंतु इसका ये मतलब भी नहीं कि हम इनकी ऐसी हरकतें सहते रहेंगे। दोबारा इन्होंने ऐसा कुछ किया तो हमें सख्त होना पड़ेगा।"

जगमोहन अपने पर काबू पाने की चेष्टा कर रहा था। ऐसा उसने पहले कभी नहीं देखा था कि सामने वाले के शरीर में गोलियां धंसे और खून न निकले फिर वो भीतर-ही-भीतर जोर लगाकर गोलियों को बाहर निकाल फेंके और टूट-फूट चुका शरीर फिर से सामान्य हो जाए। जगमोहन के लिए हैरत की बात थी। उसे बबूसा की कही बात याद आ गई कि सोमाथ साधारण इंसानों की तरह नहीं है। महापंडित ने उसका निर्माण किया है। उसे बहुत ताकतवर बनाया है।

जगमोहन समझ चुका था कि ये रोबॉट की तरह का कमाल है कोई, पर रोबॉट से कहीं बेहतर है और अपनी रिपेयर ये पलों में कर लेता है अगर इंसान जैसा इसमें कुछ होता तो खून अवश्य निकलता गोली लगने पर। ये भी स्पष्ट हो गया था कि सोमाथ का मुकाबला नहीं किया जा सकता। बबूसा ने ये बात तो सही कही थी।

रानी ताशा ने जगमोहन से कहा।

"राजा देव कहां हैं?"

"मैं नहीं जानता।" जगमोहन बोला।

"ये कैसे सम्भव है कि तुम्हें राजा देव की जानकारी न हो। तुम राजा देव के खास लगते हो।"

"मुझे कुछ नहीं पता कि देवराज चौहान कहां है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

रानी ताशा फौरन नगीना की तरफ पलटी।

"तुम भी कुछ ऐसा ही जवाब दोगी।"

"देवराज चौहान को बबूसा लेकर गया है।" नगीना ने सख्त स्वर में कहा।

"कहां?"

"ये मैं नहीं जानती।"

"झूठ बोलना तुम्हें खूब आता है। ये झूठ भी बता दो कि राजा देव वापस कब लौटेंगे।"

"इस बारे में मुझे कुछ पता नहीं।"

"तुम क्या सोचती हो कि राजा देव को इस तरह, मुझसे दूर किया जा सकता है।" रानी ताशा सख्त स्वर में बोली।

"तुम गलत ढंग से सोच रही हो। देवराज चौहान और बबूसा रात को ही कहीं गए थे।"

"रात को?"

"हां।"

"कहीं वो उसी होटल में तो नहीं, जहां मैं रहती हूं।" एकाएक रानी ताशा ने कहा।

"ये तुम क्या कह रही हो।" जबकि नगीना मन-ही-मन बुरी तरह चौंकी थी।

"कल रात मैं नींद से उठ बैठी थी। मुझे एहसास हुआ था कि राजा देव जैसे मेरे करीब ही कहीं हों।" रानी ताशा बोली।

"बबूसा, देवराज चौहान को लेकर उस होटल में क्यों जाएगा, जहां तुम ठहरी हो।" नगीना ने कहा।

रानी ताशा नगीना को कुछ पल देखती रही फिर कह उठी।

"बबूसा इस बारे में क्या करना चाहता है? वो राजा देव को मेरे से दूर क्यों रख रहा है?"

नगीना के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"जवाब दो।"

"बबूसा कुछ भी गलत नहीं कर रहा। वो चाहता है कि देवराज चौहान को उस जन्म की याद आ जाए, जब वो तुम्हारे साथ था। बबूसा चाहता है कि देवराज चौहान तुम्हें उस जन्म में किए तुम्हारे अपराध की सजा दे।"

एकाएक रानी ताशा की आंखों में आंसू भर आए।

"तो मैंने सजा पाने से कब मना किया है।" रानी ताशा का स्वर भर्रा उठा—"राजा देव की दी सजा को तो मैं फूलों की तरह ग्रहण करूंगी। मेरे से जो गलती हुई उसकी सजा तो मुझे अवश्य मिलनी चाहिए। मैं स्वयं मानती हूं कि सेनापति धोमरा की वजह से मैं रास्ता भटक गई थी। राजा देव लम्बे वक्त से पोपा का निर्माण करने में व्यस्त थे और मैं धोमरा की बातों में भटक गई थी। खुद को अकेला पाकर जाने क्यों मैंने धोमरा का हाथ थाम लिया। बाद में मैंने इस बात को सोचा था और इसी नतीजे पर पहुंची कि धोमरा को दूसरे का दिमाग भटका देने की कला आती थी। उसने मुझे बातों में ऐसा फंसाया कि मैं राजा देव को ही भूल बैठी। धोमरा ही मेरे खयालों में आने लगा। मैं धोमरा की हर बात मानने लगी। मैं भूल गई कि मैं सदूर ग्रह की रानी हूं और राजा देव ग्रह के मालिक। धोमरा बहुत चालाकी से काम ले रहा था। मैं

उसकी चालाकी को न भांप सकी। वो ग्रह का राजा बनना चाहता था। परंतु ये बात उसने तब तक न कही, जब तक कि राजा देव को ग्रह से बाहर न फेंक दिया। राजा देव को ग्रह से बाहर फेंकने की योजना भी धोमरा की थी। मैं बेवकूफों की तरह उसकी हर बात पर हां कहती जा रही थी। ये ही मेरी भूल थी। उस वक्त मुझे हर तरफ धोमरा ही नजर आ रहा था। वही मुझे अपना लगता था। राजा देव को उसने मेरे दिलोदिमाग से बहुत दूर कर दिया था। धोमरा ने अपनी बातों के जाल में मुझे पूरी तरह जकड़ लिया था। जैसे किसी ने जादू कर दिया होता है। जैसे मैं—मैं नहीं रही, धोमरा की बांदी बन गई थी। अपनी बातों के जादू से धोमरा ने मुझे बहुत कमजोर कर दिया था। होश भी तब आया जब राजा देव को ग्रह से बाहर फेंका जा चुका था। राजा देव को ग्रह से बाहर फेंकने के बाद मुझे लगा जैसे मेरी जिंदगी थम गई हो। मेरे दिमाग ने काम करना बंद कर दिया। मुझे राजा देव की याद आने लगी और हर पल मैं अपने से पूछती कि ये मैंने क्या कर दिया। राजा देव को ग्रह से बाहर फेंकते ही धोमरा मुझ पर शादी करने का दबाव बनाने लगा। उसे मेरी परवाह नहीं थी। वो तो मेरे से ब्याह करके ग्रह का मालिक बनना चाहता था। जबकि मैं राजा देव के लिए तड़पने लगी थी। सिर्फ दो दिन बीते थे राजा देव को ग्रह से बाहर फेंके और मैं पागल हो चुकी थी राजा देव के लिए। तीसरे दिन मैंने तलवार उठाई और जाकर धोमरा का गला काट दिया। उसने बचने की कोशिश की। तलवार उठाकर मेरे से मुकाबला भी करना चाहा, परंतु वो मेरा मुकाबला न कर सका। मुझे राजा देव ने शिक्षा दी थी कि कैसे मुकाबला किया जाता है। कुछ ही पलों में मैंने धोमरा की गर्दन काट दी। गर्दन कटकर उसके अपने पैरों में ही आ गिरी थी। खून के छींटे मुझ पर भी पड़े। जाने क्यों उन छींटों से मुझे बहुत आराम मिला था।" रानी ताशा का चेहरा आंसुओं से भीग चुका था। वो सुबक रही थी।

नगीना एकटक उसे देख रही थी। जगमोहन और धरा गम्भीरता से उसे देख रहे थे। सोमारा के चेहरे पर दुख झलक रहा था।

तभी रानी ताशा आगे बढ़ी और सुबकते हुए नगीना का हाथ थाम लिया।

"बबूसा से कहो कि मैं सजा पाने को तैयार हूं। राजा देव मुझे सजा दें तो...।"

"तभी तो बबूसा, देवराज चौहान को उस ग्रह की याद दिलाने की चेष्टा कर रहा है।" नगीना का स्वर सख्त था।

"बबूसा जानता है कि राजा देव एक बार मेरा चेहरा देख लेंगे तो उन्हें वो बातें याद आनी शुरू हो जाएंगी। एक बार राजा देव को मेरे सामने कर दो। उसके बाद...।"

"बबूसा कहता है कि तुम राजा देव को जबर्दस्ती सदूर ग्रह पर वापस ले जाओगी और महापंडित से कहकर देवराज चौहान के दिमाग के उस हिस्से से वो यादें हटा दोगी, जिन्हें याद आने पर देवराज चौहान तुम्हें सजा देगा।"

"ओह बबूसा कितना गलत सोच रहा है।" रानी ताशा आंसुओं भरे चेहरे के साथ तड़प उठी।

"बबूसा ये भी कहता है कि देवराज चौहान तुम्हें देखकर, पहले की तरह दीवाना हो सकता है तुम्हारा और तुम उस दीवानगी का लाभ उठाकर, उसे आसानी से सदूर ग्रह पर वापस ले जाओगी। इस तरह देवराज चौहान को उस जन्म की यादें ताजा नहीं होंगी, क्योंकि वो तुम्हारे रूप की दीवानगी में उलझ चुका होगा।" नगीना ने शब्दों को चबाकर कहा।

"इसमें कोई शक नहीं कि राजा देव मेरे रूप के दीवाने थे। परंतु ये जरूरी तो नहीं कि कई जनमों के बाद भी ऐसा ही हो। उस दीवानगी तक पहुंचने में राजा देव को वक्त भी लग सकता है। अब तो मैं उनकी दीवानी हो चुकी हूं। पूरे ब्राह्मांड में एक राजा देव ही हैं, जिन्हें मैं दिल से, दिमाग से चाहती हूं सिर्फ वो ही मेरे काबिल हैं। दूसरा कोई आदमी मुझे कभी भी अच्छा नहीं लगा। राजा देव के बिना मैं जीने की कल्पना नहीं कर सकती। तुम बबूसा से कहती क्यों नहीं कि एक बार राजा देव को मेरे सामने आने दे। वो मुझे देख लें फिर...।"

"बबूसा अपने मन की करता है।" नगीना बोली।

"ये बात तुमने सही कही। बबूसा बहुत जिद्दी है। बात जब राजा देव की हो तो वो फिर किसी बात की परवाह नहीं करता। मुझे तो वैसे भी पसंद नहीं करता बबूसा। वरना मेरे से विद्रोह न करता।" रानी ताशा ने भर्राए स्वर में कहा—"राजा देव से मिलने में, तुम मेरी सहायता करो। मेरा भरोसा करो, राजा देव मुझसे मिलकर बहुत खुश होंगे और जब उन्हें सब कुछ याद आ जाएगा तो वो जो सजा देंगे उसे मैं फूलों की तरह स्वीकार करूंगी।"

"बबूसा कहता है कि तुम विश्वास के काबिल नहीं हो।"

"बबूसा गलत कहता है। मैं राजा देव के लिए कुछ भी कर सकती हूं।" रानी ताशा ने तड़पकर कहा।

नगीना ने मुस्कराकर अपना हाथ छुड़ाया और बोली।

"बबूसा भी यही कहता है कि तुम देवराज चौहान को वापस पाने के लिए कुछ भी कर सकती हो। किसी भी हद तक जा सकती हो। वो कहता है कि तुम हर हाल में राजा देव को उस जन्म की याद आने से पहले सदूर ग्रह पर ले जाना चाहोगी।"

"बबूसा बहुत गलत कहता है।"

"बबूसा तुम्हें ज्यादा बेहतर जानता है। वो तुम्हें बहुत पहले से जानता है। वो गलत क्यों कहेगा।"

"मैंने राजा देव को ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था, इसलिए वो मेरे पर क्रोधित है।"

नगीना ने कुछ नहीं कहा। उसे देखती रही।

रानी ताशा आंसुओं को साफ करती कह उठी।

"मेरी सहायता करो। राजा देव से मिल लेने दो मुझे। वो मेरे सब कुछ हैं। वो मेरे...।"

"देवराज चौहान मेरा पति है।" नगीना ने सख्त स्वर में कहा।

रानी ताशा, नगीना को देखने लगी। फिर बोली।

"राजा देव मेरे पति हैं।"

"इस जन्म में देवराज चौहान मेरे पति हैं। उनकी मर्जी के बिना तुम उन्हें नहीं ले जा सकतीं।"

"मैं राजा देव को उनकी मर्जी के बिना कहीं नहीं ले जाऊंगी।" रानी ताशा कह उठी।

"बबूसा कहता है कि तुम्हारा कोई भरोसा नहीं।"

"बबूसा गलत कहता है। वो मेरे बारे में भ्रम फैला रहा है। राजा देव को जबर्दस्ती ले जाकर मैं अपना कैसे बना सकती हूं।"

"बबूसा कहता है कि तुम्हारे कहने पर महापंडित देवराज चौहान के दिमाग में बदलाव ला देगा कि पुरानी बातें वो पूरी तरह भूल जाएगा। उसे कुछ भी याद नहीं रहेगा कि कभी उसके साथ तुमने गलत किया था।"

"तुम्हें बबूसा पर भरोसा है और मेरे पर नहीं?" रानी ताशा का स्वर एकाएक तीखा हो गया।

"तुम मेरे पति को लेने आई हो। मैं तुम पर जरा भी भरोसा नहीं कर सकती। फिर तुम्हारे साथ सोमाथ जैसा इंसान है जो मर नहीं सकता। अगर तुम्हारा मन साफ होता तो तुम सोमाथ को अपने ग्रह से लाती ही नहीं।"

"बबूसा के विद्रोह की वजह से सोमाथ को, महापंडित ने मेरे साथ भेजा है। महापंडित जानता था कि बबूसा मेरे रास्ते में रुकावट डालेगा। बबूसा अब राजा देव को मेरे से छिपाए फिर रहा है।" रानी ताशा ने कहा।

नगीना, रानी ताशा को गहरी निगाहों से, देखती कह उठी।

"तुम राजा देव को वापस अपने पति के रूप में पाना चाहती हो।"

"राजा देव की मुझे ही नहीं, पूरे सदूर ग्रह को जरूरत है उनकी सदूर ग्रह के विकास कार्य राजा देव के न होने की वजह से रुक चुके हैं। राजा देव ने सदूर ग्रह का जो विकास किया था, वो वहीं का वहीं ठहर चुका है, जबकि पृथ्वी ग्रह पर हर तरफ मुझे विकास हुआ नजर आता है। राजा देव के बिना सदूर ग्रह अधूरा है।" रानी ताशा बोली।

"फिर तो तुम देवराज चौहान को हर हाल में सदूर ग्रह पर ले जाओगी।"

"ये राजा देव की मर्जी पर निर्भर है। मैं उन्हें सब कुछ याद दिला दूंगी। सब कुछ बता दूंगी।"

"मान लो, अगर देवराज चौहान तुम्हारे साथ न जाना चाहे, तो तुम क्या करोगी?"

"वो मेरे साथ जरूर चलेंगे। वो मुझे अपनी जान से भी ज्यादा चाहते हैं।"

"अगर वो तुम्हारे साथ जाने से इंकार कर दें तो, तब क्या स्थिति होगी तुम्हारी?"

रानी ताशा कुछ पल खामोश रहकर कह उठी।

"तब मैं वापस चली जाऊंगी।"

"देवराज चौहान को यहीं छोड़कर।"

"हां।" रानी ताशा का स्वर शांत था।

"ये बात तुमने झूठी कही। ये जवाब तुम्हारे चरित्र से मेल नहीं खाता। तुम इस तरह चुप रहने वाली नहीं। तुम चीज को छीनना जानती हो। तुम मुझ पर वार करना जानती हो। तुम सब कुछ अपने बस में करना जानती हो।"

रानी ताशा ने नगीना की आंखों में झांका।

"तुम मेरे बारे में गलत बातें कह रही हो। मैं ऐसी नहीं हूं।"

"तुम ऐसी ही हो। मैं तुम्हें काफी हद तक पहचानती जा रही हूं। बबूसा ठीक कहता है कि तुम हर हाल में देवराज चौहान को सदूर ग्रह पर ले जाओगी। ये ही बात अब मैंने महसूस की है कि तुम खाली हाथ लौटने वाली नहीं।"

"राजा देव सिर्फ मेरा है।" रानी ताशा का स्वर कठोर हो गया—"वो भी मुझे अपनी जान से ज्यादा चाहते हैं। जब राजा देव मुझे देखेंगे तो तुम देख लेना कि वो मुझे कितना चाहते हैं।"

"देवराज चौहान मेरा पति है। इस बात को तुम मत भूलो।" नगीना ने कठोर स्वर में कहा।

"पहले वो मेरा पति था।" रानी ताशा ने मुस्कराकर कहा—"हमने बहुत अच्छा समय साथ बिताया था और अब भी ऐसा होगा। सदूर ग्रह पर मेरा और राजा देव का वो ही वक्त वापस लौटेगा जो मैं खो चुकी हूं। राजा देव मेरा प्यार है। मेरा जीवन है। मेरी सांसें राजा देव में बसती हैं। राजा देव का जीवन मेरे बिना अधूरा है। अब वो मेरे से दूर नहीं रह सकते। अगर तुम मेरे और राजा देव में रुकावट बनी तो तुम्हें मरना पड़ेगा। तुम मेरे जीवन की बहार को अपनी मुट्ठी में बंद नहीं कर सकतीं।"

नगीना के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान उभर आई। नजरें रानी ताशा पर थीं।

"तुम साबित कर रही हो कि तुम आने वाले वक्त में क्या करने वाली हो।" नगीना ने कहा।

रानी ताशा सोमारा से कह उठी।

"हम यहीं रुकेंगे। राजा देव के वापस लौटने का इंतजार करेंगे।"

"ये विचार अच्छा है ताशा।" सोमारा ने गम्भीर स्वर में कहा।

रानी ताशा, सोमारा के साथ सोफे पर जा बैठी। वहां पहले से ही धरा मौजूद थी। उसके चेहरे पर फैला डर स्पष्ट नजर आ रहा था। उसने चाहा कि उठकर इनसे दूर चली जाए, परंतु बैठी रही।

जगमोहन और नगीना की नजरें मिलीं।

"सोमाथ।" रानी ताशा कह उठी—"अपने आदमियों से कह दो कि इन लोगों पर नजर रखें और ये यहां से बाहर न जाएं। अगर ये कोई शरारत करें तो जोबिना का इस्तेमाल इन पर कर दिया जाए।"

सोमाथ ने गर्दन घुमाकर तीनों आदमियों को देखा तो उन्होंने सिर हिला दिया। जगमोहन और नगीना कुछ हटकर कुर्सियों पर जा बैठे।

विजय बेदी अपनी जगह पर खड़ा था और सोच रहा था कि यहां तो बुरे हालात पैदा हो चुके हैं। कुछ बुरा हो जाता तो उसका नाम भी बीच में आएगा, परंतु पंद्रह लाख ने उसे जाने से रोक रखा था।

रानी ताशा ने दस कदम दूर सोफे पर बैठी धरा से पूछा।

"राजा देव कहां हैं?"

"म-मुझे क्या पता?" धरा घबरा उठी।

"तुम यहीं हो तो तुम्हें भी पता होगा कि राजा देव...।"

"मुझे कुछ नहीं पता।" धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा—"मैं तो अभी सोई उठी हूं तो...।"

"राजा देव कल रात के गए हुए हैं।" रानी ताशा ने धरा को घूरा—"तुमने सुना नहीं, ये देवराज चौहान की पत्नी ने कहा है।"

"हां-हां, ये बात तो मुझे भी पता है, पर देवराज चौहान मेरे सामने नहीं गया। म-मैं तो आधी रात को ड्यूटी से वापस लौटी हूं। तब देवराज चौहान यहां नहीं था। अब सोई उठी तो तुम लोग आ गए।" धरा ने जल्दी से कहा।

"तुम कौन हो?" सोमारा ने पूछा।

"मैं धरा हूं। धरा...।"

"धरा, वो ही धरा, जिसकी जान बचाने के फेर में बबूसा ने, कई डोबू जाति वालों की जान ली।"

"इसमें बबूसा का क्या कसूर। वो मुझे जान से मारना चाहते थे तो...।"

"तुम्हारा बबूसा से क्या वास्ता?"

"क्या मतलब?"

"वो तुम्हें क्यों, डोबू जाति से बचाता फिर रहा है?" सोमारा ने आंखें सिकोड़कर पूछा।

"उसकी मर्जी।"

"उसकी मर्जी नहीं, अब मैं आ गई हूं मेरी मर्जी चलेगी। सीधा कर दूंगी उसे। जानती हो मैं कौन हूं?"

"क-कौन?"

"बबूसा की पत्नी।"

"बबूसा की पत्नी?" धरा हड़बड़ाकर कह उठी—"पर वो तो कहता है कि उसकी शादी नहीं हुई।"

"नहीं हुई तो हो जाएगी। मैं हर जन्म में ही उसकी पत्नी बनती हूं। सोमारा नाम है मेरा।" सोमारा ने धरा को तीखी नजरों से देखते हुए कहा—"क्या बबूसा के साथ तेरे सम्बंध हैं?"

"सम्बंध?"

"शारीरिक सम्बंध?"

"नहीं। मैं ऐसी नहीं हूं। बबूसा भी ऐसा नहीं है। हम अच्छे दोस्त हैं। बबूसा को तो हर वक्त देवराज चौहान की ही चिंता लगी रहती है। वो देवराज चौहान से बहुत प्यार करता है। अपने को सेवक बताता है देवराज चौहान का।"

"तो गलत क्या कहता है।" सोमारा बोली—"राजा देव का सेवक बनना मामूली बात नहीं है। सदूर ग्रह के लोग राजा देव के साथ-साथ बबूसा की भी बहुत इज्जत करते हैं। भैया (महापंडित) की मेहरबानी से बबूसा हर जन्म में राजा देव का सेवक बनता आ रहा है। राजा देव भी ये ही चाहते रहे हैं कि बबूसा ही उनका सेवक बने। बबूसा की जान बसती है राजा देव में। अगर तुम्हारे मन में बबूसा के लिए प्यार है तो उसे भूल जाओ। अब मैं आ गई हूं बबूसा को संभालने।"

"क-कोई प्यार नहीं है।" धरा जल्दी से बोली—"बस पहचान है। उसने मेरी जान बचाई।"

"कब आएगा बबूसा?"

"मुझे नहीं पता। मैं तो यहां बबूसा के साथ इसलिए रह रही हूं कि डोबू जाति वाले मेरी जान न ले लें।" धरा ने कहा—"तुम कहोगी तो मैं यहां से चली जाती हूं। यहां मेरा काम ही क्या है। परंतु वो डोबू जाति वाले मेरी जान...।"

"सोमारा।" रानी ताशा ने गम्भीर निगाहों से सोमारा को देखा।

"हां ताशा?"

"मुझे तेरी सहायता की जरूरत है।"

"आप हुक्म दीजिए रानी ताशा।"

"सिर्फ ताशा कह, हुक्म वाली बात मत कर। मेरी सहायता कर।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"बबूसा रुकावट डाल रहा है कि मैं राजा देव से न मिल सकूं। वरना राजा देव को क्या पता था कि मैं उनसे मिलने आ रही हूं। बबूसा ने सारी खबरें पहले ही पहुंचा दी थीं राजा देव को। बबूसा मुझे पसंद नहीं करता।"

"वो भटक चुका है। ठीक हो जाएगा।"

"तू बबूसा को समझाना कि राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाना बहुत जरूरी है। इसी में सदूर ग्रह का भला है। उनके बिना सदूर ग्रह अधूरा है। वहां के लोग आज भी राजा देव की वापसी का इंतजार कर रहे हैं।"

"मुझसे बेहतर ये बात और कौन जान सकता है ताशा।" सोमारा ने सिर हिलाकर कहा।

"बबूसा को समझाकर रास्ते पर ले आना।"

"मैं इसीलिए तो आपके साथ आई हूं ताशा कि बबूसा को संभाल सकूं।"

"अगर तू बबूसा को न संभाल सकी तो मैं सख्ती करने पर मजबूर हो जाऊंगी। अगर सोमाथ ने बबूसा को इस ग्रह पर मार दिया तो वो फिर सदूर ग्रह पर जन्म नहीं ले सकेगा।" रानी ताशा ने कहा।

"ये नौबत ही नहीं आएगी।" सोमारा मुस्कराई—"एक बार बबूसा को मेरे सामने तो आने दीजिए।"

"सच बात तो ये है कि मैं इसी वक्त के लिए, तुझे अपने साथ लाई हूं। मैं बबूसा के साथ सख्ती नहीं करना चाहती क्योंकि राजा देव उसे पसंद करते रहे हैं। मैं चाहती हूं फिर से समय पहले जैसा हो जाए। राजा देव सदूर ग्रह पर पहुंच जाएं और पहले की तरह मेरे में गुम हो जाएं।" रानी ताशा का स्वर कांप उठा—"बबूसा, राजा देव की सेवा में रहे। कितना अच्छा वक्त होगा, जब सब कुछ लौट आएगा सोमारा। तुम्हें भी बबूसा मिल जाएगा।"

"बबूसा से मिलन की खुशी से ज्यादा मुझे आपकी चिंता है ताशा।"

"मेरी चिंता?" रानी ताशा ने सोमारा को देखा।

"यही कि राजा देव आपको मिल जाएं। ऐसा वक्त आने पर मुझे सबसे ज्यादा खुशी होगी।"

रानी ताशा का चेहरा खिल उठा।

"राजा देव के मिल जाने के बाद मैं तुझे बहुत बड़ा इनाम दूंगी।"

"ओह ताशा, आप कितनी अच्छी हैं।"

सोमाथ और तीनों आदमी ड्राइंग हॉल में टहल रहे थे।

जगमोहन और नगीना कुर्सियों पर पास-पास ही बैठे थे। दोनों के चेहरों

पर गम्भीरता दिखाई दे रही थी। वो जानते थे कि इन हालातों में कुछ किया तो बचेंगे नहीं। जगमोहन को सोमाथ की ताकत का एहसास हो चुका था। अभी तक दोनों में कोई बात नहीं हुई थी। परंतु अब जगमोहन धीमे से कह उठा।

"भाभी, ये लोग हमसे कहीं ज्यादा ताकत रखते हैं।"

"हां। सोमाथ मशीनी इंसान है। उसे बहुत बेहतरीन ढंग से बनाया गया है। तुम्हारी चलाई गोलियों का जरा भी असर नहीं हुआ उस पर और उसके जोर लगाने पर गोलियां खुद ही बाहर को गिर पड़ीं फिर शरीर में पैदा हुए गोलियों के छेद पलों में भर गए। इसे बनाने वाला बहुत ही तेज दिमाग का वैज्ञानिक होगा।" नगीना ने कहा।

"और तुम रानी ताशा का मुकाबला भी नहीं कर सकीं। जगमोहन गम्भीर था।

"सच में, उसका लड़ने का अंदाज बिल्कुल ही अलग है। मैं नहीं समझ पाई कि वो किस तरह वार करती है। परंतु ऐसा अब नहीं होगा। मैं उसके वारों को समझ लूंगी। जो भी हो वो बेहतरीन लड़ाका है।"

"ये देवराज चौहान को अपने ग्रह पर ले जाने का इरादा बनाए हुए है।"

"ये बात तो मुझे पता है।"

"हम इसके सामने कमजोर पड़ रहे हैं। इस तरह तो ये देवराज चौहान को जबर्दस्ती अपने साथ ले जाएगी।"

"सोमाथ के दम पर ये जीत जाएगी।"

"हमें ताकत इकट्ठी करनी होगी। कुछ ऐसा करना होगा कि हम हारें नहीं।"

नगीना ने गम्भीर निगाहों से जगमोहन को देखा।

"सोमाथ के लिए कोई खास इंतजाम करना होगा।" नगीना बोली।

"क्या कर सकते हैं हम। देवराज चौहान तो इस स्थिति में नहीं है कि इस मामले में आ सके। वो...।"

"क्या देवराज चौहान ने रानी ताशा का चेहरा देखा है?" अचानक ही नगीना ने कहा।

जगमोहन नगीना को देखने देखने लगा।

"अर्जुन भारद्वाज को फोन करके मालूम करती हूं।" कहते हुए नगीना ने फोन निकाला और नम्बर मिलाकर फोन कान से लगा लिया। दूसरी तरफ बेल जाने लगी। नगीना ने देखा रानी ताशा ने अभी-अभी उसे देखा था।

"हैलो।" अर्जुन की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम क्या राजा देव को ये बता रही हो कि वो यहां न आएं, क्योंकि हम यहां हैं।" रानी ताशा ने एकाएक तेज स्वर में कहा।

रानी ताशा पर निगाहें टिकाए नगीना जल्दी-से बोली।

"देवराज चौहान ने रानी ताशा का चेहरा देखा कि नहीं?"

सोमाथ तेज कदमों से नगीना की तरफ बढ़ने लगा था।

"देखा। उसे देखते ही बेहोश हो गया। अभी होश में नहीं आया। रानी ताशा तुम्हारे वहां क्या कर रही हैं। क्या हो रहा है?"

नगीना जवाब नहीं दे सकी क्योंकि सोमाथ ने करीब आकर उससे फोन छीन लिया था और उनसे दूर जाकर उसे टेबल पर रख दिया। तब तक रानी ताशा उठकर, उनके पास आ पहुंची थी।

"किसे फोन किया?" राजा देव को या बबूसा को?" स्वर में सख्ती थी।

"अर्जुन भारद्वाज को। जो तुमसे होटल के कमरे में आकर मिला था।" नगीना ने मुस्कराकर कहा।

"तो उससे सहायता मांग रही हो हमारे खिलाफ?" रानी ताशा के होंठ भिंच गए।

"मैं उससे पूछ रही थी कि देवराज चौहान ने रानी ताशा का चेहरा देख लिया है या नहीं।" नगीना ने हंसकर कहा।

रानी ताशा की आंखें उसी पल सिकुड़ गईं

"क्या मतलब? राजा देव मुझे देखने वाले थे क्या?"

"हां। वो रात से ही होटल के बाहर, तुम्हारे बाहर निकलने के इंतजार में थे। साथ में बबूसा भी था।"

"ओह।" रानी ताशा के होंठों से निकला—"तभी रात को मुझे राजा देव के पास होने का एहसास हुआ था।" रानी ताशा, सोमाथ की तरफ पलटकर बोली—"तुमने रात होटल के बाहर जाकर देखा था सोमाथ?"

"नहीं। मैंने होटल के भीतर ही देखने की चेष्टा की थी। बाहर नहीं गया।" सोमाथ ने कहा।

रानी ताशा की निगाह पुनः नगीना पर जा टिकी।

"तो क्या राजा देव ने मेरा चेहरा देख लिया?"

"हां।"

रानी ताशा एकाएक बेचैन दिखने लगी।

"कब देखा, जब मैं होटल से बाहर निकली?"

"हां, तभी...।"

"ये गलत हुआ। बबूसा ने ही उसे इस राह पर डाला होगा।" रानी ताशा दांत भींचे वापस सोमारा के पास जा बैठी—"जब हम होटल से निकले तो राजा देव वहीं थे, उन्होंने मेरा चेहरा देख लिया सोमारा।"

"सच? ये तो अच्छा हुआ ताशा। अब राजा देव को सब याद आ जाएगा कि...।"

"ये ही तो बुरी बात होगी।" रानी ताशा सख्त स्वर में बोली।

सोमारा, रानी ताशा को देखने लगी।

"राजा देव अगर मेरे सामने पड़ते तो, मैं उन्हें उस जन्म की याद आने से पहले ही पोपा में बैठाकर सदूर पर ले जाती और महापंडित से कहकर, राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा खाली करा देती, जहां पर मेरे द्वारा किए गए धोखे की यादें दर्ज हैं। फिर राजा देव को कभी भी याद नहीं आता कि मैंने उनके साथ कुछ बुरा किया था। परंतु बबूसा ने सारा खेल बिगाड़ दिया। राजा देव ने मेरा चेहरा देख लिया है। ऐसे में उन्हें मेरे धोखे की बात भी याद आ गई तो जाने राजा देव क्या कर बैठें। वो क्रोधित हो जाएंगे। मेरे साथ सदूर पर वापस चलने से भी इंकार कर देंगे। मुझे बुरा समझेंगे। वो मुझे प्यार नहीं करेंगे। मैं उनके बिना नहीं रह सकती सोमारा।" रानी ताशा का स्वर भर्रा उठा—"मैं उनकी नफरत नहीं सह सकती। मैं वो ही समय वापस लाना चाहती हूं जो राजा देव मेरे साथ सदूर पर बिताया करते थे। ये क्या हो रहा है। मेरा प्यारा, मेरे राजा देव मेरे से दूर हो जाएंगे। मैं उनके बिना जी नहीं सकूंगी। बबूसा ने क्या कर डाला।" रानी ताशा सुबक उठी—"मेरी सारी कोशिशें बेकार हो जाएंगी अगर राजा देव को मेरे द्वारा किए गए धोखे की याद आ गई तो।"

"सब ठीक हो जाएगा। चिंता वाली बात मुझे तो दिखाई नहीं दे रही।" सोमारा ने शांत स्वर में कहा।

"क्या मतलब?" रानी ताशा ने भीगी आंखों से सोमारा को देखा।

"आपका काम है राजा देव को सदूर पर वापस ले जाना। इसके लिए हम राजा देव को बेहोश रखेंगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि राजा देव को आपके धोखे वाली बात याद आ जाएगी। भैया (महापंडित) से कहकर राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा, मिटा देंगे, जहां धोखे वाली बात दर्ज है। तब सब ठीक हो जाएगा। भैया आपकी बात को टालेंगे नहीं।"

रानी ताशा के आंसुओं से भरे चेहरे पर राहत दिखने लगी।

"तुमने ठीक कहा। ऐसा किया जा सकता है। महापंडित मेरी बात को कभी इंकार नहीं करेगा। राजा देव को सब कुछ याद भी आ जाता है तो मुझे व्यर्थ में चिंता करने की जरूरत नहीं। राजा देव मुझे वापस मिलकर ही रहेंगे" कहने के साथ ही रानी ताशा उठी और सीधे सोमाथ के पास पहुंचकर धीमे स्वर में बोली—"बबूसा मुझे बहुत नुकसान पहुंचा रहा है सोमाथ...।"

"हुक्म दीजिए।"

"जब भी बबूसा सामने आए, उसे खत्म कर देना।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा।

"हुक्म का पालन होगा।" सोमाथ ने शांत स्वर में कहा।

रानी ताशा वापस लौटकर सोफे पर आ बैठी।

"आपको क्या लगता है ताशा कि राजा देव यहां पर आएंगे?" सोमारा ने पूछा।

"सम्भव है, आ भी जाएं। हम इंतजार करेंगे।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा।

तभी विजय बेदी पास आ पहुंचा। उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

रानी ताशा ने उसे देखा।

"अब तो मेरा पंद्रह लाख दे दीजिए। मैंने आपको देवराज चौहान के ठिकाने पर पहुंचा दिया है।" बेदी बोला।

"अभी राजा देव हमें मिले तो नहीं।"

"मिलने में क्या कसर बाकी है। देवराज चौहान की पत्नी, उसका दोस्त यहां हैं। रस्सी से बांधकर बैठा लीजिए। देवराज चौहान तो खुद ही दौड़ा-दौड़ा आ जाएगा। आप जितनी खूबसूरत हैं, दिल की उतनी ही अच्छी हैं। मैं जानता हूं कि मुझे मेरा हक पंद्रह लाख देकर मुझे खुशी-खुशी जाने को कहेंगी। मैं बहुत व्यस्त इंसान हूं। ढेरों काम हैं मेरे पास करने को। यहां तक आप लोगों को मैंने पहुंचा दिया है तो समझिए देवराज चौहान हाथ आ ही गया। मैंने तो देवराज चौहान का ठिकाना खोजकर आपको वहां पहुंचाने का ठेका लिया था और वो काम कर दिखाया। मेरा काम खत्म हो गया।"

रानी ताशा ने सोच भरा चेहरा हिलाया।

"इस वक्त रुपए हमारे पास नहीं हैं कि अभी तुम्हें दे सकें। वो होटल में रखे हैं।"

"मैंने नोटों वाला सूटकेस देख रखा है। कहें तो मैं वहां जाकर ईमानदारी से पंद्रह लाख लेकर चला जाऊं?" बेदी बोला।

"तुम यहीं रहोगे। हमारे साथ वापस चलना। हम तुम्हें पंद्रह लाख दे देंगे।"

"आप कितनी नर्म दिल है। वैसे यहां से रवानगी कब होगी?"

"जब राजा देव यहां आ जाएंगे।"

"ये इंतजार तो लम्बा भी हो सकता है। क्या पता वो दो दिन बाद लौटे।"

"जल्दबाजी मत करो। मुझे सोचने दो तुम्हें पैसे मिल जाएंगे।"

बेदी शराफत से कई कदम दूर हटकर बैठे गया। मन-ही-मन सोच रहा था कि इन पागलों से कब पीछा छूटेगा। डकैती मास्टर देवराज चौहान को राजा देव कहती है और खुद को रानी ताशा। निवास स्थान दूसरे ग्रह का बताती है और यात्रा टिकट किसी पोपा की ले रखी है। सब बकवास है। पागलखाने से भागकर आए लगते हैं सारे।

"अब हालात कुछ बेहतर भी हो सकते हैं।" जगमोहन ने धीमे स्वर में नगीना से कहा।

"कैसे?"

"अगर सच में देवराज चौहान को कुछ याद आता है तो। बबूसा कहता है कि देवराज चौहान को उस जन्म की याद आ गई तो वो सब कुछ आसानी से संभाल लेगा। रानी ताशा भी ये जानकर बेचैन हो गई कि देवराज चौहान ने उसका चेहरा देख लिया है।"

"तुम खतरे को नहीं भांप रहे जगमोहन भैया।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कैसा खतरा?" जगमोहन ने नगीना को देखा।

"अगर देवराज चौहान, रानी ताशा के साथ जाने को तैयार हो गया तो? या फिर बबूसा के अनुसार देवराज चौहान सुधबुध खोकर रानी ताशा का दीवाना हो गया, तो तब क्या होगा।" नगीना एक-एक शब्द पर जोर देते कह उठी—"अभी तो देवराज चौहान बेहोश है। अर्जुन कहता है कि रानी ताशा का चेहरा देखने के बाद देवराज चौहान बेहोश हो गया था।"

"ऐसा क्यों हुआ?"

"क्या पता। परंतु अब देखना तो ये है कि होश आने पर वो किस स्थिति में होता है।" नगीना बोली।

"मेरे खयाल में तो देवराज चौहान का वहां रहना भी अब ठीक नहीं। उसे किसी और जगह पर रखना चाहिए।" जगमोहन ने कहा।

"अभी कुछ नहीं किया जा सकता। मेरा मोबाइल भी ले लिया गया है कि किसी से बात न कर सकूं।"

"मेरा मेरी जेब में है।"

"जेब में ही रखो। निकालना मत। मौका लगने पर मैं मिन्नो (मोना चौधरी) को फोन करूंगी।"

"मोना चौधरी को?" जगमोहन चौंका।

"हां उसे बुलाना ही पड़ेगा। ये मामला इतना सरल नहीं कि हम संभाल लें। हमें दूसरों की सहायता की जरूरत है ही। मिन्नो को मैंने पहले बुलाया तो देवराज चौहान ने कहा कि इस मामले को वो ही देखेंगे। परंतु उनकी स्थिति ऐसी नहीं है कि वो कुछ करें। सोमाथ जैसे इंसान से निबटने के लिए कुछ खास ही सोचना पड़ेगा। जब तक सोमाथ है, हम कुछ कर पाने के काबिल नहीं हो सकेंगे।"

"ये कब तक यहां रहेंगे।" जगमोहन की निगाह सब पर गई।

"कह नहीं सकती इनका इरादा क्या है। परंतु मुझे नहीं लगता कि ये आसानी से यहां से जाएंगे।" नगीना के दांत भिंच गए।

जगमोहन की खतरनाक निगाह सब पर जा रही थी।

▭ ▭

शाम हो गई।

रानी ताशा इंतजार में ही बैठी रही। सोमाथ और उसके तीनों साथी जगमोहन, नगीना और धरा पर सतर्कता से निगाह रखे टहल रहे थे। वहां पर ज्यादातर चुप्पी ही छाई रही थी। जगमोहन, नगीना उन्हीं कुर्सियों पर बैठे थे बीच में यदाकदा उठकर टहल लेते थे। धरा, अभी तक सोफे पर ही बैठी थी। तब विजय बेदी उठा और रानी ताशा के पास पहुंचा।

"महान रानी ताशा।" बेदी सेवकों की भांति हाथ जोड़कर कह उठा—"बहुत वक्त हो गया। दिन भी ढल गया। आपके राजा देव जाने कब आएंगे। मुझे पंद्रह लाख दे दीजिए। ताकि मैं अपने काम पर लगूं। बड़ी मेहरबानी होगी आपकी।"

रानी ताशा ने सोच भरी निगाहों से विजय बेदी को देखा।

"इसे पैसे दे दो ताशा।" सोमारा कह उठी—"यहां पर कब तक रहने का इरादा है?"

"जब तक राजा देव नहीं आ जाते।" रानी ताशा गम्भीर स्वर में बोली—"इसने ठीक कहा था कि राजा देव की पत्नी और उनके दोस्त को पकड़ लूं तो राजा देव को देर-सबेर में यहां आना ही पड़ेगा।"

"वो तो मैंने ऐसे ही कहा था।" बेदी जल्दी से बोला।

"परंतु ठीक कहा था। बात मुझे जंची। सोमाथ।" रानी ताशा ने पुकारा।

सोमाथ तुरंत पास आ गया।

"इसे पंद्रह लाख दे दो। अब हमें इसकी कोई जरूरत नहीं। पैसा होटल में रखा है। किसी को इसके साथ भेजो, वो इसे पैसा देकर वापस आ जाएगा। हमें तब तक यहां रहना है, जब तक राजा देव नहीं आते।" रानी ताशा ने कहा।

"ठीक है रानी ताशा। क्या पैसे वाला सूटकेस यहां मंगवा लूं?"

"ये भी ठीक रहेगा। ऐसा ही करो।"

सोमाथ ने एक आदमी को समझाकर, होटल भेज दिया। रानी ताशा ने बेदी से कहा कि वो यहीं रहकर इंतजार करे, पैसे वाला सूटकेस आ रहा है। सुनकर विजय बेदी को राहत मिली।

रानी ताशा, जगमोहन और नगीना के पास पहुंची।

"मैंने फैसला किया है राजा देव के आने तक मैं यहीं रहूंगी।" रानी ताशा ने कहा।

"तुम मेरे घर में, मेरी मर्जी के बिना कैसे रह सकती हो।" नगीना बोली।

"अच्छा।" रानी ताशा कड़वे अंदाज में मुस्कराई—"मुझे निकाल सकती हो तो कोशिश करो।"

जगमोहन की निगाह सोमाथ की तरफ उठी।

"यहां सिर्फ मेरा हुक्म चलेगा। अच्छा होगा कि मुझे राजा देव के बारे में बता दिया जाए कि वो कहां पर हैं?"

"हमें नहीं मालूम कि देवराज चौहान कहां है। बबूसा, उन्हें अपने साथ ले गया है।"

"इस तरह झूठ बोलोगी तो कष्ट में रहोगी।"

नगीना ने कुछ नहीं कहा।

"मुझे हैरानी भी होती है जब ये सोचती हूं कि बबूसा ने अपनी बातों का तुम लोगों को किस प्रकार यकीन दिलाया होगा।"

"वो सच्चा इंसान है।" जगमोहन बोला।

"भूल में हो। मैं बबूसा को अच्छी तरह जानती हूं वो बहुत चालबाज इंसान है। राजा देव का खास सेवक यूं ही नहीं बन गया। ये कहकर तुम मजाक कर रहे हो कि वो सच्चा इंसान है।"

"कम-से-कम तुमसे तो सच्चा है।"

रानी ताशा ने जगमोहन को गहरी निगाहों से देखा।

"तुम देवराज चौहान को अपने साथ, अपने ग्रह पर ले जाने का पक्का इरादा बनाए बैठी हो।" जगमोहन ने कहा।

"कहना क्या चाहते हो?"

"और तुम हमें कहती हो कि देवराज चौहान की इच्छा के बिना ऐसा नहीं करोगी।"

"ठीक ही तो कहा है।"

"झूठ कहा है। तुम सख्त किस्म की औरत हो, जो अपना सोचा पूरा करके रहती हैं।"

"मैं ऐसी नहीं हूं।" रानी ताशा मुस्करा पड़ी—"मेरा दिल बहुत नर्म है। मैं किसी को दर्द नहीं पहुंचा सकती। राजा देव मेरे हैं। मेरे थे और वो मेरे ही रहेंगे। वो मेरे से बहुत प्यार करते हैं। परंतु पृथ्वी के जन्म-चक्र में फंसकर वो मेरे को भूल बैठे हैं, लेकिन अब उन्होंने मेरा चेहरा देख लिया है। अब सदूर ग्रह की बातें याद आनी शुरू हो जाएंगी। मैं भी याद आऊंगी राजा देव को। मेरी याद में वो तड़प उठेंगे। तुम देख लेना वो दौड़कर आएंगे और मुझे बांहों में ले लेंगे।"

"तुमने तब राजा देव के साथ धोखा किया था।" जगमोहन ने कहा।

"वो भूल मुझसे जरूर हुई।"

"वो धोखा याद आते ही देवराज चौहान तुम्हें प्यार नहीं नफरत करेगा।"

रानी ताशा ने जगमोहन की आंखों में झांका।

"वो सब ठीक हो जाएगा।" रानी ताशा का स्वर शांत था।

"महापंडित ठीक कर देगा।" जगमोहन गम्भीर था—"बबूसा ने ऐसा ही कहा था।"

"बबूसा मक्कार है। उसने झूठी बातें तुमसे कही हैं।"

"अभी तक तो बबूसा की बातें सही हो रही हैं।"

"आने वाले वक्त में समझ जाओगे कि बबूसा ने गलत बातें कही हैं। वो मेरा विद्रोही है।" रानी ताशा गुस्से से कह उठी—"उसे मैं बहुत बुरी सजा दूंगी एक बार वो मेरे सामने आ गया तो अपने अंजाम भुगत लेगा।"

"हम कब तक यहां बैठे रहेंगे?" नगीना कह उठी।

"जब तक राजा देव नहीं आ जाते।"

"देवराज चौहान कई दिन नहीं आया तो... ।"

"तो तुम लोग मेरे पास ही रहोगे। राजा देव कभी तो तुम्हारे पास आएगा।"

"मुझे खाना तैयार करना है। दिन भर से कुछ नहीं खाया। तुम्हें भी भूख लगी होगी।"

"पृथ्वी ग्रह पर लोगों को पैसा देकर बाहर से खाना मिल जाता है।" रानी ताशा ने इशारे से विजय बेदी को पास बुलाया—"इसे पैसे दो कि ये बाहर से खाना ले आए।" कहकर रानी ताशा सोमारा की तरफ बढ़ गई।

नगीना ने बेदी को खाना लाने भेज दिया।

रानी ताशा, सोमारा के पास पहुंची तो सोमारा धरा से कह रही थी।

"तुम सदूर ग्रह पर जाकर बहुत मजे में रहोगी। पोपा की सैर करने में बड़ा मजा आता है। सदूर ग्रह शांत जगह है, पृथ्वी पर तो लोग ही बहुत रहते हैं। आवाजें बहुत आती हैं। मैं तुम्हें सदूर ग्रह पर अपने साथ ले जा सकती हूं।"

धरा खामोश रही।

"इसके लिए तुम्हें बताना होगा कि राजा देव और बबूसा कहां पर हैं। तब तुम हमारी दोस्त बन जाओगी।"

"मुझे पता होता तो मैं पहले ही बता देती।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हें जरूर मालूम है। परंतु तुम बता नहीं रहीं।"

"कसम से, नहीं मालूम।" धरा ने मुंह लटकाकर कहा।

"सोमारा, पृथ्वी के लोग बहुत झूठे हैं। ये तो हमारी मजबूरी है कि हमें इनके मुंह लगना पड़ रहा है।" रानी ताशा ने कहा।

"परंतु ताशा, पृथ्वी बहुत सुंदर है।" सोमारा बोली—"ये ग्रह मुझे बहुत पसंद आया।"

"एक बार राजा देव को सदूर पर ले जाऊं। सब ठीक हो जाए। उसके बाद राजा देव से कहूंगी कि ताशा को पृथ्वी ग्रह की रानी बनना है, फिर देखना कैसे राजा देव पृथ्वी को अपने कब्जे में ले लेंगे।" रानी ताशा मुस्कराई।

"मैं जानती हूं राजा देव आपसे बहुत प्यार करते हैं। वो आपकी बात नहीं टाल सकते।"

▭ ▭

विजय बेदी पंद्रह लाख लेकर जा चुका था।

इस वक्त रात के बारह बज रहे थे। उसी ड्राइंग हॉल में जगमोहन, नगीना और धरा नीचे गद्दे बिछाए सो रहे थे। सोमाथ उनके पहरे पर वहां मौजूद था। रानी ताशा और सोमारा बंगले के बेड रूम में जाकर सो चुकी थी और वो तीनों व्यक्ति भी बंगले के एक बेड रूम में सोने जा चुके थे। बेदी जो खाना लाया था, वो सबने खाया था। पंद्रह लाख मिल जाने के बाद बेदी बहुत खुश था और उसने वहां से निकल जाने में देर नहीं लगाई थी।

नगीना ने सोमाथ को पंद्रह कदम दूर टहलते देखा।

"जगमोहन भैया।" नगीना फुसफुसाई।

"हां भाभी।" जगमोहन जाग रहा था।

"फोन मुझे दो।"

जगमोहन ने सावधानी से फोन निकाला और नगीना की तरफ सरका दिया। नगीना ने सोमाथ की तरफ पीठ कर ली कि वो फोन की लाईट न देख सके और मोना चौधरी का नम्बर मिलाकर फोन कान पर रखा।

दूसरी तरफ बेल जाती रही। काफी देर बाद कॉल रिसीव की और मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"मिन्नो।" नगीना फुसफुसाई—"मैं बेला...।"

"बेला?" मोना चौधरी की आवाज संभल चुकी थी—"तू इतनी धीमे क्यों बोल रही है?"

"जो मैं कह रही हूं मेरी बात सुन।" नगीना फुसफुसाई—"इस वक्त हम मुसीबत में हैं। मैं तेरे को खुलकर ज्यादा बातें नहीं बता सकती। रानी ताशा इस वक्त बंगले पर मौजूद है उसने हम पर कब्जा जमा रखा है। देवराज चौहान, बबूसा और अर्जुन भारद्वाज के साथ होटल पार्क व्यू पर्ल के कमरा नम्बर 212 में मौजूद है। उन्हें यहां के हालातों का नहीं पता। तू देवराज चौहान को वहां

से निकालकर सुरक्षित जगह पहुंचा दे, उसके बाद हमें रानी ताशा के हाथों से निकालने की कोशिश करना।"

"समझी।" मोना चौधरी का गम्भीर स्वर में कहा—"मैं सुबह मुम्बई पहुंच जाऊंगी।"

"बंगले पर सोमाथ नाम का आदमी है जो कि किसी खास धातु का बना लगता है। आम इंसान नहीं है। उस पर गोलियां ऊपर नहीं करती। वो बहुत खतरनाक है। इन पर आसानी से काबू नहीं पाया जा सकता।"

"तू फिक्र न कर।" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी—"मैं देख लूंगी।"

नगीना ने फोन बंद किया और जगमोहन की तरफ सरका दिया।

"मिन्नो कल मुम्बई आ जाएगी।" नगीना ने फुसफुसाकर कहा।

"बेकार है। वो इन लोगों का मुकाबला नहीं कर सकेगी।" जगमोहन बोला।

"मैंने उसे सब समझा दिया है। पहले तो वो देवराज चौहान को होटल से सुरक्षित जगह पहुंचाएगी। फिर हमें निकालने की कोशिश करेगी। कहीं वो भी यहां आकर फंस न जाए।" नगीना ने गहरी सांस ली।

"हमें खुद बच निकालने की कोशिश करनी चाहिए।" जगमोहन ने कहा।

"जब तक सोमाथ है, हम कुछ नहीं कर सकते।" नगीना दांत भींचे कह उठी—"कुछ किया तो ये हमें मार देंगे।"

"क्या बातें हो रही हैं?" तभी धरा धीमे स्वर में कह उठी—"फोन किसे किया था अभी?"

उसी पल सोमाथ उनकी तरफ बढ़ता कह उठा।

"बातें मत करो।"

▭ ▭

रात के नौ बज रहे थे। अर्जुन भारद्वाज, नीना चिंता में थे कि देवराज चौहान को होश नहीं आया था अभी तक। जबकि उसकी सांसें सही चल रही थीं। नीना ने एक-दो बार कहा भी था कि डॉक्टर को बुलाकर चैक करवा लें। परंतु बबूसा इस हक में नहीं था कि यहां पर कोई आए। चिंता बबूसा को भी बहुत थी कि राजा देव को होश क्यों नहीं आ रहा। वो अधिकतर समय देवराज चौहान के करीब ही बैठा रहा था।

नीना ने अर्जुन भारद्वाज से कहा।

"रानी ताशा अभी तक नहीं लौटी है सर। इतनी देर वो देवराज चौहान के बंगले पर क्या कर रही है?"

"कह नहीं सकता। नगीना ने मेरे से बात की थी। पूछा था कि देवराज चौहान ने रानी ताशा का चेहरा देखा कि नहीं, मैंने हां कहा तो फोन कट गया।"

"परंतु रानी ताशा को अब तक लौट आना चाहिए था।"

"नगीना को फोन करता हूं।" अर्जुन ने मोबाइल उठाया और नगीना का नम्बर मिलाया।

दूसरी तरफ बेल जाने लगी, परंतु कॉल रिसीव नहीं की गई।

अर्जुन ने दो-तीन बार नम्बर मिलाया। पर बात नहीं हो सकी।

"कोई गड़बड़ जरूर है।" अर्जुन भारद्वाज कान से फोन हटाता कह उठा।

"बात नहीं हो पा रही?"

"बेल जा रही है, कॉल रिसीव नहीं की जा रही।"

"फिर तो हमें वहां जाकर देखना चाहिए। रानी ताशा का कोई भरोसा नहीं, वो क्या कर दे।"

अर्जुन ने नीना को देखा। चेहरे पर सोचें नाच रही थीं।

"हमारा वहां जाना ठीक नहीं। अगर रानी ताशा ने वहां कुछ कर डाला है तो हम कुछ नहीं कर सकते। सोमाथ का मुकाबला करना हमारे बस का नहीं। वो लौह इंसान है।" अर्जुन भारद्वाज ने सोचों में डूबे कहा—"परंतु बबूसा को वहां भेजा जा सकता है।"

अर्जुन और नीना की निगाह बबूसा पर गई।

बबूसा बेड के पास कुर्सी रखे, बैठा, बार-बार बेहोश देवराज चौहान को देख रहा था।

"बबूसा।" अर्जुन बोला—"देवराज चौहान की पत्नी नगीना मेरा फोन नहीं उठा रही।"

बबूसा ने अर्जुन को देखा, कहा कुछ नहीं।

"रानी ताशा वहां गई हुई है। कहीं उसने वहां पर कुछ बुरा न कर दिया हो।" अर्जुन ने पुनः कहा।

"मुझे सिर्फ राजा देव की चिंता है।" बबूसा का स्वर शांत था।

"वो देवराज चौहान की पत्नी है, तुम्हें उसकी...।"

"राजा देव के अलावा मुझे किसी की परवाह नहीं है। मेरे लिए राजा देव ही सब कुछ है।" बबूसा ने कहा।

"नगीना को कुछ हो गया तो राजा देव को बहुत दुख होगा।"

"राजा देव को ठीक रहना चाहिए और किसी बात से मुझे मतलब नहीं है।"

"अजीब सनकी इंसान है।" नीना ने मुंह बनाकर कहा।

बबूसा, नीना को देखकर मुस्कराया, परंतु चुप रहा।

"आपको वहां जरूर झांक आना चाहिए सर। खामोशी से, चुपके से कि वहां क्या हो रहा है।" नीना बोली।

"मेरे खयाल में ये ठीक नहीं होगा।"

"आप डर रहे हैं सर?"

"नहीं नीना।" अर्जुन भारद्वाज सोच भरे स्वर में कह उठा—"बात डरने की नहीं है। रानी ताशा को अब तक आ जाना चाहिए था। लेकिन वो नहीं आई। अब नगीना भी फोन नहीं उठा रही। सम्भव है रानी ताशा ने उन्हें कैद में रख लिया हो। फोन अपने कब्जे में ले लिए हो कि ऐसी स्थिति में देवराज चौहान जरूर वहां पहुंचेगा।"

"राइट सर।" नीना की आंखें चमक उठीं—"आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। ये ही बात होगी।"

"वो लोग इस बारे में सतर्क होंगे कि कोई वहां पहुंचे और वो उसे पकड़े, देवराज चौहान का पता पूछे। स्पष्ट है कि अभी तक नगीना, जगमोहन, धरा ने नहीं बताया उन्हें कि देवराज चौहान कहां है, बताया होता तो रानी ताशा कब की यहां पहुंच चुकी होती।"

"फिर तो देवराज चौहान का यहां रहना खतरे से खाली नहीं। किसी ने, या कहें कि धरा ने मुंह खोल दिया तो गड़बड़ हो जाएगी।"

"जब तक देवराज चौहान बेहोश है, हम कहीं नहीं जा सकते। बेहोश इंसान को यहां से ले जाने की कोशिश करेंगे तो होटल की सिक्योरिटी तुरंत हमें रोक लेगी। हो सकता है तब वो पुलिस को भी बुला लें।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"सर।" नीना तेज स्वर में कह उठी—"देवराज चौहान को होश आ रहा है।"

अर्जुन भारद्वाज की निगाह देवराज चौहान की तरफ उठी। देवराज चौहान के हाथ हौले-हौले हिलने लगे थे। थोड़ा-सा सिर भी हिला था। बबूसा का चेहरा प्रसन्नता से भर उठा था देवराज चौहान को हिलते पाकर।

"सब ठीक है। राजा देव को होश आ रहा है।" बबूसा खुशी से बोला—"बहुत लम्बी बेहोशी में रहे राजा देव। परंतु होश आने पर जाने क्या हाल होगा राजा देव का, रानी ताशा का चेहरा देखकर बेहोश हो गए थे।"

"तुम तो कहते थे कि रानी ताशा का चेहरा देखने के बाद देवराज चौहान को तुम्हारे ग्रह की बातें याद आ जाएंगी।" अर्जुन बोला।

"महापंडित ने ऐसा ही कहा था।" बबूसा गम्भीर हो गया।

"क्या पता अब तक देवराज चौहान को सब याद आ गया हो।" नीना ने कहा।

उसी पल देवराज चौहान के होंठों से कराह निकली। होंठ पुनः कांपे।

"ता-शा...।" देवराज चौहान के होंठों से फुसफुसाहट निकली।

बबूसा की आंखें सिकुड़ी।

अर्जुन भारद्वाज और नगीना की नजरें मिलीं।

"लगता है देवराज चौहान को, रानी ताशा के बारे में सब याद आ गया है।" नीना कह उठी।

तीनों की निगाह देवराज चौहान के चेहरे पर जा टिकी थी।

"राजा देव।" बबूसा, देवराज चौहान का हाथ पकड़कर बोला—"होश में आइए राजा देव।"

परंतु देवराज चौहान को फौरन होश न आ सका। कई मिनट बीत गए। धीमे-धीमे उसके हाथ-पांव हिलते रहे। गर्दन दाएं-बाएं होती रहीं। बबूसा ने राजा देव का हाथ थाम रखा था। फिर देवराज चौहान की बंद आंखों में थिरकन-सी दौड़ पड़ी। पलकें जैसे कांप उठीं और अगले ही पल देवराज चौहान ने आंखें खोल दी।

"राजा देव।" बबूसा खुशी से कह उठा—"आपको होश आ गया।"

देवराज चौहान सीधे छत को देख रहा था।

अर्जुन भारद्वाज और नीना की आंखें देवराज चौहान पर थीं। देवराज चौहान ने नीना-अर्जुन भारद्वाज को देखा फिर पास बैठे बबूसा को देखा।

"ऐसा लगता है जैसे लम्बी और गहरी नींद से उठा हूं।" देवराज चौहान ने कहा और उठ बैठा।

"तुम्हें याद है तुम बेहोश हो गए थे।" अर्जुन बोला।

"इतना याद है कि मैंने रानी ताशा के चेहरे को देखा था। उसके बाद क्या हुआ, पता नहीं, कुछ याद नहीं।" देवराज चौहान बोला।

"तुम बेहोश हो गए।"

देवराज चौहान ने पास बैठे बबूसा को देखा।

"कुछ याद आया राजा देव?"

"क्या?"

"सदूर ग्रह के बारे में—रानी ताशा के बारे में—मेरे बारे में?"

"नहीं, मुझे कुछ भी याद नहीं आया।" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया।

"लेकिन होश आने से पहले तुम्हारे होंठों से ताशा निकला था।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

"मुझे याद नहीं।" देवराज चौहान ने गहरी सांस ली।

"आपके होंठों से ताशा निकला था राजा देव।" बबूसा बोला—"मैंने तो सोचा था कि आपको सब कुछ याद आ गया है।"

"कुछ याद नहीं आया।" देवराज चौहान बेड से उठ खड़ा हुआ और अर्जुन से बोला—"मुझे भूख लग रही है।"

"सर मैंने भी सुबह से कुछ नहीं खाया।"

"रूम सर्विस को डिनर के लिए कह दो। चार लोगों का डिनर।"

नीना इंटरकॉम की तरफ बढ़ गई। देवराज चौहान ने बाथरूम जाकर हाथ-मुंह धोया और कमरे में आकर सिग्रेट सुलगा ली। कुर्सी पर बैठ गया। बबूसा एक टक देवराज चौहान को देखे जा रहा था तो देवराज चौहान बोला।

"क्या बात है बबूसा?"

"महापंडित कभी झूठ नहीं बोलता राजा देव। उसने कहा था कि रानी ताशा का चेहरा देखते ही आपको सदूर ग्रह की बातें याद आने लगेंगी। परंतु आपको तो कुछ भी याद नहीं आया। मेरे लिए ये उलझन की बात है।"

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"ये बात तुम्हें महापंडित से पूछनी होगी कि मुझे याद क्यों नहीं आया?" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम रानी ताशा को देखते ही बेहोश होकर क्यों गिर पड़े थे?" अर्जुन ने पूछा।

"रानी ताशा को देखने के बाद क्या हुआ मुझे कुछ याद नहीं।"

"होश में आने से पहले तुम्हारे होंठों से ताशा निकला। इसका भी जरूर कोई खास मतलब होगा।"

"जो मन में आए मतलब निकाल लो।" देवराज चौहान ने कश लिया और फोन निकालकर नम्बर मिलाने लगा।

"नगीना को—क्यों?" देवराज चौहान ने अर्जुन भारद्वाज को देखा।

"तुम्हारी पत्नी फोन नहीं उठा रही, कुछ देर पहले मैंने फोन किया था।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"जगमोहन को फोन कर लेते...।"

"उसका नम्बर मेरे पास नहीं है। लेकिन उसे भी फोन करने का कोई फायदा नहीं होगा। रानी ताशा तुम्हारे बंगले पर पहुंच चुकी है।"

"क्या?" देवराज चौहान चौंककर खड़ा हो गया। चेहरे पर कठोरता उभर आई।

"विजय बेदी ने तुम्हारे बंगले का पता लगा लिया था। उसके बाद तुम्हारी पत्नी से एक बार बात हुई, उसी का फोन आया था उसने पूछा कि तुमने रानी ताशा का चेहरा देख लिया है, मैंने हां कही तो फोन कट गया।" अर्जुन ने बताया।

"तुम बंगले पर क्यों नहीं गए?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"कोई फायदा नहीं होता। वहां पर, रानी ताशा के साथ सोमाथ भी है। सोमाथ को मैं भुगत चुका हूं। उसका मुकाबला नहीं किया जा सकता। वो बहुत शक्तिशाली है। लोहे जैसा है वो...।"

"उसने तो 'सर' की जान ले ली होती।" नीना पास आती कह उठी—"वो भला हो बेदी भैया का, जो हमें बचाकर, भगा दिया।"

देवराज चौहान के चेहरे पर दरिंदगी नाच उठी।

"मुझे अभी बंगले पर जाना होगा।"

"नहीं देवराज चौहान।" अर्जुन भारद्वाज ने चेतावनी भरे, गम्भीर स्वर में कहा—"मेरी बात को हलके में मत लो। सोमाथ का मुकाबला करना असम्भव है तुम्हारे लिए। वहां गए तो घिर जाओगे। मेरे खयाल में उन्होंने जगमोहन, तुम्हारी पत्नी और धरा को बंधक के तौर पर रख लिया है कि उनके लिए तुम वहां पहुंचो।"

"ऐसा तुम कैसे कह सकते हो?"

"क्योंकि रानी ताशा अभी तक वापस नहीं लौटी, जबकि तुम्हारे न मिलने पर उसे वापस लौट आना चाहिए था। उधर तुम्हारी पत्नी भी फोन कॉल रिसीव नहीं कर रही। जगमोहन का फोन एक बार भी तुम्हें नहीं आया। सब बातों को मिलाया जाए तो ये ही नतीजा आता है कि वहां पर रानी ताशा तुम्हारे पहुंचने का इंतजार कर रही है।

"नगीना, जगमोहन खतरे में हैं।" देवराज चौहान के दांत भिंच गए—"मुझे वहां जाना...।"

"ऐसी गलती मत कर देना देवराज चौहान साहब।" नीना ने दृढ़ स्वर में कहा—"तुम वहां फंस जाओगे। रानी ताशा तुम्हें ही तो ढूंढ़ रही है, वो जाने तुम्हारे साथ क्या करना चाहती है। उसे नगीना या जगमोहन या धरा से कुछ नहीं लेना-देना। उसे तुमसे मतलब है। नगीना, जगमोहन और धरा को तो उसने सिर्फ चारा बनाया है कि तुम उसके जाल में आ फंसो। बात रानी ताशा की होती तो परवाह नहीं थी, उसे देख लेते, परंतु वहां पर सोमाथ है और तुम उससे मुकाबला नहीं कर सकोगे।"

देवराज चौहान के चेहरे पर दरिंदगी छाई रही।

"सोमाथ के साथ तीन लोग और भी हैं।" अर्जुन बोला—"उनके बारे में मैं नहीं जानता कि वो कितनी ताकत रखते हैं।"

खामोश बैठा बबूसा बेचैनी से कह उठा।

"वो तीनों जोबिना चलाने वाले हैं। उन तीनों के पास जोबिना है।"

"जोबिना?" नीना ने बबूसा को देखा।

"ऐसा हथियार, जिसके इस्तेमाल करने पर सामने वाला राख के ढेर में बदल जाता है। कुछ भी नहीं बचता, सिवाय राख के। सदूर ग्रह का ये सबसे खतरनाक हथियार माना जाता है और ग्रह के महत्त्वपूर्ण लोगों

के पास ही जोबिना होती है। जोबिना को राजा देव आपने ही बनाया था, क्या भूल गए आप।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं जगमोहन और नगीना के पास जा रहा...।"

"तुम हमारी बात समझते क्यों नहीं?" अर्जुन भारद्वाज झल्ला उठा—"उन्हें पकड़कर रानी ताशा तुम्हें फंसाने की चेष्टा कर रही है और तुम इतनी साधारण-सी चाल में फंसने जा रहे हो। उन लोगों की जान को कोई खतरा नहीं है। उन्हें चारा बनाया जा रहा है कि तुम आ फंसो। समझ से काम लो देवराज चौहान। ये तुम्हारे लिए कठिन वक्त है।"

"मतलब कि तुम मेरे साथ नहीं जाना चाहते।" देवराज चौहान के दांत भिंचे हुए थे।

"नहीं। क्योंकि मैं सोमाथ का मजा चख चुका हूं। मैं तो बच आया था, परंतु तुम नहीं बचने वाले। क्योंकि रानी ताशा को तुम्हारी जरूरत है। वो तुमसे मिलना चाहती है। तुम इतने बड़े डकैती मास्टर हो और साधारण-सी बात...।"

"नगीना और जगमोहन की मुझे चिंता...।"

"उनकी चिंता मत करो। रानी ताशा उन्हें कभी भी नुकसान नहीं पहुंचाएगी, क्योंकि वो दोनों तुम्हारे खास हैं। उन्हें नुकसान पहुंचाकर वो तुम्हें नाराज नहीं करना चाहेगी।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने अपना सख्त चेहरा बबूसा की तरफ उठाया।

"बबूसा हाजिर है राजा देव।" बबूसा फौरन गम्भीर स्वर में कह उठा—"आपका सेवक आपके साथ चलेगा। परंतु हम वहां विजय हासिल कर लेंगे, ये बात पक्के तौर पर नहीं कह सकता। क्योंकि महापंडित ने पहले ही कह दिया है कि सोमाथ मुझसे कहीं ज्यादा ताकतवर है और मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकता। मैं सोमाथ से हार गया तो रानी ताशा आप पर आसानी से काबू पा लेगी। ये भी सम्भव है कि आप रानी ताशा के दीवाने हो जाएं और मेरी एक न सुनें। ये आदमी ठीक कहता है कि रानी ताशा आपके खास लोगों को सलामत रखेगी। उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाएगी। वो आपकी नाराजगी नहीं चाहती। वो आपको अच्छे-से-अच्छा बनकर दिखाएगी। परंतु ये सब उसकी चालों का हिस्सा होगा। जैसे भी हो वो आपको वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है। पहले प्यार से कहेगी। आपके आगे हाथ जोड़ेगी। अगर आप नहीं माने तो सोमाथ की सहायता से दूसरे ढंग से आपको लेकर पोपा की तरफ चल देगी। महापंडित तो इसी वक्त का इंतजार कर रहा है कि कब आप सदूर पर पहुंचें और वो अपनी मशीनों द्वारा आपके दिमाग के उस हिस्से को साफ कर दें, जहां रानी ताशा के धोखे दिए जाने की बात दर्ज

है। एक बार आप रानी ताशा के सामने जा पहुंचे तो फिर खेल की डोर रानी ताशा के हाथ में होगी। तब वो हो जाएगा, जो वो चाहती है।"

देवराज चौहान बबूसा को देखता रहा। होंठ भिंचे रहे।

"तो तुम चाहते हो कि मैं रानी ताशा से दूर भागता रहूं।" देवराज चौहान गुर्राया।

"जब तक आप कोई युक्ति नहीं सोच लेते। मैं तो सेवक हूं। छोटी-मोटी बातों की सोच सकता हूं। परंतु युक्ति तो आपको ही सोचनी है राजा देव। आप तो हर तंग जगह से रास्ता निकाल लेने में माहिर हैं।"

तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई। वेटर डिनर ले आया था।

उन सबने डिनर किया। इस दौरान ज्यादा बात नहीं हुई। देवराज चौहान क्रोध में भरा बैठा था। उसका दिमाग तेजी से दौड़ रहा था। नगीना और जगमोहन की उसे चिंता थी। धरा भी वहां थी। अर्जुन भारद्वाज की बात उसे ठीक लगी कि रानी ताशा ने नगीना और जगमोहन को पकड़कर, उसके लिए जाल बिछा रखा है। न तो उन्हें फोन करने दे रही होगी, न फोन रिसीव करने दे रही होगी कि ऐसे में वो जरूर बंगले पर पहुंचेगा। परंतु कब तक वो रानी ताशा से छिपकर इस तरह रहेगा। उसे सामने आना ही होगा। अर्जुन को सोमाथ का डर था और बबूसा भी सोमाथ से कतरा रहा था। ऐसा क्या है सोमाथ में जो बबूसा जैसा इंसान भी आगे बढ़ने में हिचक रहा है। ये बात भी उसे ठीक लगी कि रानी ताशा, जगमोहन और नगीना को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगी।

वेटर बर्तन ले गया था। उसे कॉफी के लिए कह दिया था।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और कुर्सी पर बैठ गया।

"हमें ये जगह भी छोड़ देनी चाहिए।" अर्जुन भारद्वाज कह उठा।

देवराज चौहान ने अर्जुन को देखा।

"यहां रहना ठीक नहीं। सामने रानी ताशा का कमरा है। वो हमें देख भी सकते हैं। तुम यहां रानी ताशा का चेहरा देखने आए थे और वो देख लिया है। मेरा खयाल है कि मैं अभी यहीं रहूं परंतु तुम बबूसा के साथ किसी और जगह पर चले जाओ।"

"कोई जल्दी नहीं है। रानी ताशा मेरे बंगले से अभी यहां नहीं आने वाली।"

"कभी तो वो आएगी ही।"

देवराज चौहान ने बबूसा से कहा।

"तुम्हें कुछ करना चाहिए इस मौके पर।"

"हुक्म दीजिए—आपका सेवक क्या करे?" बबूसा बोला।

"तुम ही कहो।"

"हुक्म तो आपको ही देना होगा राजा देव।"

"तुम शुरू से ही मुझे रोक रहे हो कि मैं रानी ताशा के सामने न जाऊं। परंतु ये ठीक नहीं है। रानी ताशा से मैं कब तक दूर रह सकता हूं, जबकि वो मुझ तक पहुंचने की चेष्टा कर रही है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब उसने मुझ पर दबाव बनाने के लिए जगमोहन और नगीना को बंगले पर ही कैद कर लिया है। वो वहां मेरा इंतजार कर रही है।"

"आप रानी ताशा की चालों को समझ नहीं रहे राजा देव।" बबूसा कह उठा—"सिर्फ एक बार, आप उसके सामने पड़ गए तो वो अपनी कोशिश में कामयाब हो जाएगी। आपको जबरन सदूर पर ले जाएगी। आपको कुछ भी याद नहीं आया होगा और वो वहां महापंडित से कहकर, आपके दिमाग का वो हिस्सा साफ करा देगी जहां उसके धोखा दिए जाने की बातें दर्ज हैं। मैं रानी ताशा की चाल को पूरी तरह समझ रहा हूं। सब कुछ आपके सामने है, जल्दी मत कीजिए, वरना मेरी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। आप कोई तरकीब सोचिए। तरकीब निकाल लेने में आप तो माहिर रहे हैं राजा देव।"

वेटर कॉफी दे गया। वो सब कॉफी पीने लगे।

तभी अर्जुन भारद्वाज कह उठा।

"रानी ताशा को छोड़कर, सोमाथ के बारे में सोचना चाहिए कि उस पर कैसे काबू किया जाए। रानी ताशा की ताकत सोमाथ है, जब तक वो आजाद है कुछ नहीं कहा जा सकता। सोमाथ के लिए एक साथ बीस लोग भी कम हैं।"

"तुम उन तीन आदमियों को क्यों भूल रहे हो जो उनके साथ हैं।" बबूसा बोला।

"उन्हें तो संभाला जा सकता है।" अर्जुन ने बबूसा को देखा।

"उनके पास जोबिना है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"वो पूरी एक फौज को राख के ढेर में बदल सकते हैं। रानी ताशा ने पूरा इंतजाम कर रखा है कि वो हर तरह के हालातों का मुकाबला कर सके।"

"तुम्हारा मतलब कि हम रानी ताशा का मुकाबला नहीं कर सकते।" देवराज चौहान बोला।

"नहीं कर सकते।" बबूसा गम्भीर हो गया।

"मैं अगर रानी ताशा के सामने पड़ा तो वो मुझे जबरन अपने साथ सदूर ग्रह पर ले जाएगी।"

बबूसा ने सिर हिला दिया।

"लेकिन इसका कोई हल निकालना होगा। इस तरह मैं अपने को बंद करके नहीं रख सकता।" देवराज चौहान झल्ला उठा।

"इसका एक ही हल है कि आपको सदूर ग्रह वाले जन्म की बातें याद

आ जाएं। आपने रानी ताशा का चेहरा देख लिया है और मैं परेशान हूं कि महापंडित के कहे मुताबिक, आपको कुछ याद क्यों नहीं आया?" बबूसा व्याकुल हो उठा।

"ये तुम जानो। तुमने ही कहा था कि रानी ताशा को देखने पर मुझे सब कुछ याद आ जाएगा।"

"महापंडित ने कही थी मुझे ये बात। कुछ समझ नहीं आता, महापंडित की बात गलत नहीं हो सकती।"

"सर।" नीना कह उठी—"मुझे तो नींद आ रही है।" नीना बेड की तरफ बढ़ गई।

▭ ▭

रात के बारह बज रहे थे।

अर्जुन भारद्वाज नीना और बबूसा बेड पर सो चुके थे। देवराज चौहान लम्बे सोफे पर तकिया रखे लेटा सोचों में डूबा था कि जगमोहन और नगीना को कैसे बंगले से निकाले। मस्तिष्क में कई योजनाएं बन बिगड़ रही थीं। इस बात को उसने गम्भीरता से लिया था कि सोमाथ उसके लिए समस्या बन सकता है और वो तीनों आदमी, जो कि जोबिना जैसा हथियार रखे हुए हैं, वो भी खतरनाक काम कर सकते हैं। उसका मन तो था कि एक बार सीधे-सीधे रानी ताशा के पास पहुंच जाए, परंतु अर्जुन भारद्वाज और बबूसा की बातें उसे रोके हुए थीं और वो किसी अन्य तरीके से काम करने की सोच रहा था। कमरे में शांति थी। बाहर होटल में भी रात की चुप्पी व्याप्त होने लगी थी, कभी-कभार कोई खटका अवश्य सुनाई दे जाता था। एकाएक देवराज चौहान को महसूस हुआ जैसे उसके मस्तिष्क में उथल-पुथल मच गई हो। बहुत गहरी हलचल। तभी आंखों के सामने सफेद सितारे से चमक उठे। वो नहीं समझ पाया कि क्या हो रहा है। सिर को कई बार झटका दिया, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ एकाएक कई दृश्य उसके मस्तिष्क में उभरने लगे कि उसी पल रानी ताशा का इंतहाई खूबसूरत चेहरा उसके मस्तिष्क में आकर ठहर गया। वो मुस्करा रही थी।

"ताशा।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

ताशा को खिलखिलाकर, पलटते हुए भागते देखा।

देवराज चौहान को लगा वो उसके पीछे भाग रहा है। ताशा खिलखिलाती जा रही है। परंतु ये भागना ज्यादा देर तक न रहा। उसने ताशा की कमर में पीछे से दोनों हाथ डालकर पकड़ लिया।

"ये ही तो मैं चाहती थी देव कि आप मुझे पकड़ें।" ताशा ने हंसते हुए कहा था।

देवराज चौहान ने उसकी कमर छोड़ी और सामने आकर ताशा के कंधों पर हाथ रख दिए। ताशा अभी भी मुस्करा रही थी। मोहित-सा वो, ताशा को देखते रह गया।

"ऐसे क्या देख रहे हो देव?" ताशा ने उसकी नाक पर उंगली लगाई।

"तुम इतनी खूबसूरत क्यों हो?" उसका स्वर प्यार में डूबा हुआ था।

"हूं तो—हूं।" ताशा इठलाकर बोली—"मैं खूबसूरत न होती तो आप मुझे मिलते ही नहीं।"

"तुमने मेरा खाना-पीना हराम कर रखा है। सदूर के काम छूट रहे हैं। हर वक्त मन तुमसे मिलने को लगा रहता है। हर वक्त तुम्हारी ही यादों में खोया रहता हूं।" स्वर में प्यार भरा कम्पन था—"तुम सदूर की दुश्मन बन गई हो।"

"वो कैसे?"

"तुम्हारी वजह से मैं अपने कामों को ठीक से नहीं कर पा रहा। राजा होने के कारण, मुझे सबसे पहले जनता की जरूरतों को पूरा करना चाहिए, परंतु तुम्हारी वजह से मेरा मन कामों में नहीं लगता।"

ताशा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"अब आप ये कहेंगे कि मैंने आप पर जादू कर दिया है।" बोली ताशा।

"हां। तुमने सच में मुझ पर जादू कर दिया है। मुझे पागल बना दिया है। तुम सदूर की सबसे खूबसूरत युवती हो।"

"सच राजा देव?" ताशा का स्वर कांप उठा।

"हां ताशा। तुम्हारे बिना अब मेरा मन नहीं लगता। मैं तुमसे दूर नहीं रह सकता।" स्वर में प्यार ठूंस-ठूंसकर भरा था।

ताशा की आंखों में पानी चमक उठा।

"ये क्या ताशा—तुम...।"

"मेरे प्यारे देव।" ताशा के शब्द लरज उठे—"मेरा भी ये ही हाल है। रातों को नींद नहीं आती। करवटें लेती रहती हूं। आपका मोहक चेहरा हर वक्त मेरी आंखों के सामने छाया रहता है। हर वक्त आपके बारे में ही सोचती हूं। मुझे जाने क्या हो गया है।"

"तुम्हें भी वो ही हुआ है, जो मुझे हुआ है।" देव का स्वर कांप रहा था—"हम दोनों को प्यार हो गया है।"

"हां मेरे देव। मुझे आपसे प्यार हो गया है। मैं आपके बिना नहीं रह सकती।" ताशा की आंखों से आंसू निकलकर गालों पर आ गए।

राजा देव ने ताशा के गालों से आंसू साफ करते हुए कहा।

"मुझे दर्द होता है तुम्हारी आंखों में आंसू देखकर। इसे बहाओ मत।" देव की आवाज में कम्पन था—"हम शादी करेंगे ताशा।"

"सच?" ताशा ने देव की बांह पकड़ ली—"सच देव। हम शादी करेंगे?"

"हां ताशा, तुम सदूर की रानी बनोगी। मेरी पत्नी बनोगी। तुम सदूर की सबसे खूबसूरत औरत हो और मुझे तुमसे इतना प्यार हो गया है कि अगर तुम मेरे से दूर रहीं तो सदूर के कामों में मेरा मन नहीं लगेगा।" थरथरा रहा था देव का स्वर।

तभी देवराज चौहान के मस्तिष्क में सफेद सितारे चमके और उसे लगा कि वो किसी गहरे कुएं से बाहर आ गया हो। चेहरे पर अजीब-से भाव छाए हुए थे। आंखों में हैरत थी।

'ताशा, ओह मेरी ताशा।' देवराज चौहान बड़बड़ा उठा—'ताशा को तो मैं जानता हूं। वो—वो मेरी पत्नी है। सदूर की रानी है। म-मैं सदूर का राजा—राजा देव—ओह ताशा—ताशा-ताशा, तुम कहां खो गई थीं। मेरा प्यार, मेरा जीवन, सब कुछ ताशा ही तो है। ओह मैं कहां भटक गया, जो ताशा को मुझे लेने आना पड़ा। सदूर ग्रह मेरे बिना कैसे चल रहा होगा। मैं ताशा से जुदा हो गया, ये नहीं हो सकता। मेरी सांसें तो ताशा में बसती हैं।' परेशान-सा देवराज चौहान उठा और कमरे में टहलता रहा। चेहरे पर बेचैनी दिखाई दे रही थी। हर समय गम्भीर रहने वाले देवराज चौहान के चेहरे पर प्यार उमड़ा दिख रहा था। वो अजीब-सी हालत में पहुंच गया था। वापस सोफे पर आ लेटा—'ताशा।' देवराज चौहान तड़प-भरे स्वर में बड़बड़ा उठा—'मेरी ताशा...।' और फिर उसे सदूर ग्रह का वक्त याद आता चला गया। सब कुछ याद आने लगा। वो दिन भी जब ताशा को पहली बार देखा था।

सदूर छोटा-सा ग्रह था। जिसे हम कह सकते हैं कि चालीस किलोमीटर के व्यास में फैला हुआ था और एक प्लेट की तरह के आकार में था, जैसे कि ग्रह के किनारे थोड़े उठे हुए और बीच की सतह कुछ मोटी थी। लोगों की संख्या भी दो लाख से ज्यादा नहीं थी। शानदार ग्रह था सदूर। पेड़-झरने, पहाड़ नदी, पानी, किसी भी चीज की कमी नहीं थी। इंसानों की जरूरत का सारा सामान ग्रह पर ही मौजूद था। मुख्य खाना 'टाकोली' था, टाकोली जो कि सेव के आकार का फल था, जिसकी खेती की जाती थी। पहले ये फल सफेद रंग का निकलता था और धीरे-धीरे बड़ा होते, इसका रंग मटमैला-सा हो जाता और ये सूख भी जाता था। 'टाकोली' जब सूख जाता तो पक लिया मानकर तोड़ लिया जाता और इन टाकोली के सूखे फलों को, पीसकर इनका पाउडर बना लिया जाता। उस पाउडर में पानी डालकर (आटे की तरह) गूंधा जाता और फिर रोटी बनाकर सब्जी के साथ खाई जाती। सदूर पर सब्जियों की पैदावार भी खूब थी, परंतु ये सारी सब्जियां और उनके रंग, पृथ्वी ग्रह से जुदा थे। टाकोली को पीसने के लिए लोग, पहाड़ी पत्थरों के बने ड्रम जैसे

कटोरों का इस्तेमाल करते। टाकोली इन कटोरों में डालकर, लकड़ी के डंडों से इन्हें तोड़कर पीसा जाता था। सदूर के पहाड़ सफेद रंग के थे और इन पर नीले-पीले-हरे-गुलाबी कई रंगों के पेड़ खड़े थे जो जंगल जैसा माहौल पैदा कर रहे थे। पेड़ों का तना अलग-अलग रंगों का होता। सदूर की मिट्टी लाली लिए हुए थी और थोड़ी दानेदार थी। यहां घास का रंग भूरा था जो कि ग्रह को और भी सुंदर बनाता था। सदूर की सड़कें लाली लिए मिट्टी की बनी थीं। मकान भी इसी मिट्टी के साथ, बड़े-बड़े पहाड़ी पत्थरों के बनाए दिख रहे थे। अधिकतर मकान एक मंजिला ही थे। सदूर ग्रह की मूल्यवान धातु भूरे रंग की कठोर वस्तु मानी जाती थी, जो कि पहाड़ों की तरफ जाने पर, खोजी जाती थी। वो धातु जिसके पास ज्यादा हो, उसे बड़ा आदमी माना जाता था। उस धातु को देकर, मकान-जमीन, खाने-पीने की चीजें, पहनने के वस्त्र घोड़े-बग्गी, हर चीज खरीदी जा सकती थी। टाकोली और सब्जियों की पैदावार करने वाले लोग, इन चीजों को बेचकर धातु प्राप्त करते थे। उसी धातु से चौबीस इंच तक लम्बे छूरे जैसे लड़ाई के हथियार भी तैयार किए जाते थे और तलवारें भी बनाई जाती थीं। सदूर पर बहुत कम लोगों के पास ऐसे हथियार थे, क्योंकि धातु का पहाड़ों पर मिलना आसान नहीं था। कई लोग धातु खोजने पहाड़ों की तरफ जाते थे। उस तरफ खतरनाक जानवर भी पहाड़ के घने जंगल में पाए जाते थे, जो कि धातु खोजने आए लोगों का शिकार कर डालते थे। सदूर ग्रह बहुत शांत और अच्छा ग्रह था, परंतु सदूर पर विद्रोही लोग भी थे। जो नदिया-झरनों और पहाड़ों की तरफ छिपकर रहते थे। उनकी मांग थी कि उनके सरदार को सदूर का राजा बनाया जाए। ऐसे में किले के सिपाहियों के साथ उनकी लड़ाई भी होती और कई लोग मारे जाते। सदूर ग्रह मध्यम-सी, नामालूम होने वाली रफ्तार में दाएं से बाएं घूमता रहता था और खास बात ये थी कि सदूर का सूर्य हमेशा ही सदूर के किनारे पर रहता था। आसमान के बीचोबीच कभी नहीं आता था। किनारे से सूर्य ग्रह की जमीन पर ऐसी धूप फेंकता, तो वो माहौल बन जाता, जो पृथ्वी पर शाम के पांच बजे के बाद सूर्य की धूप का होता है। पीले रंग की चमकीली धूप सदूर की जमीन पर पड़ती और पेड़ों-मकानों के साए हर वक्त लम्बे ही दिखाई देते थे। पृथ्वी की अपेक्षा यहां सब कुछ अनोखा था। ग्रह के बीचोबीच सफेद पहाड़ी पत्थरों का राजा देव का शानदार किला बना हुआ था। किले की मीनारें आसमान को छूती लगती थीं। सदूर के लोग जानते थे कि राजा देव उन मीनारों के भीतर की सीढ़ियां तय करके, सबसे ऊपर पहुंचकर पूरे सदूर ग्रह को निहारते थे। आज से पांच साल पहले राजा देव के पिता सदूर ग्रह के राजा थे। परंतु विद्रोहियों से एक बार सिपाही लड़ रहे थे और एक जहरीला तीर राजा देव के पिता को

लग गया था और उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद राजा देव ने फौरन ही सदूर ग्रह का कार्यभार संभाल लिया और राजा देव बन बैठे। विद्रोहियों के प्रति उनका खून खौल रहा था। परंतु विद्रोहियों ने अपनी गलती मानी और कहा कि उनका इरादा राजा पर हमला करने का नहीं था। जिस विद्रोही का तीर राजा को लगा था उसे अपराधी के तौर पर राजा देव के हवाले कर दिया गया तो राजा देव ने देखते ही देखते तलवार से उसकी गर्दन काट दी थी। राजा देव विद्रोहियों की समस्या खत्म कर देना चाहते थे परंतु कई बार की बात के बाद भी कोई हल नहीं निकला। वो इस बात पर अड़े थे कि उनका नेता राजा बनेगा। परंतु राजा देव उनकी ये बात मानने को तैयार नहीं थे। विद्रोहियों की संख्या पांच हजार से ज्यादा थी। इतने ज्यादा लोगों को ताकत के बल पर नहीं संभाला जा सकता था। बहरहाल ये मसला चलता आ रहा था। पिता के राजा होते हुए, देव ने युद्ध कला बहुत अच्छी तरह सीख ली थी और ये बात सदूर पर आम थी कि देव से जीता नहीं जा सकता। राजा देव बन जाने के बाद उन्होंने अपने पिता के कार्यों को आगे बढ़ाया और जो बदलाव देव ने जरूरी समझे, वो किए। राजा देव ग्रह के लोगों का पूरा ध्यान रखते थे। किले के बाहर, उन लोगों के लिए हर समय खाना मिलता था जो खाना कमा नहीं पाते थे। ऐसे लोग रोज सुबह-शाम किले के बाहर आकर खाना खाते थे देव को महल का एक कर्मचारी बबूसा पसंद आता था और राजा देव बनने पर बबूसा को अपना खास सेवक बना लिया था। सदूर ग्रह की एक खास बात ये थी कि यहां का दिन सोलह घंटे का होता था और रात भी इतनी ही लम्बी होती थी। सदूर पर सुबह होती तो सूर्य सदूर ग्रह के एक कोने में से चमकता और जब अंधेरा होना होता तो सदूर एक तरफ को थोड़ा-सा इस तरह झुक जाता कि सूर्य की रोशनी, सदूर पर पड़नी बंद हो जाती थी। बरसात सदूर पर अक्सर आती रहती थी। आसमान में बिजली चमकती और काले बादल घिर जाते फिर पानी की बूंदों की शुरुआत हो जाती थी।

उस दिन बहुत गर्मी थी। सुबह के ग्यारह बज रहे थे। राजा देव किले में थे। किले के भीतर बड़े-बड़े कमरे थे। सैकड़ों किले के कर्मचारी थे जिनमें पहरेदार भी थे, खाना बनाने वाले भी थे। किले के बाग की देखभाल करने वाले भी थे। बग्गी चलाने वाले भी थे और घोड़ों की देखभाल करने वाले भी थे। किले के भीतर कहीं भी दरवाजा नहीं था। जहां जरूरत महसूस होती, वहां सदूर पर ही बनने वाले चमकीले कपड़े का पर्दा लटका दिया जाता। किले के भीतर, तहखाने जैसी जगह में धातु रूपी खजाना रखा हुआ था, जहां हर वक्त बीस पहरेदार, पहरा देते थे। राजा देव अपने कमरे में टहल रहे थे। काफी बड़ा कमरा था। फर्श सफेद पहाड़ी पत्थर का था। दीवारें भी ऐसी थीं।

छतें भी। बीचोबीच चौड़ा पलंग बिछा हुआ था। कुछ कुर्सियां और टेबल पर थे। कमरे की चौड़ी-चौड़ी खिड़कियां थीं, जहां से बहती हवा भीतर आ रही थी। आज गर्म दिन था और देव का मन किले में नहीं लग रहा था। किले की महिला कर्मचारी से कहकर उसने बबूसा को बुलाया।

"हुक्म राजा देव।" बबूसा ने पर्दा हटाकर भीतर प्रवेश करते, मुस्कराकर कहा—"मैं आपकी बग्गी को नया रूप देने की कोशिश कर रहा था। उसे ज्यादा आरामदेह बनवा देना चाहता हूं।"

"यहं मन नहीं लग रहा। बाहर चलेंगे हम।"

"जो हुक्म राजा देव।" बबूसा ने फौरन कहा—"परंतु आपकी खास बग्गी मैंने खुलवा रखी है। उसे वापस बंद करने में वक्त लगेगा।"

"साधारण बग्गी ले लो।"

"साधारण बग्गी में सामान नहीं आ सकेगा आपका।"

"कोई बात नहीं, हम बिना समान के चलेंगे। बग्गी तुम ही चलाओगे। कोई और साथ में नहीं चाहिए।"

"समझ गया। आइए।"

"मेरे हथियार ले लो। विद्रोहियों से सामना हुआ तो काम आएंगे।"

"तो क्या आगे-पीछे पहरेदार भी नहीं ले जाने राजा देव?" बबूसा ने पूछा।

"नहीं। सिर्फ हम दोनों चलेंगे।"

देव साधारण बग्गी में किले से बाहर निकला। बबूसा बग्गी का कोचवान बना घोड़े को दौड़ाने लगा। दो घोड़े लगे थे बग्गी में। चार पहिए थे। कोचवान की जगह के पीछे बग्गी में पांच फुट ऊंची, झोंपड़ी-सी बना रखी थी कि धूप-बरसात से बचत हो सके। झोंपड़े से बाहर देखने के लिए दोनों तरफ खिड़कियां थीं। पीछे का हिस्सा खुला था। आज गर्मी ज्यादा थी। परंतु लोग अपने कामों में, सड़कों के किनारे आ-जा रहे थे। लोग पैदल ही थे। बग्गी जैसी चीज सिर्फ वो ही लोग रखते थे जिनके पास कीमती धातु होती थी।

"बबूसा। आज किसी नए रास्ते पर चलो। घोड़ों को दौड़ाओ मत। मध्यम रफ्तार से चलो।"

"जी राजा देव।"

बबूसा मध्यम रफ्तार से बग्गी चलाने लगा। सड़क की बीच में अन्य सड़क का मोड़ आया तो बग्गी उधर को मोड़ ली। मिट्टी की सड़कें सपाट और साफ-सुथरी थीं।

"इस तरफ गरीब लोग रहते हैं। कइयों के मकान भी पक्के नहीं हैं।" बबूसा बोला।

"खाना दोनों वक्त खाते हैं?"

"हां राजा देव। जिस किसी के पास खाना नहीं होता वो किले के बाहर पहुंचकर खाना खा लेता है। पहरेदार इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि कोई भूखा न सोए।" बबूसा ने कहा—"आपके राज्य में सबका पेट भरा रहता है।"

"सिर्फ विद्रोहियों की समस्या है बबूसा।"

"उनकी नजर आपके कीमती धातु के खजाने पर है। तभी वो अपने नेता को राजा बनाना चाहते हैं।"

"जनता कहे तो इस बारे में विचार किया जा सकता है। लालची विद्रोहियों की बात नहीं मानी जाएगी।" देव ने कहा—"पहले से इनकी संख्या बढ़ चुकी है। ये बात ठीक नहीं। लोगों को फुसलाकर, अपनी तरफ कर रहे हैं।"

"राजा देव अगर हम विद्रोहियों को पकड़कर मारना शुरू कर दें तो?"

"अभी ये काम नहीं करना है। सुलह की कोशिशें जो चल रही हैं, उन्हें चलने दो।"

बग्गी मध्यम रफ्तार से आगे बढ़ती रही।

कई कालोनियां पार हो गईं।

राजा देव बग्गी की खिड़की से बाहर भी देखे जा रहा था।

"पानी दो बबूसा।"

"ओह राजा देव, क्षमा। जल्दी में मैं पानी रखना भूल गया।" बबूसा कह उठा।

"कोई बात नहीं। किसी घर के सामने रोक दो।" देव ने सामान्य स्वर में कहा।

कुछ आगे जाकर, बबूसा ने एक ऐसे मकान के सामने बग्गी रोकी, जो बेहद साधारण एक कमरे का मकान था। मकान के बाहर धूप में एक लड़की कपड़े धो रही थी। बग्गी रुकते ही देव नीचे उतरता बोला।

"मैं पानी पीकर आता...।"

"आप क्यों कष्ट करते हैं राजा देव। मैं लाता हूं पानी।" बबूसा ने जल्दी से कहा।

"मैं पी लूंगा।" देव बग्गी से उतरकर उस लड़की की तरफ बढ़ता चला गया।

उसके पास पहुंचा तो लड़की ने कपड़े धोते आहट पाकर चेहरा इस तरफ किया। देव ने उसे देखा तो देखता ही रह गया। वो थी ही इतनी खूबसूरत। नीली आंखें। गोरा रंग। मधुर नैन-नक्श। बालों की दो लटें चेहरे पर आ रही थीं। फूल की पंखुड़ियों जैसे सुर्ख कोमल होंठ।

ये राजा देव और ताशा की पहली मुलाकात थी।

देव देखता रहा, ताशा को।

अट्ठारह बरस की ताशा, अपनी नीली आंखों से देव को देखकर बोली।

"क्या है?"

"प-पानी।" देव के होंठों से निकला।

"अभी देती हूं।" ताशा पलटी ड्रम जैसी चीज में हाथ धोते कह उठी—"परदेसी हो?"

"नहीं। पास ही में रहता हूं।"

"तो पानी साथ लेकर चला करो।" ताशा उठी—"सुनसान रास्ते पर किससे पानी मांगोगे?"

देव, ताशा के भोले-भाले, खूबसूरत चेहरे को देखता रहा। ताशा को देखकर अजीब-सी भावना का एहसास हुआ था उसे। आज से पहले किसी लड़की को देखकर उसे ऐसा महसूस नहीं हुआ था।

"भीतर आ जाओ।" ताशा बग्गी को देखकर, दरवाजे की तरफ बढ़ी—"धूप में ही खड़े रहोगे।"

देव सिर हिलाकर रह गया।

ताशा कमरे में चली गई।

"आ जाओ।" भीतर से ताशा की आवाज आई।

देव के कदम हिले और दरवाजे की तरफ बढ़ गए। दिल जाने क्यों धड़क-सा उठा था। कमरे में प्रवेश करते ही ठिठक गया। ये साधारण-सा कमरा था। एक पलंग एक दीवार के पास बिछा था। दूसरा पलंग दूसरी दीवार के साथ बिछा था। कुछ संदूक दीवार से सटा रखे थे। एक कोने में बर्तनों का ढेर लगा था।

ताशा ने एक ड्रम से पानी लोटे में भरा और देव की तरफ बढ़ाया।

"लो।"

देव ने लोटा थाम लिया। इस वक्त देव ने साधारण कपड़े पहन रखे थे। उस पर से ऐसा कोई निशान नहीं था कि जिससे वो राजा देव लगे। वरना ताशा ने फौरन उसे पहचान लेना था।

"पी लो पानी। मुझे क्या देख रहे हो?" ताशा बोली।

"ह-हां।" देव ने लोटे को ही मुंह लगा लिया और पूरा पानी पी लिया।

"और दूं?" ताशा ने पूछा।

"नहीं।" देव लौटा वापस देता प्यार भरे स्वर में कह उठा—"खोनम (चाय) मिलेगी?"

"खोनम के लिए चूल्हा जलाना पड़ेगा।" ताशा के होंठों से निकला।

देव के चेहरे पर मुस्कान आ ठहरी।

"बना देती हूं पर तुम्हें इंतजार करना होगा। दो कपड़े बचे हैं, वो धो लूं।"

देव ने सिर हिला दिया।

ताशा बाहर निकलकर कपड़े धोने लगी। देव दरवाजे पर आ खड़ा हुआ

और ताशा को देखने लगा। ताशा में जाने क्या था कि वो सब कुछ भूल गया था। ऐसा खूबसूरत चेहरा उसने पहले कभी नहीं देखा था। ताशा ने जल्दी-जल्दी कपड़े धोए और फुर्सत पाकर बाहर ही दीवार की छाया में मौजूद चूल्हे में लकड़ियां रखकर उसे जलाने लगी। देव दरवाजे पर खड़ा एकटक ताशा को देखे जा रहा था कि ताशा कह उठी।

"तुम भीतर क्यों नहीं बैठ जाते?"

"क्यों?" देव मुस्कराया।

"तुम जब से आए हो, मुझे देखे जा रहे हो। हटते ही नहीं...।" ताशा असुविधा से बोली।

"मेरा देखना, तुम्हें अच्छा नहीं लगता?" देव ने कहा।

ताशा की नीली आंखें देव के चेहरे पर जा टिकीं।

देव के होंठों के बीच मुस्कान दबी थी।

फिर ताशा ने कुछ नहीं कहा। चूल्हा जलाकर खोनम (चाय जैसा पदार्थ) बनाने के लिए बर्तन में पानी डालकर ऊपर रख दिया। तीन चक्कर उसने कमरे के भीतर के लगाए, खोनम का सामान लाने के लिए।

"तुम्हारा नाम क्या है?" देव ने पूछा।

"ताशा।" खोनम बनाते, उसे बिना देखे ताशा ने कहा।

"तुम्हारे घर में कौन-कौन है?"

"पिता ही है। वो बाजार में लकड़ी बेचता है। कभी धातु मिल जाती है, लकड़ियां बिक जाती हैं तो खाने का सामान ले आता है नहीं तो किले के बाहर, राजा देव का खाना खाता है और मेरे लिए भी ले आता है। खोनम बनाने का सामान कल ही पिता लाया था। कल सारी लकड़ियां बिक गई थीं।" ताशा ने सामान्य स्वर में कहा।

"तुमने राजा देव को कभी नहीं देखा?"

"नहीं। मेरा क्या काम राजा देव से। वो तो सदूर के मालिक हैं। मैं कैसे देखूंगी उन्हें।"

ताशा ने खोनम बनाकर, एक कटोरी में डालकर देव को दे दिया। खोनम हरे रंग का तरल पदार्थ था। गर्म था, परंतु पीने में स्वादिष्ट था। कहा जाता है कि इसे पीने से थकान उतर जाती है। ताशा ने अपने लिए भी कटोरी में खोनम डाल लिया था और कमरे में चली गई। एक पलंग पर जा बैठी।

देव दूसरे पलंग पर जा बैठा। दरवाजे के बाहर, सामने कुछ दूर खड़ी बग्गी नजर आ रही थी।

"तुम पहले तो कभी इधर नहीं आए?" ताशा ने पूछा।

"बहुत बार आया।" देव खोनम का घूंट भरकर बोला—"पर कभी प्यास नहीं लगी कि तुम्हारे पास आता।"

ताशा मुस्कराकर रह गई।

"तुम बहुत खूबसूरत हो।" देव के होंठों से निकल गया।

"शर्म नहीं आती तुम्हें ऐसी बातें कहते हुए।" ताशा नाराजगी से बोली।

"सुंदर को सुंदर कहना गलत तो नहीं।"

ताशा, देव को देखने लगी।

"मैंने तुम्हारे जैसी सुंदर लड़की पहले नहीं देखी। तुम्हें देखते रहूं, तुम्हारे पास रहूं, इसी कारण मैंने खोनम के लिए कहा।"

"तुम तो बहुत खराब लड़के हो।" ताशा ने अपनी कटोरी पलंग पर रख दी—"तुम्हारे विचार मुझे पता होते तो मैं खोनम ही नहीं बनाती। अब खोनम पिओ और चले जाओ यहां से।"

"मेरा नाम देव है।"

"देव?" ताशा ने अजीब-से स्वर में कहा—"क्या तुम राजा देव हो?"

"तुम्हें क्या लगता है कि मैं राजा देव हो सकता हूं?" देव मुस्कराया।

"तुम राजा देव नहीं हो सकते।" ताशा ने फौरन कहा—"राजा देव इस तरह साधारण-सी बग्गी में क्यों घूमेंगे। फिर राजा देव तो तुम्हारी तरह बातें भी नहीं करेंगे कि मैं खूबसूरत हूं। वो तो सदूर के मालिक हैं। तुम तो किसी भी तरफ से राजा देव नहीं लगते।"

होंठों पर मुस्कान लिए देव ने खोनम पिया और कटोरी रखकर खड़ा हो गया।

"खोनम के लिए शुक्रिया। जाने के मन तो नहीं करता, परंतु जाना भी है।" देव ने मीठे स्वर में कहा।

"जाने को मन नहीं करता?" ताशा उलझन से बोली—"मैं समझी नहीं।"

"क्योंकि तुम जैसी खूबसूरत लड़की मैंने पहले कभी नहीं देखी।" देव हौले-से हंसा।

"दोबारा यहां मत आना।" ताशा ने नाराजगी से कहा—"तुम अच्छे लड़के नहीं लगते।"

"तुमने पहचान लिया कि मैं बुरा हूं।" देव ने कहा और मुस्कराते हुए बाहर निकलकर बग्गी की तरफ बढ़ गया। बग्गी में बैठने से पहले उसने पलटकर ताशा के घर की तरफ देखा। वो दरवाजे पर खड़ी, उसे ही देख रही थी—"किले पर चलो बबूसा।" देव बग्गी में बैठ गया।

बबूसा ने बग्गी को वापस मोड़ा और मध्यम रफ्तार से दौड़ा दिया। देव ताशा के घर की तरफ तब तक देखता रहा, जब तक वो नजर आता रहा।

"किसी और रास्ते पर घूमने चलें?" बबूसा ने कहा।
"मैं किले पर जाकर आराम करना चाहता हूं।" देव के होंठों पर मुस्कान छाई हुई थी।
बग्गी मध्यम-सी रफ्तार से दौड़ती रही।
"बबूसा।" देव ने मुस्कराहट भरे स्वर में कहा—"वो लड़की मुझे बहुत अच्छी लगी।"
"ये तो खुशी की बात है कि आपको कोई लड़की पसंद आ गई।" बबूसा भी मुस्करा पड़ा।
"उसका नाम ताशा है।"
"अच्छा नाम है राजा देव। क्या आपने उसे बताया कि आप ही राजा देव हैं, या उसने पहचान लिया कि...।"
"ऐसा कुछ भी नहीं है। मैंने उसे नहीं बताया कि मैं राजा देव हूं। नहीं तो उसकी नजरों में आदर भाव आ जाता और जैसा मैं उसे देखना चाहता हूं वैसा देख नहीं पाता। उसने मुझे खोनम पिलाया।"
"एक ही बार में बात इतनी आगे बढ़ गई?" बबूसा मुस्कराया।
"नहीं। मैंने ही उसे खोनम पिलाने को कहा था। उसने बना दिया।" देव बोला।
"वो भी आपको पसंद करती है?"
"मुझे नहीं पता। मैं उसके दिल की बात नहीं जान सका।"
देव किले पर पहुंचा तो किले के सेनापति धोमरा को अपना इंतजार करते पाया। धोमरा किले के इंतजाम संभालता था और सदूर के अधिकतर मामले निबटाता था। वो पच्चीस बरस का युवक था और पिता के वक्त से ही वो सारे मामले देख रहा था। मोमाथ काबिल इंसान था।
"राजा देव। मकरा के चौराहे पर, चार विद्रोहियों ने हमारा रास्ता रोक लिया था। मेरे साथ दो सिपाही थे। विद्रोही हथियार लिए हुए थे। दो ने मुझ पर हमला किया। मैंने उन चारों को मार दिया।" मोमाथ ने बताया।
"विद्रोहियों ने पहली बार सीधे-सीधे इस तरह हमला किया है।" देव ने गम्भीर स्वर में कहा।
"उन चारों को मारकर, मैंने विद्रोहियों के हौसले को पस्त कर दिया।"
"परंतु ये गम्भीर बात है। अगली बार वो ज्यादा संख्या में हमला कर सकते हैं। ये ठीक बात नहीं। कभी हमारे लोग जान गंवा बैठेंगे तो कभी उनके। मैं सदूर का राजा हूं, उन्हें मेरी बात माननी ही चाहिए।" देव ने कहा।
"हुक्म दीजिए राजा देव।"
"अपने आदमियों से कहो कि गुप-चुप ढंग से विद्रोहियों के ठिकानों का

और विद्रोहियों का पता लगाना शुरू कर दें। जल्दबाजी नहीं करनी है। उन पर कोई हमला नहीं करना है। सबसे पहले विद्रोही और उनकी सहायता करने वालों को पहचानो। इस काम में वक्त लग सकता है, लगने दो। जब हम ज्यादा से ज्यादा संख्या में उनकी पहचान कर लेंगे तो, एक साथ एक ही वक्त में उन पर हमला करके उन्हें खत्म कर देंगे।" देव ने कठोर स्वर में कहा—"आज उन्होंने रास्ते में तुम्हें घेरा है, कल को वो हमें भी घेर सकते हैं। इस तरह तो वो हमारा किले से बाहर निकलना दुष्वार कर देंगे।"

"मैं समझ गया राजा देव।" मोमाथ ने कहा—"पहाड़ों पर उन्होंने ठिकाना बना रखा है। मैं वहां के बारे में भी खबरें इकट्ठी ही करूंगा। अन्य किस-किस जगह पर विद्रोही मौजूद रहते हैं, वो भी पता करके आपको बताऊंगा।" कहकर धोमरा चला गया।

देव किले के भीतर बने, विशाल स्नानघर में नहाया और कपड़े पहनकर किले में घूमने लगा। आंखों के सामने ताशा का खूबसूरत चेहरा नाच रहा था। उसकी नीली आंखें उसे बेचैन किए दे रही थीं। देव का मन किसी भी काम में नहीं लगा। खाने की इच्छा हुई तो कुछ फल ही खाए। ताशा के हाथ का बनाया खोनम उसे बहुत याद आ रहा था। जब ग्रह पर अंधेरा छाना शुरू हो गया तो किले में टहलता देव अपने कक्ष में आ गया। किले के कर्मचारियों ने रोशनी वाली मशालें जलाकर, महल के भीतर पर्याप्त रोशनी कर दी थी। किले के बाहर भी दीवारों पर जगह-जगह रोशनी की मशालें जला दी गई थीं। परंतु राजा देव पर तो ताशा की खूबसूरती सवार थी ऐसा लगता जैसे ताशा उसके आस-पास ही हो।

कुछ देर बाद बबूसा आया। बबूसा किले के ऊपरी हिस्से के एक कमरे में अपनी पत्नी सोमारा के साथ रहता था और दिन हो या रात हर वक्त राजा देव की सेवा के लिए हाजिर रहता था।

"राजा देव आपकी बग्गी अभी तैयार नहीं कर पाया। कल का वक्त और लगेगा।" बबूसा ने कहा।

"कोई बात नहीं बबूसा।" राजा देव ने कहा—"हम कल भी साधारण बग्गी पर ही जाएंगे।"

"कहां?" बबूसा के होंठों से निकला।

"वहीं। जहां आज गए थे। ताशा के पास।"

बबूसा हैरानी से राजा देव को देखने लगा।

"क्या देख रहे हो?" देव ने मुस्कराकर पूछा।

"माफ कीजिएगा राजा देव। मैंने तो सोचा था कि आप उस लड़की को भूल गए होंगे।"

कामों में लगे हुए थे। बबूसा, जम्बरा को लेकर किले के ऊपरी हिस्से में चला गया था। वक्त बिताने की खातिर देव किले में घूमने लगे। किले के पीछे के हिस्सों में बहुत बड़े हॉल में बीस-पच्चीस लोग बड़े-बड़े चूल्हे जलाए, किले के कर्मचारियों का खाना तैयार कर रहे थे। मसालों की महक वहां फैली थी। किले का मुख्य कर्मचारी ओका देव के पास पहुंचकर बोला।

"हुक्म राजा देव।"

"किले के बाहर, आम लोगों का खाना तैयार कर चुके हो?" देव ने पूछा।

"हां राजा देव। वो तो सुबह ही तैयार कर दिया था। बाहर लोग खा रहे हैं।" ओका ने कहा।

"धूप में उन्हें खाने में परेशानी होती होगी। बबूसा से बात करके उनके लिए छप्पर डलवाने का इंतजाम कर दो।"

"जो हुक्म।" ओका बोला—"परंतु राजा देव शीघ्र ही मौसम बदलने वाला है, तेज हवाएं और तूफान उठेंगे कुछ वक्त के बाद और छप्पर टिका नहीं रह सकेगा। आगे जो आप हुक्म करें।"

देव ने सोच भरी निगाहों से ओका को देखकर कहा।

"ठीक है। अगली बार जब गर्मियां आएं तो छप्पर का इंतजाम पहले ही कर देना।"

"जो हुक्म।"

देव किले में टहलता रहा। सब तरफ के काम देखता रहा। आधा घंटा बीत गया।

बबूसा, देव के पास आकर बोला।

"आप यहां और मैं आपको किले के हर कोने में ढूंढ़ता फिर रहा हूं राजा देव। चलिए, बग्गी तैयार है।"

देव के होंठों पर मुस्कान नाच उठी कि अब ताशा से मिलेगा।

देव चलने लगा तो बबूसा ने कहा।

"आपने बहुत ही साधारण कपड़े पहन रखे हैं। दूसरे कपड़े...।"

"ताशा से मिलने के लिए ये ही कपड़े ठीक हैं। वो नहीं जानती कि मैं राजा देव हूं।" देव ने कहा।

उसके बाद वे साधारण बग्गी में सवार हुए और ताशा के घर की तरफ चल पड़े। बबूसा कोयवान बना बैठा था। आज तो उसने बग्गी में पानी का बर्तन भी रख लिया था। रास्ते में न तो बबूसा ने ताशा की कोई बात की और न ही देव ने। देव की आंखों के सामने ताशा का चेहरा नाच रहा था।

आखिरकार बबूसा ने बग्गी ताशा के घर के सामने, पेड़ की छाया में रोक दी।

देव बग्गी से उतरा और ताशा के घर (कमरे) की तरफ बढ़ गया। कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। ताशा बाहर नजर नहीं आ रही थी। वो खुले दरवाजे पर जा पहुंचा। भीतर झांका।

"ताशा।" देव ने धीमे स्वर में पुकारा।

ताशा की पीठ थी दरवाजे की तरफ। वो सूखे कपड़े की तह लगा रही थी। वो तुरंत घूमी और देव को आया पाकर वो हैरान हो उठी। दो पल तो कुछ कह न सकी।

"हैरान क्यों हो गई?" वहीं खड़े देव ने मुस्कराकर कहा।

"तुम—फिर आ गए?"

"हां। कल तुमने खोनम बहुत अच्छा बनाया था। आज फिर तुम्हारे हाथों का बना खोनम पीने का मन कर आया।" देव के होंठों पर मुस्कान छाई हुई थी—"आज भी खोनम पिलाओगी?"

ताशा उसके करीब आ पहुंची।

देव, ताशा के इंतहाई खूबसूरत चेहरे को देखने लगा। आज वो और भी ज्यादा खूबसूरत लगी।

"अजीब लड़के हो तुम जो फिर खोनम पीने आ गए। कहीं से भी पी लेते।"

"तुम्हारे हाथ का खोनम पीना है।" देव मुस्कराए जा रहा था।

"हर रोज तुम्हें खोनम पिलाऊंगी तो खोनम खत्म हो जाएगा। क्या पता पिता की लकड़ियां आज बिकती हैं या नहीं?" ताशा ने भोलेपन से कहा—"हम गरीब लोग हैं। रोज-रोज खोनम नहीं पिला सकते।"

"कल मैं तुम्हें ढेर सारा खोनम ला दूंगा।" देव ने कहा।

"सच में?"

"वादा।"

"फिर तो तुम्हें खोनम पिला दूंगी।" ताशा ने कहा—"परंतु मुझे तुम्हारा मन ठीक नहीं लगता।"

"वो कैसे?"

"तुम मुझे जैसे देखते हो, वो मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे देखते ही रहते हो।" ताशा कह उठी।

"क्योंकि तुम खूबसूरत हो और मुझे अच्छी लगती हो।"

ताशा, देव को देखती रही।

देव के होंठों के बीच शांत और मधुर मुस्कान उभरी हुई थी।

"पानी पिलाऊं?" ताशा एकाएक बोली।

"तुम जो चाहो, पिला दो।"

ताशा ने कटोरी में उसे पानी दिया।

देव पानी पीते हुए भी ताशा को देखता रहा।

"तुम मुझे देखना बंद नहीं करोगे?" ताशा ने उससे कटोरी लेकर एक तरफ रख दी।

"तुम्हें बुरा लगता है?" देव ने पूछा।

"कल ज्यादा बुरा लगा था, आज ज्यादा बुरा नहीं लग रहा।" ताशा बोली।

"आज कम बुरा क्यों लग रहा है?" देव मुस्कराया।

ताशा मुस्करा पड़ी।

देव को उसकी मुस्कान बहुत अच्छी लगी।

"बैठ जाओ। खोनम बनाती हूं।"

देव भीतर आ गया। परंतु खड़ा रहा। ताशा को देखता रहा। ताशा बाहर जाकर चूल्हा जलाने लगी तो देव भी बाहर आ गया। नजरें ताशा पर रहीं। ताशा अपनी नीली आंखों से बार-बार देव को देख लेती थी जैसे कह रही हो कि देखो तुम फिर मुझे ही देखे जा रहे हो। खोनम बनाते समय एक बार तो ताशा मुस्करा पड़ी।

"क्या हुआ?" उसे मुस्कराते देखकर देव ने पूछा।

"तुम अजीब लड़के हो।"

"क्यों?"

"मुझे देखना बंद ही नहीं करते।"

"बताया तो कि तुम बहुत खूबसूरत हो।"

"पर किसी को ऐसे थोड़े न देखते हैं।"

"मुझे तुम पसंद आ गई हो।"

ताशा के होंठों के बीच दबी-दबी मुस्कान रेंगती रही।

खोनम बन गया। दोनों कमरे के भीतर अलग-अलग पलंग पर जा बैठे। देव के हाथ में खोनम की कटोरी थी तो ताशा ने भी कटोरी थाम रखी थी।

"कल खोनम पीने मत आना। मैं नहीं पिलाऊंगी।" ताशा ने कहा।

"क्यों?"

"तुम दीवानों की तरह मुझे देख रहे हो, ये बात ठीक नहीं।" ताशा बोली—"मुझे अजीब-सा लगता है।"

"मुझसे शादी करोगी?" देव ने मुस्कराकर कहा।

"क्या?" ताशा हड़बड़ा उठी।

"अगर तुम मुझे पसंद करती हो तो, मैं तुमसे शादी कर सकता हूं।" देव बोला।

ताशा एकटक नीली आंखों से देव को देखने लगी।

देव खोनम की कटोरी थामे उसे ही देख रहा था।

फिर ताशा ने दरवाजे से नजर आती, सामने खड़ी बग्गी को देखा।
"तुम्हारे पास बग्गी है। धातु भी होगी।" ताशा बोली। वो गम्भीर दिखी।
"हां।" देव ने सिर हिलाया।
"मेरा पिता लकड़ियां जंगल से काटता है और उन्हें बेचकर पेट भरता है। कभी लकड़ियां बिक जाती हैं तो कभी किले के बाहर से खाना लाना पड़ता है। हम तुम्हारे बराबर के नहीं हैं।" ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा।
"तुम इतनी खूबसूरत हो कि तुम्हारी खूबसूरती सारी कमियां, छिपा देती हैं। मैं तुमसे शादी करूंगा। अगर तुम भी करना चाहो तो। आज से पहले मुझे कोई लड़की इतनी अच्छी नहीं लगी कि मैं अपने जरूरी काम छोड़कर उसके पास जाता। परंतु कल जब तुम्हें देखा तो मेरा जरूरी काम तुम ही बन गई। रात भर तुम्हारे बारे में सोचता रहा। सपने में भी तुम नजर आती रहीं। उठने पर सबसे पहला खयाल तुम्हारा ही आया। तुम मेरी जिंदगी की जरूरत बनती जा रही हो ताशा।"
ताशा चुप रही। रह-रहकर उसे देखती रही।
"मैं तुम्हें पसंद हूं?" देव ने पूछा।
"पता नहीं।" ताशा ने भोलेपन से कहा।
"कब पता चलेगा?"
"पता नहीं।" ताशा ने नजरें उठाकर देव को देखा।
देव, ताशा के इंतहाई खूबसूरत चेहरे को देखता रहा।
"क्या मैं तुम्हारे पिता से शादी की बात करूं?"
"नहीं।" ताशा फौरन कह उठी—"अभी मैं शादी नहीं करना चाहती।"
"क्यों?"
"मेरी शादी हो गई तो पिता का खयाल कौन रखेगा?" ताशा बोली।
"मैं नौकर दे दूंगा। वो तुम्हारे पिता का खयाल रखेगा।" देव ने कहा।
"नहीं।" ताशा ने इंकार में सिर हिलाया—"अभी मैं शादी नहीं करूंगी।"
"शायद तुम मुझे पसंद नहीं कर रहीं।" देव ने शांत स्वर में कहा।
ताशा ने देव को देखा और गम्भीर स्वर में बोली।
"मैं अभी शादी नहीं करना चाहती।"
देव ने खोनम की कटोरी खाली की और एक तरफ रखकर बोला।
"मैं तुम्हें हर समय देखते रहना चाहता हूं। तुम्हें जितना देखता हूं, देखने की चाहत और बढ़ जाती है। मैं तुम्हारा दीवाना होता जा रहा हूं। सच बात तो ये है कि मुझे तुमसे प्यार हो गया है।"
"अब मेरे पास मत आना। ये अच्छा नहीं होगा। अब तुम्हें खोनम नहीं पिलाऊंगी।" ताशा ने उसे देखते गम्भीर स्वर में कहा।

देव मुस्कराया और उठ खड़ा हुआ।

ताशा वहीं बैठी उसे देखती रही।

"तुम्हारे पास आकर मुझे बहुत अच्छा लगता है।" देव बोला।

"अब मेरे पास मत आना।"

देव, ताशा के खूबसूरत चेहरे को देखता रहा।

"मुझे, ऐसे मत देखो।" ताशा ने विरोध किया।

देव, खड़ा उसे देखता रहा।

"जाओ यहां से।" ताशा बोली।

देव मुस्कराकर पलटा और बाहर निकलता चला गया। चंद कदम ही आगे गया था कि दरवाजा बंद होने की आवाज आई। वो बग्गी के पास पहुंचा और भीतर जा बैठा।

"कहां चलना है राजा देव?" बबूसा कह उठा।

"महापंडित के पास चलो।" देव बोला।

बबूसा ने बग्गी वापस मोड़ी और मध्यम गति से आगे बढ़ा दी। घोड़ों की टॉपों की आवाज गूंज रही थी। देव ने बग्गी की खिड़की से ताशा के घर की तरफ देखा। दरवाजा थोड़ा-सा खुला हुआ था। देव को यकीन था कि ताशा बग्गी को जाते जरूर देख रही होगी। देव के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"बबूसा।" देव ने कहा—"मुझे ताशा से प्यार हो गया है।"

"तो उस लड़की का नाम ताशा है।" बबूसा कोचवान की सीट पर बैठे बोला।

"ताशा। कितना खूबसूरत नाम है।" देव ने गहरी सांस ली।

"उस लड़की को भी आपसे प्यार है।"

"पता नहीं। पूछने पर उसने जवाब नहीं दिया।"

"लड़की है। एकदम से तो ऐसी बात स्वीकार नहीं करेगी। उसके घर में कौन-कौन है?" बबूसा ने पूछा।

"वो और उसका पिता। पिता लकड़ियां बेचता है। मैंने उससे शादी करने को कहा।"

"सच राजा देव।" बबूसा ने खुशी से गर्दन घुमाकर देव को देखा—"आपकी बात सुनकर वो खुश हो गई होगी।"

"उसने मना कर दिया।"

"क्या?" बबूसा चौंका—"राजा देव को शादी के लिए मना कर दिया। हैरानी है कि...।"

"वो नहीं जानती कि मैं राजा देव हूं।"

"आपने उसे बताया क्यों नहीं?"

"ये जानकर कि मैं राजा देव हूं। वो इंकार नहीं करती शादी से। मेरे रुतबे के अधीन हो जाती। जबकि मैं ऐसी लड़की से शादी करना चाहता हूं जो मेरे रुतबे से नहीं, मेरे से शादी करे। ताशा मुझे भली और अच्छी लड़की लगी। मैं उससे प्यार करने लगा हूं। शादी करना चाहता हूं, अगर वो इंकार करती है तो मैं पीछे हट जाऊंगा बबूसा।"

"आप उसके पिता से बात करें।"

"तुम भूल जाओ कि मैं राजा देव हूं। प्यार के मामले में मुझे साधारण इंसान समझो जो ऐसी लड़की से शादी करना चाहता है, जो मुझे प्यार करे। मेरे राजा होने की बात, मेरे प्यार में नहीं आनी चाहिए।" देव गम्भीर स्वर में बोला।

करीब घंटे भर के सफर के बाद बग्गी वीराने में बने काफी बड़े मकान पर पहुंची, जिसके आस-पास दूर-दूर तक ऊंची चारदीवारी हुई पड़ी थी। ये जगह आबादी से हटकर थी। विशाल गेट पर दो पहरेदार खड़े थे जो कि बबूसा को बग्गी पर आते देखकर गेट खोल दिया। बग्गी भीतर प्रवेश कर गई। भीतर कई रंगों के पेड़-पौधे खड़े थे। एक तरफ तीन बग्गियां खड़ी थीं। दो आदमी घोड़ों की मालिश कर रहे थे। बबूसा ने एक दरवाजे के सामने ले जाकर बग्गी रोकी और नीचे उतरा। देव भी बग्गी से बाहर आ गया था। घोड़ों की मालिश करने वाले ने देव को देखा तो पास आकर हाथ जोड़कर खड़े हो गए। उन्होंने बताया कि महापंडित इस वक्त बंगले के पीछे मशीनों के पास है। देव और बबूसा उस विशाल मकान के गिर्द चक्कर काटकर बंगले के पीछे के हिस्से में पहुंचे। दूर तक जाती चारदीवारी के भीतर पचासों मशीनें मौजूद थीं। अजीब-अजीब तरह की मशीनें थीं। कोई एक पैर पर टिका रखी थी तो कोई दो पैरों पर खड़ी थी। कोई तीन तो कोई चार। उनके आकार-प्रकार भिन्न-भिन्न थे। कोई छोटी थी तो कोई विशाल, फैली हुई। कोई दस फुट ऊंची थी तो कोई मात्र एक फुट की। कई मशीनों से जुड़ी तारें निकलकर, ऊपर आसमान की तरफ उठी हुई थीं। कुछ मशीनों से इंसानों की तरह आवाजें निकल रही थीं, वो बातें करती दिख रही थीं, परंतु उनकी बातों का जवाब देने वाला वहां मौजूद नहीं था।

देव और बबूसा ने उन मशीनों में से महापंडित को ढूंढ़ निकाला जो पीले रंग के चमकीले कपड़े पहने एक मशीन पर हथौड़ा चला रहा था। गर्मी में महापंडित का पसीना बह रहा था चेहरे पर।

"महापंडित।" बबूसा ने पास पहुंचते कहा।

महापंडित ने फौरन नजरें उठाकर देखा। राजा देव पर निगाह पड़ते ही फौरन हथौड़े जैसा औजार छोड़कर उठा और खुशी भरे भाव में उनके पास पहुंचता कह उठा।

"ओह राजा देव। आइए-आइए, आज कैसे आना हो गया?"

"क्या कर रहे थे?" देव ने पूछा।

"मशीन ने संकेत देने कम कर दिए थे, ढीली पड़ गई तो ठीक कर रहा था।" महापंडित बोला—"हुक्म दीजिए।"

"मुझे ताशा नाम की लड़की से प्यार हो गया है।" देव बोला—"क्या वो मुझे मिल सकेगी? मैं उससे शादी करना चाहती हूं। परंतु वो तैयार नहीं है। वो नहीं जानती कि मैं राजा देव हूं।"

"मामूली-सा सवाल है। इसका जवाब भीतर रखी मशीन से मिल जाएगा। भीतर चलिए राजा देव।"

वो तीनों मकान की तरफ बढ़ गए।

"मेरी बहन कैसी है बबूसा?" महापंडित ने पूछा।

"मुझसे मत पूछो। इस सवाल का जवाब तुम्हें मशीनें बता देंगी।" बबूसा ने नाराजगी से कहा।

"तुम क्यों नहीं बताते?"

"तुमने ये बात कभी पसंद नहीं की कि मैं तुम्हारी बहन सोमारा से हर जन्म में शादी कर लेता हूं। इतना है तो तुम मेरा जन्म क्यों कराते हो जब मैं मर जाता हूं तो मुझे दोबारा क्यों पैदा करते हो। मेरे में बीते जन्म की सोमारा की यादें क्यों ताजा रखते हो?" बबूसा का स्वर गुस्से से भरा था।

"क्योंकि सोमारा तुम्हें बहुत पसंद करती है।"

"तो फिर तुम क्यों नाराज होते हो हमारे शादी करने से?"

"क्योंकि मैं तुम्हें पसंद नहीं करता।"

"क्यों?"

"नहीं पसंद करता तो नहीं पसंद करता। क्यों का कोई जवाब नहीं है।" महापंडित ने शांत स्वर में कहा।

"ये कभी भी मत भूलो कि सोमारा मेरे साथ बहुत खुश रहती है।"

"तभी तो तुम दोनों की शादी में मैं रुकावट नहीं डालता।"

वे तीनों मकान के भीतर पहुंचे।

मकान के भीतर की हालत भी अजीब-सी थी। बड़े-बड़े हॉल थे और हर जगह मशीनें रखी नजर आ रही थीं। वहां कोई और नहीं था। देव ने कहा।

"महापंडित, तुम कुछ लोगों को अपना सहायक क्यों नहीं रख लेते। अकेले सब कुछ संभालना कठिन है।"

"ये बात आप अक्सर कहते हैं राजा देव।" महापंडित आदर भाव से बोला—"परंतु मेरे काम को कोई भी समझ नहीं सकता। कोई मेरी सहायता नहीं कर सकता। ये सब सिर्फ मैं ही संभाल सकता हूं।"

तीनों एक मशीन के पास जा रुके। लाल रंग की वो मशीन बेहद अजीब थी। उसके छः कोने उठे हुए थे और कई जगह से तारें निकलकर छत की तरफ उठी हुई थीं। महापंडित ने मशीन के एक लीवर को खींचा तो स्त्री की मध्यम-सी आवाज मशीन से उभरी।

"क्या है महापंडित?"

"राजा देव कुछ पूछना चाहता है। वो पूछे या मैं ही तुमसे बात करूं?"

चंद पलों की खामोशी के बाद मशीन से दूसरी आवाज उभरी।

"राजा देव से कहो कि जो पूछना है, पूछें।"

महापंडित ने राजा देव से मुस्कराकर कहा।

"आप पूछ सकते हैं राजा देव।"

"मुझे ताशा नाम की लड़की से प्यार हो गया है। मैं उससे शादी करना चाहता हूं। क्या वो तैयार होगी शादी के लिए?"

अगले ही पल मशीन के कई लीवर खुद-ब-खुद ही आगे पीछे होने लगे। मशीन से निकलकर छत की तरफ खड़ी तारें, आपस में टकरा उठीं, फिर मशीन का पहिए जैसा हिस्सा जोरों से घूमा और रुक गया।

"काम हो जाएगा राजा देव।" मशीन से आवाज आई।

देव के चेहरे पर प्रसन्नता नाच उठी। बबूसा भी मुस्कराकर पड़ा।

महापंडित ने मशीन के लीवर को खींचकर वापस किया और देव से बोला।

"बधाई हो राजा देव। आप जिसे चाहते हैं, वो आपको मिल जाएगी।"

"ये कितनी अच्छी खबर है।" देव खुशी से कह उठा।

"ये सारे ग्रह के लिए अच्छी खबर है कि, सदूर को उनकी रानी देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।" महापंडित मुस्कराकर कह उठा—"आइए राजा देव, मैं आपकी सेवा में खोनम पेश करता हूं।"

खोनम का जिक्र आते ही, देव की आंखों के सामने ताशा का चेहरा उभर आया। कुछ देर बाद महापंडित अपने हाथों से खोनम बना लाया। देव ने पिया। बबूसा ने लिया और महापंडित ने भी खोनम की कटोरी थामकर घूंट भरा।

"मुझे बहुत खुशी हो रही है कि राजा देव को कोई लड़की पसंद आ गई है।" महापंडित बोला—"परंतु मेरे पास ये खबर पहले से थी, मशीन ने मुझे बता दिया था कि राजा देव को प्यार होने वाला है किसी से।"

"तो तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?" देव ने महापंडित से कहा।

"मैं तो कब से आपके प्यार हो जाने का इंतजार कर रहा था। जिस दिन आप पहली बार उस लड़की से मिले तो मुझे उसी दिन मशीन ने बताया कि आपने उस लड़की से मुलाकात कर ली है। परंतु इस बारे में मेरा आपसे बात करना किसी भी हाल में ठीक नहीं था। मैं आपके मुंह से सुनना चाहता था।"

"तुम बहुत-सी बातें अपने तक ही रखते हो महापंडित।" देव मुस्कराया।

"ये जरूरी हो जाता है। जब तक बहुत जरूरी न हो, मैं होने वाली बात आगे नहीं करता। क्योंकि मशीनें मुझे भविष्य के बारे में बहुत कुछ बताती रहती हैं, उन बातों से मैं जरूरी बातें छांटता हूं और वो ही बताता हूं। अगर आपको हर बात बताऊं तो आपका बहुत समय बर्बाद हो जाएगा राजा देव।"

बबूसा और देव बग्गी में किले पर पहुंचे। सूर्य सदूर के ठीक किनारे पर टिका, तीखी रोशनी फेंक रहा था। उस रोशनी में परछाइयां हमेशा लम्बी ही रहती थीं। वो सुबह से शाम तक सदूर के किनारे पर ही टिका रहता और प्लेट जैसा आकार लिए सदूर सूर्य के सामने घूमता रहता और एक वक्त ऐसा भी आया कि सूर्य की रोशनी सदूर के ऊपर न पड़कर नीचे के हिस्से पर पड़ती और उस वक्त सदूर पर रात हो जाती।

"मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है राजा देव कि किले में रानी आने वाली है।" बबूसा बग्गी दौड़ाता कह उठा।

जवाब में देव मुस्कराकर रह गया।

"कल आपको जम्बरा के साथ देखने जाना है कि उसने पोपा की क्या तैयारी कर रखी है।" बबूसा ने जैसे याद दिलाया।

"तुम भी मेरे साथ चलोगे बबूसा।"

"जरूर राजा देव। मेरा तो काम ही हर पल आपके साथ रहना है।" बबूसा ने तुरंत कहा।

वे किले पर पहुंचे। किले की कर्मचारी दासियों ने देव को भोजन खिलाया।

खाने के दौरान देव जैसे खयालों में ताशा को ही देखता रहा। उसकी बातें सोचता रहा। रात हुई तो बबूसा ने आकर राजा देव को बताया कि उसने सोमारा को, ताशा वाली बात बताई है, वो बहुत खुश हुई सुनकर और जल्दी से जल्दी ताशा से मिलना चाहती है। फिर जम्बरा के साथ कल चलने की बातचीत हुई। बबूसा ने कहा कि लम्बा सफर है। दिन की रोशनी निकलने से पहले ही चल देना ठीक होगा। देव ने कारू (शराब) के दो गिलास पिए कि रात को ठीक से नींद ले सके, वरना वो जानता था कि ताशा का खयाल उसे सोने नहीं देगा। जब तक देव खाना खाकर सो नहीं गया, तब तक बबूसा पास में ही रहा। कल के सफर के लिए, कोचवान को तैयार रहने और बग्गी तैयार रखने को कह दिया था। राजा देव की बग्गी को तो बबूसा, शानदार ढंग से सजाने पर लगा था। उसका काम चल रहा था। ऐसे में दूसरी बढ़िया बग्गी कल के लिए तैयार रखी गई थी। सारी तैयारी करके ही बबूसा रात सोया था।

अगले दिन, दिन का उजाला फैलने से पहले ही सफर शुरू हो गया। चालीस बरस का कोचवान मुस्तैदी से बग्गी को दौड़ाने लगा। जवान घोड़े लगे

थे, इस वक्त रास्ते सुनसान थे। इस बग्गी में छोटे-छोटे दो कमरों जैसे केबिन थे। एक कोचवान की तरफ था, जिसमें आरामदेह सीट पर देव मौजूद था। पीछे वाले केबिन में बबूसा और जम्बरा मौजूद थे। सफर लम्बा था। दिन भर बग्गी ने इसी तरह दौड़ाना था सिर्फ दोपहर का खाना, खाने के लिए रुकना था या फिर खोनम बनाने, पीने के लिए रुकना था। बबूसा रास्ते में जरूरत पड़ने वाले सारे सामान को साथ ले आया था। घोड़ों के टॉपों की आवाज बराबर कानों में पड़ रही थी। पोपा बनाने के लिए ऐसी जगह चुनी गई थी, जहां आम लोगों का आना जाना न होता हो। ताकि आराम से काम हो सके। वो जगह पहाड़ों को पार करके, सदूर के एक कोने में थी जहां खुले मैदान थे। वीरान-घने जंगल थे और पथरीली जमीन थी। उस तरफ आबादी नहीं थी। किले से वहां तक का सफर पूरे दिन का था। अगर पहाड़ों पर चढ़कर, उन्हें पार करके उस तरफ पहुंचा जाए तो सफर छोटा हो जाता था, परंतु बग्गी से जाने का रास्ता इसलिए लम्बा था कि उन्हें पहाड़ों के गिर्द लम्बा चक्कर काटकर, जाना पड़ता था, परंतु ये रास्ता सुरक्षित था, पहाड़ों पर से जाने से विद्रोहियों का सामना हो जाने का खतरा था। वहां विद्रोहियों ने अपना ठिकाना बना रखा था।

देव आंखें बंद किए ताशा के बारे में सोच रहा था कि आज ताशा को नहीं देख पाएगा। आज क्या, अगले कई दिन ताशा से दूर रहना होगा। क्योंकि पोपा वाले स्थान पर पहुंचकर व्यस्त हो जाना था। पोपा को बनाना देव के मन की उड़ान थी, वो पोपा में बैठकर अंतरिक्ष की सैर पर निकलना चाहता था। पहली बार जब देव ने जम्बरा को अपने मन की बात बताई तो जम्बरा, देव के खयालों से जरा भी सहमत नहीं हुआ था। परंतु देव ने जो सोचा था, उसे वो पूरा करना चाहता था। देव ने पोपा का मॉडल बनाया, पोपा के भीतर का नक्शा बनाया, पोपा को तैयार करने के लिए जिन-जिन पार्ट्स की जरूरत थी, उसकी लिस्ट बनाई और जम्बरा को समझाकर पार्ट्स बनाने के, तैयार करने के काम पर लगा दिया। चार सालों से जम्बरा देव के कहने पर काम कर रहा था। अब तो जम्बरा को भी इस काम में दिलचस्पी होने लगी थी। इस बीच देव उसे नए पार्ट्स की लिस्ट भी देता रहा और बीच-बीच में देव, जम्बरा के तैयार किए पार्ट्स को चैक भी करता था परंतु ये सब काम पूरा होने के बाद, बात यहां आ रुकी थी कि पोपा की बॉडी ऐसे ठोस पदार्थ की होनी चाहिए कि अंतरिक्ष में कोई चीज पोपा से टकराए तो उसे नुकसान न हो। ये काम जम्बरा ने अपने सिर पर ले लिया और अब जम्बरा का कहना था कि उसने धातु में कुछ कैमिकल मिलाकर, पोपा की बॉडी के रूप में ऐसी चीज तैयार की है कि उसे कोई चीज आसानी से नुकसान नहीं पहुंचा सकती। जम्बरा

इस सारे मामले को पूरा करने के लिए, गम्भीर था। दिन भर का सफर लम्बा और थकान से भरा था। रास्ते में तीन जगह थोड़ी-थोड़ी देर के लिए रुके थे।

देव सफर के दौरान ताशा को याद करता रहा और मुस्कराता रहा।

अंधेरा होते-होते सफर भी पूरा हो गया।

बग्गी जहां आ रुकी थी, वहां छोटे-छोटे मकान बने हुए थे। इस वक्त वहां रोशनी वाली मशालें जल रही थीं। कई लोग भी दिखे। ये सब जम्बरा के सहायक थे पोपा बनाने के काम में। बबूसा के साथ एक मकान में देव ने नहा-धोकर कपड़े बदले और उसके कहने पर बबूसा ने कारू (शराब) का इंतजाम कर दिया। रात भर आराम करने के बाद देव सुबह पोपा के कामों में देखना चाहता था। लम्बे सफर के बाद उसे आराम की जरूरत थी।

"तुम चाहो तो कारू ले सकते हो बबूसा।" देव ने कहा।

"जब आप खाना खा लेंगे तो तब मैं कारू लूंगा राजा देव।" बबूसा मुस्कराकर बोला। अगले दिन देव काम पर लग गया। जम्बरा के तैयार किए पार्ट्स उसके एक बार फिर चैक किए, कुछ नए पार्ट्स की लिस्ट भी जम्बरा को दी कि उन्हें भी तैयार करना है। फिर जम्बरा द्वारा तैयार किए गए, पोपा की बॉडी के उस टुकड़े को देखा। धातु की उस छोटी-सी चादर का कई बार कई तरह से परीक्षण किया। इस काम में उसे तीन दिन लग गए। परंतु वो खुश था कि जम्बरा ने पोपा की बॉडी के लिए बढ़िया धातु तैयार की है। ऐसे में अंतरिक्ष में पोपा सुरक्षित सफर कर सकेगा।

"जम्बरा।" देव ने मुस्कराकर कहा—"तुमने बढ़िया बॉडी बनाई है।"

"आपके दिशा निर्देश से ही मैं सब कुछ कर पा रहा हूं राजा देव।" जम्बरा बोला।

"मैं तुम्हें पोपा की बॉडी के लिए खास साइज के धातु के बड़े-बड़े टुकड़े तैयार करने को दूंगा। जाते वक्त सब समझा जाऊंगा। मेरे खयाल में हम पोपा के निर्माण के करीब पहुंचते जा रहे हैं।" देव ने जम्बरा से कहा।

"मैं सोचता हूं कि हमें पोपा का निर्माण शुरू कर देना चाहिए। तब जैसे-जैसे पार्ट्स की जरूरत पड़ती जाएगी, हम तैयार करते रहेंगे।" जम्बरा बोला—"पोपा के लिए...।"

"जम्बरा।" देव ने सोच भरे स्वर में कहा—"इस तरह तो पोपा तैयार करने में बहुत वक्त खर्च हो जाएगा। पोपा के निर्माण की शुरुआत तक कम-से-कम हमें वो पार्ट्स तो तैयार कर ही लेने चाहिए, जिनकी जरूरत पड़ेगी। मैंने तुम्हें जो नए पार्ट्स की लिस्ट दी है, वो पार्ट्स तैयार करो और पोपा की बॉडी के लिए धातु की शीट के बड़े-बड़े टुकड़े तैयार करो। मैं चाहता हूं कि जब पोपा का निर्माण करूं तो एक ही बार में तैयार कर डालूं पोपा को।"

देव यहां आठ दिन रहा और व्यस्त रहा। एक बार भी ताशा को याद नहीं किया। पोपा से वास्ता रखती बहुत चीजें देखनी थीं। देव उन्हीं में उलझा रहा था। जम्बरा को आगे का काम देकर, बबूसा के साथ वापस किले की तरफ बग्गी में रवाना हो गया। तब ताशा की तरफ ध्यान गया कि इतने दिन उसे न आया पाकर ताशा क्या सोच रही होगी। या उसे भूल गई होगी। याद भी न करती हो उसे, क्या पता?

देव किले में पहुंचा।

रात भर लम्बे सफर की थकान उतारी। अगले दिन ताशा से मिलने जाना था। ताशा का चेहरा उसकी आंखों के सामने नाच उठा कि कितनी खूबसूरत है वो, पहली बार में ही दिल में आ उतरी। इतने दिन बाद उसे सामने पाकर हैरान तो जरूर होगी। सोच रही होगी, अच्छा है जो नहीं आया।

अगले दिन सुबह बबूसा ने सेनापति धोमरा के आने की खबर दी।

देव, धोमरा से मिला जो विद्रोहियों की खबर लाया था। उसने कहा।

"राजा देव। हमारे लोग विद्रोहियों को पहचानते जा रहे हैं। परंतु उनकी संख्या ज्यादा है। विद्रोहियों के नेता तोलका ने दूर पहाड़ों में अपना ठिकाना बना रखा है। वहां और भी साथी हैं उसके। मेरे खयाल में तोलका पर हमला बोल दें तो ज्यादा ठीक रहेगा। सदूर का राजा बनने की इच्छा में, वो ही भोले-भाले लोगों को फुसलाता रहा है विद्रोह के लिए। अगर तोलका नहीं रहेगा तो बाकी विद्रोही खुद ही ठीक हो जाएंगे।"

"तोलका पहाड़ों से बाहर नहीं आता?" देव ने पूछा।

"नहीं। वो पहाड़ों पर ही छिपा रहता है। उसके साथ ढेर सारे साथी होते हैं।" मोमाथ ने बताया।

"कितने साथी उसके पास होते हैं?"

"ये जानकारी नहीं है।"

"जानकारी इकट्ठी करो और जिन पहाड़ों के पास तोलका रहता है, वो जगह कैसी है, नक्शा तैयार करो।"

"ये काम हो जाएगा। मैंने कुछ विद्रोहियों को अपने साथ मिला लिया है। उनसे पता चल जाएगा।"

मोमाथ चला गया।

तब बबूसा ने देव से कहा।

"राजा देव। सदूर के एक व्यक्ति ने आपको चुनौती दी है। वो आपको हरा कर, सदूर का राजा बनाना चाहता है। चार दिन पहले वो किले पर आया था और अपना नाम-पता नोट करा गया है। मुकाबले के लिए उसे कौन-सा दिन दें?"

"कल का दिन दे दो।" देव ने कहा।

"ठीक है। किले का कर्मचारी आज उस व्यक्ति के घर पर सूचना दे आएगा।" बबूसा ने कहा।

"ताशा के यहां जाना है बबूसा।"

जवाब में बबूसा के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

"मैं तो तैयार हूं राजा देव। कौन-सी बग्गी पर जाना चाहेंगे?"

"साधारण बग्गी पर।" देव बेचैन था जल्दी निकलने को—"तुम बग्गी लेकर किले के दरवाजे के सामने पहुंचो, मैं आ रहा हूं। देर मत लगाना। अभी तक खड़े हो जल्दी जाओ।"

बग्गी दौड़ती रही, देव व्याकुल भाव से पहलू बदलता रहा जब तक कि बग्गी ताशा के घर के सामने वाले रास्ते पर जाकर रुक नहीं गई। देव जल्दी से उतरा और तेज-तेज कदमों से ताशा के एक कमरे के घर की तरफ बढ़ गया, जिसका दरवाजा खुला हुआ था। दरवाजे पर पहुंचते ही पुकार उठा।

"ताशा।"

ताशा सामने ही खड़ी थी, एकटक उसे देख रही थी।

"ताशा-ताशा...।" देव को कोई शब्द न मिले कहने को। चेहरे पर खुशी उमड़ रही थी।

एकाएक ताशा की नीली आंखों से आंसू बह निकले।

"ताशा...।"

"झूठे-मक्कार।" ताशा भीगे स्वर में कह उठा—"इतने दिन से कहां थे तुम। मैं तुम्हारा इंतजार करती रही। तुम तो शादी के लिए कह रहे थे और फिर आए ही नहीं।" ताशा के गालों पर आंसू आ लुढ़के थे।

देव परेशान होकर आगे बढ़ा और ताशा को आंसू पोंछते प्यार से कांपते स्वर में बोला।

"आंसू मत बहाओ ताशा, मैं आ गया हूं।"

"इतने दिन क्यों नहीं आए?" ताशा ने आंसुओं भरी आंखों से उसे देखा।

"किसी काम में व्यस्त हो गया था।"

"देव।" ताशा ने कहा और देव से लिपट गई—"तुम आए नहीं और मुझे रोज तुम्हारे आने का इंतजार रहता। तब मैंने जाना कि प्यार क्या होता है। मुझे तुमसे प्यार हो गया है देव।"

"मैं भी—मैं भी तुमसे प्यार करता हूं ताशा।" देव ने बांहों का घेरा, उसके गिर्द कस लिया।

"मुझे छोड़ के तो नहीं जाओगे?" उसके सीने पर सिर रखे ताशा कह उठी।

"नहीं, कभी नहीं ताशा। मैं तो तुम्हें कब से अपना माने बैठा हूं।" देव प्यार में गुम हो गया था।

"मुझसे शादी करोगे देव?"

"हां। जरूर। हम दोनों एक साथ जीवन जिएंगे ताशा। एक साथ रहेंगे। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। जब से तुम्हें देखा है, मेरा चैन छिन चुका है। हर वक्त तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता हूं।"

एकाएक ताशा हौले से हंसी और उससे अलग हो गई। आंखें अभी भी गीली थीं।

"तुम दीवाने हो।"

"सच में—मैं तुम्हारा दीवाना हूं ताशा।"

"मैं भी तुम्हारी दीवानी हो गई हूं देव। जब तुम नहीं आए तो मैं ये ही सोचा करती थी कि क्या तुम अब कभी नहीं आओगे। मैं हमेशा दरवाजे पर बैठी सामने के रास्ते पर जाते लोगों को देखती रहती, कोई बग्गी नजर आती तो लगता तुम आ गए हो। जब बग्गी आगे निकल जाती तो मुझे रोना आ जाता कि तुम नहीं आए।" ताशा मुस्करा रही थी।

"अब मैं आ गया हूं ताशा।" देव ने तड़पकर ताशा का हाथ पकड़ लिया।

दोनों एक-दूसरे को देखते, अपने खाबों की दुनिया की बुनियाद रखने लगे थे जैसे।

"खोनम पिओगे न, बनाती हूं।" ताशा ने हाथ छुड़ाकर कहा।

"तुम्हारा खोनम खत्म हो जाएगा।" देव ने शरारत भरे स्वर में कहा।

ताशा खिलखिलाकर हंस पड़ी।

उसका इस तरह खिलखिलाना देव को बहुत अच्छा लगा। ताशा ने दरवाजे के बाहर मौजूद चूल्हा जलाया और खोनम बनाने में लग गई।

दरवाजे पर आ खड़ा देव उसे प्यार भरी निगाहों से देखने लगा।

"शरारती, तुम फिर मुझे देखे जा रहे हो।" ताशा मुस्कराते हुए मुंह बनाकर कह उठी।

"तुम मेरी हो। दिल चाहता है तुम्हारे सामने बैठा तुम्हें देखता रहूं और जिंदगी बीत जाए।"

"दीवाना।" ताशा हंस पड़ी फिर बोली—"ऐसा क्या काम पड़ गया था जो मेरे पास नहीं आए?"

"किसी काम के लिए कहीं दूर जाना पड़ा था। पहाड़ों के उस पार।"

"इतनी दूर।" ताशा ने नीली आंखें फैलाईं।

देव, ताशा के खूबसूरत चेहरे को देखता रहा।

"तुम करते क्या हो?"

"फिर बताऊंगा।" देव मुस्कराकर बोला।

"अभी क्यों नहीं?"

"अभी तो तुम्हें देख रहा हूं। तुम्हें जितना देखता हूं देखने की चाह और बढ़ जाती है।" देव ने प्यार भरे स्वर में कहा।

"पागल।"

"तुम्हारा पागल। ताशा का पागल। तुमने सच में मुझे पागल कर दिया है।"

"घर में कौन-कौन हैं तुम्हारे?"

"अकेला हूं। कुछ साल पहले पिता नहीं रहे।"

"अकेले रहते हो तो खाना कैसे खाते हो?" ताशा ने देव को देखा।

"नौकर बनाते हैं।" देव मुस्कराया।

"फिर तो तुम्हारे पास धातु बहुत ज्यादा होगी।" ताशा ने भोलेपन से कहा।

देव, ताशा को देखता रहा।

खोनम तैयार हो गया। ताशा ने खोनम दो कटोरियों में डाला और वे भीतर जा बैठे।

"बाहर घूमने चलते हैं ताशा।" देव ने कहा—"बग्गी में बैठकर।"

"मैं नहीं जाऊंगी, लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे। पिता सुनेगा तो मेरी जान ही ले लेगा।"

"किसी को पता नहीं चलेगा।" देव मुस्करा रहा था।

"कैसे?"

"तुम घर से निकलकर, इस रास्ते के चौराहे पर पहुंच जाओ, फिर वहां बग्गी में बैठ जाना।"

"कोई देख लेगा तो...।"

"कोई नहीं देखेगा।"

"बाजार में तो कोई देख ही लेगा। पिता भी वहां पर होते...।"

"हम बाजार में नहीं जंगल जाएंगे। पास के जंगल। वहां बातें करेंगे। तुम्हारे साथ वक्त बिताऊंगा। तुम्हें जी भरकर देखूंगा। तुम्हारा हाथ पकड़ूंगा। तुम्हारे साथ रहना मुझे बहुत अच्छा लगेगा।"

ताशा कुछ सोच में डूबी रही फिर धीमे से बोली।

"कल चलूंगी।"

"आज क्यों नहीं?"

"पता नहीं क्यों मुझे डर लग रहा है।" ताशा ने भोलेपन से कहा।

"कल डर नहीं लगेगा?" देव ने शरारत भरे स्वर में कहा।

"तुम बस, कल आना। आज नहीं। मेरा दिल धड़क रहा है।" ताशा ने अपने सीने पर हाथ रखा।

देव, ताशा को देखता रहा।

"तुम फिर दीवानों की तरह मुझे देखने लगे।" ताशा कह उठी।

"कल मैं कुछ देर से आऊंगा।" एकाएक देव ने कहा, उसे याद आ गया था कि कल उस आदमी से मैदान से मैदान में मुकाबला करना है, जिसने उसे चुनौती दी थी।

"देर से?"

"थोड़ी देर से। कल मुझे बहुत जरूरी काम है। तुम दरवाजे पर ही रहना। मेरी बग्गी देखकर घर से पैदल ही चौराहे की तरफ चल देना और चौराहे पर खड़ी बग्गी में जा बैठना फिर हम जंगल में घूमेंगे। बातें करेंगे।"

वापसी पर देव खुशी से झूम रहा था। आज उसे उतनी ही खुशी हो रही थी, जितनी कि पोपा को बनाकर, सफल उड़ान उड़ने पर होती। देव की खुशी का ठिकाना नहीं था।

"बबूसा।" बग्गी के आगे बढ़ते ही देव बोला—"आज मैं बहुत खुश हूं तुम जो भी मांगो, मैं दूंगा।"

"मुझे और क्या चाहिए राजा देव। हर समय आपकी सेवा करते रहने का मन करता है।"

"कुछ भी मांगो बबूसा।"

"नहीं राजा देव। मैं कुछ भी नहीं मांग सकता। आपका दिया सब कुछ है। पर इस खुशी की वजह भी तो बताइए।"

"ताशा भी मुझे प्यार करती है बबूसा। वो भी मुझे चाहती है।"

"ये सच में खुशी की बात है। क्या वो जानती है कि आप राजा देव हैं?" बबूसा ने बग्गी दौड़ाते पूछा।

"नहीं जानती।"

"आप कब तक ये बात उससे छिपाएंगे। कभी तो बतानी पड़ेगी।" बबूसा बोला।

"मैं कुछ भी छिपा नहीं रहा। उचित वक्त आएगा तो उसे पता चल जाएगा।" देव की खुशी पंख लगाकर उड़ रही थी—"मुझे समझ में नहीं आता कि इस खुशी के मौके पर मैं क्या करूं? मैं उड़ना चाहता हूं बबूसा।"

"बबूसा के बस में होता तो वो अभी आपको पंख लगा देता राजा देव।" बबूसा ने हंसकर कहा—"आपको इतना खुश कम ही देखा है। आप इसी तरह हमेशा खुश रहें और मैं आपकी सेवा करता रहूं।"

किले पर पहुंचने के बाद भी देव चैन से नहीं बैठ पाया। ताशा की मोहनी सूरत आंखों के सामने नाचती रही और वो किले के चक्कर तब तक लगाता रहा, जबकि थक नहीं गया। रात के खाने के बाद आकर बबूसा ने कहा।

"मैंने सोमारा को बताया कि राजा देव को ताशा पसंद आ गई है। वो ताशा से मिलना चाहती है राजा देव।"

"किसी मुनासिब वक्त पर सोमारा को ताशा से मिला देना बबूसा।" देव ने मुस्कराकर कहा।

"सोमारा सदूर की रानी को देखने के लिए बेचैन है।" बबूसा ने खुशी से कहा।

देव चाहता था कि कोई उससे ताशा की बातें करता रहे। परंतु बबूसा बोला।

"राजा देव। अब आपको वक्त पर सो जाना चाहिए। कल सुबह मुकाबला है मैदान में।"

अगले दिन सूर्य निकलने के तीन घंटों पश्चात देव, एक बग्गी में मैदान की तरफ रवाना हुआ। कोचवान बग्गी को चला रहा था। और बबूसा व्याकुल-सा देव के पास बैठा था।

"क्या बात है बबूसा?" देव ने पूछा।

"मैं मुकाबले को लेकर चिंतित हूं।"

"ये कोई पहली बार तो नहीं है।" देव ने मुस्कराकर कहा—"सदूर का राजा बनने के लिए मैंने सैकड़ों चुनौतियों का सामना किया है। ये मेरे लिए मामूली बात है, ऐसा मुकाबला करना।"

"ये बात नहीं राजा देव।" बबूसा ने कहा—"ओका (किले का मुख्य कर्मचारी) ने मुझे बताया है कि आज जो आपके मुकाबले पर उतरने वाला है, वो खतरनाक योद्धा है। माना हुआ लड़ाका है।"

"जानते हो मैं क्या सोच रहा हूं।" देव मुस्करा रहा था।

"बताइए राजा देव?"

"जल्दी से मुकाबला खत्म करूं और ताशा से मिलने चल दूं।"

बबूसा व्याकुल-सा देव के मुस्कराते चेहरे को देखने लगा।

"आपको मुकाबले की जरा भी चिंता नहीं है।" बबूसा ने गहरी सांस ली।

"मुझे ताशा से मिलने की चिंता है।"

"राजा देव, मुझे डर है कि आज कहीं आप धोखा न खा जाएं। ओका की बात को गम्भीरता से लें।"

बग्गी आबादी से हटकर, ऐसी खाली जगह पर पहुंची, जिसे मुकाबले के मैदान के रूप में जाना जाता था। कल सब जगह मुकाबले की मुनादी करा दी गई थी, जिसके कारण मैदान में लोगों की भीड़ नजर आ रही थी। धोमरा की फौज के कई सिपाही वहां मौजूद थे और लोगों को, बड़े-से घेरे के रूप में मैदान में खड़ा कर रखा था। मुकाबले के लिए हमेशा की तरह तैयारी पूरी हो चुकी थी। देव बग्गी से उतरने लगा तो बबूसा चिंता से बोला।

"राजा देव, लापरवाह मत होइएगा।"

देव मुस्कराया और बग्गी से उतरकर सामने बने कपड़े के कमरे की तरफ बढ़ गया। वैसा ही कपड़े का कमरा, कुछ दूरी पर एक और बना हुआ था। देव के आते ही वहां लोगों का शोर उमड़ पड़ा। दस मिनट बाद देव उस कपड़े के कमरे से बाहर निकला तो कमर के गिर्द लंगोट जैसा कपड़ा बांध रखा था और माथे पर एक मैले से कपड़े की पट्टी बांध रखी थी, जो कि उसके सिर के बालों को समेटे हुए थी। वो नंगे पांव था। वहां से निकलकर वो लोगों की भीड़ की तरफ बढ़ गया। भीड़ अब खामोश हो गई थी। उन्होंने रास्ता दे दिया और देव लोगों के घेरे के बीच जा पहुंचा था, तभी उसकी निगाह अपने प्रतिद्वंदी पर पड़ी। वो बीस बरस का, देव से डेढ़ गुणा लम्बा चौड़ा स्वस्थ युवक था। उसने भी लंगोट जैसा कपड़ा कमर में लपेट रखा था। हाथ में तलवार जैसा हथियार था और खतरनाक निगाहों से देव को देख रहा था। अचानक ही वहां खामोशी ठहरती चली गई।

देव की आंखों में खतरनाक भाव मचल उठे थे। शरीर में अजीब-सा तनाव आ गया था। उसकी निगाह मुकाबले पर उतरे योद्धा पर थी। दोनों कई पलों तक खड़े एक-दूसरे को देखते रहे। उनके बीच तीस कदमों का फांसला था। बबूसा भी भीड़ में सबसे आगे खड़ा हुआ था।

एकाएक देव और प्रतिद्वंदी एक दूसरे की तरफ बढ़ने लगे।

अब देव को ताशा की याद नहीं आ रही थी। उसे सिर्फ अपना शिकार ही दिखाई दे रहा था जो उसे मारकर राजा बनना चाहता था, सदूर का। देव अपनी बांहों में अजीब-सी लहरें दौड़ाती महसूस कर रहा था।

दोनों दस कदमों के फासले पर आकर रुक गए।

"राजा देव।" वो युवक मुस्कराकर कह उठा—"तुम्हारे राज्य करने के दिन खत्म हो गए।"

देव खामोशी से उसे देखता रहा।

"अब सदूर का राजा मैं बनूंगा। मैं तुमसे ज्यादा ताकतवर हूं। मेरे से कोई जीत नहीं सकता। तुम्हारी मौत मेरे ही हाथों लिखी है। तुम चाहो तो अपनी जान बचा सकते हो। सदूर का राज्य मेरे हवाले कर दो। मुझे राजा बना दो। इस तरह तुम बाकी का जीवन जी सकोगे। मैं उम्र भर के लिए तुम्हारे खाने-पीने का इंतजाम कर दूंगा।"

देव एकटक, अपने शिकार को देखे जा रहा था।

"अगर तुमने मरने की सोच ही ली है तो मैं अब तुम्हारी जीवन समाप्त करने जा रहा हूं।" योद्धा हंसकर बोला।

देव चुप रहा।

"मेरे पास ताकत भी है और हथियार भी। तुम भी कोई हथियार ले लो।" योद्धा अगले ही पल तीखे स्वर में कह उठा।

देव की नजरें उसी पर रहीं।

"लो, मरो।" कहने के साथ ही योद्धा तलवार थामे, देव पर झपट पड़ा और वार किया।

देव आसानी से खुद को बचा गया।

योद्धा के होंठों से गुर्राहट निकली और वो पुनः देव पर झपटा।

देव ने उसके वार से फुर्ती से खुद को बचाया और कई कदम दूर जा खड़ा हुआ।

"तू मेरे हाथ से ही मरेगा।" वो गुर्रा उठा। अब तलवार थामे धीमे-धीमे वो देव की तरफ बढ़ने लगा। उसकी आंखों में क्रोध भरी सुर्खी चमक रही थी—"डर लग रहा है मुझसे।"

देव के होंठ सख्ती से बंद थे। वो बेहद सतर्क था। एकाएक योद्धा ने देव पर वार किया। परंतु उसी पल देव जगह छोड़ चुका था। तलवार जमीन पर लगी। वार खाली जाते देखकर वो और भी क्रोधित हो उठा। होंठों से तेज गुर्राहट निकली और तलवार थामे वो तेजी से देव की तरफ दौड़ा। उसके करीब आते ही देव ने ऊंची उछाल ली और वो नीचे से निकलकर आगे बढ़ गया, हवा में मौजूद देव नीचे आया और पैरों पर खड़ा, योद्धा को देखने लगा।

योद्धा ठिठककर तुरंत पलटा अेर वहशी निगाहों से देव को देखा।

देव के होंठ भिंचे थे। एकाएक योद्धा को देखते वो मुस्करा पड़ा। मुस्कान का असर उस पर, तेजाब की भांति हुआ। वो दहाड़कर तलवार वाला हाथ उठाए, देव पर झपट पड़ा। देव भी तेजी से आगे बढ़ा और उसका तलवार वाले हाथ की कलाई को पलक झपकते ही थामा और कलाई की पूरी ताकत से दबा दिया। वो पीड़ा सहन न कर सका और तलवार नीचे जा गिरी। इससे पहले कि वो कुछ समझ पाता, देव ने उसी पल ऊंची छलांग लगाई और दूसरे ही पल उसके दोनों कंधों पर पांव रखे खड़ा था। फिर खास अंदाज में दोनों पांवों के बीच उसका सिर फंसाया और फिरकनी की भांति घूम गया। ऐसा करते ही योद्धा का सिर भी घूम गया। और कड़ाक-कड़ाक की, हड्डी टूटने की आवाजें आईं। देव उसी पल छलांग लगाकर जमीन पर आ खड़ा हुआ।

वो योद्धा बेजान-सा 'घप्प' से नीचे आ गिरा। फिर नहीं हिला।

सन्नाटा-सा छा गया था वहां। कोई आवाज नहीं। देव ने तुरंत अपने कदम कपड़े के कमरे की तरफ बढ़ा दिए।

अब तक व्याकुल-सा बबूसा, बरबस ही मुस्कराकर देव को देखने लगा था।

एकाएक भीड़ छंटने लगी। बातों की आवाजें उभरने लगीं। सब वहां से

अपने-अपने रास्तों की तरफ बढ़ने लगें। जान गंवा चुके योद्धा के पास पहरेदार आ पहुंचे थे। उसे उठा ले जाने के लिए।

बबूसा बग्गी के पास पहुंचा। कोचवान को किले पर जाने को कहकर खुद कोचवान की सीट पर बैठ गया। पांच मिनट में ही देव बग्गी में आ बैठा।

"राजा देव।" बबूसा बग्गी आगे बढ़ाता खुशी भरे स्वर में कह उठा—"आपने तो कमाल कर दिया, जैसे कि हर बार कर देते हैं। मैं तो यूं ही घबरा रहा था कि वो आप पर भारी न पड़े।"

"मैं इस वक्त ताशा के बारे में सोच रहा हूं।" देव ने मुस्कराकर कहा—"वो मेरा इंतजार कर रही होगी।"

"आप तो योद्धा से मुकाबला करते समय भी ताशा को याद कर रहे होंगे।" बबूसा हंसकर बोला।

"तब मैं ताशा को कुछ देर के लिए भूल गया था।"

बग्गी तेजी से दौड़ रही थी।

"मैं जल्दी ही आपको ताशा के घर तक पहुंचा देता हूं।"

"पहले मैं नदी पर जाकर नहाना चाहता हूं।"

"अच्छी बात है राजा देव।"

थोड़ी देर बाद वो एक बहती नदी पर पहुंचे।

देव कपड़े उतारकर नदी में कूद गया। मुकाबले का तीखापन जो शरीर में भर आया था उसे बाहर निकाला। कुछ देर नहाने के बाद बग्गी से दूसरे साधारण कपड़े निकालकर पहने। फिर बग्गी में बैठा और ताशा के घर की तरफ दौड़ पड़ी बग्गी। ताशा उसी प्रकार मिली, जैसे कि देव ने उसे समझाया था। चौराहे पर वो बग्गी के भीतर आ बैठी। वो डरी-डरी-सी, सकुचाई-सी लग रही थी पर खुश भी थी।

"पास के जंगल की तरफ चलो बबूसा।" देव ने ताशा को मधुर मुस्कान से देखते मुस्कराकर कहा।

बबूसा ने बग्गी दौड़ा दी।

"म-मैं पहली बार बग्गी में बैठी हूं।" ताशा कह उठी—"पहले कभी भी बग्गी में नहीं बैठी।"

देव ने ताशा का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

ताशा ने देव को देखा और प्यार भरे अंदाज में मुस्कराने लगी।

"आज तुम्हें इस तरह अपने पास बैठे पाकर, मैं बहुत खुश हूं ताशा।" देव कह उठा।

"मैं भी बहुत खुश हूं देव। जब तुम्हारा खयाल आता है तो मन में कुछ-कुछ

होता है।" ताशा ने अपने दिल पर हाथ रखकर कहा—"पता नहीं क्या हो गया है, रात को नींद नहीं आती और तुम्हारा ही खयाल आता है।"

"सच ताशा।"

"आज सुबह तो आंख ही नहीं खुली, पिता ने ही जगाया। तुमसे मिलकर मैं कैसी हो गई हूं देव।"

"ये प्यार है ताशा। मेरा हाल तो तुमसे भी बुरा है। जब तक तुम्हें नहीं देखा था, मेरी जिंदगी शांत चल रही थी परंतु अब चैन नहीं मिलता। हर वक्त तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता हूं। तुम्हीं खयालों में बसी रहती हो। जिधर देखता हूं तुम्हारे मौजूद होने का एहसास पाता हूं, परंतु तुम कहीं भी नहीं होती। सुबह जब उठता हूं तो लगता है जैसे रात भर तुमसे ही बातें करता रहा हूं...।"

कुछ शोर, कुछ बातें करने की आवाजों से देवराज चौहान के दिमाग में दौड़ती यादों की बारात थम-सी गई। उसने आंखें खोलीं तो सामने बबूसा को टहलते पाया। दिन निकल आया था। अर्जुन भारद्वाज और नीना भी जाग गए थे। कमरे की बंद खिड़की से बाहर फैला सुबह का उजाला दिख रहा था।

"राजा देव, उठ गए आप।" बबूसा उसकी आंखें खुली पाकर कह उठा—"मैं क्षमा चाहता हूं कि बेड पर सो गया और आप सोफे पर ठीक से सो नहीं पाए। भूल हो गई मुझसे।"

देवराज चौहान तुरंत उठ बैठा। उसकी चमकती आंखें बबूसा पर थी।

"क्या हुआ राजा देव?" देवराज चौहान की आंखों में बदले भाव देखकर, बबूसा के होंठों से निकला।

"मुझे-मुझे सब याद आ गया बबूसा।" देवराज चौहान के स्वर में खुशी भरा कम्पन था।

अर्जुन भारद्वाज और नीना की नजरें मिलीं।

बबूसा चौंका फिर उसकी आंखें फैल गईं।

"क्या?" उसके होंठों से निकला—"आ-आ-प को सब याद आ गया राजा देव?"

देवराज चौहान उठकर आगे बढ़ा और दोनों हाथ बबूसा के कंधे पर रखे।

"बबूसा, मेरे दोस्त।" देवराज चौहान की आंखों में पानी चमक उठा—"मुझे सब याद गया। किले में रहना, बग्गी पर हम जाते थे ताशा से मिलने। जम्बरा के साथ पोपा बनाना। विद्रोहियों की समस्या से निबटना...सब कुछ याद आ गया। सदूर ग्रह का राजा था मैं। महापंडित भी याद आ गया। ताशा के बाद तुम ही तो थे, जिसे मैं सबसे ज्यादा पसंद करता था।"

"राजा देव।" बबूसा का चेहरा खुशी से भर उठा—"मैं जानता था कि महापंडित गलत नहीं हो सकता कि रानी ताशा का चेहरा देख लेने के बाद

आपको सदूर का जन्म याद आना शुरू हो जाएगा। क्या-क्या याद आया राजा देव?"

नीना ने धीमे स्वर में अर्जुन भारद्वाज से कहा।

"कहीं नई मुसीबत खड़ी न हो जाए।"

देवराज चौहान बताने लगा कि उसे सदूर ग्रह की कौन-कौन सी बातें याद आई हैं। बबूसा, नीना, अर्जुन सुनते रहे।

सब कुछ सुनने के बाद बबूसा गम्भीर हो गया।

"राजा देव।" बबूसा ने कहा—"अभी तो बहुत कुछ याद आना बाकी है।"

"बहुत कुछ?"

"हां।" बबूसा ने सिर हिलाया—"जो बात मैं आपको रानी ताशा के बारे में याद दिलाना चाहता हूं अभी वो याद नहीं आई।"

"ताशा।" देवराज चौहान ने गहरी सांस ली—"मेरी ताशा। मेरे सपनों की रानी। मेरे दिल की शहजादी, मुझे यकीन नहीं आता कि ताशा मेरे लिए पृथ्वी ग्रह पर आ पहुंची है पोपा में बैठकर। आह—वो कितनी अच्छी है। उसके बिना मेरा मन ही नहीं लगता था। अब मैं ताशा को फिर से पा सकूंगा। उससे बातें कर पाऊंगा। उसे प्यार...।"

"आप भटक रहे हैं राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"बबूसा तुम...।"

"रानी ताशा ने आपको जबर्दस्त धोखा दिया था। तभी तो आप सदूर से पृथ्वी पर आ पहुंचे थे। इंतजार कीजिए, अभी तो आपको बहुत कुछ याद आना बाकी है। अभी तो थोड़ा-सा ही याद आया है आपको।" बबूसा ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा—"आपका प्यार झूठा नहीं था परंतु रानी ताशा आपके प्यार को संभाल नहीं पाई। वो चाल खेल गई आपके साथ और...।"

"कुछ मत कहो बबूसा।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में कह उठा—"मैं ताशा के पास जाना चाहता हूं।"

"ये आप क्या कह रहे हैं राजा देव।" बबूसा के होंठों से निकला।

"वो मेरा इंतजार कर रही है। मेरे बिना वो तड़प रही...।"

"राजा देव, आप तो कहते थे कि आपकी पत्नी सिर्फ नगीना है।" बबूसा बोला।

"नगीना, हां...नगीना मेरी पत्नी है, परंतु वो ताशा की जगह नहीं ले सकती।" देवराज चौहान के चेहरे पर दृढ़ता फैलने लगी—"ताशा तो मेरी सब कुछ है, ओह—वो वक्त कितना अच्छा होगा, जब मैं ताशा से मिलूंगा।"

"आप ताशा से नहीं मिलेंगे राजा देव।" बबूसा की आवाज में सख्ती आ गई।

"क्यों?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"क्योंकि अभी आपको सदूर का सब कुछ याद नहीं आया है। जो बात मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं वो याद नहीं आई। अभी तो सिर्फ ऊपरी बातें ही आपके दिमाग में उतरी हैं। बहुत कुछ बाकी हैं अभी...।"

"मुझे ताशा के पास जाना है बबूसा।" देवराज चौहान के होंठ भिंचने लगे।

"अभी नहीं राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"बबूसा, तुम मेरा आदेश मानने से इंकार कर रहे हो।" देवराज चौहान के दांत भिंच गए।

"आपके भले के लिए राजा देव।" बबूसा ने सख्त स्वर में कहा—"मैंने हमेशा आपका भला ही चाहा है। मैं आपका सेवक हूं आप खुश तो मैं भी खुश, आप दुखी तो मैं दुखी। मैं ये कभी भी नहीं चाहूंगा कि कोई आपका बुरा करे या फिर आप गलती से अपना ही बुरा कर बैठें। अगर ऐसा होता है तो मैं आपको रोकूंगा जरूर। ये ही बात इस समय हो रही है। रानी ताशा के पास आपका जाना ठीक नहीं है। वो आपको वापस ले जाने के लिए आई है और आपको अभी तक नहीं मालूम कि सदूर पर तब ऐसा क्या हुआ कि आप पृथ्वी पर आ पहुंचे। आप तो सदूर के राजा थे।"

"मैं ताशा के पास जा रहा हूं बबूसा और तुम मुझे रोकने की कोशिश नहीं...।"

"मैं आपको नहीं जाने दूंगा राजा देव। आपको भी मेरी बात मान लेनी चाहिए। इसी वक्त के लिए तो मैं आपके साथ हूं। आपको सदूर का याद आना शुरू हो चुका है तो बाकी बातें भी याद आ जाएंगी जो कि जरूरी है। उसके बाद आप पूरी तरह आजाद होंगे अपनी मनचाही बात करने के लिए।" बबूसा का स्वर दृढ़ता से भरा था—"तब मैं भी चैन की सांस लूंगा कि आपको सब याद आ गया है। उसके बाद आपको पता ही है कि आपने क्या करना है।"

देवराज चौहान कठोर निगाहों से बबूसा को देखने लगा।

अर्जुन भारद्वाज और नीना की निगाह दोनों पर थी।

"तुम मेरी आज्ञा को टाल रहे हो बबूसा।" देवराज चौहान गुस्से से बोला।

"नहीं राजा देव। मैं चाहता हूं सब कुछ आपको याद आ जाए। उसके बाद आप रानी ताशा से मिलें।"

"तुम मुझे बता चुके हो कि ताशा ने मुझे कैसा धोखा दिया था।"

"बताने और जान लेने में फर्क होता है राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"जब आप खुद उस धोखे का एहसास पाएंगे तो तब आपको रानी ताशा की असलियत का एहसास होगा।"

"अगर मैं जबर्दस्ती जाना चाहूं तो तुम...।"

"मैं आपको नहीं जाने दूंगा। सख्ती से रोकूंगा। पृथ्वी पर जन्म लेते रहने के कारण, आपकी ताकत वो नहीं रही, जो कभी सदूर पर हुआ करती थी। बल्कि महापंडित ने इस बार मेरा जन्म, आपकी ताकत डालकर कराया है। बुरा न मानें राजा देव, इस बार आप मेरा मुकाबला नहीं कर सकते। तब मैं सदूर पर सीधा-सीधा इंसान हुआ करता हूं परंतु इस बार डोबू जाति का सबसे श्रेष्ठ लड़ाका माना जाता है मुझे। मैं अपनी ताकत सोमाथ पर इस्तेमाल करना चाहता हूं। आप मेरी ताकत को इन छोटी-छोटी बातों में खर्च न करें। रानी ताशा से सामना तो होना ही है राजा देव। सोमाथ को मुझे ही संभालना पड़ेगा। बेहतर ये है कि तब तक आराम से रहें आप और हो सकता है तब तक सदूर की सारी बातें आपको याद भी आ जाएं।"

"बबूसा सही कहता है।" अर्जुन भारद्वाज गम्भीर स्वर में कह उठा—"तुम्हें किसी तरह की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।"

"लेकिन ताशा।" देवराज चौहान ने झल्लाकर अर्जुन से कहा—"मैं ताशा से मिलना चाहता हूं।"

"वक्त का इंतजार करो।" अर्जुन बोला।

"मैं तो ताशा से बहुत प्यार करता हूं। उसके बिना नहीं रह सकता। वो मेरा प्यार है...वो...।"

"देवराज चौहान।" अर्जुन भारद्वाज का स्वर गम्भीर था—"तुम्हें बबूसा की बातों का भरोसा करके, बबूसा के मुताबिक ही चलना चाहिए। ये तुम्हारा भला चाहता है। ये बेहतर जानता है कि कब तुम्हारा ताशा से मिलना ठीक होगा।"

देवराज चौहान ने तीखी नजरों से बबूसा को देखा।

"जब आपको सब कुछ याद आ जाएगा। तो तब मैं आपसे एक कदम पीछे रहूंगा राजा देव।" बबूसा ने कहा—"जैसे सदूर में रहा करता था। इस वक्त आप हालातों से अंजान हैं। आपको बचा के रखना मेरा फर्ज है।"

देवराज चौहान ने गहरी सांस ली और सोफे पर आ बैठा।

"बबूसा।" देवराज चौहान ने बेचैनी भरे स्वर में कहा।

"हां, राजा देव?"

"सदूर का वक्त कितना अच्छा था। वहां कितना मजा आता था। सब कुछ भला-भला सा था।" देवराज चौहान बोला।

"आप ठीक कहते हैं राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ताशा के साथ जंगल में घूमता। दिन कैसे बीतता था, पता ही नहीं चलता था। ताशा की नीली आंखों में मैं ऐसा खो जाता था कि मुझे होश ही नहीं रहता था। उसका प्यार—खूबसूरत चेहरा। सदूर की सबसे खूबसूरत युवती थी वो।"

"जी राजा देव।"

"पहली बार जब उसे देखा तो तभी मैं उसका दीवाना हो गया, वो कितनी अच्छी है। मुझे कितना प्यार करती है। मैं भी उसे बहुत प्यार करता हूं। ताशा...।" देवराज चौहान जैसे कहीं गुम होता कह उठा—"मेरी ताशा...।" देवराज चौहान ने एकाएक बबूसा को देखकर गुस्से से कहा—"तुम मुझे ताशा के पास क्यों नहीं जाने देते। तुम तो मेरी हर बात माना करते थे। तुमने कभी मुझे किसी बात से इंकार नहीं किया। अब तुम्हें क्या हो गया है। मैं राजा देव हूं, तुम मेरे सेवक हो। तुम मुझे कैसे रोक सकते हो, ताशा के पास जाने से...।" देवराज चौहान खड़ा हो गया।

बबूसा उसी पल सतर्क हो गया।

"मैं आपकी बेहतर सेवा करने की कोशिश कर रहा हूं। आपको रोक रहा हूं तो इसी में आपका भला है। सब कुछ याद आने से पहले आप रानी ताशा के सामने पड़ गए तो वो आपको सदूर ग्रह पर वापस ले जाएगी।"

"तो क्या हो गया, मैं भी तो ताशा के साथ सदूर पर जाना चाहता हूं।" देवराज चौहान ने तेज स्वर में कहा।

बबूसा मुस्करा पड़ा।

"अभी ये बात आप इसलिए कह रहे हैं कि हकीकत से दूर हैं आप राजा देव। जब आपको सब कुछ पता चल जाएगा कि रानी ताशा ने आपके साथ क्या किया तो तब आपकी सोच बदल भी सकती है।" बबूसा ने कहा।

"मैं ताशा से प्यार करता हूं बबूसा। ये बात तुम भी अच्छी तरह जानते हो।"

"आप तो रानी ताशा के दीवाने रहे हैं राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"आपकी दीवानगी मैंने आंखों से देखी है। ये बात मैं कैसे भूल सकता हूं। सब कुछ तो मेरे सामने है। परंतु अभी इंतजार कीजिए। बाकी बातें भी याद आने दीजिए।"

तभी नीना कह उठी।

"नगीना, तुम्हारी पत्नी है देवराज चौहान।"

"हां।" देवराज चौहान ने नीना को देखा।

"तुम ताशा के साथ जाना चाहते हो तो, नगीना का क्या होगा?" नीना ने कहा।

"मैं—मैं नगीना और जगमोहन को भी साथ ले जाऊंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"जरूरी तो नहीं कि वो तुम्हारी बात मानें।"

"मानेंगे। वो मेरे साथ चलेंगे। वो...।"

"देवराज चौहान, नगीना तुम्हारे आज के जन्म की पत्नी है और ताशा की

बात जन्मों पुरानी है। मेरे खयाल में अब ताशा का और तुम्हारा सम्बंध नहीं बनता। वो तो कब का खत्म हो चुका है।"

"ताशा मेरी है। मैं उससे प्यार करता हूं। ताशा के बिना मैं कैसे रह पाऊंगा।" देवराज चौहान तड़प उठा।

"मैं नगीना की बात कर रहा हूं। तुम नगीना के साथ अन्याय कर रहे हो, ऐसा सोच कर।"

"मैं ताशा के बिना नहीं रह सकता।"

"जैसा कि बबूसा कहता है, अगर तुम्हें पता चल गया कि वो पक्की धोखेबाज है तो?"

"वो जैसी भी है मेरी ताशा है। मेरी जिंदगी है। मेरा प्यार है। मेरा सब कुछ है।"

"अवश्य राजा देव।" बबूसा गम्भीर स्वर में कह उठा—"परंतु कुछ इंतजार करना होगा आपको। महापंडित की मेहरबानी से आपको सदूर का जन्म याद आना शुरू हो चुका है। सब कुछ याद आजाने दीजिए। उसके बाद आपको जो करना हो, बेशक करें।"

नीना ने अर्जुन को देखकर कहा।

"अब तो सर आप बबूसा की बातों को सच मानते हैं?"

"देवराज चौहान को उस जन्म का याद आ गया है तो बबूसा को झूठा कैसे कह सकता हूं।" अर्जुन भारद्वाज बोला।

"मैं तो ये कह रही थी कि ऐसे केस से हमारा क्या वास्ता? वैसे भी जब देवराज चौहान को उस जन्म की याद आने लगी है तो इस केस में हमारा काम करना बनता ही नहीं। हमारा काम खत्म हुआ सर।"

अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर सोचें नाच रही थीं।

"इस बारे में नगीना से बात करनी पड़ेगी। अभी हमारी क्लाइंट ने काम बंद कर देने को नहीं कहा।"

"क्लाइंट ने नहीं कहा तो हम कह देते हैं क्लाइंट को। वक्त बर्बाद करने का क्या फायदा। दिल्ली में भी हमारे काम पड़े हैं। वहां का ऑफिस आपके बिना पड़ा है। कोई नया केस भी आ सकता है।"

"मैं देखना चाहता हूं कि इस मामले में आगे क्या होता है।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा।

"महज देखने के लिए तो हम क्लाइंट से फीस नहीं ले सकते। ये बात तो बाद में फोन करके भी पता कर सकते हैं।" नीना ने कहा।

अर्जुन के चेहरे पर सोचें उभरी फिर उसने कहा।

"नगीना को फोन लगाओ।"

नीना ने नगीना का नम्बर मिलाया। परंतु स्विच ऑफ का स्वर कानों में पड़ा।

"फोन बंद है सर।"

"वो वहीं बंगले पर होगी, रानी ताशा और सोमाथ भी वहां हैं। पता नहीं वहां क्या हो रहा होगा। मालूम करने के लिए वहां जाना भी खतरनाक है। सोमाथ का मुकाबला नहीं किया जा सकता। हमें यहीं रहकर, नगीना से बात हो जाने का इंतजार करना होगा। मुझे विश्वास है कि जल्दी ही नगीना से बात हो जाएगी।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

"और अगर नगीना ने कहा कि हम अभी रुकें तो...?" नीना बोली।

"इस मामले में जब हमारा काम ही नहीं बचा तो रुकने का क्या मतलब, हमें दिल्ली जाकर, वहां के काम देखने हैं।"

"फीस का हिसाब भी कर लेना सर, मैं आज हिसाब लगा लूंगी कि हमारी कितनी फीस बाकी है।"

उस वक्त सुबह के दस बजे थे। सब नहा-धोकर नाश्ता करके हटे थे। देवराज चौहान गम्भीर नजर आ रहा था और ताशा के खयालों में डूबा था, जब से ताशा की याद आई तब से जेहन में ताशा ही घूम रही थी। किसी और के बारे में जरा भी नहीं सोचा था या फिर सदूर दिमाग में घूम रहा था। सदूर का वक्त याद आने पर वो बेचैन हो उठा था। एक ही विचार मन में उठ रहा था कि वो ताशा के पास जल्द-से-जल्द पहुंच जाए।

बबूसा, देवराज चौहान की मन की स्थिति से अंजान नहीं था। वो सतर्क था कि राजा देव कमरे से निकलने की कोशिश न करें। परंतु देवराज चौहान ने ऐसा कुछ करने की कोशिश नहीं की थी। तभी दरवाजे पर थपथपाहट पड़ी।

नीना ने ये सोचकर दरवाजा खोला के वेटर बर्तन लेने आया होगा।

परंतु सामने मोना चौधरी को खड़ा पाया।

"कहिए?" नीना ने प्रश्नभरी निगाहों से उसे देखा।

मोना चौधरी उसके कंधे पर हाथ रखा और नीना को पीछे धकेलती प्रवेश कर आई।

"ये क्या कर रही हो, कौन हो तुम?" नीना एकाएक तीखे स्वर में कह उठी।

कमरे में प्रवेश करते ही मोना चौधरी की निगाह, देवराज चौहान और बबूसा पर गई। दोनों ने भी मोना चौधरी को देखा।

अर्जुन भारद्वाज की निगाह भी मोना चौधरी पर टिक चुकी थी।

"बाहर निकलो, वरना मैं होटल वालों को बुलाती हूं।" नीना तेज स्वर में बोली।

"दरवाजा बंद कर दो।" मोना चौधरी ने नीना से कहा—"फिर देवराज चौहान से बोली—"मुझे बेला (नगीना) ने भेजा है।"

"नगीना ने?" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"वो तो बंगले पर है। ताशा भी वहीं पर...।"

"कल रात मुझे बेला का फोन आया था। सुबह ही मुम्बई पहुंची हूं। बेला ने कहा है कि तुम्हें इस होटल से कहीं और ले जाऊं, क्योंकि सामने वाला कमरा ताशा का है। तुम्हारा यहां रहना ठीक नहीं है।" मोना चौधरी ने कहा।

"अब चिंता की कोई बात नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा—"मुझे उस जन्म की याद आनी शुरू हो गई है। मुझे ताशा से छिपने की जरूरत नहीं है। वो बहुत अच्छी है, हम दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार करते हैं।"

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं। वो देवराज चौहान को देखती रही।

"तुम और ताशा, एक-दूसरे को प्यार करते हो?" मोना चौधरी ने कहा।

"हां। वो मेरी पत्नी है।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"और तुम्हें सदूर ग्रह के उस जन्म की याद आने लगी है?" मोना चौधरी ने सिर हिलाया।

"हां।"

"तुम सदूर ग्रह पर रहते थे पहले। मतलब कि सदूर ग्रह वाली बात सच है?" मोना चौधरी गम्भीर थी।

"पूरी तरह सच है।"

मोना चौधरी ने बबूसा से कहा।

"देवराज चौहान इस वक्त कैसी बातें कर रहा है?"

"राजा देव सही कह रहे हैं।" बबूसा बोला—"इन्हें सदूर के जन्म की याद आनी शुरू हो गई है।"

"याद आई कैसे?"

"महापंडित ने कहा था कि राजा देव जब रानी ताशा का चेहरा देखेंगे तो इन्हें उस जन्म की याद आनी शुरू हो जाएगी। राजा देव ने कल रानी ताशा का चेहरा देख लिया था, जब वो कमरे से निकल रही थी। तब तो राजा देव, रानी ताशा को देखते ही बेहोश हो गए थे और अंधेरा हो जाने के बाद होश आया था।" बबूसा ने कहा।

मोना चौधरी गम्भीर निगाहों से कभी देवराज चौहान को देखती तो कभी बबूसा को।

"तुम कौन हो?" नीना ने पूछा।

"मोना चौधरी, नगीना की बहन।" मोना चौधरी ने अर्जुन भारद्वाज पर नजर डाली—"तुम प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज हो?"

"हां।" अर्जुन बोला—"परंतु तुम कौन-सी मोना चौधरी हो। एक मोना चौधरी तो इश्तिहारी मुजरिम...।"

"वो ही हूं मैं।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा और देवराज चौहान से बोली—"चलो मेरे साथ...।"

"यहां सब ठीक है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं बेला की कही बात पूरी करने आई हूं। उसने मुझे ऐसा करने को कहा है।"

तभी अर्जुन ने कहा।

"तुम्हें यहां से किसी सुरक्षित जगह चले जाना चाहिए। रात भी मैंने ये कहा था। होटल में तुम्हारा रहना ठीक नहीं, सामने ही रानी ताशा का कमरा है। वो कभी भी लौट सकती है।"

"ताशा मुझे सामने पाकर खुश होगी।" देवराज चौहान मुस्कराया—"वो...।"

"नहीं राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"अभी आपका ताशा के सामने पड़ना ठीक नहीं। जब आपको सदूर का सब कुछ याद आ जाएगा, तब आप कुछ भी करने को आजाद होंगे।"

"तुम खामखाह ही मेरे पीछे पड़े हो।" देवराज चौहान झल्लाकर कह उठा।

"बेहतर होगा कि हम यहां से कहीं और चले जाएं।" बबूसा ने मोना चौधरी को देखा।

"चलो।" मोना चौधरी ने बबूसा से कहा—"मैं नहीं जानती कि इस वक्त क्या हो रहा है। मेरे फ्लैट पर चलकर सब बातें मुझे बताना। नगीना कहां है?"

"वो बंगले पर है।" नीना बोली।

"बंगले पर? परंतु रात तो उसने मुझसे इस तरह बात की जैसे वो मुसीबत में हो।" मोना चौधरी ने कहा।

"बंगले पर रानी ताशा, सोमाथ और तीन अन्य साथी भी वहां हैं।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा—"मेरा खयाल है कि उन्होंने नगीना और जगमोहन को बंदी बना रखा है कि उसके लिए देवराज चौहान वहां आएगा।"

"धरा भी वहां है।" बबूसा कह उठा।

मोना चौधरी के चेहरे पर सख्ती नाच उठी।

"यहां से चलो देवराज चौहान।" मोना चौधरी ने कहा—"मैं बेला का कहा पूरा कर रही हूं, मुझे ये काम कर लेने दो। यहां से जाकर तुम बेहतर ही रहोगे। मेरे फ्लैट के बारे में कोई नहीं जानता।"

"पर मैं ताशा के पास जाना चाहता...।"

"बाद में राजा देव।" बबूसा कह उठा—"अभी तो यहां से चलिए।"

न चाहते हुए भी देवराज चौहान, बबूसा और मोना चौधरी के साथ वहां से चला गया।

नीना गहरी सांस लेकर बोली।

"सर, हम कैसे खतरनाक लोगों में आ फंसे हैं। मुझे तो विश्वास नहीं होता कि ये इश्तिहारी मुजरिम मोना चौधरी थी।"

अर्जुन भारद्वाज मुस्कराकर रह गया।

"अच्छा हुआ ये लोग चले गए, वरना कोई नई मुसीबत खड़ी हो जाती।"

"ये केस बहुत ही हैरान कर देने वाला है।" अर्जुन बोला—"अब देवराज चौहान कहता है कि उसे सदूर ग्रह की बातें याद आ गई हैं। इन बातों का कोई आधार नहीं है कि हम भरोसा कर सकें।"

"तो क्या देवराज चौहान गलत कहता है?"

"कह नहीं सकता? पर वो गलत क्यों कहेगा? लेकिन ये बातें मेरी समझ से बाहर हैं।"

"सर, मुझे तो अभी तक ठीक से मामला समझ नहीं आया। आप सही कहते हैं कि इनकी बातों पर विश्वास करें भी तो कैसे, कोई गवाह नहीं है। कोई सबूत नहीं है।" नीना ने मुंह लटकाकर कहा।

"तैयार हो जाओ।"

"कहीं जाना है सर?"

"मुम्बई घूमने चलते हैं। इस मामले में अब हमारी जरूरत नहीं रही। ये इनकी व्यक्तिगत बातें हैं। देवराज चौहान कहता है कि उसे सदूर का वक्त याद आ गया है। उधर रानी ताशा, नगीना और जगमोहन के पास पहुंच चुकी है। हमारा काम खत्म।"

"पर सर, रानी ताशा नगीना को बंदी बनाए हुए है। उसे छुड़ाना हमारा फर्ज नहीं बनता?"

"देवराज चौहान और बबूसा सारे हालात जानते हैं। अब जो करना है उन्होंने ही करना है। मेना चौधरी ने भी इस मामले में दखल दे दिया है जो कि खुद को नगीना की बहन कहती है। जो करना होगा अब ये लोग ही करेंगे।"

"परंतु सर अभी हमने फीस लेनी...।"

"शाम को एक बार फिर नगीना का फोन ट्राई करेंगे। लग गया तो ठीक, नहीं तो कल दिल्ली चल देंगे। फीस के रूप में काफी पैसे हमें मिल चुके हैं, और इस मामले में हमने खास कुछ किया भी नहीं। हमारे करने को कुछ था भी नहीं। दूसरे ग्रह से आए लोग, पहले जन्मों की बातें, प्राइवेट जासूसों की समझ से बाहर की चीज हैं।"

"मैं तैयार होती हूं सर, फिर मां वाली बात भी आपसे करूंगी कि वो मुझे कहती रहती है कि अब शादी कर ले, कब तक घूमती रहेगी। सब कुछ आप पर है कि आप मुझे क्या कहते हैं, शादी कर लूं?"

अर्जुन भारद्वाज ने कठोर निगाहों से नीना को देखा।

"त-तैयार हो रही हूं सर।" नीना सकपकाकर सूटकेस की तरफ बढ़ी—"बस, पांच मिनट में तैयार हुई।"

अर्जुन ने मुस्कराकर मुंह फेर लिया।

▭ ▭

मोना चौधरी, देवराज चौहान और बबूसा के साथ मुम्बई के अपने फ्लैट पर पहुंची जो कि कुर्ला में था। रास्ते में तीनों की कोई खास बात नहीं हुई थी। फ्लैट सजा हुआ था और जरूरत का हर सामान वहां मौजूद था। बबूसा और देवराज चौहान ड्राइंग रूम के सोफों पर जा बैठे। मोना चौधरी ने उन्हें कॉफी बनाकर दी और एक प्याला खुद भी थामे सोफे पर आ बैठी। देवराज चौहान कॉफी का घूंट ले रहा था। मोना चौधरी बोली।

"ये पहली बार है कि हम इस तरह इकट्ठे बैठे हैं।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाया मोना चौधरी को देखकर।

"मुझे बताओ क्या हालात चल रहे हैं, क्या हो रहा है अब?" मोना चौधरी ने पूछा।

"तुम बताओ बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा।

"हालात बहुत अच्छे नहीं हैं।" बबूसा बोला—"थोड़े बिगड़े ही हुए हैं, परंतु ये अच्छी बात है कि राजा देव को सदूर का जन्म याद आना शुरू हो गया है। कई बातें इन्हें याद आ चुकी हैं।"

"मुझे ताशा के बारे में बताओ।" मोना चौधरी के स्वर में कुछ कठोरता आ गई।

"रानी ताशा।" बबूसा ने गम्भीरता से सिर हिलाया।

"तुमने बताया था कि उसने बंगले पर बेला (नगीना) जगमोहन और धरा को बंदी बना रखा है।"

"हां।"

"कैसे हुआ ये सब?"

बबूसा ने बताया।

मोना चौधरी का चेहरा कठोर हो गया। वो देवराज चौहान से बोली।

"बेला, जगमोहन को उसने तुम्हारे ही बंगले पर बंदी बना रखा है और तुम कुछ नहीं कर रहे?"

"उन्हें कुछ नहीं होगा।" देवराज चौहान ने कहा—"ऐसा करके ताशा

चाहती है कि मैं उनके लिए वहां पहुंचूं और हम मिल जाएं। मैं खुद भी ताशा से मिलना चाहता हूं, वो मेरा प्यार है, जो मुझे तलाश करता...।"

"चुप रहो।" मोना चौधरी के माथे पर बल पड़े—"मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि ताशा तुम्हारा प्यार है कि नहीं। मैं तो इतना जानती हूं कि बेला तुम्हारी पत्नी है, उसे ताशा ने बंदी क्यों बना रखा है।"

"ताशा उसके साथ कुछ भी बुरा नहीं करेगी। वो सिर्फ मुझे चाहती है। वो बहुत अच्छी है, वो...।"

"तुम बहकी-बहकी बातें कर रहे हो देवराज चौहान।" मोना चौधरी तीखे स्वर में कह उठी।

"मैं बहकी बातें नहीं कर रहा। मैं ठीक बातें कर रहा हूं कि ताशा बहुत अच्छी और नर्म दिल है, उससे...।"

"मैं बेला के बारे में पूछ रही हूं तुमने उसे वहां से निकाला क्यों नहीं?" मोना चौधरी बोली।

"राजा देव का वहां जाना ठीक नहीं है। मैंने ही इन्हें रोका था।" बबूसा कह उठा।

"क्यों?"

"रानी ताशा ये ही तो चाहती है कि राजा देव वहां पहुंचें। राजा देव, रानी ताशा के सामने पड़े कि रानी ताशा के बस में होते चले जाएंगे। ये सदूर पर भी रानी ताशा के दीवाने रहे हैं और अब भी ऐसा ही होगा। अभी इन्हें सदूर ग्रह की थोड़ी-सी बात याद आई है। ये रानी ताशा के पास जाने को मचल रहे हैं। ऐसी हालत में इनका रानी ताशा के सामने जाना ठीक नहीं। जब सदूर ग्रह का सब कुछ याद आ जाएगा तो तब राजा देव सब मामला संभाल लेंगे।"

"तुम इन बातों को मुझसे दूर रखो। मैं सिर्फ इतना जानती हूं कि ये देवराज चौहान है और इसके बंगले पर ताशा ने मेरी बहन को जबर्दस्ती बिठा रखा है। इसने मेरी बहन को बचाने के लिए कुछ किया क्यों नहीं?"

"ये खतरनाक काम है—तुम...।"

"बहुत बड़े डरपोक हो तुम।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

बबूसा के चेहरे पर सख्ती आ गई।

"मेरे लिए ऐसा मत कहो। अभी तुम मुझे जानती नहीं। मेरा मुकाबला करना आसान बात नहीं है।"

"तो फिर तुम ही उन्हें क्यों न आजाद करा लाए?"

"वहां पर सोमाथ है। मैं सोमाथ का मुकाबला नहीं कर सकता।" बबूसा ने कहा।

"ये है तुम्हारी बहादुरी?"

"सोमाथ को महापंडित ने सोच-समझकर बनाया है। ये सब महापंडित की चाल है। वो रानी ताशा का साथ दे रहा...।"

"कुएं में गया महापंडित—मैं तुम्हें...।"

"वहां पर रानी ताशा के तीन आदमी भी हैं, उनके पास जोबिना है, वो...।"

"जोबिना क्या?"

"ऐसा हथियार, जिसके द्वारा सामने वाले को पलों में राख बनाया जा सकता है। हड्डियां भी राख हो जाती हैं। अगर मुझे कहीं से जोबिना मिल जाता तो मैं सोमाथ को राख बना सकता था।" बबूसा क्रोध से बोला—"सोमाथ ही मेरे लिए परेशानी बना हुआ है। जोबिना ने भी मुझे रोक रखा है, नहीं तो...।"

"न तो तुम सोमाथ का मुकाबला कर सकते हो, न जोबिना का। ऊपर से कहते हो कि मेरा मुकाबला कर पाना आसान बात नहीं है। मुझे तो समझ नहीं आता कि इस मौके पर तुमने कुछ न किया तो कब करोगे?"

"मेरा काम राजा देव की सेवा करना है।"

"तो?" मोना चौधरी के दांत भिंचे हुए थे।

"राजा देव को मैंने सुरक्षित रखा हुआ है, राजा देव का रानी ताशा से सामना नहीं होने दिया, मैं अपनी कोशिश में सफल हूं। अब तो राजा देव को सदूर का जन्म भी याद आना शुरू हो चुका है, बहुत जल्दी राजा...।"

"तुम बातें करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते।"

बबूसा, मोना चौधरी को देखकर मुस्कराने लगा।

"मैं बेला को वहां से लेकर आती हूं, तब तुम...।"

"वहां जाने की भूल मत करना।"

"तुम मुझे डरा रहे हो?" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"नहीं। सतर्क कर रहा हूं कि वहां मत जाना। तुम वहां कुछ नहीं कर सकती और मारी जाओगी। वहां राजा देव का दोस्त जगमोहन भी तो है। वो क्यों नहीं कुछ कर सका और बंदी बन गया—सोचो।"

"तुम्हारी बातों से मैं रुकने वाली नहीं।"

"सोमाथ तुम्हें मार देगा। तुम्हारा उग्र स्वभाव तुम्हें ले डूबेगा। हालात बुरे हैं। राजा देव को सदूर ग्रह का सब याद आ रहा है। पूरा याद आते ही, फिर वो लोग हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। राजा देव तब सब कुछ संभाल लेंगे। उस वक्त का इंतजार करो।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये।" मोना चौधरी ने तीखी निगाहों से देवराज चौहान को देखा—"ये क्या करेगा। ये तो ताशा को बहुत अच्छी और नर्म दिल कह रहा है। उससे प्यार की बात कर रहा...।"

"राजा देव की ये बातें सिर्फ तब तक के लिए है, जब तक इन्हें सदूर पर हुआ सब कुछ याद नहीं आ जाता। सब कुछ याद आते ही राजा देव रानी ताशा को छोड़ने वाले नहीं। राजा देव जब क्रोध में आते हैं तो...।"

मोना चौधरी उठी और सख्त स्वर में कह उठी।

"तुम उस वक्त का इंतजार करो। मैं बेला को वहां से लेने जा रही हूं।"

"ऐसा मत करना।" बबूसा झल्लाकर बोला।

"साथ चलना चाहोगे देवराज चौहान?" मोना चौधरी ने पूछा।

"साथ?" देवराज चौहान ने मोना चौधरी को देखा—"हां—हां मैं चलूंगा। वहां पर मेरी ताशा है, मैं उसके पास...।"

"बकवास मत करो।" मोना चौधरी के दांत भिंच गए—"तुम वहां बेला को आजाद कराने जा रहे हो।"

"नगीना सुरक्षित है। ताशा उसे कुछ नहीं कहेगी। मैं अपनी प्यारी ताशा से मिलूंगा—वो मुझे देखते ही...।"

"तुम यहीं रहो।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर सख्त स्वर में कहा—"तुम्हें ताशा की पड़ी है और मैं बेला को छुड़ाने की बात कर रही हूं। मुझे यकीन नहीं हो रहा कि तुम वो ही देवराज चौहान हो?"

"ये राजा देव है। ये...।"

"तुम भी अपनी जुबान बंद रखो।" मोना चौधरी कहकर पलटी और फ्लैट के भीतर के कमरे में गई और वहां से चाकू और रिवॉल्वर निकालकर अपने कपड़े में रखे और बाहर निकल आई। चेहरे पर खतरनाक भाव नाच रहे थे।

"तुम क्या कर रही हो?" बबूसा उसे देखकर कह उठा।

"तुम्हें मालूम है कि मैं क्या करने जा रही हूं।" मोना चौधरी ने खतरनाक स्वर में कहा।

"वहां मत जाना। सोमाथ तुम्हारी जान ले लेगा।" बबूसा ने कहा।

मोना चौधरी रुकी नहीं और दरवाजा खोलकर बाहर निकलती चली गई।

"राजा देव, उसे रोको। सोमाथ उसे मार देगा।"

"मैं मोना चौधरी के साथ जाता हूं।" कहकर देवराज चौहान ने उठने की कोशिश की।

"नहीं राजा देव।" बबूसा ने देवराज चौहान का हाथ पकड़कर वापस बैठा दिया—"आप हरगिज नहीं जाएंगे।"

"ताशा, मैं ताशा के पास जाना चाहता हूं बबूसा, उसे देखना चाहता हूं उसे बांहों में...।"

"आप जल्दी रानी ताशा से मिलेंगे राजा देव। परंतु अभी नहीं, पहले आपको सब कुछ याद आ जाए।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

□ □

नगीना और धरा ने मिलकर सुबह किचन में खाना तैयार किया था। इस दौरान सोमाथ किचन के दरवाजे पर खड़ा उनकी पहरेदारी करता रहा। खाना रानी ताशा ने भी खाया, सोमारा और उन तीनों ने भी, जो जोबिना के साथ वहां मौजूद थे। धरा, नगीना, जगमोहन ने एक साथ बैठकर खाया था।

सोमाथ, रानी ताशा के पास पहुंचकर बोला।

"राजा देव अभी तक नहीं आए?"

"वो जरूर आएंगे सोमाथ।" रानी ताशा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"वो आएंगे।"

सोमाथ वहां से हटकर हॉल ड्राइंग रूम में टहलने लगा।

जोबिना वाले तीनों व्यक्ति कुछ हटकर कुर्सियों पर बैठे थे।

सोमारा ने रानी ताशा से कहा।

"राजा देव आपका चेहरा देख चुके हैं ताशा। ऐसा तो नहीं कि उन्हें सदूर पर, अपना जन्म याद आ गया हो।"

ताशा का चेहरा कठोर हो गया। उसने सोमारा को देखा।

"अगर उन्हें सब कुछ याद आ गया तो परेशानी खड़ी हो सकती है ताशा।"

"तुम्हारा कहना सही है। परंतु एक बार राजा देव मेरे सामने आ जाएं, उसके बाद सब ठीक हो जाएगा। मैं उन्हें सदूर पर ले जाऊंगी और वहां महापंडित सब ठीक कर देगा।" ताशा कह उठी—"राजा देव मेरे लिए बहुत जरूरी हैं, मैं उनके बिना रह सकती तो पृथ्वी पर उन्हें लेने न आती। राजा देव मेरे लिए ही बने हैं। ताशा के लिए। राजा देव के बिना ताशा अधूरी है और राजा देव भी तो मेरे बिना नहीं रहते। हम दोनों का मेल होना जरूरी है। बहुत जरूरी है।"

जगमोहन, नगीना को देखकर धीमे स्वर में बोला।

"हम इनका मुकाबला नहीं कर सकते। यहां से नहीं निकल सकते। हमें बाहरी सहायता की जरूरत है।"

"बाहरी सहायता?" नगीना का स्वर गम्भीर था—"शायद बाहरी सहायता भी कुछ न कर सके।"

"क्या मतलब?"

"सोमाथ को तो तुम देख ही चुके हो कि वो साधारण इंसान न होकर रोबॉट है, परंतु लगता इंसान जैसा है। सोमाथ का मुकाबला नहीं किया जा सकता। वो बहुत ज्यादा ताकत रखता है। रानी ताशा भी लड़ाई के दांव-पेंच में माहिर है। मैं अभी तक उसके वारों को समझ नहीं पाई कि उसने कैसे वार मुझ पर किए थे। इनका मुकाबला करना बेहद कठिन है।"

"और वो तीन, जो हर समय चुप रहते हैं।" धरा ने कहा—"ऐसे मौके पर वो साथ हैं तो जरूर वो भी ताकत रखते होंगे।"

जगमोहन और नगीना की नजरें मिलीं।

"देवराज चौहान इस वक्त जाने किस स्थिति में होगा।" जगमोहन बोला।

"वो, ताशा का चेहरा देख चुका है। पता नहीं उन्हें कोई बात याद आई भी है या नहीं।" नगीना ने कहा।

"ऐसे मौके पर बबूसा को सामने आना चाहिए।"

"बबूसा कहता है सोमाथ की ताकत ज्यादा है।" धरा बोली—"शायद वो सोमाथ का मुकाबला न कर सके। उसे तो देवराज चौहान की चिंता है। देवराज चौहान को वो अकेला नहीं छोड़ रहा होगा।"

"मोना चौधरी ने देवराज चौहान को होटल से हटा दिया होगा?" जगमोहन ने नगीना को देखा।

"कह नहीं सकती मिन्नो ने कुछ किया भी है या नहीं। उसने कहा तो था कि सुबह मुम्बई पहुंच जाएगी।"

तभी रानी ताशा उन्हें पास आती दिखी। वे चुप होकर ताशा को देखने लगे।

पास पहुंचकर रानी ताशा अधिकार भरे स्वर में बोली।

"राजा देव के बारे में बता दो कि वो कहां पर हैं। जब तक वो नहीं मिलेंगे, तुम लोग इसी तरह हमारी कैद में रहोगे।

"बबूसा, देवराज चौहान को लेकर कहीं गया था। हमें नहीं पता वो कहां गया है।" जगमोहन बोला।

"मेरा दिल कहता है कि तुम सबको पता है कि राजा देव कहां पर हैं।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा।

"हम नहीं जानते।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

उसी पल सोमाथ पास आकर बोला।

"रानी ताशा, आपका हुक्म हो तो मैं इनका मुंह खुलवाने की चेष्टा करूं?"

"नहीं सोमाथ।" रानी ताशा वहां से हटती कह उठी—"ये लोग राजा देव के करीबी हैं और मैं नहीं चाहती कि राजा देव इस बात से नाराज हों कि मैंने इन्हें तकलीफ पहुंचाई है।"

रानी ताशा सोफे पर जा बैठी।

"जाने राजा देव और बबूसा हमें मिलेंगे या नहीं?" सोमारा बोली।

"जरूर मिलेंगे।"

"आपको किलोरा के द्वारा भैया (महापंडित) से सम्पर्क बनाकर पूछना चाहिए कि राजा देव कहां पर हैं।"

"महापंडित को राजा देव के बारे में बताने में जरूर समस्या आ रही होगी, वरना वो बता चुका होता कि राजा देव कहां पर हैं।"

रानी ताशा के शब्द पूरे हुए ही थे कि तभी कानों में कार के इंजन की तेज आवाज पड़ी। कोई कार बंगले के भीतर आई थी।

रानी ताशा की आंखों में चमक उभरी। वो खड़े होते तेज स्वर में बोली।

"र-राजा देव आ गए। मेरा देव आ गया सोमारा!"

"बबूसा भी साथ में होगा।" सोमारा भी तुरंत खड़ी हो गई।

उसी समय कार के पोर्च में आ पहुंचने और रुकने की आवाज आई।

जगमोहन और नगीना की नजरें मिलीं।

"कौन आया हो सकता है?" धरा के चेहरे पर उलझन के भाव आ गए—"कहीं बबूसा और देवराज चौहान तो नहीं आ गए?"

सबकी निगाहें मुख्य द्वार पर जा टिकीं।

अगले ही पल दरवाजे पर मोना चौधरी दिखी। चेहरे पर कठोरता। दृढ़ इरादा। वो भीतर प्रवेश करते ही ठिठक गई और क्षणों में ही उसकी नजरें हर तरफ देखती चली गईं।

"ये यहां क्यों आ गई?" जगमोहन होंठ भींचकर कह उठा।

नगीना के चेहरे पर भी चिंता दिखी।

"तुमने अपनी बहन को यहां आने को कहा था?" धरा बोली।

जवाब में नगीना के होंठ भिंच गए थे।

"कौन हो तुम?" रानी ताशा की आंखें सिकुड़ गई थीं मोना चौधरी को देखकर।

"मोना चौधरी।" मोना चौधरी के शब्दों में कठोरता थी।

"ये मेरी बहन है।" नगीना फौरन कह उठी।

"तुम्हारी बहन?" रानी ताशा ने नगीना पर निगाह मारी फिर मोना चौधरी को देखा।

"तुम कौन हो?" मोना चौधरी आगे बढ़ती, रानी ताशा से बोली।

"मैं रानी ताशा हूं...।"

"तो तुम हो रानी ताशा जो देवराज चौहान को अपना पति कहती है।" मोना चौधरी कड़वे स्वर में कह उठी—"बहुत सुना है तेरे बारे में। माना कि तू खूबसूरत है। पर देवराज चौहान की पत्नी बेला है।"

"राजा देव सिर्फ मेरे हैं।"

"ये तमाशा छोड़ और बता कि देवराज चौहान को कब से जानती है?" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा—"क्या रिश्ता है तेरा देवराज चौहान से और किस मकसद से तू उसके पीछे पड़ी है।"

"राजा देव मेरे पति हैं।"

"बकवास मत कर। वो बेला का पति है। तुम...।"

"जुबान संभालकर बात कर।" रानी ताशा गुर्रा उठी—"देव मेरे हैं। वो सिर्फ मेरे हैं। सदूर पर हमारा मिलन हुआ था और वो मेरी गलती की वजह से सदूर से निकलकर पृथ्वी पर आ पहुंचे अब मैं उन्हें वापस ले जाने आई हूं। तुम...।"

मोना चौधरी, जगमोहन, नगीना और धरा के पास पहुंचकर बोली।

"ये लोग तुम्हारे घर में क्या कर रहे हैं। इन्हें बाहर क्यों नहीं निकाला?"

"इन्होंने हमें बंदी बना रखा है मिन्नो।" नगीना ने कहा।

"बंदी? किस दम पर?"

"ये लोग ताकतवर हैं और सोमाथ तो...।"

"उठो।" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहा—"मेरे साथ चलो। मैं तुम लोगों को लेने आई हूं।"

नगीना, जगमोहन, धरा की नजरें मिलीं।

चंद कदमों के फासले पर खड़ी रानी ताशा के चेहरे पर मुस्कान उभरी।

"ये खतरनाक है मोना चौधरी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"हम यूं ही नहीं, यहां फंस गए।"

"तुम तीनों मेरे साथ चलो।" मोना चौधरी गुर्रा उठी—"मैं देखूंगी कि ये कितने खतरनाक...।"

"तुम मेरा मुकाबला कर सकती हो?" एकाएक रानी ताशा ने कहा।

मोना चौधरी पलटकर रानी ताशा को घूरने लगी।

"तुम करोगी मेरा मुकाबला?" मोना चौधरी के दांत भिंच गए।

"आओ, करके देखो।" रानी ताशा ने व्यंग भरे स्वर में कहा।

"मिन्नो, ये खतरनाक है।" नगीना कह उठी।

"अगर तू हार गई तो?" मोना चौधरी ने सुलगते स्वर में कहा।

"तो वापस सदूर पर चली जाऊंगी, अपने देव के बिना।" रानी ताशा मुस्करा रही थी।

मोना चौधरी पलटकर, रानी ताशा की तरफ बढ़ी।

"तो पहले तेरे को देख लूं।" मोना चौधरी ने भिंचे स्वर में कहा।

तभी रानी ताशा हवा में उछली, शरीर फिरकनी की तरह घूमा और मोना चौधरी कुछ समझ पाती जूते की ठोकर उसकी कनपटी पर पड़ी और पांच कदम दूर फर्श पर जा खड़ी हुई। ठोकर लगते ही मोना चौधरी की आंखों के सामने लाल-पीले तारे उभरे और फर्श पर गिरते हुए लुढ़कती चली गई।

मोना चौधरी ने संभलने में कुछ पल लगा दिए। फिर वो उठ खड़ी हुई।

सुलगती नजरों से रानी ताशा को देखा और होंठों से गुर्राहट निकलने के साथ वो तीर की भांति रानी ताशा की तरफ दौड़ी, हवा में उछली और जब वेग के साथ वो रानी ताशा की छाती से टकराने जा रही थी तो रानी ताशा ने तुरंत अपनी जगह छोड़ दी। मोना चौधरी हवा में लहराती आगे जा गिरी, परंतु तुरंत ही संभली और पलटकर रानी ताशा को देखने लगी। इतने में ही उसे समझ आ गया था कि रानी ताशा लड़ाई के दांव-पेंचों में बहुत माहिर है। वो अब सतर्क हो गई थी। नगीना और जगमोहन के होंठ भिंचे हुए थे।

"अब क्या होगा?" धरा घबराए स्वर में कह उठी।

तभी रानी ताशा मोना चौधरी की तरफ बढ़ने लगी थी।

मोना चौधरी के चेहरे पर शिकारी चीते के जैसे भाव आ गए। वो ये समझने की चेष्टा कर रही थी रानी ताशा उस पर क्या वार करने वाली है। रानी ताशा पास पहुंची और अपना हाथ आगे बढ़ाया। मोना चौधरी ने तुरंत हाथ थामा और दूसरे हाथ घूंसा रानी ताशा के पेट में मारना चाहा, लेकिन तब तक रानी ताशा अपना वार कर चुकी थी। मोना चौधरी ने ज्योंही रानी ताशा का हाथ थामा, तो रानी ताशा ने अपने हाथ को झटका दिया। हाथ छूट गया। तब घूंसा चलाते मोना चौधरी जोरों से लड़खड़ाई कि उसी पल रानी ताशा ने किसी खिलौने की भांति, दोनों हाथों मोना चौधरी को हवा में उठाया और दूर उछाल दिया। ये सब कुछ तीन पलों में ही हो गया। परंतु मोना चौधरी खुद को संभाल चुकी थी, इससे पहले कि वो फर्श से टकराती हाथ और पैरों से खुद को बचाया और संभलकर खड़ी हो गई। चेहरा क्रोध से लाल-सुर्ख हो गया था। जबकि रानी ताशा के चेहरे पर शांत भाव फैले थे। उसी पल मोना चौधरी दांत भींचे रानी ताशा की तरफ दौड़ पड़ी। दौड़ी-दौड़ी और जब रानी ताशा से टकराने जा रही थी तो उसी पल खुद को नीचे गिरा लिया। मोना चौधरी का इरादा रानी ताशा की टांगों को पकड़कर नीचे गिरा देने का था कि वार खाली गया। रानी ताशा उछलकर चार कदम दूर जा खड़ी हुई थी। मोना चौधरी आगे खिसकती चली गई। थमी और तुरंत खड़ी होकर रानी ताशा को देखने लगी।

"तुम अभी तक मुझे छू भी नहीं पाई।" रानी ताशा ने कहा।

"सही में।" मोना चौधरी अजीब-से स्वर में कह उठी—"तुम तो बहुत काबिल लगती हो। कहां से सीखा ये सब?"

"राजा देव ने मुकाबला करना सिखाया था।" रानी ताशा ने सामान्य स्वर में कहा।

"मतलब कि देवराज चौहान ने?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"हां। तब राजा देव मुझे बहुत प्यार करते थे। सदूर की बातें हैं ये सब। वो चाहते थे कि उनकी रानी होने के साथ-साथ मैं हर काम में बेहतरीन बनूं

तो उन्होंने मुझे मुकाबला करना सिखाया। सदूर पर सिर्फ राजा देव ही थे, जिनका मैं मुकाबला नहीं कर सकती थी। बाकी मेरे से जीत नहीं पाते थे।" रानी ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे—"राजा देव मुझे बहुत चाहते थे। वो मुझे बहुत प्यार करते थे परंतु मेरे से भूल हो गई। मुझे मेरा देव लौटा दो। अब भूल नहीं करूंगी। मैं राजा देव के प्यार को ठीक से समझ नहीं पाई थी। नादानी कर दी मैंने। पर अब ऐसा नहीं होगा। मैं राजा देव से अपनी गलती की माफी मांग लूंगी। मैं भी उन्हें बहुत प्यार करती हूं तभी तो सदूर से पृथ्वी पर आई हूं उन्हें लेने। मेरे देव को मुझे लौटा दो। क्यों छिपा रखा है उन्हें मेरे से। एक बार देव का चेहरा तो दिखा दो। अभी तक उन्हें देख भी नहीं पाई हूं कि वो वैसे ही हैं या बदले से दिखते हैं। देव कहां पर हैं, मुझे बता दो।" आंखों से आंसू निकलकर गालों पर आ गए थे—"अब मैं देव के बिना नहीं रह सकती। कई जन्म मैंने देव के बिना गुजारे हैं, पर अब और सहन नहीं होता। मेरे देव को मुझे लौटा दो।"

मोना चौधरी एकटक रानी ताशा को देखे जा रही थी।

उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। होंठ कांप रहे थे।

"देव के बिना मेरा जीवन नर्क जैसा है। उनके मिल जाने की आशा के सहारे ही अब तक जी रही हूं। अगर महापंडित ने मुझे बताया न होता कि राजा देव मुझे दोबारा मिलेंगे तो, मैंने हमेशा के लिए जीवन त्याग देना था। अपनी उस भूल के बाद मैंने कभी किसी मर्द का साथ हासिल नहीं किया। महापंडित मेरे जन्म करवाता रहा और मैं अपना जीवन राजा देव की याद में ही बिताती रही। अब और इंतजार नहीं होता। मेरा देव, मुझे लौटा दो।" वो रो रही थी।

मोना चौधरी एकाएक गम्भीर भाव में रानी ताशा की तरफ बढ़ी।

रानी ताशा आंसुओं भरी निगाहों से मोना चौधरी को देख रही थी। नगीना और जगमोहन, मोना चौधरी को इस तरह बढ़ते पाकर सतर्क हो गए थे।

'ये कुछ गड़बड़ करने वाली है।' जगमोहन बड़बड़ा उठा।

"क्या कहा?" नगीना के होंठों से निकला।

परंतु जगमोहन की निगाह मोना चौधरी पर थी और जगमोहन का खयाल ठीक निकला। रानी ताशा के पास पहुंचते ही मोना चौधरी ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाली और रानी ताशा के पेट से लगा दी। मोना चौधरी के चेहरे पर खतरनाक भाव नाच उठे थे। रानी ताशा ने आंसू साफ करते हुए पूछा।

"ये क्या कर रही हो?"

"मेरे सामने आंसू बहाने से तुम्हारा काम नहीं होने वाला।" मोना चौधरी कह उठी—"तुमने मेरी बहन को बहुत परेशान कर रखा है और देवराज चौहान की हालत भी मुझे ठीक नहीं लगी। इन सबकी वजह तुम हो और...।"

"ये क्या कह रही हो।" रानी ताशा कह उठी।

"अब तुमने मेरी मर्जी के खिलाफ कदम उठाया तो मारी जाओगी।"

रानी ताशा ने पेट से लगी रिवॉल्वर को देखा फिर मोना चौधरी को।

"तुम हिली तो मैं तुम्हें मार दूंगी।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"पर मैंने तुम्हें ऐसा क्या कह दिया जो तुम मुझे दुश्मन मान बैठी।" रानी ताशा ने भीगे स्वर में कहा—"मैं तो सिर्फ अपने राजा देव को वापस मांग रही हूं। मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा।"

"देवराज चौहान मेरी बहन का पति है।"

"नहीं, राजा देव सिर्फ मेरे हैं, वो भी मेरे बिना नहीं रह सकते...।"

"एक गोली तेरे अंदर जाएगी और जान बाहर निकल आएगी। खेल खत्म हो जाएगा तुम्हारा।" मोना चौधरी ने शब्दों को चबाकर कहा—"एक मौका देती हूं तेरे को, चुपचाप यहां से निकल जा और फिर कभी इस रास्ते पर मत आना। फैसला तेरे हाथ में है। नाम सुना है कभी मेरा—मोना चौधरी।"

"नहीं सुना।"

"तो अब सुन लिया।" मोना चौधरी का स्वर खतरनाक था—"दूसरे ग्रह से आने वाली बातों को रहने दे। मैं नहीं जानती कि तेरी करनी के पीछे तेरा मकसद क्या है, पर मैं तुझे जरा भी पसंद नहीं करती। दोबारा नहीं देखना चाहती तुझे। बोल, सीधे-सीधे यहां से निकलती है या मरना चाहती है।"

तभी धरा धीमे स्वर में कह उठी।

"हमें मोना चौधरी की सहायता करनी चाहिए।"

"मिन्नो बहुत बड़ी गलती कर चुकी है ऐसा करके।" नगीना ने परेशान नजरों से सोमाथ को देखा जो अपनी जगह पर शांत खड़ा मोना चौधरी और रानी ताशा को देख रहा था।

"तू मेरी जान लेना चाहती है।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा।

"अगर तूने मेरी बात नहीं मानी तो...।"

"मेरा भरोसा कर, अपने देव को लेकर मैं यहां से हमेशा-हमेशा के लिए चली जाऊंगी।" रानी ताशा ने कहा।

"तो तूने मरने का मन बना लिया है।" मोना चौधरी के दांत भिंच गए।

रानी ताशा ने सोमाथ को देखकर सामान्य स्वर में कहा।

"इसे समझा सोमाथ। इसके मन में मेरे लिए जहर भरा है। ये मुझे मारना चाहती है।"

उसी पल सोमाथ, उनकी तरफ बढ़ने लगा।

"वहीं रुक जा।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

परंतु सोमाथ नहीं रुका।

मोना चौधरी ने रिवॉल्वर उसकी तरफ की और फायर कर दिया।
तेज आवाज के साथ गोली सोमाथ के माथे के बीचोबीच जा लगी।
सोमाथ के कदम थम गए।
ये देखकर जगमोहन के होंठ व्याकुल भाव में भिंच गए।
नगीना परेशान दिखने लगी थी।
"क्या इस बार ये मर जाएगा?" धरा कह उठी।
तभी मोना चौधरी ने महसूस किया जैसे सोमाथ अपने भीतर ही भीतर जोर लगा रहा हो। चंद पल उसकी ये हालत रही कि तभी माथे से गोली बाहर आकर, फर्श पर आ गिरी। मोना चौधरी ने गोली को देखा तो उसकी आंखें हैरानी से फैल गईं। फिर जब सोमाथ के माथे पर निगाह पड़ी तो, वहां पर गोली के निशान को गायब पाया। माथा पूरी तरह सामान्य हो चुका था।
मोना चौधरी हक्की-बक्की रह गई।
सोमाथ पुनः मोना चौधरी की तरफ बढ़ने लगा।
मोना चौधरी रानी ताशा को तो जैसे भूल ही गई थी। अजीब-से हाल में फंसी मोना चौधरी ने हाथ को सोमाथ की तरफ उठाया और एक के बाद एक फायर करती चली गई। चार गोलियां सोमाथ के पेट और छाती पर लगी। वो पुनः आगे बढ़ता थम गया। मोना चौधरी की निगाह एकटक उस पर थी। उसे सोमाथ के नीचे गिरकर मर जाने का इंतजार था परंतु अगले ही पल पहले की तरह, गोलियां एक-एक करके शरीर से बाहर गिरने लगीं और गोली वाली जगहें, पुनः सामान्य होते पाकर, मोना चौधरी ठगी-सी रह गई।
"ये इंसान नहीं, रोबॉट जैसा है।" जगमोहन ने ऊंचे स्वर में कहा—"गोलियों से इसका कुछ नहीं बिगड़ता।"
मोना चौधरी उसी हाल में सोमाथ को देखे जा रही थी।
सोमाथ पुनः मोना चौधरी की तरफ बढ़ा। फासला बहुत कम, बाकी था।
मोना चौधरी को जैसे होश आया, वो फुर्ती से पीछे हटने लगी और रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा करके, सोमाथ की आंख का निशान लेते हुए एक साथ दो फायर कर दिए। परंतु दोनों गोलियां आंख से चूक गईं। एक माथे के बीच लगी, दूसरी माथे के किनारे पर।
सोमाथ पुनः थम गया। चंद पल बीते कि एक-एक करके दोनों गोलियां फर्श पर आ गिरीं और क्षतिग्रस्त हो गया उसका चेहरा। देखते-ही-देखते सामान्य होता चला गया। सोमाथ मोना चौधरी को देखकर हल्के-से मुस्कराया।
"तुम मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकतीं।"
"तुम—तुम रोबॉट हो? कैसे रोबॉट हो, रोबॉट ऐसा नहीं होता, वो...।"
"मैं भी तुम्हारी तरह इंसान हूं।" सोमाथ आगे बढ़ा।

"तुम इंसान नहीं हो। तुम कुछ खास हो। बहुत ही खास, तुम...।"

तभी सोमाथ ने मोना चौधरी को पकड़ने के लिए झपटा मारा। मोना चौधरी अपनी जगह से उछली और उस सोफे पर जा गिरी, सोमारा बैठी थीं सोमारा की तेज चीख गूंजी और सोफा पीछे को पलटता चला गया। मोना चौधरी गिरते ही फुर्ती से खड़ी हो गई। रिवॉल्वर हाथ से छूट गई थी।

सोमारा ने अपने को संभाला और उठते हुए बोली।

"ताशा। इस पर जोबिना चला दो।"

जोबिना चलाने वाले तीनों व्यक्ति हुक्म के इंतजार में शांत खड़े थे।

"नहीं सोमारा। ये राजा देव की पत्नी की बहन है पृथ्वी ग्रह पर।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा—"इनकी जान लेकर मैं राजा देव को दुखी नहीं करना चाहती। परंतु ये सब मेरे साथ सदूर पर जाएंगे। महापंडित इनके दिमागों की खराबी निकाल देगा और सदूर पर ये मेरे सेवकों के रूप में काम करेंगे और राजा देव भी खुश रहेंगे कि ये लोग उनके साथ ही हैं। मैं राजा देव के लिए कुछ भी कर सकती हूं। वो मेरा देव है। मेरा प्यारा देव।" रानी ताशा की आंखें भर आईं।

सोमाथ पुनः मोना चौधरी की तरफ बढ़ा।

मोना चौधरी सतर्क हो गई और जूते में फंसा चाकू निकाल लिया।

"कोई फायदा नहीं होगा। सोमाथ को इन हथियारों के वारों से कुछ फर्क नहीं पड़ेगा।" जगमोहन बोला।

"हमें मोना चौधरी की सहायता करनी चाहिए।" धरा कह उठी।

"जाओ, उसकी सहायता करो।" जगमोहन ने तीखी नजरों से धरा को देखा।

"मैं—मैं अकेली क्यों—तुम दोनों भी साथ चलो। वैसे भी मुझे लड़ाई-झगड़ा कहां आता है।" धरा बोली।

"चुपचाप बैठी रहो।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला—"सोमाथ का मुकाबला नहीं किया जा सकता।"

"वो मोना चौधरी की जान ले लेगा।"

"नहीं लेगा। तुमने सुना नहीं कि ताशा हमें सदूर पर ले जाकर अपना सेवक बना लेना चाहती है।"

तभी नगीना उठी और तेजी से आगे बढ़ती सोमाथ से कह उठी।

"ठहरो सोमाथ।"

परंतु सोमाथ तो सिर्फ रानी ताशा का हुक्म मानना जानता था। वो मोना चौधरी की तरफ बढ़ता रहा।

चाकू थामे मोना चौधरी, सोमाथ पर नजर रखो, पीछे होती रही।

"सोमाथ को रोको ताशा।" नगीना कह उठी—"मैं मिन्नो से बात करती हूं।"

रानी ताशा ने मुस्कराकर नगीना को देखा, कहा कुछ नहीं।

नगीना, रानी ताशा के पास पहुंचकर गुस्से से बोली।

"तुम सोमाथ को रुकने के लिए क्यों नहीं कहती?"

"राजा देव को मुझे वापस दे दो। मैं चली जाऊंगी।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा।

"मैं नहीं जानती कि देवराज चौहान कहां है।"

"मतलब कि तुम्हें कोई एतराज नहीं कि अगर मैं राजा देव को सदूर पर ले जाऊं।"

नगीना ने होंठ भींचकर रानी ताशा को देखा फिर कह उठी।

"देवराज चौहान मेरा पति है। वो तुम्हारा नहीं है।" स्वर में कठोरता भर आई थी।

तभी मोना चौधरी ने चाकू थामे सोमाथ पर छलांग लगा दी। वो सीधा सोमाथ से आ टकराई और चाकू का निशान, दिल वाली जगह थी। चाकू का छः इंच का फल सोमाथ के दिल वाली जगह पर धंसता चला गया।

सोमाथ ने फुर्ती से मोना चौधरी को दोनों बांहों में भर लिया।

मोना चौधरी छटपटाई। परंतु सोमाथ की पकड़ तो लोहे की बांहों से भी मजबूत थी। चाकू का पूरा फल, मूठ तक सोमाथ के दिल वाले हिस्से में धंसा था और सोमाथ बेपरवाह-सा, मोना चौधरी को बांहों के घेरे में, अपनी छाती से सटाए हुए था। खुद को आजाद कराने के लिए मोना चौधरी हाथ-पांव मार रही थी। तभी मोना चौधरी को एहसास हुआ कि सोमाथ की बांहों का शिकंजा, उसके शरीर के गिर्द कसता जा रहा है। उसने छूटने के लिए पुनः पूरी ताकत लगा दी, लेकिन कोई फायदा नहीं होना था। मोना चौधरी बेबस होकर रह गई।

"वो उसे मार देगा।" जगमोहन चीख उठा। उसने कसते बांहों के शिकंजे को महसूस कर लिया था।

नगीना, रानी ताशा से कह उठी।

"मिन्नों की जान क्यों लेती हो?"

"सोमाथ।" रानी ताशा ने शांत स्वर में कहा—"इसे छोड़ दो।"

अगले ही पल सोमाथ ने अपनी बांह खोल दी।

मोना चौधरी 'धड़ाम' से नीचे जा गिरी और गहरी-गहरी सांसें लेने लगीं।

"मिन्नो।" नगीना तुरंत पास पहुंची—"तुम ठीक तो हो?"

"हां।" मोना चौधरी सांसों पर काबू पा रही थी—"ये कैसा इंसान है। गोलियां इस पर असर नहीं करतीं। चाकू दिल के हिस्से में धंसा है, परंतु इसे कोई फर्क नहीं पड़ा। कैसा रोबॉट है ये?"

सोमाथ ने दिल वाले हिस्से में धंसे चाकू को निकालकर एक तरफ फेंक

दिया। चंद पलों में ही छाती पर सुरंग की तरह दिख रहा सूराख खुद-ब-खुद ही भर गया और वो जगह सामान्य दिखने लगी।

"ये—ये सब कैसे कर लेता है। गोलियां कैसे बाहर आ गिरती हैं। टूट-फूट चुका शरीर ठीक कैसे हो जाता है।" मोना चौधरी बोली।

"महापंडित का कमाल है ये।" रानी ताशा कह उठी—"महापंडित ने इसे ऐसा ही बनाया है। महापंडित कहता है कि सोमाथ मर नहीं सकता। इसकी ताकत का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। ये बात तुम देख भी चुकी हो। समझदारी इसी में है कि मेरा मुकाबला मत करो। जो मैं कहती हूं वो मान लो। उसी में तुम सबका भला है। इसे तो मैं सदूर पर ले जाकर, अपनी खास सेविका बनाऊंगी। मेरे पैर धोया करेगी ये।"

मोना चौधरी ने रानी ताशा को देखा। दांत भिंच गए थे।

"खामोश रहो।" नगीना धीमे स्वर में बोली—"हम इनका मुकाबला नहीं कर सकते।"

"तो क्या ये सोचकर हथियार डाल दें।" मोना चौधरी ने सुलगते स्वर में कहा।

"हमारे पास ऐसा कोई हथियार है ही नहीं, जो इन पर असर करे।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"ये लोग हर तरफ से हम पर भारी हैं। चुप रहो और हालातों के हिसाब से चलो, हम इन्हें...।"

"लेकिन कब तक हम...।" मोना चौधरी ने कहना चाहा।

"तेरे को बोला है मिन्नो कि अभी चुप कर जा। तेरे को यहां आना ही नहीं चाहिए था।" नगीना ने गहरी सांस ली—"मेरे खयाल में अब कुछ हो सकता है तो वो बबूसा ही कर सकता है।"

"बबूसा?"

"एक वो ही है जो हालातों को हमसे बेहतर समझता है, परंतु हमने ठीक से उस पर विश्वास नहीं किया। वो ठीक था। तुम ही सोचो कि इस हाल में, देवराज चौहान रानी ताशा के हाथ लग जाता है तो क्या होगा? क्या हम इन्हें रोक सकते हैं कि देवराज चौहान को न ले जाएं। हम इनके आगे बेबस हैं। बबूसा कहता था कि देवराज चौहान को अगर सदूर के जन्म की याद आ जाती है तो...।"

"उसे याद आ गया है।" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

"क्या?" नगीना चौंकी।

"देवराज चौहान को याद आ गया है, परंतु मुझे उसकी हालत ठीक नहीं लगी। दीवानों जैसा हाल देखा मैंने उसका। वो ताशा को याद कर रहा है। उससे मिलना चाहता है, उसे प्यार करना चाहता है।" मोना चौधरी बोली।

"ऐसा देवराज चौहान ने कहा?" नगीना चिंतित हो उठी।

"हां। देवराज चौहान ने कहा। बबूसा उसे संभाले हुए है। परंतु बबूसा का कहना है कि अभी उसे पूरी बातें याद नहीं आई हैं। सब कुछ याद आते ही देवराज चौहान सब ठीक कर लेगा।"

नगीना, मोना चौधरी को देखने लगी। कुछ चुप्पी के बाद, रानी ताशा पर निगाह मारकर, नगीना धीमे स्वर में बोली।

"देवराज चौहान कहां है?"

"मेरे फ्लैट पर। बबूसा भी वहीं है।"

"वो सोमारा है।" नगीना ने सोमारा पर निगाह मारकर कहा—"महापंडित की बहन और कहती है बबूसा हर जन्म में उसका पति बनता है। वो बबूसा से मिलने के इंतजार में बैठी है।"

"बबूसा जानता है कि सोमारा भी यहां है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"शायद नहीं जानता।"

"तेरे को सदूर ग्रह की बातों पर भरोसा है?"

"पहले नहीं था। परंतु अब होता जा रहा है। पृथ्वी वाले सोमाथ जैसा इंसान (रोबॉट) नहीं बना सकते।"

मोना चौधरी ने कठोर निगाहों से कुछ दूर खड़ी, रानी ताशा को देखा।

"पर मुझे सदूर ग्रह की बातों पर विश्वास क्यों नहीं आता?"

"मुझे तो खुद नहीं समझ आ रहा मिन्नो कि ये क्या हो रहा है। अचानक ही ये सब...।"

"मैं रानी ताशा को कामयाब नहीं होने दूंगी कि वो देवराज चौहान को ले जाए।"

"कुछ गलत मत कर बैठना। इनका कोई भरोसा नहीं कि क्या कर दें। अभी तो हमें इसलिए कुछ नहीं कह रहे कि हम देवराज चौहान के करीबी हैं। ज्यादा कुछ किया तो इनके विचार बदल सकते हैं हमारे बारे में। देवराज चौहान को सब कुछ याद आ लेने दो। बबूसा ठीक ही कहता होगा कि तब देवराज चौहान सब कुछ संभाल लेगा। हमें आने वाले वक्त का इंतजार करना चाहिए।" नगीना ने धीमे किंतु गम्भीर स्वर में कहा।

"और वो प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज—वो...।"

"मेरे खयाल में वो इस मामले में अब कुछ नहीं कर सकता। मैंने तो उसे इस काम पर इसलिए लगाया था कि रानी ताशा कोई फ्रॉड है और वो उसकी असलियत जान सके। परंतु अब हालात दूसरे हो चुके हैं। इस काम में अर्जुन भारद्वाज की जरूरत नहीं रही। इसे अब बबूसा और देवराज चौहान ही संभाल सकते हैं।" नगीना ने व्याकुल स्वर में कहा।

"मुझे चलना चाहिए...।" मोना चौधरी ने उठना चाहा।
"चलना?" नगीना के होंठों से निकला।
"मुझे देवराज चौहान और बबूसा के पास जाना होगा। उन्हें यहां के हालात...।"
"रानी ताशा अगर हमें जाने देती तो हम कब के यहां से जा चुके होते। तुम अब नहीं जा सकोगी। इनका मुकाबला करके तुम देख ही चुकी हो कि इन्हें जीता नहीं जा सकता। जैसे यहां खामोशी से बैठे हैं, वैसे तुम भी...।"
मोना चौधरी उसी पल उठी और रानी ताशा से बोली।
"मैं जा रही हूं यहां से।"
"तुम जानती हो राजा देव कहां हैं?" रानी ताशा ने पूछा।
"नहीं।"
"तो तुम कहीं नहीं जाओगी। यहीं रहोगी। देर-सबेर में राजा देव यहीं आ जाएंगे।"
"मैं तुम्हारे लिए देवराज चौहान की तलाश करूंगी।" एकाएक मोना चौधरी मुस्कराकर कह उठा।
"तुम राजा देव की पत्नी की बहन हो। तुम मेरे लिए राजा देव को तलाश क्यों करोगी।" रानी ताशा ने तीखे स्वर में कहा—"झूठ को पहचानना मुझे आता है। तुम यहीं रहोगी, अपनी बहन के पास।"
मोना चौधरी ने रानी ताशा को घूरा। नगीना, मोना चौधरी की कलाई पकड़े जगमोहन, धरा की तरफ ले जाते बोली।
"अपने पर काबू रखो। कुछ मत कहना। चुप रहो। आने वाले वक्त का इंतजार करो कि शायद सब ठीक हो जाए। हम इनका मुकाबला नहीं कर सकते। कोशिश की तो ये हमारी जान भी ले लेंगे।"

▭ ▭

रात के दस बज गए थे।
बबूसा और देवराज चौहान, मोना चौधरी के फ्लैट के बेडरूम में मौजूद थे। दिन में जो घर में थोड़ा-बहुत खाने को पड़ा था, वो खाकर काम चला लिया था। चूंकि मुम्बई के फ्लैट में मोना चौधरी स्थाई रूप से रहती नहीं थी इस कारण खाने-पीने का सामान ज्यादा नहीं था। समस्या तो रात को आई कि खाने को कुछ नहीं था और मोना चौधरी भी नहीं लौटी थी। दोनों को भूख लगी थी। देवराज चौहान ने बबूसा से कहा।
"तुम बाजार से खाने को ले आओ।"
"मैं आपको छोड़कर नहीं जाऊंगा।" बबूसा ने इंकार में सिर हिलाया।
"क्यों?"

"कहीं आप रानी ताशा से मिलने न चले जाएं।"

"मैं यहीं रहूंगा। तुम अपने लिए कारू (शराब) भी ले आना।" देवराज चौहान ने कहा।

"इन हालातों में मैं कारू नहीं पिऊंगा। मदहोशी आ गई तो आपका ध्यान कैसे रखूंगा?" बबूसा बोला।

"मुझे भूख लगी है।"

बबूसा खामोश रहा।

"हम दोनों बाजार चलते हैं। खाने को कुछ ले आते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"पीछे से वो मोना चौधरी आ गई तो? उसे घर में कोई नहीं मिलेगा तो वो...।"

"दरवाजा खुला छोड़ देते हैं। हम भी जल्दी लौट आएंगे।"

बबूसा ने सोच भरे अंदाज में सिर हिलाया।

"ये ठीक रहेगा राजा देव।"

"तुम पहले से बहुत बदल गए हो बबूसा। सदूर पर तुम ऐसे तो नहीं थे।" देवराज चौहान बोला।

"मैं नहीं बदला राजा देव। मैं वो ही बबूसा हूं परंतु यहां हालात बदले पड़े हैं। रानी ताशा अपने किए पर पर्दा डालना चाहती है और आपको पहले की तरह पा लेना चाहती है। वो आपको सदूर पर ले जाना चाहती...।"

"ताशा।" देवराज चौहान ने गहरी सांस लेकर कहा—"मेरा मन नहीं लग रहा ताशा के बिना।"

बबूसा, गहरी निगाहों से देवराज चौहान को देखने लगा। वो महसूस कर चुका था कि जब से राजा देव को सदूर का जन्म याद आना शुरू हुआ है, तब से राजा देव में बहुत बदलाव आ गया है। उनकी बातों में फर्क आ गया है। वो ताशा के प्रति नर्म विचार रखते हैं। परंतु बबूसा जानता था कि सब कुछ याद आने पर राजा देव ऐसे नहीं रहेंगे। वो फिर पहले जैसे हो जाएंगे। राजा देव को झूठ और धोखे से नफरत थी। जब उन्हें रानी ताशा के दिए धोखे की याद आएगी तो तब मंजर कुछ और ही होगा। "अपना ध्यान सदूर की तरफ लगाइए राजा देव। वहां की यादों के करीब जाने की कोशिश कीजिए। सब कुछ याद आते ही मैं आपको रानी ताशा के पास ले चलूंगा। तब जो आप कहेंगे, वैसा ही होगा।" बबूसा ने देवराज चौहान से कहा।

उसके बाद बबूसा और देवराज चौहान बाजार से खाना ले आए। बबूसा देवराज चौहान पर कड़ी नजर रख रहा था। देवराज चौहान ने बबूसा से पुनः कहा कि वो कारू ले ले, परंतु बबूसा ने सख्ती से इंकार कर दिया।

फ्लैट पर पहुंचे तो मोना चौधरी को वापस आया नहीं पाया।

दोनों ने खाना खाया।

"मोना चौधरी अभी तक क्यों नहीं आई?" एकाएक देवराज चौहान कह उठा।

"वो नहीं आएगी। रानी ताशा ने उसे भी कैद कर लिया होगा।" बबूसा का स्वर गम्भीर था—"वो चाहती है कि उन सब की खातिर आप वहां जाएं और रानी ताशा से आपका सामना हो जाए। परंतु मैं उसकी चाल सफल नहीं होने दूंगा।"

"ताशा कितनी अच्छी है बबूसा। तुम मुझे जाने नहीं दे रहे, वरना मैं तो कब का चला गया...।"

"अपने पर काबू रखिए राजा देव।" बबूसा ने होंठ भींचकर कहा—"रानी ताशा के सामने तो आपने जाना ही है। परंतु अभी वो वक्त नहीं आया। जब तक रानी ताशा के पास जोबिना चलाने वाले लोग हैं या सोमाथ है तब तक उसे जीता नहीं जा सकता।"

"मैंने रानी ताशा को जीतना क्यों है। मैं तो उससे प्यार करता...।"

"अभी आप हकीकत से अंजान हैं। रानी ताशा का प्यार, आपके जैसा नहीं है। आप दिल के अच्छे हैं, परंतु रानी ताशा का मन चालों से भरा हुआ है। वो प्यार भी करती है तो शतरंज की चालों पर। वो भरोसे के काबिल नहीं। रानी ताशा के बारे में सदूर ग्रह की सारी बातें आपको याद आएंगी तो तब आप सब कुछ समझ जाएंगे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

वक्त बीतने लगा। रात का एक बज चुका था। देवराज चौहान बेड पर आंखें बंद किए लेटा था। बबूसा ने नाइट बल्ब ऑन कर दिया था कि देवराज चौहान सो सके, जबकि खुद वो बेड के दूसरे हिस्से पर बैठा था। उसका नींद लेने का इरादा नहीं लग रहा था। उसे डर था कि कहीं राजा देव, रानी ताशा के पास जाने का प्रयास न करें। बंद आंखों के पीछे, देवराज चौहान को ताशा ही नजर आ रही थी। हंसती-मुस्कराती, कभी उसके पास आती तो कभी दूर जाती। ताशा की अठखेलियां उसे बहुत भली लग रही थीं। ताशा उसका प्यार थी, उसका जीवन थी। उसका सब कुछ थी। ताशा की यादों में फंसे, एकाएक देवराज चौहान की बंद आंखों के पीछे सफेद चमकते सितारे नाचने लगे। कुछ पल ये ही आलम रहा, उन सितारों के बीच भी उसे जैसे ताशा का मुस्कराता चेहरा नजर आ रहा था। फिर एकाएक ही सदूर ग्रह के जन्म की यादें उसके मस्तिष्क में अपनी जगह बनाने लगीं। यादों की बारात पुनः चल पड़ी...।

ताशा और देव की मुलाकातें हर रोज होने लगी। बग्गी में वो जंगल में जाते और घंटों बैठे वो बातें करते रहते। देव, ताशा का चेहरा निहारता रहता। ताशा मुंह फुलाकर कहती।

"तुम हमेशा मुझे देखते ही क्यों रहते हो?"

"तुम इतनी सुंदर क्यों हो?"

"हूं तो हूं—तुम्हें क्या?"

"तुम मेरे लिए सुंदर बनी हो। तुम्हें देखते रहने का मन करता है।" देव ने प्यार से कहा—"तुमने मेरा चैन छीन लिया।"

"जैसे तुमने मेरा चैन नहीं छीना।" ताशा मुस्कराकर बोली—"हर रोज पिता मुझे सुबह उठाता है, नहीं तो पहले मैं ही उठ जाया करती थी। रात को नींद कहां आती है। तुम ही तो आंखों में बसे रहते हो।"

"सच ताशा।"

"तो क्या मैं झूठ बोलूंगी। जब से तुमसे मिली हूं कुछ होश ही नहीं रहता। पिता ने आज पूछा था कि क्या हो गया है तुझे, पहले से आदतें कुछ बदल आई हैं। अब खोई-खोई सी रहती हो।" ताशा ने बताया।

"तो तुमने क्या कहा?"

"मैं क्या कहती। तुम्हारे बारे में थोड़े न बता सकती थी।"

"रात को मेरी आंखों में भी नींद की जगह, तुम आ जाती हो। बस तुम्हें देखता हूं। तुमसे बातें करने लगता हूं, उसके बाद कब नींद आती है, पता नहीं चलता। सुबह उठता हूं तो लगता है जैसे रात भर जागता रहा। आंखें खुलते ही तुम्हारा चेहरा सामने आ जाता है। फिर तो मन में एक ही बात होती है कि तुमसे जल्दी मिलूं।"

"एक बात तो बताओ। तुम रोज ही मुझसे मिलते हो। सारा दिन मेरे पास रहते हो। काम क्या करते हो?"

"काम होता रहता है।" देव मुस्कराया।

"कैसे?"

"सेवक करते हैं।"

"इसका मतलब तुम्हारे पास धातु बहुत ज्यादा है जो तुमने सेवक रखे हुए हैं।" ताशा कह उठी।

"मेरे लिए सबसे जरूरी काम है तुमसे मिलना। तुम्हें देखना। तुमसे बातें करना।" देव ने ताशा का हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसके खूबसूरत चेहरे को निहारता बोला—"जीवन में अब तुम मेरे लिए सबसे जरूरी हो।"

ताशा खिलखिलाकर हंस पड़ी फिर बोली।

"तुम तो दीवाने हो गए हो।"

"प्यार में इंसान दीवाना ही होता है। जो दीवाना न हो जाए, वो प्यार कैसा।" देव ने प्यार भरे स्वर में कहा।

"वो तुम्हारा कोचवान दिन भर खड़ा रहता है जंगल के किनारे। क्या वो इंतजार से तंग नहीं आ जाता?"

"उसका नाम बबूसा है। वो मेरा सबसे अच्छा और विश्वसनीय सेवक है।" देव ने कहा—"मेरी खुशी में ही उसे खुशी मिलती है। वो खुश है कि मुझे कोई लड़की पसंद आ गई है। लड़की मतलब कि तुम...।" देव ने ताशा का गाल थपथपाया।

ताशा, देव को देखने लगी। देव, ताशा को देखता रहा।

"पहली बार जाना है मैंने कि प्यार ऐसा होता है। प्यार में पागल कैसे होते हैं, तुम्हें देख रही हूं।"

"क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगता कि मैं तुम्हारा दीवाना हो गया हूं।"

"बहुत अच्छा लगता है। एक नया एहसास होता है मुझे। वक्त कैसे बीतता है, पता ही नहीं चलता।"

उस दिन वापस जाते वक्त बबूसा ने देव से कहा।

"मैं आपसे नाराज हूं राजा देव।"

"क्यों बबूसा?"

"आपने किले के कामों की तरफ ध्यान देना छोड़ दिया है। जनता की समस्याओं को भी नहीं सुलझा रहे। हर रोज आप ताशा से मिलने चले जाते हैं और पूरा दिन वहीं बिता देते हैं।" बबूसा ने बग्गी दौड़ाते कहा।

"कर्मचारी सब काम पूरे करते रहते हैं बबूसा।" देव ने कहा।

"आपके और कर्मचारियों के काम करने में फर्क है। कर्मचारियों पर आपकी भी नजर होनी चाहिए। पहले आप कर्मचारियों से पूछते थे कि दिन भर में उन्होंने क्या-क्या किया? जनता की शिकायतें क्या थीं, समस्याएं कैसे हल कीं। परंतु जब से आपने ताशा से मिलना शुरू किया है, कर्मचारियों से पूछताछ करनी छोड़ रखी है। किले के काम भी कर्मचारी ही पूरे करते हैं। इस हद तक आपका दीवाना हो जाना ठीक नहीं राजा देव। आप सदूर के राजा हैं।"

"ताशा के अलावा मुझे किसी और बात का खयाल ही नहीं आता।" देव मुस्कराकर बोला।

"ये गलत बात है।" बबूसा ने नाराजगी से कहा।

"ठीक है। तुम्हारी बात मानी। आज से मैं किले के और जनता के कामों पर नजर रखूंगा।"

किले पर पहुंचकर देव ने ताशा की यादों में गुम न होते हुए, कर्मचारियों को तलब किया और उनके कामों का लेखा-जोखा देखने-पूछने लगा। बबूसा बराबर साथ रहा। कई काम बिगड़े हुए दिखे तो उन्हें संवारा। निर्देश दिए कर्मचारियों को। रात के खाने तक देव इन्हीं कामों में व्यस्त रहा। बबूसा खुश था कि राजा देव ने लापरवाही छोड़ दी है। इसी तरह दिन तेजी से बीतते चले गए। सुबह ताशा से मिलना और शाम को कर्मचारियों के कामों को देखना। परंतु समय का मौका

मिलते ही ताशा उसके मस्तिष्क में सवार हो जाती थी। वो जितना ताशा से मिलता, उससे मिलने की ललक उतनी ही बढ़ती जाती थी। ताशा उसके रोम-रोम में बस गई थी। उस दिन देव ताशा से मिलने जाने की तैयारी कर रहा था कि सेनापति धोमरा आ पहुंचा। बबूसा ने धोमरा के आने की खबर दी। देव, किले के एक बड़े कमरे में धोमरा से मिला। बबूसा भी वहां था।

"राजा देव।" धोमरा ने कहा—"विद्रोही नेता तोलका के इशारे पर पिछले पांच दिनों, ऐसे सत्रह लोगों को तलवार से मार दिया जो उसके विद्रोह में शामिल होने को तैयार नहीं थे।"

"बबूसा।" देव ने कहा—"तुमने ये बात मुझे नहीं बताई?"

"आपके साथ व्यस्त होने की वजह से मैं इन बातों की तरफ ध्यान नहीं दे पाया।" बबूसा ने सामान्य स्वर में कहा—"दिन भर तो आपके साथ व्यस्त रहता हूं।"

देव के चेहरे पर गम्भीरता आ गई।

"तोलका के खिलाफ क्या कार्यवाही की गई धोमरा?" देव ने पूछा।

"कुछ भी नहीं। मैं और मेरे खास आदमी तोलका के दल की गतिविधियां नोट करने में व्यस्त रहे। मेरे तीन आदमी पहाड़ों में छिपे तोलका के पास, कुछ ही दूरी पर मौजूद हैं। उनमें से एक संदेश लेकर आया है कि तोलका के साथ पचास विद्रोही मौजूद रहते हैं। अगर हम संख्या में ज्यादा हों तो उन्हें जीत सकते हैं।"

"हमारे पास सैकड़ों सिपाही हैं मोमाथ।" देव बोला।

"आपकी इजाजत की जरूरत है। मैं आज ही तोलका को खत्म करने चला जाता हूं।"

"तुम?"

"हां राजा देव। मैं सेनापति हूं और ये काम मेरे लिए मामूली है। तोलका पहाड़ों के पास ठिकाना बनाए हुए है और मेरे आदमी वहां पर नजर रखे हुए हैं। मैं वहां घेराबंदी करके तोलका को खत्म कर दूंगी।"

देव के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"इसमें हमारे सिपाही भी मारे जा सकते हैं।" देव बोला।

"अवश्य। नुकसान तो हमें होगा परंतु जनता के लिए, तोलका को मार देना ही ठीक रहेगा।" धोमरा ने कहा।

"धोमरा ठीक कहता है राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"तोलका लोगों को विद्रोही बनाकर अपनी ताकत बढ़ाता जा रहा है। कहीं ऐसा वक्त न आ जाए कि वो आप पर भारी पड़ने लगे। उसे खत्म कर देना ही बेहतर है।"

"चलने की तैयारी करो धोमरा। मैं भी साथ चलूंगा।" देव ने सख्त स्वर में कहा।

"आप? आपके साथ जाने की क्या जरूरत है, ये काम तो मैं ही...।"

"मैं साथ चलूंगा धोमरा। तुम काबिल सेनापति हो। इसमें कोई शक नहीं। परंतु ये तोलका का मामला है। वो सदूर का राजा बनना चाहता है और लोगों में विद्रोह फैला रहा है। मैं उसे देखना भी चाहता हूं कि वो कैसा है।"

"जैसा आप ठीक समझें राजा देव।"

"अगर तोलका और उसके साथी हमारी पकड़ में आ जाते हैं तो तब उनकी जान नहीं लेनी। उन्हें बंदी बनाकर यहां लाना और पाइप के रास्ते ग्रह से बाहर फेंक देना है। मैं नहीं चाहता कि ग्रह की जमीन किसी के खून से लाल हो। किसी की जान लेना मुझे अच्छा नहीं लगता।" देव ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

"मैं चलने की तैयारी करता हूं। शाम तक हम चल देंगे।" कहकर धोमरा चला गया।

"तोलका को खत्म करना अब जरूरी हो गया है राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"आपकी तलवारें, खंजर तैयार करता हूं। उनकी साफ-सफाई और उनकी धारें तेज करवा देता हूं।"

"हां। ऐसा ही करो।" देव का चेहरा सख्त था—"आज मैं ताशा के पास नहीं जा सकूंगा। शाम को हमने पहाड़ों की तरफ चल देना है। मेरे वहां न पहुंचने पर ताशा परेशान हो जाएगी।"

"हुक्म राजा देव।"

"तुम जाओ और ताशा को खबर कर दो कि कुछ दिन हम नहीं मिल सकेंगे।"

"मैंने आपकी तैयारी का साथ देना है। मेरे पास काम बहुत है। मेरा ताशा के पास जाना जरूरी न हो तो मैं सोमारा को समझाकर ताशा की तरफ भेज देता हूं। वो आपका संदेश दे देगी। सोमारा, ताशा से मिल भी लेगी।"

"ये बेहतर रहेगा।" देव ने सिर हिलाकर कहा।

▭ ▭

रोज की तरफ ताशा चौराहे पर पहुंची तो बग्गी को खड़े पाया। वो बग्गी की तरफ बढ़ी और पास पहुंचने पर जब कोचवान पर नजर पड़ी तो ठिठक गई। कोचवान की जगह पर बबूसा को न पाकर वो समझ नहीं पाई कि बग्गी में बैठे कि नहीं बैठे। तभी भीतर से देख रही सोमारा ने पर्दा हटाकर उससे कहा।

"तुम ताशा हो?"

ताशा ने 'हां' में सिर हिलाया।

"आ जाओ। मैं तुमसे ही मिलने आई हूं। राजा देव ने तुम्हारे लिए संदेश भेजा है।" सोमारा ने कहा।

"राजा देव?" ताशा के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"वो ही देव।" सोमारा हंसी—"जिससे तुम रोज मिलती हो। उसी की बात कर रही हूं।"

"तुम कौन हो?"

"राजा देव की कर्मचारी।"

"फिर राजा देव, तुम क्या कह रही हो?"

"भीतर तो आओ।"

हिचकिचाते हुए ताशा बग्गी के भीतर, सोमारा के पास आ बैठी।

सोमारा ने कोचवान को कहा कि बग्गी छोड़कर दूर खड़ा हो जाए। जब कोचवान चला गया तो सोमारा, ताशा के इंतहाई खूबसूरत चेहरे को देखने लगी। देखती रही।

"ऐसे क्या देख रही हो?"

"ये देख रही हूं कि आखिर तुम में ऐसा क्या है जो राजा देव तुम्हारे दीवाने हो गए।" सोमारा हंसी—"परंतु राजा देव गलत नहीं हैं। तुम सच में राजा देव के काबिल हो। बहुत खूबसूरत हो। बबूसा ठीक कहता था कि...।"

"बबूसा?"

"वो मेरा पति है।"

"ओह, पर तुम देव को बार-बार राजा देव क्यों कह रही हो?" ताशा ने सोमारा को देखते हुए कहा।

"क्योंकि वो राजा देव हैं।" सोमारा ने हंसकर कहा—"बबूसा ने मुझे बता रखा है कि ये बात तुझे नहीं बताई है राजा देव ने। पर मैंने तेरे को सच-सच बता दिया। राजा देव ने भी तो एक दिन तुझे ये बात बतानी ही थी।"

ताशा भौंचक्की रह गई। सोमारा को देखती रही। उसकी नीली आंखें हैरानी से फैल चुकी थीं।

"क्या देख रही है?"

"द-दे-व, क्या राजा देव है। सदूर का मालिक?" ताशा के होंठों से घबराया-सा स्वर निकाला।

"हैरान हो गई न?" सोमारा पुनः हंसी—"तू तो किस्मत वाली निकली जो राजा देव की नजर तुझ पर पड़ी और उन्होंने तेरे को पसंद कर लिया। तेरे नसीब कितने अच्छे हैं। बबूसा बता रहा था कि राजा देव तुझे किले की रानी बनाने वाले हैं।"

"कि-कि-ले की रानी?" ताशा को अपनी सांसें रुकती-सी महसूस हुई। हाथ दिल पर रख लिया।

"पानी पिलाऊं?" सोमारा ने कहते हुए नीचे रखा पानी का बर्तन उठाना चाहा।

ताशा ने सोमारा की बांह पकड़ ली।

"तू मुझे पागल कर रही है अपनी बातों से। देव सदूर का राजा नहीं हो सकता।" ताशा अजीब-से स्वर में बोली।

"तेरे को ये पता है न कि उनका नाम देव है?"

"ह-हां।"

"तो मेरी बात भी सुन ले। घबरा मत। वो सदूर के मालिक, राजा देव हैं। सोमारा नाम है मेरा और बबूसा की पत्नी हूं। किले में ही रहती हूं। मेरी बात का भरोसा न हो तो तेरे को किले पर ले चलती...।"

"नहीं-नहीं, मुझे किले पर नहीं जाना।" ताशा ने जल्दी से कहा। हाथ अभी भी दिल पर था।

सोमारा, ताशा के खूबसूरत चेहरे को देखने लगी, जहां पर अजीब-अजीब भाव आ रहे थे।

"तेरी तबीयत तो ठीक है?" सोमारा ने पूछा।

"ह-हां...।"

"तू घबरा क्यों रही है?"

"तेरी बातें सुनकर। देव, राजा देव है। मुझे भरोसा नहीं हो रहा। व-वो तो मुझे कहीं से भी राजा देव नहीं लगे। वो तो कहते थे कि वो साधारण-से व्यापारी हैं। वो तो आम लड़कों की तरह ही बातें करते थे और...।"

"राजा देव ऐसे ही हैं। मन के साफ। दिल के अच्छे।" सोमारा ने हाथ हिलाकर कहा—"उनके पिता जरूर कुछ कठोर थे, परंतु राजा देव बिल्कुल शांत और मधुर हैं, लेकिन ऐसा भी नहीं कि कोई उन्हें बेवकूफ बना जाए। बहुत चालाक और तेज भी हैं। सदूर के सबसे ताकतवर इंसान हैं। उन्हें ऐसे ही समझने की भूल मत कर बैठना।"

"कहां राजा देव और कहां मैं।" ताशा की आंखें भर आईं—"ये सम्बंध कैसे बन सकता है।"

"क्यों नहीं बन सकता। राजा देव तेरे से प्यार करते हैं। बबूसा कहता है कि राजा देव, ताशा के दीवाने हो चुके हैं।"

"मुझे नहीं पता था कि वो राजा देव है।" ताशा भीगे स्वर में बोली।

"दिल को क्यों लगाती है ये बात।" सोमारा, ताशा के कंधे पर हाथ रखते कह उठी—"अगर राजा देव तेरे को पहली बार में ही बता देते कि वो राजा

देव है तो तू संभल जाती। फिर वो कैसे जान पाते कि तू उन्हें चाहती है कि नहीं। इसी कारण उन्होंने ये बात छिपाकर रखी कि पहले वो तेरे दिल में झांक लें। वो तो अब उन्होंने झांक ही लिया है। मैं तो कब से तेरे से मिलना, तेरे को देखना चाहती थी, परंतु कोई मौका ही नहीं बन पा रहा था। परंतु आज मौका बना तो दौड़ी चली आई—ओह, मैं बातों में लग गई और तेरे को राजा देव का संदेश देना ही भूल गई। राजा देव ने कहा है कि कुछ दिन वो मिलने नहीं आ सकेंगे।"

"क्यों?" ताशा के होंठों से निकल गया।

"पहाड़ों की तरफ जा रहे हैं। विद्रोही नेता तोलका को खत्म करने। वो जनता को दुख पहुंचाने लगा है।"

"तोलका से लड़ेंगे देव?" ताशा कह उठी—"देव को कुछ हो गया तो?"

"राजा देव को कुछ नहीं होगा। सदूर पर कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता।"

"परंतु देव कैसे तोलका का मुकाबला करेंगे। तोलका के और भी साथी होंगे। वो राजा देव को...।"

"तो राजा देव कौन-से अकेले जा रहे हैं। सोमारा ने कहा—"सेनापति धोमरा साथ में हैं। बबूसा भी है और ढेरों सिपाही भी जा रहे हैं। किले पर चलने की तैयारी हो रही है। लेकिन तू ये बात किसी से कहना नहीं। सब कुछ गुपचुप ढंग से हो रहा है कि कहीं तोलका तक ये खबर न पहुंच जाए। जब राजा देव वापस आएंगे तो मैं तेरे को बताने आ जाऊंगी।"

"जरूरी आएगी न?"

"जरूर।" सोमारा मुस्कराई—"तू मुझे पसंद आई ताशा।"

"मेरा तो दिल डूबा जा रहा है कि मेरा देव ही राजा देव है। विश्वास नहीं आता। देव ने मुझे बताया ही नहीं कि वो राजा देव है।"

"बहुत नसीबों वाली है तू जो तेरे को राजा देव मिले। संभालकर रखना उन्हें। वे बहुत गुणवान हैं। ऐसा इंसान जिसे मिल जाए वो धन्य हो जाता है। बबूसा तो चाहता है कि हर जन्म में राजा देव की सेवा में रहे।"

"द-देव तोलका से लड़कर सही-सलामत वापस आ जाएंगे न?" ताशा घबराए स्वर में कह उठी।

"तू हमारे राजा देव को क्या समझती है। कुछ ही दिनों में सदूर से तोलका का नाम खत्म हो जाएगा। विद्रोह के बहाने वो ग्रह का राजा बनना चाहता है। राजा देव उसका ऐसा हाल करेंगे कि फिर सदूर पर कोई विद्रोह करने की हिम्मत नहीं कर पाएगा।"

किले पर बबूसा सारा दिन देव के हथियारों की साफ-सफाई करवाने में व्यस्त रहा। देव जरूरत का सामान बबूसा को याद दिलाता रहा, जिसकी पहाड़ों पर जरूरत पड़ सकती थी। देव के दिमाग से ताशा निकल चुकी थी अब उसे सिर्फ तोलका का ही खयाल आ रहा था कि उसे खत्म करना है। सालों पहले तोलका के आदमी द्वारा ही उसके पिता मारे गए थे। अब तोलका पहले से ताकतवर हो गया था। उसने अपने विद्रोही दल के साथ काफी नए लोगों को मिला लिया था। देव को अपने विचार जंचे कि तोलका को खत्म करने का ये समय सही था, वरना आने वाले वक्त में तोलका और भी शक्तिशाली होकर किले पर हमला कर सकता था। जबर्दस्ती सदूर का राजा बनने की कोशिश कर सकता था।

आधे दिन के बाद देव ने एक कर्मचारी को भेजकर सेनापति धोमरा को बुलाया।

"हुक्म राजा देव।" धोमरा किले पर पहुंचकर राजा देव से मिला।

"तैयारी हो गई?"

"चल रही है। शाम तक हम यहां से रवाना हो जाएंगे।" धोमरा ने कहा।

"कैसे जाना है पहाड़ों तक?" राजा देव ने पूछा।

"घोड़ों और बग्गियों द्वारा हम...।"

"धोमरा।" देव ने गम्भीर स्वर में कहा—"अगर हम एक साथ घोड़ों और बग्गियों पर अपने सिपाही लेकर रवाना होंगे तो ये खबर तोलका तक भी पहुंच सकती है। वो जान सकती है कि हम उसकी तरफ आ रहे हैं।"

"ये बात तो आपने सही कही।" मोमाथ ने फौरन सिर हिलाया।

"तुम सिपाहियों का वहां तक का सफर, अलग-अलग दिशाओं में भेजकर पूरा कराओ। एक बार में पांच-छः सिपाही से ज्यादा नहीं होने चाहिए। एक बग्गी में पांच-छः सिपाही हथियारों के साथ भेजना शुरू करो। इसी तरह पांच-छः घुड़सवार एक साथ रवाना करो, परंतु घुड़सवार सिपाहियों के पास हथियार न दिखे। उनके हथियार बग्गियों में भेजो। मैं नहीं चाहता कि तोलका तक इस बात की हवा भी पहुंचे कि हम उसकी तरफ बढ़ रहे हैं।"

"मैं ऐसा ही करता हूं।"

"रुक-रुककर सिपाहियों को उस तरफ भेजना शुरू कर दो। पहाड़ों में कोई एक जगह तय कर लो। वहां पर खामोशी से सबको इकट्ठे होना है। इसी तरह तुम भी एक बग्गी में बैठकर रात तक वहां के लिए निकल चलना। मैं बबूसा के साथ यहां से चलूंगा। मुझे बता दो कि पहाड़ों के किस तरफ हम मिलेंगे।"

धोमरा ने बताया और किले से चला गया।

देव किले में टहलता ये ही सोचता रहा कि वहां पर काम कैसे करना है। धोमरा के सिपाहियों ने बताया था कि तोलका के साथ वहां पचास के करीब साथी हैं। ये एक अंदाजा था। सही में उनकी संख्या कितनी है ये जानना जरूरी था। ऐसा न हो कि ठीक मौके पर तोलका उन पर भारी पड़ जाए।

तभी सोमारा से देव का सामना हो गया।

"राजा देव, आप यहां हैं और मैंने आपको कहां-कहां नहीं ढूंढ़ा।" सोमारा फौरन कह उठी—"ताशा से मिल आई हूं मैं।"

देव मुस्कराया। परंतु उनकी मुस्कान कठोरता से भरी थी, क्योंकि उसका पूरा ध्यान तोलका की तरफ था। इस वक्त वो सिर्फ तोलका के बारे में ही सोच रहा था।

"मैंने आपका संदेश ताशा को दे दिया कि आप कुछ दिन उससे नहीं मिल सकेंगे। ताशा तो सच में बहुत खूबसूरत है, वो तो सिर्फ आपके लिए ही बनी है। ऐसी सुंदरता मैंने कभी सदूर पर नहीं देखी।"

देव मुस्कराता रहा। सोमारा को देखता रहा।

"पर एक गलती हो गई राजा देव।" सोमारा मुंह फुलाकर कह उठी—"क्षमा मिले तो बता दूं कि मैंने ताशा से कह दिया कि आप राजा देव हैं। मेरे मुंह से निकल गया। बबूसा ने मुझे समझाया भी था कि ये बात ताशा को न बताऊं पर क्या करूं मुंह से निकल ही गया कि आप विद्रोही तोलका का खत्म करने पहाड़ों पर जा रहे हैं।"

मुस्कराते हुए देव ने सिर हिलाया।

"मुझसे गलती हो गई न राजा देव।"

"तुमसे गलती जरूर हुई है पर तुमने सोच-समझकर गलती की है सोमारा।" राजा देव ने हौले-से हंसकर कहा—"तुम ताशा को बता देना चाहती थी कि मैं ही राजा देव हूं। ये बात तुम्हारे मन ने घूम रही थी।"

सोमारा सकपका उठी। थोड़ी-सी मुस्कराई।

"माफी चाहती हूं राजा देव।" सोमारा धीमे से बोली।

"कोई बात नहीं।" देव ने शांत स्वर में कहा।

"राजा देव।" सोमारा की हिम्मत फिर वापस आ गई—"ताशा को तो भरोसा ही नहीं हुआ कि आप राजा देव हैं। वो तो दिल थामकर बैठ गई। मुझे तो डर लगा कि उसे कुछ हो न जाए। बहुत मासूम और खूबसूरत है ताशा।"

अंधेरा हो जाने के बाद देव ने बग्गी में पहाड़ों की तरफ का सफर शुरू किया। कोचवान बग्गी को दौड़ा रहा था। बबूसा बग्गी के भीतर ही, देव के साथ बैठा था। बग्गी में लकड़ी का बड़ा-सा बक्सा भी रखा था जिसमें देव के हथियार और उसकी बताई जरूरत का सारा सामान भी था। धोमरा की तरफ से खबर आ गई थी कि उसने डेढ़ सौ सिपाही थोड़े-थोड़े गुट में, पहाड़ों की तरफ रवाना कर दिए हैं और खुद भी रवाना हो रहा है। रात के इस वक्त ठंडी हवा चल रही थी। आसमान में तारे चमक रहे थे।

"राजा देव।" बबूसा बोला—"सोमारा ने ताशा को बता दिया है कि आप ही राजा देव हैं।"

"सोमारा से मेरी बात हो गई है।" देव ने कहा।

"मैंने सोमारा को खूब डांटा कि उसने ऐसी शरारत क्यों की।"

"बबूसा। मेरा ध्यान तोलका की तरफ ही रहने दो।" ताशा की बात अभी मत करो।" देव गम्भीर था।

"ऐसा ही होगा राजा देव।" बबूसा ने फौरन कहा—"मुझे इस बात का डर है कि हमारी हरकतों की खबर तोलका को न मिल जाए। अगर वो पहले ही सतर्क हो गया तो मुकाबले की तैयारी कर लेगा।"

"ये बात इस पर निर्भर है कि हम पहाड़ों पर किस जगह डेरा डाल रहे हैं। उनके आदमी पहाड़ों पर आते-जाते रहते होंगे। वो सिपाहियों को देख सकते हैं।" देव ने कहा।

"धोमरा ने ठीक ही जगह चुनी होगी, पहाड़ों पर रुकने के लिए।"

देव खामोश-सा बैठा रहा फिर बबूसा से बोला।

"कारू (शराब) का एक गिलास तैयार करो।"

बबूसा ने बग्गी में रखे कारू के बर्तन से गिलास तैयार करके देव को दिया।

देव ने घूंट भरा।

बग्गी तेजी से दौड़ रही थी। कभी-कभी कारू गिलास से छलक उठती थी।

"राजा देव। आपने-अपने तैयार किए सामान में कुछ अजीब-सी चीजें रखवाई हैं। वो मैं समझ नहीं पाया।" बबूसा बोला।

"उन चीजों का महत्त्व तुम्हें पहाड़ों पर पहुंचकर समझ में आएगा।" देव ने कहा।

बबूसा सिर हिलाकर रह गया।

"मैं तोलका के ठिकाने पर जाऊंगा बबूसा।" देव ने कहा।

"तोलका के ठिकाने पर? मैं समझा नहीं, वो तो सिपाहियों ने जाना ही है।"

"पहले मैं अकेला जाऊंगा। वहां की टोह लूंगा। ऐसा न हो कि तोलका की तैयारी कुछ ज्यादा हो।"

"ये आप कैसी खतरनाक बात कर रहे हैं राजा देव। आप वहां फंस सकते हैं। कोई भी आपको पहचान लेगा कि आप राजा देव हैं। तोलका तो उसी पल आपको खत्म कर देगा। वहां जाने की सोचिए भी मत।"

"तोलका के आदमियों की संख्या देखनी है पास जाकर। उनके हथियारों की तैयारी देखनी है। दुश्मन पर तभी वार करो, जब उसके बारे में जान लो कि उसका दम क्या है। सिपाहियों के साथ रखकर हमें ये नहीं सोचना चाहिए कि हम ताकतवर हैं। तोलका विद्रोही है और वो हमसे ताकतवर भी हो सकता है।"

"तो आप क्यों जाते हैं तोलका के ठिकाने पर, किसी और को...।"

"ये नाजुक मामला है। किसी और को भेजा और वो पकड़ा गया तो बता देगा कि किले के सिपाही उन पर हमला करने वाले हैं। वो कहां पर रुके हुए हैं। ऐसे में तोलका तैयारी के साथ पहले ही हम पर हमला कर देगा।"

"धोमरा को तोलका के ठिकाने पर भेजिए। वो मुंह नहीं खोलेगा।"

"धोमरा पहचाना जा सकता है।"

"पहचाने तो आप भी जा सकते हैं राजा देव।"

"जब तुम मेरी तैयारी देखोगे तो तब ये बात कहना। बक्से में रखे जिस सामान को तुम ठीक से समझ नहीं पा रहे हो उसे कल समझ जाओगे।" देव ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं कभी शिकार पर जाता नहीं। जाता हूं तो खाली हाथ वापस लौटना मुझे पसंद नहीं। तोलका की जान लेने से मैं बेहतर समझता हूं कि उसे जिंदा पकड़ूं और ग्रह से बाहर फेंक दूं। इसी कारण पाइप द्वारा मैंने वो रास्ता बना रखा है कि मुझे किसी की हत्या न करनी पड़े।"

"तोलका खतरनाक है। उसे जिंदा पकड़ पाना कठिन होगा।" बबूसा गम्भीर था।

"जिंदा पकड़ने की स्थिति नहीं हुई तो मार दिया जाएगा उसे।"

"और तोलका के साथी?"

"पहाड़ों पर उसके साथ जो रहते हैं वो पक्के विद्रोही हैं। उन्हें छोड़ना ठीक नहीं होगा।" देव ने सख्त स्वर में कहा—"जो अन्य लोग तोलका के साथ मिल चुके हैं, वो तोलका का अंत देखकर खुद-ब-खुद ही पीछे हट जाएंगे। तोलका के अंत के बाद सदूर के लोगों को ये खबर दे दी जाएगी कि जो भी विद्रोही बनने की कोशिश करेगा, उसे मार दिया जाएगा। सदूर का राजा बनना है तो मैदान में आकर, देव से मुकाबला करो। जो जीतेगा, वो सदूर का राजा बनेगा।"

के मुताबिक काटने लगा। देव के कहने पर बबूसा एक पौधे की टहनियां तोड़ लाया था, उन टहनियों को तोड़ो तो बीच में से गोंद जैसा पदार्थ निकलता था। उससे किसी चीज को चिपकाना बहुत आसान होता था। देव ने उसी पदार्थ के दम पर उन बालों को दाढ़ी-मूंछों के रूप में होंठों और गालों पर चिपकाया। बबूसा ने इस काम में देव की पूरी सहायता की। काफी देर बाद देव जब बग्गी से निकला तो उसके शरीर पर सामान्य लोगों की तरह बेहद साधारण कपड़े थे। चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें दिख रही थीं, गोंद जैसा पदार्थ सूख चुका था। देव अब पहचाना नहीं जा रहा था। देव ने पेटी से आईना निकालकर देखा। कुछ देर अपना चेहरा देखते रहने के बाद आईना एक तरफ रखते बबूसा से कहा।

"मेरे सिर के बालों के साथ ये बाल इस तरह चिपकाओ कि बाल लम्बे लगें।" कहने के साथ ही देव ने बालों के गुच्छे में से तीन-तीन इंच लम्बे बालों के गुच्छे काट दिए।

बबूसा ने अपना काम फुर्ती से बढ़िया ढंग से पूरा किया। जिस पदार्थ के साथ बालों को चिपकाया गया था, वो तभी उतरता था जब उसपे पानी लगे, नहाया जाए। जब धोमरा ने देव को देखा तो हैरान हो गया।

"आप तो पहचाने ही नहीं जा रहे राजा देव।" मोमाथ बोला।

देव ने दाढ़ी पर हाथ फेरा। सिर के बाल कुछ लम्बे लग रहे थे। शरीर पर बेहद साधारण कपड़े थे। धोमरा अपलक-सा देव को देखता रहा। देव बिल्कुल बदल गया था। उसके बाद वो पहाड़ का लम्बा चक्कर काटकर उस रास्ते पर पहुंचा जो रास्ता तोलका के ठिकाने तक जाता था। उसी रास्ते पर वो आगे बढ़ गया। वो जानता था कि तोलका के पहरेदार उसे पहले ही देख लेंगे। ऐसा ही हुआ। करीब एक घंटे बाद जब वो पैदल ही आगे बढ़ा जा रहा था तो एक पहरेदार उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसके हाथ में तलवार थी।

"कौन हो तुम?" पहरेदार ने सख्त स्वर में पूछा।

"मेरा नाम जकाथ है। मैं तोलका को ढूंढ़ रहा हूं, सुना है वो इन्हीं पहाड़ियों में कहीं रहता है।" देव बोला।

"क्यों ढूंढ़ रहे हो तोलका को?" वो बोला।

"क्यों बताऊं?"

"मैं तोलका का पहरेदार हूं। तुम्हें मेरी बात का जवाब देना होगा, वरना मार दिए जाओगे।"

"तुम तोलका के पहरेदार हो।" देव खुश हो गया—"इसका मतलब तोलका पास में ही है।"

"जवाब दो। तुम्हें तोलका से क्या काम है?"

"मैं तोलका के साथ शामिल होना चाहता हूं। मैं तोलका को सदूर का राजा बना देखना चाहता हूं।"

"क्यों?"

"मुझे राजा देव पसंद नहीं।"

"क्यों नहीं पसंद?"

"वो मुझे अच्छे नहीं लगते। तोलका मुझे अच्छा लगता है कि उसमें विद्रोह करने की ताकत है। मैं तोलका का साथ दूंगा और उसे सदूर का राजा बनाने में सहायता करूंगा।" देव प्रसन्न भाव में बोल रहा था।

"तुम करते क्या हो?"

"मैं किले पर काम किया करता था। बबूसा है न, जो कि राजा देव का खास सेवक है। वो मेरा भाई है। उसी ने मुझे काम दिलवाया था किले में। कुछ महीने मैंने किले पर काम किया। राजा देव को करीब से जानने का मौका मिला, परंतु वो मुझे अच्छे नहीं लगे। कहीं से भी सदूर के राजा बनने के काबिल नहीं लगे। तब मैंने सोचा कि तोलका को सदूर का राजा बनना चाहिए। मैंने किले का काम छोड़ दिया और वहां से चला आया कई दिनों से तोलका से मिलने को भटकता रहा। फिर पता चला कि तोलका का ठिकाना इधर पहाड़ों में कहीं है तो कई दिनों से पहाड़ों में भटकते यहां पहुंच गया। बहुत भूख लगी है। कई दिन से कुछ भी खाया नहीं। तुम मुझे तोलका के पास ले चलो। मैं उसकी सेवा में रहना चाहता हूं।"

तभी पास में छिपा अन्य पहरेदार सामने आ गया।

"इसे ले जाओ।" वो बोला—"पहले इसे खाना खिलाओ, फिर तोलका से इसके बारे में बात करना।"

पहले वाला पहरेदार, देव को लेकर चल पड़ा। पहाड़ों के तंग और खराब रास्तों से होता हुआ वो कुछ देर बाद एक खुले मैदान जैसी जगह में पहुंचा। वहां कपड़े के तम्बू बहुत ज्यादा संख्या में लगे हुए थे। काफी लोग नजर आ रहे थे। एक तरफ बड़े पत्थरों पर बड़े-बड़े बर्तन रखे थे और उनके नीचे आग जल रही थी। देव समझ गया कि खाना बनाया जा रहा है। कुछ लोग पहाड़ी पत्थर के बर्तन में टाकोली (ऐसा फल जो सूख जाए तो उसे पीसकर आटा बनाकर, फिर उसकी रोटी बनाई जाती है) को पीस रहे थे। एक तरफ ढेर सारी तलवारें, भाले और खंजर रखे थे कि जरूरत पड़ जाने पर उन्हें वो फौरन हाथों में ले सकें। देव की नजरें हर तरफ जा रही थीं। वो तोलका के ठिकानों को समझने की चेष्टा कर रहा था। पहरेदार ने उसे एक आदमी के हवाले करते, आदमी से कहा।

"इसे खाना खिलाओ। मैं अभी आता हूं।"

"ये कौन है?"

"हमारा साथी बनने आया है। तोलका ही इसका फैसला करेगा।" कहकर वो एक तम्बू की तरफ बढ़ गया। देव को खाना खिलाया गया। देव ने खाना खाया। यूं भी सुबह से उसने कुछ नहीं खाया था। खाने के दौरान वो यहां की गतिविधियां देखता रहा। लोगों की संख्या के बारे में उसने अनुमान लगाया कि वो सौ से कहीं ज्यादा हैं। वहां पर बीस-तीस औरतें और कुछ बच्चे भी थे। वे सब खुले आसमान के नीचे अपने कामों में व्यस्त थे। खाना खाने के बाद पानी पिया। उसे ऐसे पहरेदार भी दिखे, जो सामने के पहाड़ के ऊपर चढ़े रास्ते पर नजर रख रहे थे। एक तरफ बड़े-बड़े ढके बर्तन रखे थे और वो काफी ज्यादा बर्तन थे। उन्हीं में से पानी भरकर उसे दिया गया।

"पानी कहां से लाते हो?" देव ने पूछा।

"नीचे नदी बहती है।" खाना खिलाने वाले आदमी ने बताया—"सब लोग, सुबह एक-एक बर्तन वहां से भरकर लाते हैं। पानी की हमें कोई कमी नहीं है। यहां हम आराम से रह रहे हैं।"

तभी वो पहरेदार आकर बोला।

"खाना खा लिया तुमने?"

"हां। बहुत दिनों बाद पेट भर के खाया है।" देव ने चैन भरे स्वर में कहा।

"चलो, तोलका तुमसे बात करेगा।"

पहरेदार उसे एक ऐसे तम्बू में ले गया जो काफी बड़ा था और वहां दो पलंग लगे हुए थे। एक औरत भी वहां थी और दो बच्चे भी पास में खेल रहे थे। देव ने अनुमान लगा लिया। कि वो औरत तोलका की पत्नी होगी और बच्चे भी तोलका के होंगे। उसने सोचा कि सीधे-सीधे तोलका पर हमला न करके अच्छा ही किया वरना औरतें और बच्चे भी हमले में मारे जाते। हमले जैसे वक्त में ये नहीं देखा जाता कि सामने कौन है, तब तो सिपाहियों के सिर पर खून सवार होता है और तलवारें रफ्तार से घूमती रहती हैं।

तोलका चालीस बरस का सेहतमंद सांवले रंग का रोबीला व्यक्ति था। शरीर भरा हुआ और फुर्तीला दिखता था। सामान्य कद था उनका। देव ने उसे पहली बार देखा था। तोलका कुर्सी पर बैठा था और पैनी नजरों से उसे देख रहा था। देव ने दोनों हाथ जोड़े और तोलका के सामने, जमीन पर आ बैठा।

"महान तोलका की जय हो।" देव ने आदर भरे स्वर में कहा।

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"जकाथ।"

"मुझे बताया गया है कि तुम बबूसा के भाई हो और किले पर काम करते थे।"

"हां—तोलका।"

"तुम कोई चाल चलने तो मेरे पास नहीं आए। राजा देव ने तो तुम्हें मेरे पास नहीं भेजा?"

"ये तुम कैसी बातें कर रहे हो तोलका। मैं राजा देव को पसंद नहीं करता। वो घमंडी इंसान हैं। किले के भीतर वो हर कर्मचारी को डांटते रहते हैं। वो अच्छे राजा नहीं हैं। मैं चाहता हूं कि तुम राजा बनो।"

तोलका ने हौले-से सिर हिलाया।

"तो तुम मुझे राजा बनते देखना चाहते हो?" तोलका बोला।

"हां।"

"तुमने ठीक कहा कि राजा देव अच्छा राजा नहीं है। उसने मेरे भाई की जान ले ली थी।" तोलका ने कहा।

"आपके भाई की जान? वो कैसे?"

"मेरे भाई ने राजा बनने के लिए राजा देव को चुनौती दी थी। मैदान में मुकाबला हुआ और मेरे भाई की जान ले ली। राजा देव ने।" तोलका गुस्से में भर गया—"तभी मैंने सोच लिया था कि मैं सदूर का राजा बनूंगा। तभी मैंने विद्रोह किया और लोगों को अपने साथ मिलाने लगा। राजा देव मुझे जहर की तरह लगते हैं।"

"तुम्हारे पास तो राजा बनने का पूरा मौका है।"

"वो कैसे?"

"तुम राजा देव का मैदान में मुकाबला करो और उन्हें मारकर राजा बन जाओ।"

"ये नहीं हो सकता। राजा देव ताकतवर है। उसका मुकाबला नहीं किया जा सकता। अपने भाई की तरह मैं भी अपनी जान नहीं गंवाना चाहता। परंतु मैं राजा जरूर बनूंगा सदूर का। तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो?"

"जो तुम कहो तोलका।"

"राजा देव को खत्म करने के लिए मैं किले पर हमला करने की योजना बना रहा हूं।" तोलका ने कहा।

"किले पर हमला?"

"हां। मैं राजा देव को खत्म कर देना चाहता हूं। मेरे साथ मेरे सैकड़ों साथी होंगे। हम किले में घुस जाएंगे और राजा देव को मार देंगे। किले पर अधिकार कर लेंगे। इस प्रकार मैं राजा बनने की घोषणा कर दूंगा और...।"

"इस तरह तुम सफल नहीं हो सकते।" देव ने सोच भरे स्वर में कहा।

"क्यों?"

"सेनापति धोमरा तुम्हें राजा नहीं बनने देगा। तुम राजा देव को मार चुके

तो, धोमरा सिपाहियों के साथ किले पर आ जाएगा। वो खुद राजा बनने की सोचेगा तुम्हें क्यों राजा बनने देगा।" देव ने कहा।

तोलका कुछ बेचैन दिखा।

"धोमरा के अधीन हजार सिपाही हैं। पर्याप्त हथियार हैं। इस तरह तो तुम हार जाओगे।"

"मैं हारना नहीं चाहता।"

"तुम्हारे पास कितने लोग हैं?"

"पांच हजार लोग हैं, परंतु उनमें से सात-आठ सौ ही हथियार चलाना जानते हैं।"

"तो बाकी लोगों को भी हथियार चलाना सिखाओ, नहीं तो उनका क्या फायदा?" देव ने कहा।

तोलका देव को देखने लगा।

"तो किले पर हमला न करूं?"

"कोई फायदा नहीं होगा। धोमरा खुद राजा बनना चाहेगा और तुम्हें और तुम्हारे साथियों को मार देगा।"

"तो हम धोमरा को भी मार देते हैं।" तोलका ने सोच भरे स्वर में कहा।

"क्या ये काम तुम कर पाओगे? राजा देव को मारना, धोमरा को खत्म करना। वो सेनापति है, हर वक्त सिपाही उसके पास रहते हैं। ये बड़ा काम है। तुम्हारे पास धोमरा के सिपाहियों से ज्यादा लोग होने चाहिए।"

तोलका कुर्सी से उठा और तम्बू में ही टहलने लगा। उसकी पत्नी खामोश बैठी उनकी बातें सुन रही थी। वो गम्भीर दिखी। देव ने उसकी पत्नी को देखा। वो तोलका से कह उठी।

"ये क्यों भूलते हो कि इस काम में तुम भी मारे जा सकते हो।"

तोलका ने ठिठककर अपनी पत्नी को देखा।

"तुम ये सब करना छोड़ क्यों नहीं देते। आराम से अपनी जिंदगी बिताओ। राजा बनना आसान नहीं है। राजा देव का मुकाबला कर पाना बहुत कठिन है। कितने साल हो गए और तुम कुछ नहीं कर सके।"

"तुम चुप रहो। मैं राजा जरूर बनूंगा।" तोलका ने होंठ भींचकर विश्वास भरे स्वर में कहा।

"मुझे तो लगता है कि तुम अपनी जान गंवा बैठोगे।" उसकी पत्नी नाराजगी से बोली।

तोलका वापस कुर्सी पर आ बैठा और देव से बोला।

"जकाथ। बबूसा तुम्हारा भाई है। तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो?"

"जो तुम कहो। मेरे से जो हो सकेगा मैं तुम्हारे लिए जरूर करूंगा।" देव ने सिर हिलाकर कहा।

"तुम मुझे राय दो।"

देव कुछ पल चुप रहकर बोला।

"राजा देव को किले में घुसकर मारना आसान नहीं होगा। उनकी जान तब लो जब वो किले से बाहर जाते हैं।"

"तब तो राजा देव के साथ पहरेदार होते हैं।"

"कभी-कभी जैसे वो अक्सर बबूसा के साथ बग्गी में अकेले बाहर जाते रहते हैं।"

"तुम सच कह रहे हो?" तोलका की आंखें चमक उठीं।

"मैं गलत क्यों कहूंगा। जब वो बबूसा के साथ बग्गी में निकलें तो उन्हें कहीं भी घेरकर खत्म कर दो। बहुत आसान होगा ये। ये बात कोई भी नहीं जानता कि राजा देव इस तरह अकेले भी किले से बाहर जाते हैं।"

"बबूसा, राजा देव के प्रति क्या विचार रखता है?" तोलका ने सोच भरे स्वर में पूछा।

"वो तो राजा देव के साथ वक्त बिता रहा है। किले के बाहर राजा देव का और रूप है। लोग उन्हें बहुत अच्छा समझते हैं, परंतु किले के कर्मचारियों के साथ उनका व्यवहार बुरा ही रहता है।" देव बोला।

"फिर तो बबूसा हमारी सहायता कर सकता है।"

"कैसी सहायता?"

"वो हम तक खबर पहुंचा सकता है कि कब राजा देव उसके साथ अकेले बाहर निकलेंगे।" तोलका ने कहा।

"ये काम तो वो जरूर कर देगा। मेरा भाई है, मेरी बात जरूर मानेगा।"

"तो तुम जाकर बबूसा से बात करो कि वो मेरे साथ मिल जाए। राजा बनने के बाद मैं तुम्हें और बबूसा को बहुत ज्यादा धातु दूंगा।"

"सच तोलका?"

"हां।" तोलका मुस्कराया—"धातु के साथ महत्त्वपूर्ण ओहदा भी दूंगा।"

"तुम कितने अच्छे हो तोलका।"

"तुम जाकर बबूसा को संभालो जकाथ और मुझे खबर दो राजा देव के अकेले किले से बाहर निकलने की।"

"परंतु इसके लिए तो बेहतर होगा कि तुम अपने आदमी किले के पास ही कहीं रखो कि राजा देव बाहर निकलें तो उन्हें घेर कर खत्म कर दिया जाए।" देव ने सलाह दी।

"ऐसा बाद में करूंगा। पहले बबूसा से बात कर लो कि वो मेरा साथ देगा?"

"जरूर देगा। फिर भी मैं बबूसा से बात कर लूंगा।"

"बबूसा का साथ मिल जाए तो तब किले पर हमला करने की जरूरत नहीं रहेगी और...।"

"धोमरा का क्या करोगे। वो आसानी से हाथ नहीं आएगा। जब तक वो है तब तक तो राजा बनना कठिन होगा।"

तोलका के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

उसी पल उसकी पत्नी कह उठी।

"इस रास्ते में बड़ी मुश्किलें है। कितना समझाया है तुम्हें कि ये काम नहीं हो सकेगा।"

"ये आपकी पत्नी है?" देव कह उठा।

"हां।"

"तो आपका हौसला बढ़ाने की अपेक्षा, आपकी हिम्मत कम क्यों कर रही है ऐसा कहकर।"

"मैं इसकी बातों की परवाह नहीं करता। इसे तो हर काम मुश्किल लगता है।" तोलका ने लापरवाही से कहा—"जब ये रानी बनेगी सदूर की तो तब इसे पता चलेगा कि मैंने कितना बड़ा काम कर दिया है।"

"धोमरा के बारे में क्या सोचा तोलका?" देव ने पुनः कहा।

"तुम ही बताओ कि धोमरा को कैसे घेरा जाए?" तोलका ने पूछा।

देव ने कुछ पल चुप रहकर कहा।

"ये बात मैं बबूसा से पूछूंगा। वो बेहतर जानता होगा।"

"अगर बबूसा मेरा साथ देने को तैयार हो जाए तो मेरी राह बहुत आसान हो जाएगी।" तोलका बोला।

"बबूसा तैयार क्यों नहीं होगा। मेरा भाई है।" देव ने छाती फुलाकर कहा—"इस वक्त मैं थका हुआ हूं, दिन भर आराम करूंगा और रात को खाना खाकर, बबूसा से मिलने जाऊंगा। तुम मुझे घोड़ा दे सकते हो। सफर लम्बा है। मुझे वापस भी आना होगा। पैदल जाऊंगा तो कई दिन का वक्त लग जाएगा।"

"घोड़ा दे दूंगा। तुम जल्दी से वापस आना और बताना कि बबूसा मेरा साथ देने को तैयार है या नहीं।"

दिन भर देव तोलका के ठिकाने पर घूमता रहा। सब कुछ देखता रहा। कुछ देर उसने एक तम्बू में आराम भी किया था। परंतु वो सोच रहा था कि तोलका और उसके साथियों को कैसे जीता जाए। उसे औरतों और बच्चों की चिंता थी कि इस लड़ाई में उन्हें नुकसान नहीं होना चाहिए। तोलका के साथी अपने काम पूरे कर रहे थे। उन्हें मालूम था कि उन्हें क्या काम करने हैं। यहां पर सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। देव ने पास जाकर, एक जगह इकट्ठे कर रखे हथियारों

को देखा। ये ही सोचा कि अगर इनके हथियार तैयार नहीं होते तो, ये आसानी से काबू में आ जाते। वो कोई आसान रास्ता सोचता रहा कि खून-खराबा न हो और तोलका भी पकड़ में आ जाए। जब अंधेरा हुआ तो कई जगह रोशनी वाली मशालें जला दी गईं। उसके बड़े-बड़े चूल्हों में भी आग जल उठीं। आज दिन में आठ लोग तोलका से मिलने आए थे। देव को नहीं पता आने वालों ने तोलका से क्या बातें की। तभी एक आदमी ने कहा कि तोलका उसे बुला रहा है तो देव, तोलका के पास जा पहुंचा। तोलका के तम्बू में रोशनी वाली मशाल जल रही थी। तब उसकी पत्नी और बच्चे वहां नहीं थे। तोलका पलंग पर बैठे कारू का गिलास थामे हुए था, कारू की महक वहां फैली थी।

"बैठो जकाथ।" तोलका ने मुस्कराकर कर कहा।

देव नीचे बैठने लगा तो तोलका ने कहा।

"कुर्सी पर बैठो।"

देव कुर्सी पर बैठ गया। मन ही मन सोच रहा था कि अगर तोलका को पता चल जाए कि वो राजा देव है तो पलक झपकते ही उसे खत्म कर देगा। तब इसकी सारी रात जश्न में बीतेगी कि राजा देव को इसने खत्म कर दिया है। देव जानता था कि यहां आकर उसने बहुत बड़ा खतरा मोल लिया है। परंतु दाढ़ी रूपी गालों के बालों ने, उसके सिर के कुछ लम्बे बालों ने उसे पूरी तरह बदलकर रख दिया था कि कोई भी उसे पहचान नहीं सका दिन भर में। देव ने तोलका के उन खास आदमियों को पहचाना था, जिन्हें खत्म करना जरूरी था। वरना तोलका के बाद वो सिर उठा सकते थे। ऐसे लोगों की संख्या बीस से ऊपर थी।

"तो आज रात तुम बबूसा के पास जा रहे हो?" तोलका ने पूछा।

"हां। खाना खाकर मैं निकल जाऊंगा।"

"तुम्हारे लिए घोड़ा तैयार करवा दिया है। कल रात तक वापस लौट आओगे?"

"हां, कल रात तक जरूर वापस आ जाऊंगा। बबूसा से बात ही तो करनी है।"

"वो तैयार न हो तो उसे तैयार कर लेना, मेरा साथ देने को।"

"बबूसा तैयार हो जाएगा। मैं उससे धोमरा के बारे में पूछूंगा कि उस पर कैसे काबू पाया जाए। धोमरा के पास सारे सिपाहियों की फौज रहती है। वो राजा देव से भी खतरनाक हो सकता है, वक्त आने पर।"

"तुम ठीक कहते हो। धोमरा के बारे में तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था। धोमरा के बारे में बताकर तुमने अच्छा किया। मैंने तुम्हें अपने लोगों में शामिल कर लिया है। इसी तरह काम करते रहे तो मेरे खास बन जाओगे।"

"मैं तुम्हारा खास जरूर बनूंगा तोलका।" देव ने कहा—"जितने लोग तुम्हारे विद्रोह में शामिल हैं, उन्हें हथियार चलाना सिखाओ ताकि वक्त पर वो तुम्हारे काम आ सकें।

"मैं तुम्हारी ये सलाह जरूर मानूंगा।" तोलका ने मुस्कराकर कहा।

"जब तुम राजा बन जाओ तो धातु के साथ मुझे बहुत सारी जमीन भी दे देना। मैं खुश हो जाऊंगा।"

"तब तो तुम्हें दिल से लगाकर रखूंगा जकाथ।" तोलका हंस पड़ा।

रात खाना खाने के बाद देव ने घोड़ा लिया और तोलका के ठिकाने से चल पड़ा। कुल पच्चीस मिनट घोड़ा दौड़ाने के बाद वो पहाड़ों के उस हिस्से में जा पहुंचा जहां सिपाही डेरा डाले हुए थे। धोमरा और बबूसा बेसब्री से उसके आने की राह देख रहे थे। उसके पास आते ही धोमरा कह उठा।

"हम तो विचार कर रहे थे राजा देव कि अगर आप रात भर न लौटे तो सुबह हम हमला कर देंगे। हमें लगा कि तोलका ने आपको पहचान लिया और पकड़ लिया होगा।"

"सब ठीक है। हमें आज रात तोलका के ठिकाने पर हमला करना है।" देव ने कहा।

"आज रात?" धोमरा तुरंत सतर्क हो गया।

"लेकिन राजा देव आप वहां से घोड़ों पर निकल कैसे आए?" बबूसा ने पूछा।

देव ने सारी बात बताई। फिर कहा।

"मैं अभी फिर वापस जा रहा हूं। वापस लौटने का कोई बहाना लगा दूंगा। जबकि मेरा इरादा तोलका को तब तलवार की नोक पर रखने का है, जब तुम लोग हमला करो। वहां पर घेरा डालो। तोलका को मेरी तलवार की नोंक पर देखकर उसके साथी मुकाबला करने की चेष्टा नहीं करेंगे। मैं चाहता हूं कि मुकाबले की नौबत ही न आए, क्योंकि वहां काफी संख्या में औरत और बच्चे भी हैं। वो मारे जा सकते हैं।"

"आपकी योजना क्या है?"

देव ने अपनी योजना बताई।

धोमरा और बबूसा ने सब सुना।

"जहां तक हो सके, खून-खराबा नहीं करना है। वहां कई लोग ऐसे हैं जो तोलका को हमारे शिकंजे में देखेंगे तो विद्रोह का रास्ता छोड़ देंगे। तोलका ने लोगों को बहकाकर अपने साथ लगा रखा है। सामने वाले पहाड़ को पार करके हमारे सिपाही वहां नहीं पहुंचेंगे। पहाड़ सफेद रंग के हैं और रात को वहां से आने के बारे में उन्हें पहले ही पता चल सकता है धोमरा! आधे लोग यहां से

घूमकर पहाड़ की बाईं तरफ से और आधे लोग दाईं तरफ से वहां पहुंचेंगे। मुख्य रास्ते पर पहरा है। वो रास्ता इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। अगर कोई मुकाबले की पहल करे तो उसे फौरन खत्म कर दिया जाए। तोलका को हमारे काबू में देखकर वो लोग जरूर रुक जाएंगे। तुम लोग जब वहां पहुंचोगे तो मैं तोलका पर काबू पा लूंगा। इसी वक्त सिपाहियों की रवानगी शुरू कर दो।"

"अभी सिपाहियों को समझा कर भेजता हूं।" कहकर धोमरा चला गया।

"तुम पीछे ही रहना बबूसा। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कोई नुकसान हो।" देव ने कहा।

"महापंडित ने मुझे क्यों नहीं तलवारबाज बनाया?" बबूसा कह उठा।

"इसका जवाब तो महापंडित ही दे सकता है।" देव मुस्कराया और घोड़े पर सवार होकर वापस चल पड़ा।

देव वापस तोलका के ठिकाने पर जा पहुंचा। तोलका से मिला।

"तुम वापस क्यों आ गए?" तोलका ने हैरानी से कहा।

"मैंने सोचा दिन में सफर करना ठीक होगा। आज रात गहरी नींद लेना चाहता हूं।" देव ने सामान्य स्वर में कहा—"अगर तुम्हें मेरी बात पसंद नहीं आई तो मैं अभी चला जाता हूं।"

"कोई बात नहीं।" तोलका ने सिर हिलाया—"रात आराम करो। कल सुबह रवाना हो जाना।"

देव खुले में आ गया। कई लोग कपड़े के तम्बू में न सोकर, बाहर खुले में नींद ले रहे थे। रात के इस वक्त ठंडी हवा चल रही थी। हल्की ठंडक भी थी। कुछ जगह रोशनी वाली मशालें रोशन थीं। देव एक जगह बैठ गया और वक्त बीतने का इंतजार करने लगा। कोई शक न करे, इसलिए कुछ देर बाद लेट गया। वक्त सरकता रहा। रात बीतती रही। तारों को देखता देव रात कितनी बीती, का हिसाब लगा रहा था और सोच रहा था कि सिपाही कहां तक आ पहुंचे होंगे? फिर जब देव को एहसास हुआ कि सिपाही अब पहुंचने ही वाले हैं तो वो उठा और तोलका के तम्बू की तरफ बढ़ गया तोलका के तम्बू में अंधेरा छाया हुआ था। वहां दो पलंग थे। अंधेरा था। देव समझ नहीं पाया कि तोलका किस पलंग पर है, उसे पता था कि रोशनी वाली मशाल किधर है। उसने वो मशाल जलाकर रोशनी कर दी और ये पता था कि तोलका की तलवार कहां पर रखी है, देव ने वहां से तलवार उठा ली। तब तक रोशनी की वजह से तोलका की आंख खुल गई। वो उठ बैठा। देव को वहां देखकर, हाथ में तलवार देखकर उसकी आंखें सिकुड़ीं।

"ये तुम क्या कर रहे हो जकाथ?"

तभी दूसरे पलंग पर बच्चों के साथ सोई उसकी पत्नी भी उठ बैठी।

देव तलवार थामे तोलका की तरफ बढ़ता बोला।
"तुम मुझे पहचान नहीं सके तोलका।"
"क्या मतलब?" तोलका सतर्क हो गया। वो पलंग से उठा कि पास पहुंचकर देव ने तलवार की नोंक उसकी छाती से लगा दी।
तोलका के होंठ भिंच गए। वो क्रोध से भर उठा।
"तुम्हारी ये हिम्मत—तुम।"
"मैं राजा देव हूं तोलका।" देव ने सख्त स्वर में कहा।
"क्या?" तोलका का मुंह खुला-का-खुला रह गया—"त-तुम राजा देव हो?"
"हां।" देव ने कठोर स्वर में कहा—"तुम्हारी हरकतों की वजह से मुझे तुम्हारी तलाश में निकलना पड़ा। तुमने पंद्रह लोगों की जान ले ली और अब तुम किले पर हमला करने की सोच रहे थे, मैं सही वक्त पर आया तुम्हारे पास।"
"तुम...तुम यहां ये बचकर नहीं जा सकते राजा देव। मैंने दाढ़ी के पीछे तुम्हारे चेहरे को अब पहचाना है। यहां आकर तुमने बहुत बड़ी हिम्मत दिखा दी। अब तुम...।"
"यहां मेरे सिपाहियों का घेरा पड़ने जा रहा है।" देव ने कठोर स्वर में कहा—"वो संख्या में तुम लोगों से दुगने हैं। परंतु यहां औरतें और बच्चे भी हैं। मैं नहीं चाहता कि वो मरें। मेरी कोशिश ये ही होगी कि उन्हें बचाया जा सके। तुम्हारा परिवार भी है। बच्चे भी हैं। क्या तुम चाहते हो कि वो मारे जाएं।"
तोलका के चेहरे का रंग उड़ चुका था।
"तुम झूठ कह रहे हो। यहां तुम्हारे सिपाही नहीं हैं।"
"वो पहुंच रहे हैं। धोमरा उनके साथ है। उनके आने तक तुम मेरी तलवार पर रहोगे। अगर जरा भी चालाकी दिखाने की कोशिश की तो अपनी जान गंवा दोगे।" फिर देव ने कठोर स्वर में तोलका की पत्नी से कहा—"तुम मेरी बात सुनो। यहां से बाहर जाओ और सबसे कह दो कि राजा देव ने तोलका को अपनी तलवार पर रखा हुआ है। अगर किसी ने सिपाहियों का मुकाबला करने की चेष्टा की तो तोलका को मार दिया जाएगा।"
तोलका की पत्नी फौरन बाहर निकली और चीख-चीखकर लोगों को पुकारने लगी। फौरन ही नींद में डूबे विद्रोही वहां पहुंचने लगे। देव की तलवार, तोलका की छाती पर लगी थी। देव सतर्क था कि वो कोई हरकत न कर दे।
तोलका के चेहरे का रंग फक्क था।
"तुम—तुम मुझे मार दोगे न राजा देव।" तोलका घबराया हुआ था।
"तुम्हारा फैसला बाद में होगा। अभी कोई बात मत करो।" देव ने सख्त स्वर में कहा—"मुझे ये काम बहुत पहले कर देना चाहिए था। परंतु तुम्हारे

बारे में कभी गम्भीरता से सोचा ही नहीं। अब तुम्हारे आदमियों ने पंद्रह लोगों की जान ली तो मुझे तुम्हारे बारे में सोचना पड़ा। राजा इस तरह नहीं बना जाता तोलका। इसके लिए बहुत कुछ चाहिए होता है और तुम्हारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है। जो खुद को न बचा सके, वो दूसरों को क्या बचाएगा।"

तम्बू के बाहर विद्रोहियों की भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। तोलका की पत्नी ने राजा देव के वहां होने और तोलका पर तलवार रखी होने के बारे में बताया और सिपाहियों के आ जाने की बात बताई। राजा देव के वहां पर मौजूद होने की बात सुनकर उनमें हड़कंप मच गया। तोलका की पत्नी उनसे कह रही थी कि सिपाहियों का मुकाबला न किया जाए वरना तोलका को राजा देव मार देगा। तोलका के बिना वो विद्रोही बेकार हो गए थे। उन्होंने उसी पल आपस में बातचीत की कि क्या किया जाए। सिपाहियों का मुकाबला किया तो राजा देव तोलका को मार देंगे। उनमें अंत में ये ही फैसला हुआ कि तोलका को बचाना है। इसलिए वे सिपाहियों का मुकाबला नहीं करेंगे।

कुछ देर बाद ही सिपाही वहां आ पहुंचे।

किसी ने भी उनका मुकाबला करने की कोशिश नहीं की। सिपाहियों को घेरा वहां पड़ चुका था। विद्रोहियों के हथियार भी अपने कब्जे में ले लिए गए थे। तोलका को पकड़ लिया गया था और उसके हाथ पीछे की तरफ करके बांध दिए गए थे। देव के कहने पर धोमरा ने सब विद्रोहियों को सिपाहियों के घेरे में इकट्ठा किया। जो कुछ दूर पहाड़ों पर पहरा दे रहे थे सिपाही उन्हें भी पकड़ लाए। उनमें से कुछ भागने में कामयाब हो गए थे। बच्चे, औरतें और सब विद्रोही वहां मौजूद थे। देव ने उनमें उन खास विद्रोहियों को छांटकर अलग किया जो तोलका के खास साथी थे। उनकी कुल संख्या छब्बीस थी। वहां पर रोशनी वाली मशालों का भरपूर प्रकाश फैला था। अंधेरे में भी काम करने में कोई परेशानी नहीं आ रही थी। उन छब्बीस और तोलका को अलग करके देव ने बाकी लोगों को चेतावनी दी कि उन्हें एक मौका दिया जा रहा है। वो शांति से जीवन व्यतीत करें। आज के बाद कभी विद्रोह का सोचा भी तो उनके लिए बुरा होगा।

उसके बाद तोलका और उसके साथियों को बंदी बनाकर, पहाड़ों के उस तरफ पहुंचे जहां घोड़े और बग्गियां मौजूद थीं। सिपाही खुश थे कि अपने मकसद में वो बिना खून-खराबे के सफल रहे। तब तक दिन का उजाला फैलना आरम्भ हो गया था। वापस चलने की तैयारी की गई। बंदियों के हाथ-पांव बांधकर बग्गियों में डाल लिया गया। धोमरा ने सारा काम संभाला। देव और बबूसा तो पहले ही वापसी के लिए रवाना हो गए थे। पूरा दिन सफर में बीता, रात के वक्त अंधेरा फैल जाने पर वो किले पर पहुंचे। देव खुश था

कि तोलका को पकड़ लिया गया है। तोलका के बाद बाकी के विद्रोही खुद ही अलग-थलग पड़ जाएंगे। किले के तालाब में देव नहाया और फिर कारू पी, इस दौरान उसने बबूसा से कहा कि कल जनता के बीच मुनादी करा दी जाए कि तोलका को राजा देव ने खत्म कर दिया है। आज के बाद जो भी विद्रोह की कोशिश करेगा, उसका हाल भी तोलका की तरह ही होगा। अगले दिन देव की आंख खुली तो ताशा का चेहरा आंखों के सामने नाच उठा। देव के चहरे पर मुस्कान फैल गई ये सोचकर कि आज वो ताशा से मिलेगा। तोलका का काम उसकी आशा से कहीं जल्दी पूरा हो गया था। ताशा जरूर उससे मिलने का इंतजार कर रही होगी। सोमारा ने उसे बता दिया है कि वो राजा देव है। देव के चेहरे पर मुस्कान उभरी ये सोचकर कि तब ताशा का क्या हाल हुआ होगा।

तभी किले के एक कर्मचारी ने धोमरा के आने की खबर दी।

देव बड़े कमरे में जाकर धोमरा से मिला। धोमरा थका हुआ लग रहा था। उसका चेहरा बता रहा था कि वो ठीक से रात नींद नहीं ले पाया है। उसने बताया कि वो आधी रात के बाद ही अपने ठिकाने पर पहुंच सके। रास्ते में बरसात आ जाने से काफिला धीमा हो गया था। परंतु धोमरा उत्साह में भरा था कि तोलका और उसके खास साथियों को पकड़ लिया गया है।

"विद्रोहियों का क्या करना है राजा देव?" धोमरा ने पूछा—"उन्हें कैद में रखना है या कोई और सजा देनी है?"

"उन्हें जिंदा रखकर, उनकी देखभाल करने का कोई मतलब नहीं है। वो विद्रोही हैं।" देव ने सोच भरे स्वर में कहा—"उन सबको ग्रह से बाहर फेंक देना है आज ही। सिपाहियों से कहो कि उन्हें पाइप वाले कमरे की तरफ ले जाएं।"

"क्या आप भी वहां मौजूद होंगे?"

"मेरी जरूरत नहीं।" देव बोला—"परंतु बबूसा वहां रहेगा।"

धोमरा चला गया। देव ने बबूसा को बुलाकर कहा कि अपनी देख-रेख में तोलका और उसके साथियों को ग्रह के बाहर फिंकवा दे। बबूसा चला गया। देव अपने कमरे में ही रहा। खाया-पिया फिर किले के कामों पर नजरें दौड़ाता रहा। रह-रहकर उसे ताशा का खयाल आ रहा था। बबूसा के आने के इंतजार में दिन बीतने लगा। शाम की शुरुआत होने पर बबूसा वापस लौटा।

"देर लगा दी आने में।" देव ने कहा।

"वो काफी लोग थे, जिन्हें पाइप के रास्ते ग्रह के बाहर फेंकना था। धोमरा के सिपाही भी, विद्रोहियों को लेकर पाइप वाले कमरे पर काफी वक्त गुजर जाने के बाद पहुंचे थे। आप कहें, अब मैं क्या करूं?"

"ताशा से मिलने जाना था।" देव मुस्कराया—"परंतु अब दिन काफी बीत चुका है। कल जाएंगे।"

बबूसा किले के ऊपरी कमरे में सोमारा के पास चला गया।

देव ने बाकी का दिन आराम किया।

अगले दिन देव, ताशा से मिला। उसके घर पहुंचा। बबूसा बग्गी चला रहा था। ताशा के घर का दरवाजा खुला हुआ था। देव जब दरवाजे पर पहुंचा तो ताशा सामने ही पलंग पर बैठी थी। उसने देव को देख लिया था और बैठी उसे ही देखे जा रही थी। आज उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, क्योंकि वो जान चुकी थी कि उसका देव, सदूर का राजा देव है।"

"ताशा।" देव का भी दिल धड़क उठा था ताशा को इस तरह देखते।

ताशा उठी और देव के पास जा पहुंची। उसकी नीली आंखें बहुत कुछ कह रही थीं।

"आप राजा देव हैं?"

"मैं तुम्हारा देव हूं ताशा।" देव ने प्यार भरे स्वर में कहा।

"आप झूठे हैं, मक्कार हैं।" ताशा नाराजगी से कह उठी—"आपने मुझसे छिपाकर रखा कि आप राजा देव हैं।"

"मैं सिर्फ तुम्हारा देव हूं ताशा। तुम्हारा देव। हमारे बीच राजा कहां से आ गया। हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं। अगर तुम्हें पहले पता चल जाता कि मैं राजा देव हूं तो, तुम्हारे प्यार को कैसे पहचान पाता। तुम मेरी ताशा हो और मैं तुम्हारा देव। हम दोनों में प्यार का रिश्ता है। मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं ताशा।"

ताशा की आंखों से आंसू बह उठे। वो देव की छाती से लग गई।

देव ने उसे बांहों में भींच लिया।

"आप राजा देव हैं। मैं सोचती थी कि अब आपसे क्या बात कर पाऊंगी।" ताशा कह उठी।

"मैं तुम्हारे लिए सिर्फ देव हूं। सिर्फ देव। ताशा का देव।" देव प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरता कह उठा—"आज से तुम मुझे सिर्फ देव कहोगी। मैंने तुमसे प्यार किया है तो चाहूंगा कि जवाब में मुझे भी प्यार मिले। मुझे राजा कभी मत कहना।"

दोनों देर तक एक-दूसरे में सिमटे खड़े रहे।

फिर ताशा अलग होते कह उठी।

"आप तो तोलका को मारने गए थे। मैं डर गई कि आपको कुछ न हो जाए।"

"मुझे कुछ नहीं हो सकता। आज से मैं तुम्हारे लिए हर खतरे को जीता करूंगा। तुम मेरी ताकत बनोगी।" देव ने प्यार से उसका गाल थपथपाया—"जंगल में चलते हैं। वहां बैठकर दिन भर बातें करेंगे।"

ताशा मुस्करा पड़ी फिर बोली।

"आपकी ये हरकतें देखकर तो मेरा दिल नहीं मानता कि आप राजा देव हैं।"

"एक इंसान के कई रूप होते हैं ताशा जैसे हालात होते हैं, वैसा ही रूप सामने आ जाता है। जब तुम मेरे पास होती हो तो मेरा ये रूप सामने आ जाता है, जो सिर्फ तुम्हारे लिए है।"

"भला हो सोमारा का कि जिसने मुझे आपके बारे में सच बता दिया, वरना अपने राजा होने की बात जाने कब तक मुझे न बताते। मक्कार तो आप बहुत हैं, मैंने देख लिया है।" ताशा ने चंचल स्वर में कहा।

देव मुस्कराकर ताशा को देखता रहा।

"आप फिर मुझे देखने लगे।"

"अपनी ताशा को देख रहा हूं। तुम मुझे देखने को मना नहीं कर सकती।" देव हंस पड़ा।

"ये प्यार कम तो नहीं हो जाएगा देव?" ताशा का स्वर कांप उठा।

"ये और बढ़ेगा।" देव ने ताशा का हाथ थामकर प्यार से कहा—"मेरा प्यार सच्चा है ताशा। सच का फल कभी सड़ता नहीं।"

फिर वे दोनों बग्गी में बैठकर जंगल में जा पहुंचे।

सुनसान हरियाली से भरा जंगल। रंग-बिरंगे पेड़ मध्यम हवा के संग झूम रहे थे। वहां धूप भी थी और छाया भी। सब कुछ सुहावना था। दोनों के मन खुश थे। ऐसे में वो तपते पहाड़ पर भी बैठ जाते तो उन्हें अच्छा लगता।

देव और ताशा एक पेड़ की छाया में जा बैठे थे। देव ने तने से टेक लगा ली और ताशा उसके सामने बैठ गई थी। देव ने ताशा का हाथ पकड़ा और उसके खूबसूरत चेहरे को निहारने लगा। नजरों में प्यार भरा पड़ा था।

"फिर मुझे देखने लगे।"

"ताशा।" देव का स्वर प्यार के आवेश में कांपा—"हम शादी कर लें।"

ये सुनते ही ताशा ने अपने दिल पर हाथ रख लिया। गहरी सांस ली।

"इस तरह मिलना, घंटों बैठे रहना।" देव ने कहा—"बातें करना। परंतु जुदा होने पर मन बेचैन रहता है। मैं तुम्हें हर पल पास, अपने करीब देखना चाहता हूं। कई बार तो तुम्हारी याद में किले में मन नहीं लगता।"

ताशा ने अपनी आंखें बंद कर लीं। ढेरों लम्हे खामोशी के बीच निकल गए।

"ताशा।"

"हूं।"

"मेरे से शादी करने में तुम्हें एतराज तो नहीं?" देव के स्वर में कम्पन था।

"नहीं।" ताशा के होंठ कांपे।

"तुम राजा देव से शादी करोगी या देव से?"

"देव से। अपने प्यारे देव से। आप सदा ही मेरे प्यारे देव रहेंगे। मैं आपसे प्यार करती हूं देव।"

अगले दिन से ही किले में देव की शादी की तैयारियां शुरू हो गईं। खुशी का माहौल था हर तरफ। किले को रोशनी वाली मशालों से रात को सजा दिया गया। किले के चारों कोनों में बने बुर्जों पर भी मशालों की रोशनियां नजर आने लगीं। हर कोई खुश था। जनता में भी मुनादी करा दी गई थी कि राजा देव की शादी वाले दिन सारी जनता किले पर ही खाना खाएगी। जनता ने अपनी जगहों को भी राजा देव की शादी की खुशी में सजाना शुरू कर दिया। किले में सदूर की रानी आने वाली थी। ऐसे में किले का जर्रा-जर्रा फिर से चमकाया जाने लगा। खुशी में बबूसा के पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। सोमारा भी हर समय भागती-दौड़ती नजर आती। ओका भी हर पल कामों में व्यस्त दिखता। परंतु इस दौरान देव और ताशा ने मिलना नहीं छोड़ा था। वो हर रोज मिलते। देव उसके चेहरे को निहारता रहता। वो खूब बातें करते। ताशा कहती कि उसे डर लगता है कि इतने बड़े किले में कैसे रहेगी तो देव हंस पड़ता। उसकी हंसी पर ताशा मुंह फुला लेती। उनका प्यार मासूम और बच्चों की तरह था। देव ताशा को सामने पाकर बच्चा ही बन जाता जैसे। कभी ताशा से मिलने जाना होता और बबूसा व्यस्त होता तो, देव खुद ही बग्गी लेकर चुपचाप निकल जाता। देव ने ताशा के पिता को बड़ा घर दे दिया था। चार नौकर दे दिए थे। देख-रेख के लिए। दो बग्गियां दे दी थीं। ताकि ताशा के पिता को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, ताशा की शादी के बाद। दोनों का मासूम प्यार अंगड़ाइयां ले रहा था। वो दो जिस्म एक जान बन चुके थे। देव तो ताशा के बिना रह ही नहीं सकता था। किले में बबूसा ने सारा काम संभाल रखा था। सोमारा ने ताशा के लिए नए-नए कपड़े तैयार किए थे, जिनमें शादी का जोड़ा भी था। इस दौरान वो ताशा से कई बार मिल चुकी थी। कभी उसका नाप लेना होता तो कभी उसकी पसंद पूछने के लिए।

कई दिन इन्हीं तैयारियों में बीत गए। किले पर मेले जैसा माहौल रहा। खाने में बढ़िया-बढ़िया पकवान तो पहले से ही बनने शुरू हो गए थे। किले के बाहर बांटे जाने वाले खाने में भी वो पकवान शामिल होते। देव को जैसे शादी की तैयारियों से कोई मतलब ही नहीं था। वो तो सिर्फ ताशा के खयालों में ही रहता और उस दिन का इंतजार करता, जिस दिन ताशा शादी के बाद दुल्हन बनकर किले में आएगी।

शादी वाला दिन भी आ पहुंचा।

सदूर के लोग दूर-दूर से देव और ताशा की शादी में शामिल होने आए थे और किले की तरफ से दिए जाने वाले भोज का आनंद उठाने आए थे। किले के बाहर भोज की दूर-दूर तक बैठे लोगों की लाइनें लग गई थीं। सबको प्रेम-भाव से खाना खिलाया जा रहा था। इस सेवा में जनता के लोग भी लग

गए थे। इसी दौरान बंद बग्गी में ताशा दुल्हन की तरह सजी किले पर पहुंच गई थी। सोमारा उसके साथ थी। किले के आंगन में शादी की जानी थी और शादी का कार्य पूरा कराने के लिए महापंडित स्वयं आया था।

देव और ताशा की शादी हो गई। वो सारा दिन इतनी व्यस्तता से बीता कि जाने कब रात हो गई। ताशा दुल्हन बनी किले के भीतर आ गई थी। सोमारा हर पल उसके साथ थी। ताशा का सुंदर रूप, दुल्हन के रूप में और भी चार चांद लगा रहा था। ये बात तो देखते ही बनती थी। ताशा शर्माई-शर्माई सी कुछ डरी-सी थी। देव बार-बार ताशा के पास उससे बात करने आ जाता था। दिन तो क्या आधी रात तक किले में शोर-शराबा होता रहा।

जब देव, ताशा के पास पहुंचा तो थक चुका था। ताशा दुल्हन के लिबास में उसके कमरे में मौजूद थी। उसके आते ही सोमारा पर्दे लगाकर चली गई, देव पलंग पर ताशा के पास जा बैठा। शर्माई-सी ताशा ने पलकें उठाकर देव को देखा। देव बहुत खुश लग रहा था।

"अब तुम सदूर की रानी बन गई हो ताशा। मेरी पत्नी। कितना अच्छा लग रहा होगा तुम्हें।" देव खुशी से बोला।

"मुझे तो अपने देव की पत्नी बनकर अच्छा लग रहा है।" ताशा मुस्कराकर बोली।

"विश्वास ही नहीं आ रहा कि तुम मेरी पत्नी बन गई हो।" देव ने कहा।

"तो एक बार फिर शादी कर लें।" ताशा ने चंचलता से कहा।

देव ने हाथ बढ़ाकर ताशा का हाथ थाम लिया।

ताशा का जिस्म अजीब-सी उत्तेजना में कांप उठा।

"अब मैं तुम्हें हर पल, हर दम देख सकूंगा। तुम मेरे पास रहोगी। मेरे बहुत करीब। तुम्हारी नीली आंखों में मैं गुम हो जाऊंगा। तुम्हारा साथ मैं कभी न छोडूंगा।" देव का स्वर प्यार में डूबा हुआ था।

उसके बाद तो वक्त तेजी से बीतने लगा।

देव और ताशा तो जैसे एक-दूसरे के लिए ही बने थे। हर पल वो साथ रहते। पास में रहते। वो दोनों बग्गी में बैठकर किले के बाहर भी घूमने जाते। देव की तो दुनिया ही बदल गई थी। हर पल, हर वक्त सिर्फ ताशा और ताशा। खाना-पीना-घूमना, मौज करना। देव की तरह ताशा की दुनिया भी बदल गई थी। एकदम उसे इतना कुछ मिल गया था कि वो संभाले, संभाल न पा रही थी। ऊपर से देव का प्यार ऐसा कि वो इन सब में डूब गई थी। दोनों ने एक-दूसरे की कमियों को पूरा कर दिया था।

कई महीने बीत गए।

बबूसा मन ही मन झल्लाता रहता कि राजा देव ने सब काम छोड़ दिए

हैं। कर्मचारी ही सब कामों की देख-रेख करते हैं। ऐसे में बबूसा के पास भी करने को कुछ नहीं होता, राजा देव व्यस्त होते तो वो भी व्यस्त हो जाता था। परंतु राजा देव तो ताशा के दीवाने हुए पड़े थे। एक बार भी राजा देव ने किले के या बाहरी कामों के बारे में उससे नहीं पूछा था। वैसे वो कर्मचारियों पर बराबर नजर रखता था। एक-दो बार उसने दबे स्वर में देव को ये बात कही भी, परंतु देव ने उसकी बात पर खास ध्यान नहीं दिया। बबूसा ने अपनी समस्या सोमारा को बताई तो सोमारा ने इतना ही कहा, वो सदूर के राजा हैं। उन्हें तुमसे ज्यादा चिंता है सदूर की। वो जानते हैं कि उनके कर्मचारी काबिल हैं, कोई गलत काम न होने देंगे।

फिर एक दिन देव ने सोमारा को बुलाया।

सोमारा देव के पास पहुंची तो ताशा भी वहां मौजूद थी। ताशा अब और भी निखर गई थी देव के प्यार में। वो पहले से भी ज्यादा खूबसूरत दिखने लगी थी। वो कयामत नजर आ रही थी।

"हुक्म राजा देव।" सोमारा ने वहां पहुंचते ही कहा।

"सोमारा।" देव मुस्कराकर बोला—"मैं चाहता हूं कि तुम ताशा को वो सब कुछ समझाओ, जो किले में रहते हुए जरूरी है और सदूर की रानी के लिए जरूरी है। इसे कर्मचारियों और लोगों से बात करने का अंदाज बताओ। सदूर के बारे में भी समझाओ जो रानी को पता होना चाहिए।"

"जरूर राजा देव। मैं रानी ताशा को एकदम तैयार कर दूंगी।" सोमारा बोली।

अकेले में सोमारा ने ताशा से कहा—"रानी ताशा, आपकी सुंदरता तो गजब ढा रही है। आप तो पहले से भी ज्यादा सुंदर हो गई हैं।"

ताशा जवाब में मुस्कराकर रह गई। उसके बाद सोमारा जब-तब ताशा के पास आ जाती और उसे समझाती-बताती। ताशा बहुत जल्दी सोमारा की बातों को सीखने लगी। उधर जहां तक हो सके देव, ताशा को सदूर के कामों के दौरान अपने साथ ही रखता कि ताशा को सदूर की बातें समझ में आएंगी। देव ने कामों की तरफ ध्यान देना शुरू कर दिया था।

बबूसा भी व्यस्त रहने लगा।

परंतु इन सब बातों के दौरान देव और ताशा का प्यार बढ़ता ही चला गया था। दोनों एक-दूसरे की जान बने हुए थे। देव तो ताशा को अकेला छोड़ना ही नहीं चाहता था। कभी-कभी तो ताशा देव के इतने प्यार से तंग आकर, भागकर सोमारा के पास ऊपर कमरे में चली जाती। दोनों में मधुर सम्बंध कायम हो चुके थे। रानी ताशा अब किले के कामों को समझने लगी थी और कोशिश करने लगी थी कि किले के कामों को वो खुद संभालें।

"खुश हो ताशा?" देव ने ताशा के कमरे में आने पर पूछा।
सजी-संवरी ताशा मुस्कराई और नीली आंखें झपकाकर बोली।
"बहुत ज्यादा खुश हूं। मेरा देव सबसे अच्छा है। सबसे निराला।"
"मैं तुम्हें हमेशा इसी तरह खुश देखना चाहता हूं ताशा।" देव ने प्यार से कहा।
"सच?" ताशा ने नीली आंखें फैलाईं।
"हां। तुम खुश रहोगी तो मैं भी बहुत खुश रहूंगा। तुम्हारी खुशी में ही मेरी खुशी छिपी है।"
"एक परेशानी है।" ताशा ने मुंह फुलाकर चंचल स्वर में कहा।
"परेशानी—कैसी परेशानी?"
"आप मुझे इतना ज्यादा प्यार करते हैं कि मैं तंग आ जाती हूं।" ताशा खिलखिला उठी।
देव ने आगे बढ़कर ताशा को बांहों में भर लिया।
"फिर?" ताशा ने आंखें नचाईं।
"तुम्हारा प्यार ही तो मेरा जीवन है। तुम्हारे प्यार के सहारे ही तो, मेरी ताकत बनी हुई है।" देव बोला।
अगले दिन देव का मैदान में मुकाबला था। एक व्यक्ति ने चुनौती दी थी देव को।
जब ताशा को ये पता चला तो वो दौड़ी-दौड़ी देव के पास पहुंची।
"कल आप मुकाबले पर जा रहे हैं?" ताशा के चेहरे पर चिंता थी।
"तुम क्यों घबरा रही हो?"
"अगर आपको कुछ हो गया तो?" ताशा ने आगे बढ़कर देव का हाथ थाम लिया।
"मुझे कुछ नहीं होगा।" देव मुस्कराया—"ये मेरे लिए मामूली बातें हैं।"
"आप मुकाबले की प्रथा को हटा क्यों नहीं देते। क्यों खतरा उठाते हैं।"
"इस प्रथा को हटा नहीं सकता।" देव ने ताशा का हाथ थपथपाकर कहा—"क्योंकि मेरे पिता ने भी कभी सदूर का राज्य ऐसे ही मुकाबले में जीता था और वो राजा बने थे।"
"लेकिन मुझे डर लगता है, ऐसी बातों से।"
"मैं तुम्हारा डर दूर कर दूंगा।" देव खुलकर मुस्कराया।
"कैसे?"
"मुकाबला करना तुम्हें भी सिखाऊंगा।"
"मैं?" ताशा घबरा उठी—"नहीं, नहीं मैं ये सब नहीं कर सकती।"
"तुम कर लोगी।"

"देव, नहीं कर सकूंगी।" ताशा कह उठी—"मैं तो...।"

"तुम्हें मुकाबला करना मैं सिखाऊंगा और मुझे भरोसा है कि तुम जबर्दस्त लड़ाका बनोगी। पहले तुम्हें किले में रहने के नाम से डर लगता था परंतु अब तुम रानी बनकर किले के कामों की आसानी से देखभाल करती हो। कोई भी काम कठिन नहीं होता। काम को बार-बार करने पर वो आ जाता है।" देव ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"मैं तुम्हें किले के पीछे फलों के बाग में मुकाबला करना सिखाऊंगा। जैसे मैं कहूं तुम्हें वैसे करते जाना है। कुछ भी कठिन नहीं होगा। ऐसे मुकाबले की जमीन मैं तैयार करवा देता हूं कि गिरने पर चोट न लगे।"

उसके बाद देव ने बबूसा से कहा कि पीछे वाले बाग की जमीन का कुछ हिस्सा मुकाबला सिखाने के लिए तैयार करवा दे। तब ताशा इस बात पर घबराई हुई थी। उसी शाम जम्बरा आ पहुंचा। देव तब ताशा के साथ किले के भीतर था। बबूसा को जब जम्बरा के आने का पता चला तो वो फौरन जम्बरा के पास पहुंच गया।

"तुम क्यों आए जम्बरा?" बबूसा ने सीधे-सीधे पूछा।

"क्या मेरा किले पर आना मना है?"

"नहीं मना। तुम जब भी चाहो आ सकते हो।" बबूसा मुस्कराकर बोला—"पोपा के काम के लिए आए हो?"

"हां। राजा देव की कही सब तैयारी मैंने पूरी कर ली है। अब पोपा बनाने की शुरुआत हो जानी चाहिए।"

"तुम जानते हो कि पोपा बनाने के लिए राजा देव को लम्बा वक्त किले से दूर बिताना होगा।"

"वक्त तो लगेगा ही।" जम्बरा ने सिर हिलाया।

"अभी राजा देव के पास वक्त नहीं है।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा—"कुछ पहले ही तो राजा देव ने शादी की है और इन दिनों काम भी कुछ ज्यादा बढ़ गया है। राजा देव बहुत व्यस्त रहने लगे हैं।"

"परंतु ये तो उन्हीं की चाहत है कि पोपा बनाया जाए।"

"वो मुझे पता है। मैं तुम्हारे आने की बात राजा देव को बता दूंगा। अभी कुछ वक्त तुम भी आराम से बिताओ।"

"तो क्या राजा देव से मुलाकात नहीं होगी?"

"अभी नहीं। जब राजा देव ने मिलना होगा, मैं तुम्हें खबर भिजवा दूंगा। इन दिनों तो राजा देव के पास फुर्सत ही नहीं है।"

जम्बरा चला गया। बबूसा ने देव को जम्बरा के आने के बारे में नहीं बताया। बबूसा जानता था कि राजा देव, सब तैयारी हो चुकी है, ये सुनकर

पोपा बनाने के लिए चल देंगे, जबकि बबूसा चाहता था कि अभी वो रानी ताशा के साथ ही वक्त बिताए। राजा देव को भी फुर्सत के कुछ पल मिले अपना जीवन जीने को। अगले दिन देव ने मैदान का मुकाबला आसानी से जीत लिया था। उधर बबूसा ने जल्दी ही किले के पीछे वाले बाग में मिट्टी की दलदली जमीन तैयार करवा दी तो देव, ताशा को सिखाने लगा कि किसी का मुकाबला कैसे करते हैं। मासूम ताशा के लिए ये इम्तिहान कठिन था। सुबह से दोपहर तक देव, ताशा को मुकाबला करना सिखाता था। देव को इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ी। ताशा इन बातों से बहुत दूर थी परंतु देव ने हार नहीं मानी। मन में जिद थी कि ताशा को बढ़िया लड़ाका बना के रहेगा। इसमें ताशा को कई बार चोटें भी लगतीं तो देव ताशा को बांहों में उठाकर किले के भीतर लाता और खुद ही उसका इलाज करता। परंतु धीरे-धीरे ताशा, देव की बताई बातों को सीखने लगी थी। तब देव को बहुत खुशी हुई कि ताशा भी मेहनत कर रही है। कुछ महीने लगे, परंतु ताशा वो सब सीख गई, जो देव ने सिखाया था। वो देव की तरह का लड़ाका तो नहीं बन पाई, परंतु बेहतरीन लड़ाका वो बन चुकी थी और किसी से भी मुकाबला करने के काबिल बन चुकी थी। अब ताशा में और भी निखार आ गया। उसका विश्वास और भी बढ़ गया था। किले के लिए अब वो नई नहीं रही थी। किले के फैसले वो खुद लेने लगी थी और देव से कम ही सलाह लेती थी। देव खुश था कि ताशा, रानी होने के नाते अपने कामों को देखने लगी है। इस दौरान उनका प्यार और बढ़ गया था। वो घूमते-फिरते, मौज करते, शाम को किले के बुर्ज पर ऊपर पहुंचकर सदूर को निहारते और घंटों वक्त वहां बिताते। दोनों का जीवन प्रसन्नता से बीत रहा था। उसके बाद देव ने ताशा को तलवारबाजी सिखाई। मुकाबला सीख चुकी ताशा को तलवारबाजी सीखने में कोई परेशानी नहीं आई। दो महीनों में ही ताशा निपुण तलवारबाज बन गई। देव ने खंजर और छोटी तलवारों को भी चलाना सिखाया। ये सब सीखने के बाद ताशा का आत्मविश्वास बहुत ज्यादा बढ़ गया था। अब वो पहले वाली भोली-भाली ताशा नहीं रही थी। वो जबर्दस्त योद्धा बन चुकी थी। किले में पूरे विश्वास के साथ चलती थी और कर्मचारियों को, उनके कामों के बारे में बताती थी। ताशा को सब कुछ ठीक से संभालते पाकर देव ने किले के भीतर के काम देखने बंद कर दिए थे। देव को ताशा अब और भी प्यारी लगने लगी थी। या यूं कहें कि देव की दीवानगी ताशा के प्रति और भी बढ़ गई थी। उसे जब भी मौका मिलता, ताशा के पास जा पहुंचता और उसे बांहों में ले लेता। दोनों एक-दूसरे के पूरक बन चुके थे। शादी को साल से ऊपर का वक्त बीत चुका था परंतु दोनों को आकर्षण एक-दूसरे के प्रति जरा भी कम नहीं हुआ था। ताशा का मन किले में इतना

ज्यादा लग गया था कि वो अब अपने पिता से मिलने भी कम ही जाती थी। सदूर पर विद्रोह पूरी तरह खत्म हो चुका था। बचे हुए विद्रोही सही रास्ते पर आ गए थे और चैन से जिंदगी बिताने लगे थे। तोलका की मौत से सदूर काफी शांत हो गया था।

एक दिन देव, ताशा से बोला।

"मैं सदूर पर मशालों की अपेक्षा दूसरी तरह की रोशनी तैयार करना चाहता हूं। ऐसी रोशनी जो मशालों से ज्यादा तेज हो। इस काम के लिए मैं किले के ऊपर का कमरा इस्तेमाल करूंगा। ताकि हर समय तुम्हारे पास किले में रह सकूं। जब तुम चाहो मेरे पास आ सको।"

"ऐसी रोशनी कैसे तैयार होगी?" ताशा ने पूछा।

"मेरे दिमाग में ऐसी रोशनी बनाने के लिए कुछ बातें हैं।" देव बोला—"पोपा को चलाने के लिए भी मैंने बक्से में करंट तैयार किया है अब वैसे ही बक्से से रोशनी बनाने की कोशिश करूंगा।"

"पोपा कब तैयार होगा?" ताशा ने पूछा।

"जम्बरा मेरे कहने के मुताबिक तैयारी कर रहा है। वो तैयारी पूरी करके मेरे पास आएगा। तब मैं पोपा बनाने के लिए पहाड़ी के पार जाऊंगा। जब पोपा बन जाएगा तो हम सदूर से दूर हवा में सैर करने जाया करेंगे और ये भी देखेंगे कि जैसे हम सदूर पर रहते हैं तो क्या दूसरे ग्रहों पर भी और लोग रहते हैं।"

"क्या दूसरे ग्रहों पर भी लोग रहते होंगे?" ताशा ने हैरानी से पूछा।

"जरूर रहते होंगे। हम हैं तो दूसरे ग्रहों पर भी जीवन होगा। ऐसा हुआ तो हम उनसे मिलेंगे। बातचीत करेंगे। उन्हें सदूर पर आने का निमंत्रण देंगे। उनसे नया रिश्ता कायम करेंगे।" देव बोला।

"मुझे यकीन नहीं आता देव कि ऐसे लोग दूसरे ग्रहों पर हमें मिलेंगे।"

"पोपा में बैठकर हम उन्हें ढूंढ़ने चलेंगे।" देव मुस्करा पड़ा—"मैं देखना चाहता हूं कि हमारे सदूर के बाहर भी जीवन है कि नहीं। जब भी मैं किले के बुर्ज पर ऊंचाई में जाता हं तो ये ही सोचता हूं आसमान को देखकर।"

दो दिन बाद ही जम्बरा आ गया।

तब देव किले के ऊपर के कमरे में बबूसा के साथ रोशनी बनाने में व्यस्त था। किले के कर्मचारी ने जम्बरा के आने की खबर दी तो बबूसा मुंह बनाकर रह गया।

देव और बबूसा, किले के बड़े कमरे में जम्बरा से मिले।

"इस बार तुमने बहुत देर लगा दी आने में जम्बरा।" देव ने कहा।

"देर?" जम्बरा ने बबूसा पर निगाह मारकर कहा—"मैं तो आपके बुलावे का इंतजार करता थक गया। तब आया हूं।"

बबूसा ने हड़बड़ाकर नजरें फेर लीं।

"बुलावे का इंतजार?" देव के चेहरे पर उलझन उभरी—"मैं समझा नहीं जम्बरा।"

"तो क्या बबूसा ने आपको बताया नहीं कि मैं महीनों पहले भी आया था।"

देव के होंठ सिकुड़े। उसने बबूसा को देखा।

बबूसा फौरन दांत फाड़कर कह उठा।

"राजा देव। तब आपकी शादी नई-नई हुई थी। ऐसे में आपका रानी ताशा के पास रहना जरूरी था।"

"ये फैसला तुमने करना था या मैंने?" देव ने बबूसा को तीखी निगाहों से देखा।

"आपने राजा देव।"

"तो फिर तुमने फैसला क्यों लिया?"

"क्षमा राजा देव।" बबूसा कह उठा।

देव ने जम्बरा को देखकर कहा।

"सारी तैयारी हो गई जम्बरा?"

"हां राजा देव। अब हमें पोपा का निर्माण शुरू कर देना चाहिए।" जम्बरा बोला।

"मैं जल्दी ही पोपा बनाने के लिए तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा।" देव ने कहा।

जम्बरा चला गया।

देव, ताशा से मिला तो कुछ गम्भीर था।

"क्या हुआ मेरे देव।" ताशा पास आकर बोली—"आप उदास लग रहे हैं।"

"मुझे पोपा का निर्माण करने जाना है ताशा।" देव ने ताशा के कंधों पर बांहें रखकर उसकी नीली आंखों में देखा।

"तो जाइए, इसमें सोचने की क्या बात है?"

"मुझे वापस आने में बहुत वक्त लगेगा।" देव ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो मैं भी आपके साथ चलती हूं।"

"तब तुम्हारा पास में होना ठीक नहीं होगा। पोपा से मेरा ध्यान भटककर तुम पर आ जाएगा। जबकि पोपा का निर्माण करने में बहुत ध्यान से काम करना पड़ेगा। तुम्हें साथ ले जाना ठीक नहीं होगा।"

"कोई बात नहीं, मैं किले पर रहूंगी देव। यहां भी मेरी जरूरत है।" ताशा कह उठी।

"मेरे बिना तुम रह लोगी ताशा?"

"क्यों नहीं देव। आप काम करने जा रहे हैं। मैं आपकी वापसी का इंतजार

करूंगी। किले के कामों को देखूंगी और इसी तरह मुझे सदूर के बाकी कामों की भी समझ आएगी। मैं सारे काम संभाल लूंगी।"

"किले की देखभाल का काम मैं धोमरा के हवाले कर दूंगा। जो बात तुमसे न संभले, वो तुम धोमरा से कह सकती हो।" देव ने गहरी सांस ली—"तुमसे दूर जाने का मन नहीं कर रहा ताशा।"

"ये आप कैसी बातें कर रहे हैं देव। भूल गए कि पोपा बनने के बाद उसमें बैठकर हम घूमने जाया करेंगे। तब कितना अच्छा लगेगा हम दोनों को। मैं तो उस दिन का इंतजार कर रही हूं।"

"सच ताशा?"

"देव की कसम।" ताशा ने प्यार से कहा।

"मेरे जाने के बाद मेरी याद आएगी तो क्या करोगी?" देव ने शरारत भरे स्वर में पूछा।

"आपके साथ बिताए उस प्यारे वक्त को याद करूंगी, जिन्हें सीढ़ियां बनाकर हमने यहां तक पहुंचने का सफर तय किया है। जब आप वापस लौटेंगे तो मुझे अपने इंतजार में खड़ी पाएंगे।"

"तुम कितनी अच्छी हो ताशा।"

"आप मेरे से ज्यादा अच्छे हैं देव।" ताशा का स्वर भर्रा उठा—"जब तक आप वापस नहीं लौटते, आपकी यादों के सहारे मैं वक्त बिता लूंगी। आपके जल्दी आने की आशा करूंगी।"

दस दिन देव किले में ही रहा। सदूर के जरूरी कामों को पूरा करता रहा। बबूसा भी उसके साथ कामों में व्यस्त रहा। ताशा को भी समझाता रहा कि कौन-सा काम कैसे पूरा करना है। देव ने सोमारा से कहा कि ताशा की हर बात मानी जाए, जैसे कि उसका हुक्म हो। ताशा के हुक्म की अवहेलना न हो। देव ने धोमरा को बुलाकर कहा कि जब तक वो पोपा का निर्माण करके वापस नहीं आता, तब तक किले की देखभाल उसे करनी होगी। इसमें रानी ताशा का हुक्म सबसे ऊपर होगा। देव ने जाने से एक दिन पहले ताशा के साथ सारा दिन उसी जंगल में बिताया, जहां वो शादी से पहले मिला करते थे। ताशा अब पूरी तरह जवान और समझदार हो चुकी थी। ये बात देव ने भी महसूस की और मन ही मन खुश हुआ कि ताशा मुसीबतों को संभालने वाली बन गई है। उस पर भरोसा करके काम उस पर छोड़े जा सकते हैं। ये सारा बदलाव तब आया जब ताशा ने मुकाबला करना सीखा था। हथियार चलाने सीखे थे। जंगल में वे उसी पेड़ के नीचे बैठे थे, जहां वे पहले बैठा करते थे। उन्होंने अपनी पुरानी यादें ताजा कीं। देव किसी तरह खुद को संभाले हुए था। वो ताशा से थोड़ी देर के लिए भी जुदा नहीं होना चाहता था। जबकि उसे अब

लम्बे वक्त के लिए दूर जाना पड़ रहा था ताशा भी मन ही मन खुश नहीं थी, परंतु देव को वो रोकना नहीं चाहती थी। वो जानती थी कि पोपा को बनाना, देव की प्रिय इच्छा थी। अंधेरा होने पर वे किले पर लौटे। बबूसा ने ही बग्गी चलाई थी। वो ही उस दिन कोचवान बना था। देव ने बबूसा से कल चलने की तैयारी के बारे में पूछा तो बबूसा ने कहा, तैयारी पूरी हो चुकी है। तब देव ने कहा कि वो अब सोमारा के पास जाए। चाहे तो कारू भी पी सकता है। सुबह दिन निकलने से पहले वो चल पड़ेंगे।

देर रात तक देव, ताशा का हाथ हाथों में लिए ताशा से बातें करता रहा। सारा दिन साथ बिताने पर भी देव का मन नहीं भरा था। ताशा भी जैसे सोना नहीं चाहती थी। देव के साथ बातों में ही रात बिता देना चाहती थी। उस रात वे दोनों ही नहीं सोए। बातों में ही डूबे रहे होश तब आई जब बबूसा की आवाज कानों में पड़ी। वे बाहर से राजा देव कहकर उसे पुकार रहा था। देव फौरन कमरे से बाहर पहुंचा तो बबूसा को चलने को तैयार खड़ा पाया।

"तुम इतनी जल्दी आ गए बबूसा?" देव ने कह उठा।

"राजा देव, सुबह होने में ज्यादा वक्त नहीं रहा। मैं तो सोच रहा था कि मुझे देर हो गई।" बबूसा ने गहरी नजरों से राजा देव को देखा—"लगता है पूरी रात आप सोए नहीं। वक्त बीतने का भी आपको एहसास नहीं हुआ।"

तब देव को पता चला कि पूरी रात ताशा से बातें करते ही बीत गई है।

कुछ ही देर में देव चलने को तैयार हो गया। उसने ताशा को बांहों में भरकर प्यार किया, तो ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे। देव भी अपने को रोक नहीं सका।

"जल्दी आइएगा मेरे प्यारे देव।" ताशा, देव की बांहों में फंसी भीगे स्वर में कह उठी।

"हां।" देव ने भरे गले से कहा।

उसके बाद देव, बबूसा के साथ पोपा का निर्माण करने जम्बरा की तरफ रवाना हो गया।

तभी देवराज चौहान ने करवट ली और एकाएक उसकी आंखें खुल गईं। मस्तिष्क में दौड़ते यादों की बारात के साए थम से गए। वो उदास निगाहों से सामने की दीवार को देखने लगा।

'ताशा।' देवराज चौहान बड़बड़ाया—'मेरी प्यारी ताशा—मेरी जिंदगी, मेरा सब कुछ...।' बेचैनी की तीव्र लहर मन और दिमाग में दौड़ी और देवराज चौहान उठकर बैठ गया—"ताशा, तुम कहां हो ताशा?" बेजान-सा देवराज चौहान बैठा रहा, सामने की दीवार को देखता रहा। चेहरा उतरा हुआ था। आंखों के सामने ताशा का मोहक चेहरा घूम रहा था। खयालों में ताशा बस

चुकी थी। वो तड़प-सा रहा था ताशा के बिना। ताशा, किला, सदूर के दृश्य, वो जंगल जहां वो और ताशा मिला करते थे। सदूर के पहाड़, सदूर के रास्ते और सदूर की ही चीजें देवराज चौहान के मस्तिष्क में, आंखों के सामने दौड़ रही थीं। ताशा को बांहों में लेना। ताशा के साथ बैठकर बातें करना, ताशा की नीली आंखों में शरारत के भाव, ताशा का मुंह फुला लेना तो कभी उसकी बांहों से निकलकर, किले की ऊपरी मंजिल के कमरे में सोमारा के पास जाकर बैठ जाना। ताशा का हर रूप आंखों के सामने नाच रहा था। अजीब-सी मदहोशी देवराज चौहान पर छाई हुई थी। आंखें बोझिल थीं।

देर तक देवराज चौहान इसी हाल में बैठा रहा।

लगता था जैसे किसी ने उसकी हिम्मत छीन ली हो।

ताशा उसकी जिंदगी थी। उसकी सांसें थी। ताशा के बिना उसका जीवन व्यर्थ था। पहले उसे याद नहीं था ताशा के बारे में, परंतु अब सब कुछ याद आ गया है। ताशा भी उसे कितना ज्यादा प्यार करती है, उसके बिना नहीं रह सकती। तभी पोपा में बैठकर सदूर से पृथ्वी पर आ पहुंची उसे लेने के लिए। कैसे रही होगी इतने दिन ताशा उसके बिना। कितनी तड़पी होगी। कितनी रोई होगी। कितना उसे ढूंढ़ा होगा। कैसे किया होगा अकेली ताशा ने ये सब।

देवराज चौहान बहुत ज्यादा बेचैनी से भर उठा। परेशान-सी नजरें कमरे में दौड़ीं। अगले ही पल उसकी निगाह बबूसा पर जा टिकी।

बबूसा बेड पर उसकी बगल में, गहरी नींद में डूबा हुआ था। वो अधलेटा-सा था। बेड की पुश्त से टेक लगा रखी थी और गर्दन एक तरफ लुढ़की हुई थी। स्पष्ट था कि देवराज चौहान की पहरेदारी करते-करते उसे झपकी आ गई थी। देवराज चौहान, बबूसा को देखने लगा। कितना अच्छा है बबूसा। उसका कितना खयाल रखता है, सदूर पर भी हमेशा उसके बारे में चिंता किया करता था और अब भी उसे लेकर चिंतित है। उसने कभी भी बबूसा को कर्मचारी नहीं माना था। हमेशा अपना दोस्त समझा था। बबूसा ने हमेशा दिल से उसकी सेवा की। उसकी खुशी को अपना माना। सदूर पर बबूसा के बिना खुद को अधूरा ही समझता यहां भी बबूसा उसका कितना खयाल रख रहा है, ताशा के बारे में...।

एकाएक देवराज चौहान की सोच थम गई।

ताशा? सब विचारे पीछे हो गए। ताशा ही सामने नजर आई। बबूसा उसे ताशा के पास नहीं जाने देना चाहता। ताशा उसके बंगले पर उसके आने का इंतजार कर रही है। बबूसा कहता है कि सब याद आने पर ही ताशा के पास जाने देगा। उसे याद तो आ गया है। सदूर के बारे में। ताशा के बारे में, बबूसा के बारे में, महापंडित के बारे में—सब कुछ तो...।

देवराज चौहान सतर्क हो उठा। बबूसा पर निगाह मारी, जो कि गहरी नींद में था।

देवराज चौहान आहिस्ता से बेड से नीचे उतरा और खड़ा हो गया पुनः बबूसा को देखा जो उसी हाल में गहरी नींद में था। देवराज चौहान ने कमीज-पैंट पहन रखी थी। जूते सामने ही रखे थे। वो दबे पांव जूतों के पास पहुंचा और उन्हें उठाए दबे पांव बेडरूम से निकलकर ड्राइंग रूम में आ पहुंचा और फुर्ती से जूते पहनने लगा। वो जानता था कि अगर बबूसा की आंख खुल गई तो उसे ताशा के पास नहीं जाने देगा। जाने की जिद की तो उसे बेहोश कर देगा। जबकि देवराज चौहान हर कीमत पर ताशा के पास पहुंच जाना चाहता था। दिलोदिमाग में सिर्फ ताशा नाच रही थी। वो सोच रहा था कि जब ताशा को सामने देखेगा तो उसे कितनी खुशी होगी और ताशा भी खुशी से पागल हो जाएगी। वो ताशा को बांहों में ले लेगा। उसे अपने सीने से लगा लेगा। तब कितना चैन मिलेगा। ताशा के साथ सदूर पर वापस चला जाएगा जहां उसकी असली दुनिया है और एक बार फिर से वो और ताशा प्यार में डूब जाएंगे। ताशा के साथ उसी जंगल में जाया करेगा। कितना अच्छा लगता था तब। वो और ताशा घना जंगल, ठंडी हवा, टकराते पत्तों की आवाजें। उन दोनों के अलावा वहां कोई नहीं होता था। प्यार के वो पल, देवराज चौहान की आंखों के सामने दौड़ने लगे। ताशा के बिना उसका जीवन बेकार है। वो सामने होती है तो उसे कितना अच्छा लगता है। सब कुछ भूल जाता है वो। ताशा में जादू है, हसीन ख्वाब की तरह है ताशा का साथ। वो दो दिल एक जान थे। पता नहीं वो अलग क्यों हो गए? वो कैसे पृथ्वी पर आ गया और ताशा सदूर पर रह गई। परंतु देवराज चौहान इस बारे में सोचना भी नहीं चाहता था। वो तो बस इतना जानता था कि ताशा उसके पास आ पहुंची है। उसे ढूंढ़ रही है। वो तड़प रही होगी उसे देखने के लिए। देवराज चौहान बिना देर किए ताशा के पास पहुंच जाना चाहता था। उसे देखना चाहता था। उसे बांहों में लेना चाहता था। इस विचार के साथ ही उसका दिल तेजी से धड़क उठा कि वो अपनी ताशा के पास जा रहा है। ताशा को फिर से देख सकेगा। उसे छू सकेगा। उसकी नीली आंखों में फिर से खो जाएगा। वो समां कितना हसीन होगा, जब ताशा उसकी बांहों में होगी।

जूते डालने के बाद देवराज चौहान उठा और बेआवाज-सा दरवाजे के पास जा पहुंचा। दरवाजा खोला, बाहर निकला और आहिस्ता से दरवाजा बंद करके वो आगे बढ़ गया। अब देवराज चौहान खुश था कि वो बबूसा से आजाद हो गया है। बबूसा नींद में डूबा है। उसकी रखवाली करते-करते उसकी आंख लग गई। बबूसा सोया उठेगा तो उसे न पाकर, उसका क्या हाल होगा।

देवराज चौहान बाहर सड़क पर पहुंचा और तेज कदमों से आगे बढ़ गया। रह-रहकर सड़क पर नजरें मार रहा था। उसे टैक्सी की तलाश थी। तभी दिन निकलना शुरू हो गया था। रात का अंधेरा और दिन के फैलते उजाले का मिलन देखना एक अनोखा अनुभव था। परंतु देवराज चौहान को रात-दिन की परवाह ही कहां थी। वो तो सिर्फ ताशा को देख रहा था। ताशा ही उसके मन में, खयालों में थी। रह-रहकर सदूर के नजारे आंखों के सामने आ रहे थे कि वो जंगल में ताशा का हाथ पकड़े दौड़ रहा है। ताशा खिलखिलाकर हंस रही है। उसके मोतियों जैसे दांत चमक रहे हैं। कितना अच्छा वक्त था सदूर पर ताशा के साथ। वो सुनहरी लम्हे थे जीवन के। तभी खाली जाती टैक्सी मिल गई। देवराज चौहान टैक्सी में बैठा और ड्राइवर को बताया कहां जाना है। टैक्सी दौड़ पड़ी। देवराज चौहान के चेहरे पर मीठी मुस्कान दौड़ गई। उसे अब कोई नहीं रोक सकता था ताशा से मिलने से। कुछ ही देर में ताशा उसकी बांहों में होगी।

"ताशा।" एकाएक देवराज चौहान का जिस्म कांप उठा, ताशा से मिलने की सोचकर।

▭ ▭

पंद्रह मिनट भी नहीं बीते होंगे कि बबूसा की आंख खुल गई। देवराज चौहान को बेड पर न देखकर वो चौंका। उसी पल उठा और पूरा फ्लैट, सारे बाथरूम में देख लिया। परंतु देवराज चौहान कहीं नहीं था। बबूसा के चेहरे पर चिंता दिखने लगी। वो परेशान हो उठा। अगले ही पल अपना माथा पकड़कर बड़बड़ा उठा।

'ये आपने क्या कर दिया राजा देव। अभी आपका रानी ताशा के पास जाना खतरे से खाली नहीं था। अगर आपको सब कुछ याद आ गया होता तो आपने कभी भी ताशा के पास नहीं जाना था। ये तो अनर्थ कर डाला आपने। लेकिन मैं आपको अकेला नहीं छोड़ सकता। मुझे भी आपके पास आना होगा। मैं सोमाथ के सामने अभी नहीं पड़ना चाहता था, परंतु अब मुझे खतरे में कदम रखना होगा। महापंडित ने आपकी ताकत के साथ इस बार मेरा जन्म कराया है। सोमाथ के लिए आसान नहीं होगा, मुझसे टकराना। बेशक वो मुझसे ज्यादा ताकतवर है।" बबूसा होंठ भींचे आगे बढ़ा और दरवाजा खोलकर बाहर निकलता चला गया।

▭ ▭

एकाएक रानी ताशा की आंख खुल गई। वो बंगले के बेडरूम में, सोमारा के साथ बेड पर नींद में थी और समझ नहीं पाई कि उसकी आंख क्यों खुली। खिड़की से बाहर रोशनी बता रही थी कि दिन निकल चुका है। रानी ताशा ने

सोमारा पर निगाह मारी, जो कि गहरी नींद में थी। फिर उठी और कमरे से बाहर आ गई। ड्राइंग हॉल में पहुंची। वहां जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और धरा एक तरफ फर्श पर लेटे नींद में थे। सोमाथ उनकी पहरेदारी करता हुआ कुर्सी पर बैठा था। अन्य तीनों व्यक्ति भी चंद कदमों दूर फर्श पर सो रहे थे।

"आंख खुल गई रानी ताशा।" सोमाथ उसे देखता ही कह उठा।

"हां।" रानी ताशा ने जगमोहन वगैरहा पर नजर मारी—"आज जाने क्यों जल्दी आंख खुल गई। ऐसा लगा जैसे किसी ने नींद से जगा दिया हो। तुम्हें महापंडित ने बढ़िया बनाया है, तुम थकते नहीं कभी।"

"मेरे शरीर में लगी बैटरी मुझे थकने नहीं देती है।" सोमाथ कह उठा।

तभी नगीना की आंख खुली तो धरा भी उठ बैठी। इसी तरह जगमोहन और मोना चौधरी भी उठ गए। वैसे भी फर्श पर कच्ची-पक्की नींद आती थी।

"मेरे घर में तुमने मुझे फर्श पर सुला रखा है।" जगमोहन कह उठा।

"मैंने तुम लोगों को बहुत अच्छे से रखा हुआ है।" रानी ताशा मुस्कराई।

"ये सब कब तक चलेगा?"

"जब तक राजा देव मुझे मिल नहीं जाते।" रानी ताशा ने कहा।

"देवराज चौहान यहां नहीं आएगा।"

"आएगा। वो तुम लोगों के लिए यहां आएगा। उसे आना ही होगा।" रानी ताशा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"उन्हें।" नगीना बोली—"सदूर के जन्म की याद आ गई होगी और पता भी चल गया होगा कि तुमने उनके साथ कोई धोखा किया था तो वो तुम्हें छोड़ने वाले नहीं।"

रानी ताशा मुस्कराई। नजरें नगीना पर थीं।

"तुम इन बातों की व्यर्थ में चिंता मत करो। ऐसा हुआ तो महापंडित सब ठीक कर देगा। जब मैं राजा देव को लेकर सदूर पर पहुंच जाऊंगी तो महापंडित राजा देव को पहले जैसा सामान्य कर देगा।"

"मुझे तुम्हारी बातों पर अभी भी यकीन नहीं।" मोना चौधरी कह उठी।

"तुम सब मेरे साथ सदूर पर चलोगे और महापंडित तुम लोगों के दिमाग इस प्रकार कर देगा कि मेरी सेवा किया करोगे। किले के कर्मचारी बनोगे और मुझे और राजा देव को देखा करोगे कि हम कितने प्यार से अपना जीवन बिताते हैं। हम पहले भी बहुत खुश थे और अब फिर बहुत खुश रहेंगे।"

"मुझे भी साथ ले जाओगी।" धरा जल्दी से कह उठी।

"हां—तुम भी...।"

"मुझे मत ले जाओ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। मुझे यहीं रहने दो।" धरा ने कहा।

"मेरा फैसला तुम लोगों ने सुन ही लिया है। तुम सब मेरे साथ...।"

"ये सब तब होगा। जब देवराज चौहान तुम्हें मिलेगा।" जगमोहन बोला—"और वो तुम्हें मिलने वाला नहीं...।"

इसी पल बेल बजने का स्वर वहां गूंज उठा।

सब चौंके। कम-से-कम सुबह तो किसी के आने की आशा नहीं की जा सकती थी।

नींद में डूबे वो तीनों व्यक्ति बेल के स्वर से तुरंत उठ गए।

"आने वाला जो भी हो, उसे भीतर ले आओ।" रानी ताशा ने कहा।

उन तीनों में से एक दरवाजे की तरफ बढ़ गया। तभी पुनः बेल बजी। बाहर जो भी था वो जल्दी से भीतर आ जाना चाहता था।

एकाएक रानी ताशा चौंकी और कह उठी।

"राजा देव आ गए। मेरा देव आ गया। आह—मुझे उसके करीब होने का एहसास हो रहा है। मेरा देव ही आया है। जल्दी से दरवाजा खोलो। जन्मों से जिस वक्त का मुझे इंतजार था, वो वक्त आ गया।" रानी ताशा का चेहरा खुशी से खिल उठा था। नीली आंखों में आंसू चमकने लगे थे—"देव—मेरा प्यारा देव आ गया। मेरे देव...।"

रानी ताशा की बात पर जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और धरा चौंकीं। उनकी नजरें मिलीं परंतु कुछ कह न सके। उन्हें विश्वास नहीं था कि देवराज चौहान ही आया होगा।

रानी ताशा मुस्कान भरी निगाहों से बंद दरवाजे को देख रही थी।

तभी भीतर से सोमारा भी उठी चली आई थी।

"क्या बात है ताशा?" सोमारा ने पूछा।

"मेरा देव आ गया। मैं उसके करीब आ जाने का एहसास पा रही हूं। मैं जानती थी कि देव, जल्दी ही मेरे पास आएगा। वो मेरे से दूर नहीं रह सकेगा। मेरी तरह वो भी तड़प रहा होगा, मेरे से मिलने को।" रानी ताशा का स्वर कम्पन लिए हुए था। वो खुश थी। उसके अंग-अंग से खुशी झलक रही थी।

बबूसा का जिक्र होते ही सोमाथ की नजरें दरवाजे पर जा टिकीं।

दरवाजे पर पहुंचकर उस आदमी ने दरवाजा खोला तो तेजी से देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया। उसकी हालत दीवानों जैसी हो रही थी। जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना को देवराज चौहान, देवराज चौहान नहीं लगा। देवराज चौहान के अंदाज की झलक कहीं भी नहीं दिखी उन्हें।

"दे...व।" रानी ताशा बांहें फैलाती चीख उठी—"मेरे प्यारे देव...।"

ता-शा...।" देवराज चौहान गला फाड़कर चीखा—"ताशा-ताशा...।" इसके साथ ही ताशा की तरफ दौड़ पड़ा।

"मेरे देव...।" ताशा का स्वर कांप उठा, आंखों से आंसू बहकर गालों पर आ लुढ़के।

"मैं आ गया ताशा।"

"देव।"

पास पहुंचते ही देवराज चौहान ने पागलों-दीवानों की तरह झपट्टा मारा और ताशा को अपनी बांहों में लेकर भींच लिया। ताशा की बांहें भी देवराज चौहान के गिर्द कस गईं।

"ताशा...।" देवराज चौहान की आंखों से भी आंसू बह निकले।

"देव, तुम कहां थे इतनी देर तक।" ताशा रो पड़ी।

"मैं आ गया ताशा। आ गया। अब तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।" ताशा को बांहों में समेटे हुए देवराज चौहान ताशा का चेहरा चूमते कहे जा रहा था—"मैंने तुम्हें वापस पा लिया ताशा। हम फिर मिल गए। तुम कहां चली गई थीं ताशा। तुम तो जानती हो कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता...।"

"आप क्या जानो देव, आपके बिना मैं कितना तड़पी हूं। चार जन्मों से आपसे मिलने की आस लगाए हुए हूं।" ताशा रोते हुए बोली—"आप तक पहुंचने में मैंने कितनी तकलीफें सही। मैं अब आपसे अलग नहीं होऊंगी। आपको दूर नहीं जाने दूंगी। अपनी नजरों के सामने ही रखूंगी।"

"हां ताशा, हां—मैं तुम्हें अपने पास ही रखूंगा। दूर नहीं जाने दूंगा मेरी प्यारी ताशा। तुम तो मेरी जिंदगी हो। तुम्हारे बिना मेरा जीवन कुछ भी नहीं है।" देवराज चौहान दीवानों की तरह ताशा का चेहरा चूमे जा रहा था। वो अजीब-से बुरे हाल में लग रहा था। रो भी रहा था और खुश भी था।

"मेरे देव।" ताशा उसके सीने पर प्यार करते कह उठी—"मैं कितनी भाग्य वाली हूं जो आप मुझे मिल गए वापस। इस वक्त का मैं कब से इंतजार कर रही थी। तड़प रही थी आपको बांहों में लेने के लिए।"

"अब तो मैं आ गया हूं ताशा।"

"मेरा देव। मेरा प्यारा देव।" ताशा ने बांहो का घेरा कसकर देवराज चौहान के गिर्द इस तरह डाल रखा था कि जैसे उसे डर हो कि देवराज चौहान कहीं भाग जाएगा—"महापंडित ने मुझे भरोसा दिलाया था कि आप मुझे जरूर मिलेंगे। अपनी मशीन से उसने मेरी बातें करवाई थीं। महापंडित ने मुझे हौसला न दिया होता तो आज मैं जिंदा नहीं होती। महापंडित ने ही मुझे बताया था कि आप पृथ्वी ग्रह पर बार-बार जन्म ले रहे हैं और आपको सदूर की बातें कुछ भी याद नहीं और...।"

"मुझे याद आ गया है ताशा, सदूर मुझे याद आ गया। तुम याद आ गईं...।"

"अ-और क्या याद आया?" ताशा का स्वर कांप उठा।

"हम जंगल में मिला करते थे। बग्गी में घूमा करते थे। हमारी शादी भी हो गई थी। तुम किले के कामों को देखने लगी थीं। मैंने तुम्हें मुकाबला करना सिखाया, तुम्हें तलवारबाजी सिखाई। मैं पोपा बनाने की तैयारी कर रहा था। मुझे सब याद आ गया ताशा। हमारा वो प्यार, वो सुनहरी दिन, वो सब कुछ कितना अच्छा था ताशा।"

"बहुत अच्छा था।" ताशा खुशी से कांप उठा—"मैंने अपने देव को पा लिया, सब कुछ पा लिया। अब आपको अपने से दूर नहीं जाने दूंगी। आज मुझे जितनी खुशी मिल रही है, इतनी खुशी तो तब भी नहीं मिली थी, जब मैंने आपसे शादी की थी। आप मिल नहीं रहे थे और मेरी हिम्मत टूटती जा रही थी देव। मैं ही जानती हूं कि मैंने अपने को कैसे संभाले रखा और आस जगाए रखी कि आप मिल जाएंगे। इतनी देर से आप मेरे पास क्यों नहीं आए देव। मैंने कितनी बार आपको बुलाया। फोन पर बातें की।"

"बबूसा, मुझे आने नहीं दे रहा था, वो...।"

"वो तो आपका सेवक है। वो आपको कैसे रोक सकता है?"

"वो कहता है मेरे भले के लिए मुझे रोक रखा है कि रानी ताशा के पास न जाऊं। वो मुझे सदूर की बातें याद दिलाना चाहता था कि मुझे सब कुछ याद आ जाए। तुम तक जाने की कोशिश करता तो वो मुझे बेहोश कर देता था। बबूसा में इतनी ताकत जाने कहां से आ...।"

"महापंडित ने इस बार उसमें आपकी ताकत, आपके गुण डालकर, उसका जन्म कराया था। बबूसा बहुत ताकतवर है इस जन्म में। ये वो साधारण बबूसा नहीं है, जो आपका सेवक हुआ करता था।" ताशा ने कहा—"मेरा देव मुझे मिल गया। मेरी तलाश पूरी हो गई। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

देवराज चौहान ने दोनों हाथों से ताशा का चेहरा पकड़कर उसे देखा। नीली आंखों में झांका।

"तुम-तुम कितनी अच्छी हो ताशा।"

"देव।" ताशा का स्वर कांप उठा।

"वो ही नीली आंखें, वो ही खूबसूरत चेहरा, तुम जरा भी नहीं बदली ताशा।" देवराज चौहान का स्वर कांपा।

"आप भी तो वैसे ही हैं। वो ही चेहरा, वो ही बात करने का अंदाज। वो ही प्यार करने की चाह। वो ही मेरे प्रति आपकी दीवानगी। किसी भी तरफ से आप नहीं बदले मेरे देव।"

"तुम्हारे लिए मैं वो ही देव हूं। तुम्हारा देव। ताशा का देव, तुम्हारा पागल देव।"

ताशा आंसुओं भरी नीली आंखों से देवराज चौहान को देखे जा रही थी।
"देव।" ताशा के होंठ कांपे—"मैं आपसे क्षमा मांगना चाहती हूं।"
"ये क्या कह रही हो ताशा?" अभी भी दोनों हथेलियों में ताशा का खूबसूरत चेहरा फंसा था।
"मैंने आपके साथ बुरा किया था। उसी वजह से सदूर से निकलकर आप पृथ्वी पर आ गए। उसी कारण हम अलग हो गए थे। पर मैंने अपने किए का पछतावा भी बहुत किया है। उस जन्म के बाद तीन बार महापंडित मेरा जन्म करवा चुका है और आपकी याद मेरे मस्तिष्क में महापंडित ने कायम रखी। हर जन्म में मैं आपसे मिलने की आस लगाए बैठी रही। मैंने किसी को भी अपने दिल का राजा नहीं बनाया। क्योंकि मेरे दिल में तो सिर्फ मेरा देव था। मेरा प्यारा देव। मुझसे जो भूल हुई थी, उसके लिए मुझे क्षमा कर दीजिए।"
"ये कैसी बातें कर रही हो ताशा?" देवराज चौहान तड़प उठा।
"मेरी वो ही भूल तो बबूसा आपको याद दिलाना चाहता है। तब मेरे से...।"
"इन बातों को छोड़ दो ताशा।" देवराज चौहान प्यार से कह उठा—"तुम मुझे मिल गई हो। अब मुझे कुछ भी नहीं सुनना है। मैंने अपना प्यार पा लिया। ताशा अब मेरे पास है।"
"मुझे उस भूल की क्षमा चाहिए।"
"क्षमा दी।" देवराज चौहान बोला—"मैं...।"
"जानेंगे नहीं कि मुझसे क्या भूल हुई जो...।" ताशा ने कांपते स्वर में कहना चाहा।
"कुछ नहीं जानना है मैंने। मेरी ताशा मुझे मिल गई। ये ही बहुत है मेरे लिए। तुम नहीं जानती कि आज मैं कितना खुश हूं। तुम्हारी तरह कि मुझे सदूर पर हमारी शादी की इतनी खुशी नहीं हुई थी जितना खुशी आज हो रही है। मैंने तुम्हें पा लिया। तुम मेरी बांहों में हो ताशा। मेरा जीवन सफल हो गया।" देवराज चौहान की आंखों में आंसू थे।
"मेरे प्यारे देव।" रानी ताशा के होंठों से थरथराता स्वर निकला।
"ताशा, मेरी प्यारी ताशा।" देवराज चौहान ने पुनः ताशा को अपने सीने से लगा लिया।
दोनों ने एक-दूसरे को कसकर भींच लिया।
वहां सन्नाटा छाया हुआ था। देवराज चौहान और रानी ताशा के शब्द सबके कानों में पड़ रहे थे। वो दोनों इस तरह बातों में व्यस्त थे कि जैसे उनके अलावा कोई दूसरा वहां हो ही नहीं। सबकी निगाहें उन दोनों पर टिकी हुई थीं और वो दोनों दुनिया से बेखबर एक दूसरे से चिपके हुए थे। एक-दूसरे को भींच रखा था। वो अपनी अलग ही किसी दुनिया में डूब चुके थे।

जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना और धरा हक्के-बक्के से देख सुन रहे थे।

जगमोहन को तो अपनी आंखों और कानों पर विश्वास ही नहीं आ रहा था कि जो वो देख-सुन रहा है वो सच है। देवराज चौहान आंसू बहाते, रानी ताशा को सीने से लगाए, उससे जिस प्रकार बातें कर रहा था, ऐसा नजारा देखने की तो उसने कल्पना भी नहीं की थी। वो हैरान था। ठगा-सा देवराज चौहान और रानी ताशा को देखे जा रहा था। ये ही हालत नगीना और मोना चौधरी की थी। उन्हें विश्वास नहीं आ रहा था कि वो जो देख रहे हैं, वो सच है, परंतु सच था। जो हो रहा था उनकी आंखों के सामने हो रहा था। देवराज चौहान का एक नया रूप सामने था। मोना चौधरी छिपी निगाहों से बार-बार नगीना को देख लेती थी। नगीना के चेहरे पर उलझन के भाव थे। ऐसे भाव कि उसे विश्वास न आ रहा हो कि जो वो देख रही है वो सही है। रानी ताशा से बात करते देवराज चौहान के शब्द उसके कानों में पड़ रहे थे। एक-एक शब्द उसने सुना था। मोना चौधरी से रहा नहीं गया तो वो नगीना से कह उठी।

"ये सब क्या हो रहा है?"

"देवराज चौहान को सदूर के जन्म की याद आ गई है।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हारा मतलब कि सच में कोई सदूर ग्रह है, जहां लोग रहते हैं।" मोना चौधरी के माथे पर बल पड़े।

"हां।"

"तो ये बात सही है कि सदूर के जन्म में देवराज चौहान वहां का राजा था और ताशा, रानी थी।"

"हां।"

"परंतु वो बात तो कई जन्म पीछे रह गई है। देवराज चौहान तो यहां पर आज का जन्म जी रहा है।" मोना चौधरी ने तीखे स्वर में कहा—"ऐसे में उस जन्म की बातें, कम-से-कम देवराज चौहान और ताशा के एक हो जाने की बात खत्म हो चुकी है।"

"बात तभी खत्म होगी, जब ये बात देवराज चौहान माने या ताशा माने।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु ये दोनों ही उस जन्म की बातों का नकारना नहीं चाहते। इनका हाल तुम्हारे सामने ही है। दोनों इस तरह मिले हैं, जैसे कुछ दिन पूर्व ही अलग हुए हों, जबकि इस बात को तीन-चार जन्म बीत चुके हैं।"

"अगर देवराज चौहान को वो जन्म याद आ गया है तो, बबूसा का कहना है कि जन्म याद आते ही देवराज चौहान, ताशा को सजा दे सकता है।" मोना चौधरी ने कहा—"परंतु यहां तो बिल्कुल ही अलग हो रहा है।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा मिन्नो।" नगीना होंठ भींचे कह उठी।

"देवराज चौहान तो तुझे बिल्कुल ही भूल गया है। ये कैसे हो सकता है।"

"कहा तो, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" नगीना की निगाह देवराज चौहान और ताशा पर थी, जो अभी भी एक-दूसरे को बांहों में समेटे दुनिया को भूले हुए थे।

"बबूसा कहां है?" मोना चौधरी कह उठी।

नगीना चुप रही। वो परेशान-सी दिखने लगी थी।

मोना चौधरी ने जगमोहन को देखा, जो हैरान-सा लग रहा था।

"देवराज चौहान क्या कर रहा है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मुझे नहीं पता।"

"क्या ये कोई ड्रामा तो नहीं कर...।"

"ये सच्चाई है मोना चौधरी।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला—"जो तुमने देखा-सुना, वो सच है। देवराज चौहान की हालत बदली हुई है। मैं देवराज चौहान में अजीब-सा बदलाव देख रहा हूं। ये इसी वजह से है कि इसे सदूर ग्रह का जन्म याद आ गया है। ताशा याद आ गई है। सब कुछ याद आ गया...।"

"ये तुम कैसे कह सकते हो?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"उसी धोखे के बारे में अभी ताशा ने देवराज चौहान से क्षमा मांगी थी तो देवराज चौहान के जवाब से लगा कि उसे इस धोखे के बारे में कुछ भी पता नहीं है। वो बस ताशा के मिल जाने से खुश है। ताशा में गुम है। परंतु बबूसा कहां चला गया। वो किसी भी हाल में देवराज चौहान को अकेला नहीं छोड़ेगा। उसे ताशा के पास आने भी नहीं देता। जब तक देवराज चौहान को सदूर ग्रह का पूरा जन्म याद न आता। इस बारे में बबूसा का इरादा पक्का था।"

"फिर तो एक बात ही हो सकती है कि देवराज चौहान बबूसा की निगाहों से बचकर यहां आ पहुंचा हो।" मोना चौधरी ने कहा।

"ये ही हुआ होगा।" जगमोहन के होंठ भिंच गए—"ऐसा है तो बबूसा भी आता होगा।"

"तुम्हें देवराज चौहान से बात करनी चाहिए।"

"किस बारे में?"

"नगीना के बारे में कि वो उसकी पत्नी...।"

"अभी खामोश रहो।" जगमोहन ने कहा—"देवराज चौहान ठीक से अपने होश में नहीं है। मैं तो ये सोच रहा हूं कि अब क्या होगा? क्योंकि ताशा उसे सदूर ग्रह पर ले जाने का इरादा बनाए हुए है।"

मोना चौधरी का चेहरा कठोर हो गया।

"भाभी।" जगमोहन ने नगीना से कहा—"अपने पर काबू रखना। मुझे लगता है जैसे कोई नई मुसीबत शुरू होने जा रही है। देवराज चौहान बहुत बदला-सा लग रहा है और ताशा का दीवाना हुआ पड़ा है। ऐसे में कुछ भी हो सकता है और हम अपनी मनमानी नहीं कर सकते, क्योंकि सोमाथ पर हम काबू नहीं पा सकते।"

"रानी ताशा के वो तीनों आदमी।" नगीना ने शब्दों को चबाकर कहा—"बबूसा ने बताया था कि उनके पास जोबिना नाम का कोई हथियार है, जो कि इंसान को राख में बदल देता है। हड्डियां भी राख हो जाती हैं। सोमाथ पर काबू पा भी लेंगे तो उन तीनों से नहीं बच सकते। इस वक्त हम फंसे पड़े हैं।"

"तो अब करना क्या है?" धरा बोली—"या कुछ नहीं करोगे तुम लोग?"

"देवराज चौहान इस हाल में है तो, हम कर भी क्या सकते हैं।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"देवराज चौहान से बात करो।" धरा बोली—"वो ऐसा क्यों कर रहा है।"

"ये वक्त चुप रहने का है।"

"बबूसा कहां चला गया। वो तो देवराज चौहान का साथ छोड़ने वाला नहीं।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

देवराज चौहान और रानी ताशा अलग हुए। एक-दूसरे का हाथ थाम रखा था। दोनों के चेहरे आंसुओं से भरे थे। परंतु चेहरों पर खुशी थी, मुस्कान थी। रौनक थी। देवराज चौहान प्यार भरी निगाहों से ताशा को देखे जा रहा था तो ताशा, उसकी छाती पर हाथ मारकर बोली।

"आप फिर मुझे पहले की तरह देखने लगे। आदत गई नहीं आपकी।"

"तुम्हें जितना भी देख लूं दिल नहीं भरता। जाने तुम्हारे चेहरे पर क्या है। जो हाल मेरा पहले था, वो ही अब है।" देवराज चौहान ने प्यार भरे स्वर में कहा—"तुम हो ही ऐसी ताशा। कोई मेरी नजरों से तुम्हें देखे तो समझ जाएगा ये बात।"

"मक्कार।" रानी ताशा मीठे स्वर में कह उठी।

देवराज चौहान चेहरे पर मुस्कान समेटे ताशा को देखता रहा।

"आप कैसे हैं राजा देव?" सोमारा की आवाज सुनकर, देवराज चौहान ने चेहरा घुमाया।

कुछ फासले पर सोमारा को देखा तो कह उठा।

"सोमारा तुम...?"

"आपको फिर से देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है राजा देव।" सोमारा ने मुस्कराकर कहा।

"तुम्हें देखकर मुझे भी खुशी हुई। मैं नहीं जानता था कि ताशा के साथ तुम भी आई हो।"

"मैं बबूसा के लिए आई हूं राजा देव। बबूसा आपके साथ नहीं आया।"

"वो नींद में था तो मैं चुपके से चला आया।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा।

"तो बबूसा नहीं जानता कि आप यहां हैं।" सोमारा बोली।

"जब आंख खुलेगी तो समझ जाएगा कि मैं यहां आ गया हूं। वो यहां आ जाएगा सोमारा।"

"वो ठीक तो है न?"

"पूरी तरह। इस जन्म में तो महापंडित ने उसमें मेरे जैसी ताकत भर रखी है।"

सोमारा शांत-सी देवराज चौहान को देखती रही। फिर कह उठी।

"आप उसे साथ ही लाते तो अच्छा रहता।"

"बबूसा मुझे यहां नहीं आने देता। वो चाहता था कि सदूर की सब बातें याद आने के बाद मैं ताशा से मिलूं।"

सोमारा चुप रहा। सोमाथ अब तक खामोशी से खड़ा था।

वो तीनों व्यक्ति भी अपनी जगह मौजूद थे।

"मेरे देव।" रानी ताशा बोली—"उस कमरे में जाकर आराम करते हैं। मैं आपसे दिल भरकर बातें करना चाहती हूं। कब से इस वक्त को तरस रही हूं। अब आप मेरे पास हैं। मेरे इतने करीब कि खुशी से पागल हो रही हूं।"

"हम कितनी भी बातें कर ले, परंतु हमारा दिल नहीं भरेगा।" देवराज चौहान ने प्यार से कहा—"आओ ताशा, हम पुराने वक्त की यादों को एक बार फिर ताजा करें। अब मैं तुम्हारे पास रहा करूंगा। तुम भी मेरे पास ही...।"

"ये आप क्या कर रहे हैं।" तभी नगीना खड़े होते हुए कह उठी।

सबकी निगाहें नगीना की तरफ गई। नगीना गुस्से में दिखी।

जगमोहन और मोना चौधरी सतर्क हो गए।

"तुम यहां हो नगीना।" देवराज चौहान उसे देखते ही कह उठा—"मैंने तो तुम्हें देखा ही नहीं था।"

"ये औरत कौन है?" नगीना का लहजा तीखा था।

"ये—ये ताशा है नगीना।"

"कौन ताशा?"

"तुम तो जानती हो ताशा को, ये सदूर पर मेरी पत्नी...।"

"मैं न तो किसी सदूर को जानती हूं और न ही इसे। मैं सिर्फ इतना जानती हूं कि आप मेरे पति हैं।"

"ताशा मेरी पत्नी है नगीना—ये...।"

"आपकी पत्नी मैं हूं।"

"परंतु ये मेरी पहले की पत्नी है।" देवराज चौहान ने दीवानों की भांति कहा—"मैं इसे बहुत प्यार करता हूं। मैं इसके बिना नहीं रह सकता। ये मेरे लिए सब कुछ है।"

"और मैं?" नगीना गम्भीर हो गई—"मैं आपके लिए क्या हूं?"

"तुम—तुम भी मेरी पत्नी हो, लेकिन ताशा को मैं तुमसे ज्यादा चाहता...।"

"आप अपने होश में नहीं हैं, जो ऐसी बातें कर रहे हैं। ताशा आपके लिए अंजान है और...।"

"ऐसा न कहो नगीना। ताशा के बिना मेरा जीवन, जीवन नहीं है। ये मुझे सबसे प्रिय है।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो आपको सदूर के जन्म की याद आ गई है?"

"हां नगीना, मुझे सब याद आ गया...।"

"सब याद नहीं आया आपको।" नगीना ने दांत भींचकर कहा—"बबूसा ने कहा था कि जब आपको सब कुछ याद आ जाएगा तो ताशा को आप सजा देंगे। जबकि इस वक्त आप इसके दीवाने हो रहे हैं।"

"मुझे जितनी जरूरत थी, उतना याद आ गया है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"सदूर के बारे में मुझे सब याद गया है। ताशा के बारे में, बबूसा के बारे में सब याद आ गया है। अब और कुछ भी मुझे जानने की जरूरत नहीं। मैं फिर से ताशा को खोना नहीं चाहता। यूं भी ताशा ने मुझसे अपनी गलती की क्षमा मांग ली है। जबकि मैं नहीं जानता, वो गलती क्या थी, ताशा से मुझे कोई भी शिकायत नहीं है और न ही होगी।"

"आप मेरे पति हैं।"

"मेरे लिए ताशा ही सब कुछ है। मैं ताशा के बिना नहीं रह सकता।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

ताशा, नगीना को देखकर मुस्कराई।

"तो क्या हमारा रिश्ता कुछ भी नहीं था?"

"तब मैं ताशा से अंजान था।" देवराज चौहान ने अभी भी ताशा का हाथ थाम रखा था—"मुझे सदूर के बारे में कुछ भी याद नहीं था। ताशा याद आई तो मुझे महसूस हो गया कि मेरा असली जीवन, असली प्यार सदूर पर है। ताशा है। अब मैं ताशा को खोना नहीं चाहता। ताशा में मेरी जान बसती है।"

उसी पल जगमोहन खड़ा होकर, कह उठा।

"तुम जो कह रहे हो, पूरे होश में रहकर कह रहे हो।" जगमोहन गम्भीर था।

"मैं पूरे होश में हूं जगमोहन।"

"इस वक्त तुम कौन-सा जीवन जी रहे हो। पृथ्वी का या सदूर ग्रह का?" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान, जगमोहन को सोच भरी निगाहों से देखने लगा।

"मेरे देव।" रानी ताशा गर्व भरे अंदाज में कह उठी—"जवाब दो। बता दो इन्हें कि आप सिर्फ मेरे हो।"

"बताओ मुझे इस वक्त तुम कौन-सा जीवन जी रहे हो। पृथ्वी का या सदूर ग्रह का?"

"पृथ्वी का।"

"तो पृथ्वी के हिसाब से तुम्हारी पत्नी कौन है? नगीना या ये?"

"बेशक मैं पृथ्वी का जन्म जी रहा हूं, परंतु सदूर का वक्त मुझे एहसास करा रहा है कि मैं वहां का हूं। ताशा का हूं। वहीं पर मेरा सब कुछ है। ताशा के बिना मैं नहीं रह सकता। ये ही मेरा असली प्यार है, मैं...।"

"तुम सदूर ग्रह के उस जन्म की बात कर रहे हो जो आज से चार जन्म पहले का था। जबकि इंसान का हर नया जन्म, एक नई जिंदगी की वजह बनता है। चार जन्म पहले ताशा तुम्हारी पत्नी थी। उसके बाद तुमने पृथ्वी के किसी हिस्से पर जन्म लिया। जिसे हम पूर्वजन्म की जमीन कहते हैं, जो कि आज न जाने कहां लुप्त हो चुकी है परंतु समय चक्र हमें कई बार, उस पूर्वजन्म में ले जा चुका है। उस जन्म के बाद तुमने पंजाब के लुधियाना शहर में जन्म लिया और मोना चौधरी तुम्हारी पत्नी बनी थी। ये जन्म तुम दोनों ने जी भरकर जिया। बात करने के लायक कोई बात नहीं है, परंतु पूर्वजन्म की धरती पर नगीना भाभी, बेला के नाम से तुम्हारी पत्नी बनी थी जो कि तब की मिन्नो यानी मोना चौधरी की छोटी बहन थी और आज के तीसरे जन्म में वो ही बेला, नगीना के नाम से तुम्हारी पत्नी बनी। लेकिन अब तुम कहते हो कि पूर्वजन्म से भी पहले के, सदूर ग्रह के जन्म में ही तुम्हारी आज की जिंदगी है तो ये कैसे सम्भव है। तब की पत्नी ताशा के साथ तुम्हारे सारे सम्बंध उसी वक्त खत्म हो गए थे, जब तुमने सदूर ग्रह से अलग होकर पृथ्वी पर जन्म लिया। तो ऐसे में तुम ये कैसे कह सकते हो कि सदूर का जीवन ही तुम्हारा असली जीवन है। चार जन्म पहले की पत्नी को तुम अपनी पत्नी कह रहे हो और आज की पत्नी को तुम दूर धकेल रहे हो।" जगमोहन के होंठ भिंच चुके थे। चेहरे पर कठोरता दिखाई देने लगी थी—"तुम होश में नहीं हो। होश में होते तो कभी भी ऐसी बात नहीं कहते। ताशा की खूबसूरती ने तुम्हारे होश छीन लिए हैं कि अच्छा-बुरा नहीं समझ पा रहे।"

"मैं ताशा से पहले भी दीवानावार प्यार करता था और अब भी करता

हूं।" देवराज चौहान ने नाराजगी से कहा—"मैं ताशा के बिना नहीं रह सकता जगमोहन। अब मैं इससे दूर नहीं हो सकता।"

"ये तुम्हारी पत्नी नहीं है।" जगमोहन ने तेज स्वर में कहा।

"मेरी पत्नी है ये। क्या तुम्हें बबूसा की बातों पर यकीन नहीं। मेरी बात पर यकीन नहीं कि मुझे सदूर का जन्म याद आ चुका है। ताशा ही मेरी सब कुछ है और...।"

"मैं तुम्हें ये समझाना चाहता हूं कि तुम इस वक्त सदूर का नहीं, पृथ्वी का जन्म जी रहे हो।"

"बेशक मैं पृथ्वी का जन्म जी रहा हूं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु तब मैं ताशा के बारे में सब कुछ भूला हुआ था। मुझे सदूर के बारे में कुछ भी याद नहीं था। पर अब सब कुछ याद आ चुका है। मेरा असली जीवन सदूर पर ही है। ताशा के साथ ही मेरी सांसें हैं। ताशा ही मेरे जन्म की साथी है। ताशा के बिना जीवन बिताने की मैं सोच भी नहीं सकता। ये ठीक है या गलत, तुम जानो। मेरी नजरों में ये पूरी तरह ठीक है। ताशा में मेरी जान बसती है।"

"और नगीना का क्या होगा।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा।

"मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। मैं ताशा के साथ रहूंगा...।" देवराज चौहान ने कहा।

नगीना गम्भीर निगाहों से देवराज चौहान को देख रही थी।

खामोश खड़ी मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली।

"देवराज चौहान, मुझे तुमसे ऐसी आशा तो कभी नहीं थी। मैंने नहीं सोचा था कि तुम ऐसी हरकत भी करोगे।"

"मैं ताशा को भूल चुका था। अगर मुझे ताशा की याद रही होती तो...।"

"तुम कभी भी...।" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहना चाहा।

"चुप हो जा मिन्नो।" नगीना गम्भीर स्वर में बोली—"मुझे इस बात पर जरा भी एतराज नहीं कि देवराज चौहान किसी और के साथ रहे। ये अपनी मर्जी से फैसला कर रहे हैं और मैं खुशी से इनके फैसले के साथ हूं।"

सोमारा खामोश खड़ी गम्भीर निगाहों से सब कुछ देख-सुन रही थी।

जगमोहन ने सख्त निगाहों से देवराज चौहान को देखा। परंतु देवराज चौहान पर इस बात का कोई असर नहीं पड़ा। उसने ताशा का हाथ थाम रखा था। जबकि ताशा के होंठों के बीच मुस्कान फंसी थी।

"मेरे देव।" ताशा प्यार से कह उठी—"हम वापस सदूर पर जाएंगे। पोपा डोबू जाति के पास खड़ा है।"

"हां ताशा।" देवराज चौहान ने मधुर मुस्कान से ताशा को देखा—"हम

वापस अपने सदूर पर जाएंगे। हमारा जीवन वहीं पर है। हम अपने प्यार को फिर से नया जीवन देंगे। वो ही सुहावना समय फिर लौट आएगा। मैं-तुम और सदूर, कितना अच्छा होगा वहां। हमारी खुशियां वहीं पर हैं।"

"मैं तो कब से इस वक्त के वापस लौटने का इंतजार कर रही हूं प्यारे देव।" ताशा की आंखें भर आईं—"तुम्हारी बांहों में जीवन बिता देना चाहती हूं। महापंडित हमें फिर पैदा करवा देगा, जब हम बूढ़े हो जाएंगे। सिर्फ मैं और तुम हम हर जन्म में मिलते रहेंगे। जन्म-जन्म का साथ हमारा। हम एक-दूजे के लिए ही जिएंगे और मरेंगे देव।"

"ताशा।" देवराज चौहान का स्वर कांप उठा—"तुम कितनी अच्छी हो ताशा।"

"मेरे देव जैसा दूसरा कोई नहीं है।" ताशा का स्वर कांप उठा।

देवराज चौहान प्यारी निगाहों से ताशा के चेहरे को निहारने लगा।

"फिर मुझे देखने लगे।" ताशा ने शरारत से कहा—"ऐसे ही तंग करोगे मुझे।" ताशा ने नीली आंखें नचाईं।

देवराज चौहान हौले-से हंस पड़ा।

"सोमाथ। हम आज ही डोबू जाति की तरफ चल देंगे। तैयारी शुरू कर दो।" रानी ताशा ने कहा।

"जी रानी ताशा। परंतु डोबू जाति तक जाने का रास्ता हमें पता नहीं है।" सोमाथ बोला।

"यंत्र द्वारा किलोरा से सम्पर्क बनाओ और यहां का पता देकर, उसे कहो कि रास्ता दिखाने को, हमारे पास किसी को भेजे।"

"मैं अभी किलोरा से बात करता हूं।" सोमाथ ने सिर हिलाया।

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखकर कहा।

"तुम लोग जहां जाना चाहो जा सकते हो, बेशक इसी बंगले में रहो। मेरा सब कुछ, सारी दौलत जगमोहन और नगीना की है। दोनों आधी-आधी बांट लेना। मैं ताशा के साथ सदूर पर वापस जा रहा हूं।"

"देव, इन्हें भी अपने साथ लिए चलते हैं।" ताशा बोली।

"नहीं ताशा, इन्हें अपनी जिंदगी जीने दो। हम...।"

"हम भी साथ जाएंगे।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा।

"तुम भी साथ जाओगे?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"मैं अकेला नहीं, हम सब, नगीना भाभी, मोना चौधरी, धरा सब...।"

"म-मैं?" धरा ने कहना चाहा।

परंतु मोना चौधरी ने उसी पल उसे पांव मारकर रोक दिया।

"प्यारे देव। पोपा में बहुत जगह है, इन्हें भी साथ ले चलेंगे। ये सदूर पर

हमारे किसी काम ही आएंगे। महापंडित इनके दिमाग बदल देगा। तुम भी इन्हें अपने आस-पास देखोगे तो, तुम्हें खुशी मिलेगी।"

"ठीक है ताशा।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा—"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"आओ देव।" ताशा प्यार से भरे अर्थपूर्ण स्वर में बोली—"हम कमरे में बातें करते हैं।"

"आओ ताशा, मैं तुम्हारे साथ फिर से प्यार के जीवन में प्रवेश कर जाना चाहता हूं जो जीवन पीछे छूट गया था।" देवराज चौहान ने प्यार भरे स्वर में कहा और कमरे की तरफ बढ़ गया।

तभी खामोश खड़ी सोमारा कह उठी—"ताशा। अभी तक बबूसा नहीं आया।"

"फिक्र मत कर सोमारा, आ जाएगा। बबूसा कभी भी राजा देव से दूर नहीं रहता।" ताशा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"कमरे में कोई न आए। वहां मैं अपने प्यारे देव के साथ, पुराने लम्हों को ताजा करूंगी।"

देखते-ही-देखते देवराज चौहान और ताशा बेडरूम में गए और दरवाजा बंद हो गया। उन तीनों व्यक्तियों में से दो व्यक्ति दरवाजे के बाहर पहरेदारों की तरह खड़े हो गए। ताकि राजा देव और रानी ताशा की तरफ जाने की कोई कोशिश न करे। सोमाथ यंत्र पर, किलोरा से बात करने की चेष्टा करने लगा। सोमारा सोचों में डूबी आगे बढ़कर सोफे पर जा बैठी।

जगमोहन, मोना चौधरी, नगीना और धरा की नजरें मिलीं।

"तुमने सदूर पर साथ जाने को क्यों कहा जगमोहन भैया?" नगीना गम्भीर स्वर में कह उठी।

"मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा भाभी कि ये सब क्या हो रहा है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"हमें देवराज चौहान के साथ रहना चाहिए। शायद आने वाले वक्त में उसे हमारी जरूरत पड़ जाए।"

"कैसी जरूरत?"

"कह नहीं सकता। देवराज चौहान का बदला रूप देखकर तो मेरा दिमाग हिल गया है।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"जगमोहन ठीक कहता है।" मोना चौधरी बोली—"हमें देवराज चौहान के साथ ही रहना चाहिए।"

"परंतु बबूसा कहां है।" धरा बोली—"वो होता तो...।"

"बबूसा आ गया।" नगीना के होंठों से निकला।

सबकी नजरें तेजी से घूमीं।

मुख्य दरवाजे से बबूसा को भीतर प्रवेश करते पाया।

तभी सोमारा की खुशी से भरी तेज आवाज सबको सुनाई दी।

"बबूसा...।" सोमारा बबूसा की तरफ दौड़ पड़ी।

सोमारा को देखकर बबूसा बुरी तरह चौंका। वो ठिठक गया।

तब तक सोमारा, बबूसा के पास पहुंच चुकी थी।

"बबूसा।" सोमारा बबूसा से लिपट गई—"तू कैसा है बबूसा। इस जन्म में तो अब तेरे को देख पाई हूं। तूने भैया को रजामंदी क्यों दे दी कि वो तेरा जन्म कराकर तुझे पृथ्वी पर छोड़ दे। बोल?"

बबूसा ने भी सोमारा को अपनी बांहों में ले लिया था।

"तू कैसी है सोमारा?"

"तू मिल गया तो अब बहुत अच्छी हूं। तेरे से मिलने के लिए तो मैं रानी ताशा के साथ आई हूं। एक बात तो बता।"

"क्या?"

"वो लड़की, धरा के साथ तेरा क्या सम्बंध है?"

"कुछ भी नहीं।"

"तो फिर तू उसे, डोबू जाति वालों से बचाता क्यों फिर रहा है। कोई बात है तो बता दे।"

"कोई बात नहीं। मेरा उससे दोस्तों जैसा सम्बंध है।" बबूसा बोला—"राजा देव यहां नहीं आए सोमारा?"

"आए हैं राजा देव, रानी ताशा के 'बस' में हैं। उसके दीवाने हुए पड़े हैं। वो रानी ताशा के साथ सदूर पर जाने को तैयार हैं। इस वक्त राजा देव और रानी ताशा, उधर के कमरे के भीतर हैं और आज ही पोपा के पास जाने के बारे में सोच रहे हैं।"

"ये तो गजब ढा दिया राजा देव ने।" बबूसा चिंतित स्वर में कह उठा—"राजा देव मौका पाते ही मेरे पास से भाग निकले और यहां आ गए। उन्हें सदूर के जन्म की याद तो आई, परंतु पूरी याद आने से पहले ही, वो रानी ताशा के पास आ पहुंचे। वो ही हुआ, जिसका मुझे डर था। अब राजा देव फिर रानी ताशा के दीवाने हो जाएंगे और रानी ताशा के मोहजाल में इस तरह डूब जाएंगे कि सदूर का जन्म उन्हें याद आना रुक जाएगा। रानी ताशा, राजा देव को सदूर पर ले जाएगी और महापंडित राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा मिटा देगा, जहां सदूर की यादें दर्ज हैं। इस तरह रानी ताशा राजा देव को फिर से पा लेगी और उसने राजा देव को जो धोखा दिया था, उसकी सजा उसे कभी नहीं मिल सकेगी।"

"तुमने तो बहुत कोशिश की बबूसा, परंतु राजा देव ने गलत कर दिया यहां आकर। अब क्या होगा?"

"वो ही तो समझ नहीं पा रहा कि अब मैं राजा देव के लिए क्या कर सकता हूं।" बबूसा चिंतित स्वर में बोला।

"मुझे रानी ताशा इसलिए साथ लाई कि वक्त आने पर तुम्हें रानी ताशा के खिलाफ काम करने से रोक सकूं। परंतु मैं तेरे साथ हूं। तू ही मेरा सब कुछ है। पहले तू बाकी सब बाद में। मेरे से शादी करेगा न?" सोमारा कह उठी।

"जरूर करूंगा सोमारा।" बबूसा मुस्करा पड़ा—"तेरे साथ ही जीवन बिताऊंगा। महापंडित को हमारा ब्याह करना पसंद नहीं आएगा।"

"भैया की बात मत करो।" सोमारा मुस्कराकर बोली—"वो तो अब भी मेरा ब्याह सदूर के खूबसूरत से खूबसूरत युवक के साथ कराने को कह रहे थे। पर मैं नहीं मानी। मैंने कहा शादी करूंगी तो बबूसा से, नहीं तो नहीं।"

"महापंडित बहुत गलत काम कर रहा है। वो राजा देव के खिलाफ रानी ताशा का साथ दे रहा है। मैं राजा देव से कहकर महापंडित को सजा जरूर दिलवाऊंगा। महापंडित राजा देव के साथ बेईमानी कर रहा है। उसे चाहिए था कि राजा देव को सदूर के उस जन्म की याद कराता, तब रानी ताशा से आमना-सामना कराता। परंतु उसने रानी ताशा को सीधे-सीधे ही राजा देव के पास पहुंचा दिया। महापंडित का मन मैला है। वो सब ठीक कर देना चाहता है और रानी ताशा को उस धोखे की सजा से बचाकर रखना चाहता है। पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगा सोमारा।"

"मैं तेरे साथ हूं बबूसा।" सोमारा गम्भीर स्वर में बोली—"मैं तो कब से तेरे से मिलने का इंतजार कर रही थी। कुछ भी भूली नहीं हूं मैं। सब याद है मुझे उस वक्त की। भैया ने मेरे हर जन्म के साथ वो यादें मेरे मस्तिष्क में ताजा रखीं। वो वक्त मैं कभी भी नहीं भूल सकती। तब तेरा कितना बुरा हाल हो गया था, राजा देव को ग्रह से बाहर फेंके जाने की बात से। मैंने ही किसी तरह तेरे को संभाला...।"

"वो सब मैंने अपनी आंखों से देखा था।" बबूसा की आंखों में आंसू चमक उठे—"राजा देव कितना कह रहे थे रानी ताशा से कि तुम पछताओगी। बहुत बड़ी भूल कर रही हो। क्या-क्या नहीं कहा था राजा देव ने तब। रानी ताशा को बहुत समझाने की चेष्टा की थी। परंतु वो तब जाने किन बातों की वजह से मदहोश थी। मैं देखता रहा और कुछ न कर सका। राजा देव को सदूर से बाहर फेंक दिया गया।"

"बीती बातों को याद मत कर।" सोमारा उसकी आंखों में आंसू देखकर बोली—"अब की सोच। अब क्या करना है। राजा देव, रानी ताशा को मिल चुके हैं और रानी ताशा पोपा की तरफ जाने की तैयारी कर रही है।"

"सोमाथ कहां है?" एकाएक बबूसा ने पूछा।

सोमारा ने गर्दन घुमाकर सोमाथ की तरफ देखा।

बबूसा की निगाहें भी सोमाथ पर जा टिकीं। सोमाथ पहले से ही एकटक बबूसा को देख रहा था। बबूसा और सोमाथ की नजरें मिलीं तो एकाएक सोमाथ, खतरनाक अंदाज में बबूसा की तरफ बढ़ने लगा।

ये देखकर सोमारा चौंकी। बबूसा की आंखें सिकुड़ीं और वो सतर्क हो गया।

"तुम क्या कर रहे हो सोमाथ?" सोमारा तेज स्वर में कह उठी।

"रानी ताशा मुझे हुक्म दे चुकी है कि बबूसा को देखते ही मार दूं।" आगे बढ़ते सोमाथ ने शांत स्वर में कहा।

"रुक जाओ सोमाथ।" सोमारा चीखी—"मैं रानी ताशा से बात करती हूं। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी।"

परंतु सोमाथ नहीं रुका। बबूसा के पास जा पहुंचा। बबूसा सतर्क था।

"मत करो सोमाथ।" सोमारा ने सोमाथ को पीछे धकेलना चाहा।

सोमाथ ने बबूसा को पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

बबूसा फौरन अपनी जगह से हट गया।

"तुम मुझसे बच नहीं सकते बबूसा।" सोमाथ का स्वर सामान्य था।

सोमारा तेजी से उस कमरे की तरफ दौड़ी जहां देवराज चौहान और रानी ताशा थे। परंतु दरवाजे पर खड़े दोनों व्यक्तियों ने सोमारा को दरवाजे तक न पहुंचने दिया। एक ने कहा।

"रानी ताशा को इस वक्त एकांत चाहिए। उनका आदेश है।"

"सोमाथ, बबूसा को मार देगा।" सोमारा व्याकुल-सी कह उठी—"रानी ताशा ही सोमाथ को रोक सकती है। मुझे उनसे बात करने दो।"

"तुम, रानी ताशा को इस वक्त परेशान नहीं कर सकतीं।"

सोमारा ने बहुत कोशिश की, परंतु दोनों ने एक न सुनी।

"हमें बबूसा का साथ देना चाहिए।" धरा परेशान-सी कह उठी।

"हम कुछ नहीं कर सकते।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला—"सोमाथ हमें ही मार देगा।"

सोमाथ, बबूसा की तरफ बढ़ते मुस्कराकर बोला।

"आओ बबूसा। मेरा मुकाबला करो। महापंडित ने मुझे बताया था कि तुम बहुत ताकत रखते हो। महापंडित ने तुम्हारे भीतर वो ही ताकत भर रखी है जो कभी सदूर में राजा देव के भीतर हुआ करती थी। परंतु तुम बच नहीं सकते। मैं तुम्हें मार दूंगा। मैं तो कब से तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था कि तुम सामने आओ, तुमने रानी ताशा को बहुत परेशान किया है। राजा देव को रानी ताशा से दूर रखा। उन्हें मिलने नहीं दिया। ये बात मुझे कभी भी पसंद नहीं आई।"

बबूसा सावधानी से पीछे होता जा रहा था।

सोमाथ, बबूसा की तरफ बढ़ता रहा।

तभी परेशान-सी सोमारा, पास आ पहुंची।

"बबूसा।" सोमारा ने गुस्से से कहा—"वो मुझे रानी ताशा से नहीं मिलने दे रहे। सोमाथ सिर्फ रानी ताशा का हुक्म ही मानता है। मैं क्या करूं बबूसा—मैं...।"

"शांत हो जाओ सोमारा।" सोमाथ पर निगाह रखे बबूसा कह उठा—"सोमाथ के लिए आसान नहीं होगा, मुझे मार देना। राजा देव जैसी ताकत मुझ में है। मैं इसका मुकाबला कर लूंगा।"

"तुम्हें कुछ हो गया तो...।"

"पीछे हो जाओ।" पीछे हटाता बबूसा दीवार से जा लगा।

सोमाथ, बबूसा की तरफ बढ़ता रहा।

दीवार के साथ सटा बबूसा की एकटक निगाह सोमाथ पर थी।

पास पहुंचकर सोमाथ ने अपने दोनों हाथ तेजी से बबूसा की तरफ बढ़ाए। बबूसा ने फुर्ती से अपने दोनों हाथ बढ़ाकर सोमाथ को बढ़ते हाथों को रोक दिया। सोमाथ और बबूसा के हाथों की उंगलियां, एक-दूसरे के हाथों की उंगलियों में फंस गई थीं। दोनों की बांहें ऊपर को उठी हुई थीं। दोनों एक-दूसरे पर जोर लगा रहे थे। जबकि सोमाथ का चेहरा शांत था, परंतु बबूसा का चेहरा कठोर हो चुका था।

"तेरे में तो सच में ताकत है।" सोमाथ बोला।

"महापंडित ने तेरा निर्माण करके गलत काम किया। इसकी सजा महापंडित को जरूर मिलेगी।" बबूसा गुर्रा उठा।

सोमाथ मुस्कराया। तभी बबूसा ने अपनी बाएं हाथ को खास अंदाज में झटका दिया तो सोमाथ की बांई बांह नीचे होती चली गई। बबूसा ने सोमाथ के हाथ की उंगलियों को अपनी फंसी उंगलियों से जबर्दस्त अंदाज में झटका दिया और खुद उछलकर दूर जा खड़ा हुआ और सांसों को संयत करने लगा।

सोमाथ अपनी जगह खड़ा अपने बाएं हाथ की उंगलियों को देख रहा था। उसके हाथ की उंगलियां बबूसा ने हथेली के उल्टी तरफ मोड़ दी। अंगूठा अपनी जगह पर था परंतु चारों उंगलियां हथेली से उल्टी दिशा में पीछे को मुड़ी पड़ी थीं। तभी सोमाथ के चेहरे से लगा कि वो जैसे अपने भीतर ही भीतर जोर लगा रहा हो। बीतते पलों के साथ सोमाथ के हाथ की उंगलियां धीरे-धीरे सीधी होने लगीं। बबूसा अपनी जगह पर खड़ा सोमाथ की उंगलियों को सीधे होते देखा तो उसके होंठ भिंच गए। तभी बबूसा दौड़ा और उछलकर वेग के साथ सोमाथ के शरीर से जा टकराया। सोमाथ का ध्यान अपनी उंगलियों की तरफ था। बबूसा के टकराते ही सोमाथ के पांव उखड़ गए और वो उछलकर

नीचे जा गिरा। बबूसा संभल चुका था और तेजी से सोमाथ के पास पहुंचकर उसके चेहरे पर ठोकर मारनी चाही कि सोमाथ ने दाएं हाथ से उसकी पिंडली पकड़कर झटका दिया। बबूसा फिरकनी की भांति घूमकर नीचे जा गिरा। फौरन ही संभला और खड़ा हो गया। तब तक सोमाथ भी खड़ा हो चुका था। उसके हाथों की उंगलियां सीधी हो चुकी थीं। दोनों की नजरें मिलीं।

"महापंडित ने तुझे बहुत सोच-समझकर बनाया है सोमाथ।" बबूसा सख्त स्वर में कह उठा—"तेरी जगह अगर कोई साधारण इंसान होता तो उसकी बांह टूट चुकी होती।"

"तू भी ताकत रखता है, इसका एहसास मुझे हो गया है।" सोमाथ ने पुनः बबूसा की तरफ बढ़ना शुरू किया।

बबूसा सतर्क हो गया। धीरे-धीरे पीछे हटने लगा।

सोमारा सांस रोके एक तरफ खड़ी थी।

तभी कुछ दूर खड़ा रानी ताशा का आदमी, सोमाथ से बोला।

"इसे जोबिना से खत्म कर देते हैं।"

"नहीं। बबूसा को मैं अपने हाथों से मारूंगा।" सोमाथ कह उठा—"ये मेरे से कम ताकत रखता है।"

उसी पल बबूसा सोमाथ की तरफ दौड़ा। ठिठक गया सोमाथ। बबूसा उछला और पलक झपकते ही अपने दोनों पांव सोमाथ की छाती पर रखे और सीढ़ी चढ़ने की तरह, ऊपर चढ़ता चला गया और अगले ही पल वो दोनों पांव, सोमाथ के दोनों कंधों पर रखे खड़ा था। सोमाथ को एक पल के लिए भी समझने का मौका नहीं दिया और बेहद तेजी से, दोनों पांवों में सोमाथ की दोनों कनपटियां फंसाकर, फिरकनी की भांति घूमा और एक ही छलांग में कई कदम दूर फर्श पर जा खड़ा हुआ। सोमाथ को देखा। सोमाथ का सामने देखने वाला चेहरा अब दाएं कंधे की तरफ घूमकर स्थिर हो चुका था। जैसे उसकी गर्दन सामने की तरफ नहीं, कंधे की तरफ टिकी हो। एकाएक सोमाथ बहुत भयावह दिखने लगा। सोमाथ की गर्दन का हाल देखकर तो धरा के होंठों से चीख निकल गई, जबकि कंधे पर टिकी गर्दन पर, सोमाथ के होंठ मुस्कराए। उसने बबूसा को देखा। बबूसा आंखें सिकोड़े सोमाथ को देख रहा था। होंठ भिंच चुके थे। वो जानता था कि सोमाथ की जगह अगर कोई सामान्य व्यक्ति होता ते उसकी गर्दन कब की टूटकर लटक गई होती। परंतु सोमाथ को उससे ज्यादा कोई फर्क नहीं पड़ा था कि उसकी गर्दन घूम गई थी। सोमाथ सही सलामत था। तभी सोमाथ की गर्दन बेहद मध्यम गति से, धीमे-धीमे वापस घूमने लगी। उसी वक्त बबूसा उछला और हवा में लहराते उसके दोनों पांव सोमाथ के सिर पर जा लगे। सोमाथ जोरों से लड़खड़ाकर रह गया। बबूसा फर्श पर जा खड़ा हुआ। सोमाथ की गर्दन धीरे-धीरे दिशा बदलकर सीधी होती जा

रही थी। जबकि ये देखकर बबूसा का हाल अजीब-सा हो रहा था। मन-ही-मन उसने माना कि महापंडित ने जबर्दस्त ढंग से सोमाथ का निर्माण किया था। उस पर कोई भी वार असर नहीं दिखा रहा। सोमाथ को जो थोड़ा बहुत नुकसान होता है तो वो तुरंत ही ठीक होना शुरू हो जाता है। इस हिसाब से सोमाथ उससे कहीं ज्यादा ताकतवर था। सोमाथ को मारा नहीं जा सकता था, परंतु बबूसा जानता था कि ऐसे इंसान की कमजोरी, इसके शरीर में ही होगी, परंतु कहां, ये पता लगाना बेहद कठिन कार्य था। एकाएक बबूसा को सोमाथ से खतरा महसूस होने लगा इस तरह वो कब तक सोमाथ का मुकाबला कर पाएगा। सोमाथ सच में उसे मार देने में कामयाब हो जाएगा। बबूसा को समझते देर न लगी कि वो खतरे में है। सोमाथ अब कभी भी उसकी जान ले सकता है। उसके सामने मुकाबला करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। जब तक सांसें चलती रहेंगी, वो मुकाबला करता रहेगा लेकिन अंत में जीत सोमाथ की होगी। बबूसा को सोमाथ के हाथों स्पष्ट अपनी मौत दिखने लगी।

सोमाथ की गर्दन वापस, सीधी हो गई।

बबूसा होंठ भींचे सोमाथ को देख रहा था।

"जितना मैंने सोचा था तू उससे भी ज्यादा तेज निकला बबूसा।" सोमाथ ने मुस्कराकर कहा—"तेरे किसी वार का मुझ पर कोई बुरा असर नहीं होगा। मरना, तुझे ही है। आज तेरी जिंदगी का अंतिम दिन है।" इस के साथ ही सोमाथ फुर्ती से बबूसा की तरफ लपका। पीछे हटने की अपेक्षा बबूसा, सोमाथ पर झपट पड़ा। दोनों जोरों से टकराए। सोमाथ ने बबूसा को बांहों के घेरे में लेना चाहा कि बबूसा ने उसके कंधों के पास से उसकी बांहों को हाथों से थाम लिया और उन्हें दूर रखने का प्रयत्न करने लगा। इस काम में उसे पूरा जोर लगाना पड़ रहा था। क्योंकि सोमाथ भी अपनी ताकत लगा रहा था। बबूसा ज्यादा देर तक इसी मुद्रा में डटा नहीं रह सका। उसे फुर्ती से सोमाथ की बांहों को छोड़कर दूर हट जाना पड़ा कि तभी सोमाथ ने उस पर छलांग लगा दी।

बबूसा संभल न सका और सोमाथ तेजी से उससे आ टकराया। बबूसा के पांव उखड़े और वो पीछे को जा गिरा। पास पहुंचकर सोमाथ ने उसकी छाती पर पांव रखा और दबाने लगा। बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली और दोनों हाथों से उसने सोमाथ की पिंडली थामी और उसे छाती से हटाने को पूरा जोर लगा दिया। परंतु बबूसा को जरा भी सफलता नहीं मिली। उसे लग रहा था कि सोमाथ के पांव के दबाव से उसकी छाती की हड्डियां टूट जाएंगी।

उसी पल सोमारा दौड़ी और सोमाथ को धक्का देकर, हटाने की कोशिश करती बोली—"छोड़, छोड़ मेरे बबूसा को।"

सोमाथ का हाथ हौले से घूमा, सोमारा के कंधे पर पड़ा तो सोमारा तेज

चीख के साथ चार-पांच कदम दूर जा गिरी। तभी बबूसा ने पूरी ताकत लगाकर सोमाथ की पिंडली को झटका दिया। पांव का दबाव कुछ कम हुआ, दो पल के लिए कि बबूसा ने पिंडली को एक और झटका दिया और पांव के नीचे से करवट लेता वहां से हट गया और फुर्ती से खड़ा होने की चेष्टा की कि तभी सोमाथ ने छलांग लगाई और उसके ऊपर आ गिरा बबूसा के होंठों से मध्यम-सी कराह निकली, दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए और अगले ही पल सोमाथ का दायां हाथ बबूसा की गर्दन पर जा टिका। बबूसा को लगा जैसे लोहे का शिकंजा गर्दन से कस गया हो। उसने तड़पकर सोमाथ का हाथ गले से हटा देना चाहा, परंतु सोमाथ की पकड़ एक अंश भी ढीली नहीं हुई। दबाव बढ़ने लगा। सोमाथ का चेहर सांस रुकने के कारण लाल सुर्ख हो उठा था। आंखें फटने को आ गईं। सोमारा चीखती हुई पास आई और सोमाथ का हाथ बबूसा की गर्दन से हटाने की भरपूर कोशिश की, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

दम रुकने की वजह से बबूसा छटपटा उठा।

"ता-ऽ-ऽ-ऽ-ऽ-शा-ऽ-ऽ-ऽ...।" एकाएक सोमारा गला फाड़कर चीख उठी—दो पल भी नहीं बीते कि कमरे का दरवाजा खुला, रानी ताशा आगे थी, देवराज चौहान पीछे। वो कमरे का दृश्य देखकर चौंके। तभी सोमारा गुस्से से कह उठी।

"बबूसा को बचाओ ताशा। सोमाथ उसकी जान ले रहा है।"

"बबूसा।" देवराज चौहान तेजी से दौड़ा आया—"ये क्या कर रहे हो तुम बबूसा के साथ। छोड़ो इसे।"

परंतु सोमाथ की पकड़ का दबाव बढ़ता ही जा रहा था।

"हटो।" देवराज चौहान ने सोमाथ को हटाना चाहा।

लेकिन सोमाथ अपनी करनी पर कायम रहा।

"रुक जाओ सोमाथ।" रानी ताशा कह उठी—"बबूसा को छोड़ दो।"

उसी पल सोमाथ की पकड़ ढीली हो गई। वो बबूसा का गला छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

"बबूसा।" देवराज चौहान बबूसा के पास बैठ गया। सोमारा भी करीब आ बैठी। उसकी आंखों में आंसू थे—"तुम ठीक तो हो बबूसा।" देवराज चौहान की आवाज में तड़प थी—"तुम...।"

बबूसा मुंह खोले, सांसें लेने का प्रयत्न कर रहा था।

उसी पल देवराज चौहान उठा और पलटकर खतरनाक निगाहों से सोमाथ को देखा। दरिंदा-सा लग रहा था देवराज चौहान। हाथों की मुट्ठियां भिंच गई थीं। वो सोमाथ की तरफ बढ़ना चाह रहा था कि तभी ताशा पास आई और देवराज चौहान का हाथ पकड़कर प्यार से कह उठी।

"मेरे देव, सोमाथ मेरे आदेश का पालन कर रहा था। उसे मैंने ही कहा था बबूसा को खत्म करने को।"

"तुमने ऐसा आदेश क्यों दिया?" देवराज चौहान गुस्से में था।

"बबूसा हमें मिलने नहीं दे रहा था देव। वो हमारे मिलन में अड़चन डाल रहा था।"

"मैं बबूसा का अहित नहीं सह सकता ताशा।" देवराज चौहान कुछ ढीला पड़ा—"वो मेरा खास है।"

"अब सोमाथ बबूसा को कुछ नहीं कहेगा। आप मिल गए तो मेरा क्रोध भी समाप्त हो गया।"

देवराज चौहान ने गम्भीर निगाहों से रानी ताशा को देखा।

ताशा, देवराज चौहान को देखकर मुस्कराई।

"अब अपनी ताशा पर गुस्सा करोगे देव।" ताशा ने मुंह फुलाकर कहा।

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

बबूसा अब उठ बैठा था। चेहरे पर अभी भी लाली चमक रही थी।

"रानी ताशा।" बबूसा गहरी सांसें लेता कह उठा—"मैं तो आपके लिए राजा देव को संभाले रखे हुए था। मैं तो कबसे आपके आने की राह देख रहा था कि राजा देव को आपके हवाले कर सकूं। राजा देव भी आपसे मिलने को तड़प रहे थे। आपके लिए मैंने इतना कुछ किया और आपने सोमाथ से कह दिया कि वो मेरी जान ले ले।"

"तुमने मुझसे विद्रोह किया। डोबू जाति छोड़कर आ गए और...।"

"रानी ताशा। मैं तो राजा देव की तलाश में निकला था कि आपके आते ही राजा देव को आपके हवाले कर दूं और हम पोपा में बैठकर वापस सदूर चले जाएं। आपने मुझे गलत समझ लिया।" बबूसा ने दुख भरे स्वर में कहा।

"तुम कुछ भी कहो, अब मुझे किसी की परवाह नहीं है। मेरे देव मुझे मिल गए हैं। देव को क्या पाया, मैंने सब कुछ पा लिया।" रानी ताशा ने मुस्कराकर देवराज चौहान को देखा—"आप मेरे हैं न देव?"

"मैं अपनी ताशा के बिना नहीं रह सकता।" देवराज चौहान ने प्यार से कहा।

रानी ताशा की आंखें भर आईं—"मैंने आपको कितनी मेहनत से पाया है। अब आपको गुम नहीं होने दूंगी।"

"हम साथ-साथ रहेंगे ताशा।" देवराज चौहान भावुक हो उठा—"मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

रानी ताशा ने बबूसा से कहा।

"तुम तो डोबू जाति तक पहुंचने का रास्ता जानते हो?"

"हां, रानी ताशा।"

"तो हमें वहां ले चलो। पोपा वहां खड़ा है। हमें वापस सदूर पर, अपने किले में जाना है। जहां मेरी और देव की दुनिया बसती है।"

"आप चलने की तैयारी कीजिए रानी ताशा, मैं भी अब वापस सदूर जाना चाहता हूं।" बबूसा कह उठा।

"मेरे देव।" रानी ताशा ने कहा—"हमें चलने की तैयारी करनी चाहिए।"

देवराज चौहान की निगाह जगमोहन, नगीना, मोना चौधरी और धरा पर गई—"जगमोहन।" देवराज चौहान बोला—"क्या तुम लोग भी सदूर पर, हमारे साथ जाना चाहते हो?"

"हां।" जगमोहन ने फौरन कहा।

"तो चलने की तैयारी करो। गाड़ियों का इंतजाम करो। बबूसा से जान लो कि कहां जाना है।" देवराज चौहान ने कहा और ताशा का हाथ पकड़कर प्यार से कह उठा—"हम कमरे में चलते हैं। मैं अभी जी भरकर तुम्हें देख नहीं सका।"

"आओ मेरे देव।" ताशा देवराज चौहान से सट गई—"मैं उन प्यार के पलों को फिर से पा लेना चहती हूं जो पीछे छूट गए थे।"

दोनों कमरे में चले गए। दरवाजा बंद हो गया।

"हमें कुछ करना होगा।" मोना चौधरी कह उठी—"ये लोग तो अब किसी दूसरे ग्रह पर जाने की तैयारी करने लगे हैं।"

"जब तक हालात हमारे हक में न हों, हमें कुछ नहीं करना है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"बबूसा की ताकत हमने देख ली है, वो हमारे काम आ सकता है, वो रानी ताशा के खिलाफ है। जल्दबाजी में खेल मत बिगाड़ देना मोना चौधरी। हम किसी मौके की तलाश में ही, इन लोगों के साथ रहेंगे।"

"सब कुछ देवराज चौहान पर निर्भर है।" नगीना ने सोच भरे स्वर में कहा—"परंतु उन्हें ताशा के अलावा कुछ नजर ही नहीं आ रहा। ऐसे में हम कर भी क्या सकते हैं।"

"बबूसा बताएगा कि हमें क्या करना है अब।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"सिर्फ बबूसा ही तो है, जो सोमाथ का कुछ मुकाबला कर सकता है।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"बबूसा का हमें बहुत सहारा रहेगा। बबूसा हालातों को हमसे बेहतर जानता है कि अब क्या करना चाहिए।"

बबूसा उठ बैठा था। उसकी सांसें संयत हो चुकी थीं। चेहरे पर अभी भी लाली था। उसने कुछ दूर खड़े सोमाथ को देखा। सोमाथ भी उसे ही देख रहा था। पास बैठी सोमारा धीमे स्वर में कह उठी।

"तेरे को मेरे से ज्यादा कोई नहीं जान सकता बबूसा। मैं जानती हूं तेरे मन में क्या चल रहा है।"

बबूसा ने गम्भीर निगाहों से सोमारा को देखा।

"मुझे पता है कि तू मेरे मन की बात जान लेती है।" बबूसा बोला—"इसी कारण तू मुझे बहुत अच्छी लगती है।"

"क्या करेगा तू अब?"

"रानी ताशा, राजा देव को उलझाकर सदूर पर ले जाना चाहती है। ऐसे में राजा देव के सदूर की सारी बातें याद नहीं आएंगी। क्योंकि वो तो रानी ताशा के प्यार में दीवाने होकर उलझे रहेंगे। रानी ताशा भी राजा देव को कुछ भी सोचने का मौका नहीं देगी। ऐसे में रानी ताशा सोचती है कि राजा देव को सदूर पर ले जाकर, उनके दिमाग के उस हिस्से को महापंडित से हटवा देगी, जहां पर सदूर की बुरी यादें दर्ज हैं, जिनके याद आने पर राजा देव, रानी ताशा को सख्त सजा देंगे। परंतु मैं रानी ताशा को, राजा देव से किए धोखे की सजा दिलवाकर ही रहूंगा। रानी ताशा अपनी मनमानी नहीं कर सकेगी।"

"बबूसा।" सोमारा ने बबूसा का हाथ पकड़ लिया—"इस काम में मैं तेरा साथ दूंगी।"

"सच सोमारा?" बबूसा मुस्करा पड़ा।

"सोमारा तेरे को खूब जानती है, खूब समझती है कि तू कभी कोई गलत काम नहीं करेगा। खासतौर से राजा देव से जुड़ा मामला हो तो अपनी जान लगा देगा। ऐसे में सोमारा तेरा साथ क्यों न देगी। अपनी जान भी दे देगी।" सोमारा ने दृढ़ स्वर में कहा—"अपनी सोमारा पर भरोसा रख बबूसा। तेरे लिए तो मैं रानी ताशा का गला भी काट दूंगी।"

"ऐसा कुछ नहीं करना है हमने। रानी ताशा को राजा देव ही सजा देंगे। हम तो सिर्फ उनके सेवक हैं।" बबूसा ने कहा।

तभी जगमोहन पास आ पहुंचा। बबूसा ने जगमोहन को देखा।

"तुम तो फेल हो गए बबूसा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"बबूसा ने कभी फेल होना नहीं सीखा। अब तो शुरुआत हुई है।" बबूसा का स्वर बेहद कठोर था—"तुमने अभी बबूसा को जाना ही कहां है। रानी ताशा को अपनी किए की सजा भुगतनी ही होगी। वो बच नहीं सकती। राजा देव ही रानी ताशा को सजा देंगे।" फिर बबूसा की निगाह सोमाथ की तरफ उठी जो दूर खड़ा उसे ही देख रहा था—"सोमाथ को संभालना अवश्य खतरनाक महसूस हो रहा है।" बबूसा का हाथ अपने गले पर पहुंच गया—"पर सोमाथ मेरे हाथों से बच नहीं सकेगा। राजा देव कहा करते थे कि बबूसा, कोई भी काम कठिन नहीं होता, अहम बात तो ये होती है कि उस काम को पूरा करने की, मन की भावना कितनी प्रबल है। राजा देव की ये बात मैं कभी नहीं भूला। मैं जल्दी ही अपनी कोशिशों पर खरा उतरूंगा और वह वक्त भी आएगा जब रानी ताशा के सामने खड़े राजा देव, उससे सदूर पर किए धोखे का हिसाब मांगेंगे।"

"सोमारा तेरे लिए अपनी जान भी लड़ा देगी बबूसा।" सोमारा दृढ़ स्वर में कह उठी—"परंतु तोमाथ की याद है तुम्हें, तुम उसे कहकर आए थे सदूर पर कि विद्रोह की सारी तैयारी पूरी रखे और तोमाथ ने सारी तैयारी कर रखी है वो सिर्फ तुम्हारे इशारे का इंतजार कर रहा है कि किसी प्रकार तुम अपने यंत्र पर या पोपा के भीतर मौजूद यंत्र द्वारा उसे आगे का आदेश दे दो रानी ताशा को किले से उखाड़ देने की कार्यवाही शुरू कर दें।"

"हम सब भी तुम्हारे साथ हैं बबूसा। तुम्हारे जितनी कोशिशें तो नहीं कर सकते, पर जितनी हिम्मत है, उतना साथ तो दे ही सकते हैं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"हमें डोबू जाति की तरफ जाने की तैयारी करनी होगी तुम मुझे उधर जाने का रास्ता समझा दो।"

"वो मैं तुम्हें समझा देता हूं कि हमें किस तरफ जाना है।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा।

तभी धरा पास आकर घबराए स्वर में कह उठी।

"बबूसा। अगर मैं डोबू जाति वालों के पास गई तो वो मेरी जान ले लेंगे।"

"बबूसा के होते कोई तेरी तरफ आंख भी उठाकर नहीं देखेगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

तभी उसकी निगाह सोमाथ पर गई तो सोमाथ को ऐसी निगाहों से अपनी तरफ देखते पाया, जैसे कह रहा हो कि मैं सब जानता हूं कि तुम क्या करने की सोच रहे हो, परंतु मेरे होते तुम कुछ नहीं कर सकोगे।"

▭ ▭ ▭

स्पष्ट है कि सही जवाब कई पाठकों के होंगे। ऐसे में हम राजा पॉकेट बुक्स के स्टाफ के सामने विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में सही जवाब वाले पाठकों के नामों के कूपन 'सील्ड बॉक्स' में डालकर उनमें से 'लक्की ड्रॉ' सिस्टम से विजेताओं के नाम के कूपन निकाले जाएंगे। जैसे कि पहले कूपन पर जिस भाग्यशाली पाठक का नाम होगा, वही पहला भाग्यशाली विजेता घोषित किया जाएगा। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे विजेता चुने जाएंगे। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय ईनाम आपके चहेते लेखक अनिल मोहन द्वारा वितरित किए जाएंगे।

'राजा पॉकेट बुक्स' का वादा है कि देवराज चौहान सीरीज के **'बबूसा'** उपन्यासों की शृंखला के समाप्त होने पर 60 दिन के भीतर विजेता पाठकों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी और अगले 30 दिन में ईनाम वितरित कर दिए जाएंगे। इस प्रतियोगिता में जो भी पाठक हिस्सा लेंगे, उनके नाम-पते, अनिल मोहन के **'बबूसा'** शृंखला के अंतिम उपन्यास के बाद के नए उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे। इस ईनामी प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए अब आप तैयार हो जाएं। आप अपनी प्रति अपने शहर के पुस्तक विक्रेताओं के पास आज ही से सुरक्षित करा दें।

प्रतियोगिता के नियम

1. इस प्रतियोगिता में 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से आपको केवल 6 के सही जवाब देने हैं।
2. जैसा कि हमने 'मिस्ड कॉल' में घोषित किया था और अब जबकि उपन्यास आपके हाथ में है पुनः घोषित कर रहे हैं कि अनिल मोहन के देवराज चौहान सीरीज की 'बबूसा' सीरीज की शृंखला के हर उपन्यास में एक कूपन छपेगा, इस सीरीज के सभी उपन्यासों में छपे हुए कूपनों को आपको अपने पास संभालकर रखना है। और अंत वाले उपन्यास में छपे कूपन पर इसी सीरीज के सारे कूपन चिपकाकर प्रतियोगिता में छपे प्रश्नों के उत्तरों के साथ किस पते पर भेजना है उसकी जानकारी सीरीज के अंत वाले उपन्यास में दी जाएगी। आप उपन्यास पढ़ चुके हैं तो इस सीरीज का अंत में दिया हुआ पहला कूपन आप अपने पास काटकर सुरक्षित कर लें। या उपन्यास को ही आप अपने पास संभालकर रख लें।
3. जिन सही जवाब देने वाले पाठकों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय ईनाम नहीं मिलता है उन विजेता पाठकों में से 300 पाठकों को सांत्वना पुरस्कार

के रूप में 12" × 18" साइज का अनिल मोहन का हस्ताक्षरयुक्त पोस्टर दिया जाएगा तथा उन्हें अनिल मोहन के उपन्यासों के Brilliant Reader नाम की उपाधि से नवाजा जाएगा। उन 300 विजेताओं के नाम का कूपन भी अनिल मोहन जी के द्वारा ही निकाला जाएगा।

4. जो भी पाठक हमें कूपन भेजेंगे वे ओरिजनल कॉपी होनी चाहिए। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकृत नहीं की जाएगी।
5. प्रतियोगियों से जो सवाल पूछे जाएंगे, वो 'बबूसा' उपन्यासों की शृंखला में से ही पूछे जाएंगे, प्रतियोगिता के प्रश्न इस सीरीज के अंतिम उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे।
6. इस प्रतियोगिता में राजा पॉकेट बुक्स का कोई भी कर्मचारी भाग नहीं ले सकता।
7. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले पाठकों से विशेष निवेदन है कि वे अपने नाम का कूपन केवल एक ही बार भेजेंगे, एक ही नाम-पते के कई कूपन भेजने पर निर्णायक कमेटी कूपन को निरस्त कर सकती है।
8. प्रत्येक स्थिति में निर्णायक मंडल का निर्णय मान्य होगा।

विशेष नोट : घोषित किए गए प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार यदि किसी कारणवश—मॉडल नम्बर कम्पनी द्वारा बंद किए जाने की स्थिति में अथवा किसी अन्य स्थिति में—उपलब्ध नहीं हुए तो विजेता प्रतियोगियों को प्रथम पुरस्कार लैपटॉप के बदले 30,000 रुपए, द्वितीय पुरस्कार पांच प्रत्येक विजेताओं को गैलेक्सी मोबाइल के बदले 6,500 रुपए व तृतीय पुरस्कार एम.पी.3 प्लेयर के बदले 1,500 रुपए दिए जाएंगे।

कूपन नम्बर-3

बबूसा खतरे में

बबूसा चाहता था कि राजा देव (देवराज चौहान) को जब सदूर के जन्म की याद आ जाए, तभी रानी ताशा से राजा देव का सामना हो, वो इसी कोशिश में लगा हुआ था परंतु देवराज चौहान को सदूर ग्रह के जन्म की आधी-अधूरी यादें ही याद आई थीं कि उसका रानी ताशा से सामना हो गया और खतरे में पड़ गया बबूसा।

बबूसा खतरे में

1,00,000 की ईनामी प्रतियोगिता के साथ शुरू हो चुकी शृंखला की चौथी कड़ी!

बबूसा का चक्रव्यूह

जनवरी 2013 से सर्वत्र उपलब्ध

राजा पॉकेट बुक्स

ISBN 978-93-802-7897-1
9 789380 278971
Price : ₹ 60
A.H.W. TIGER SERIES